Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आ श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर
श्रीमहावीर जैन आराधना केन्द्र

तिब्ब रत्नाकर

अर्थात्

क़राबादीन अहसानी।

हिन्दी

इस पुस्तक की रजस्टरी की फ़ीस ऐक्ट २५ सन १८६७ ई० की दफ़ा १९ के बमूजिब दाख़िल गवर्नमेंन्ट की गई

स्थानमथुरा

मुन्शी कन्हैयालाल व बन्शीधर समादिकों के प्रबन्धसे मुम्बैउलउलूम नाम निज शिलायंत्र में छापी गई॥

७ नवम्बर सन् १८८२ ई०

नम्र सूचन
इस ग्रन्थ के अभ्यास का कार्य पूर्ण होते ही नियत समयावधि में शीघ्र वापस करने की कृपा करें.
जिससे अन्य वाचकगण इसका उपयोग कर सकें.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Serving JinShasan

045914

gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ तिब्ब रत्नाकर अर्थात् क़राबादीन अहसानी हिन्दी का सूचीपत्र ॥

अध्याय	पृष्ठ	पंक्ति
फ़सल पहिली	–	–
ज़रूरती औषधियों की क्रिया और दुरस्ती में....	२	८
फ़सल दूसरी		
बहु बचन औषधियों के ज़ारी करने की आदि में॥	४	७
फ़सल तीसरी		
ख़ास इसी पुस्तक की तोल के प्रकर्ण में ॥	६	१३
फ़सल पहिली		
औषधी के धारण करने और उनको बल को समय बांधने के प्रकर्ण में ॥	१०	१३
फ़सल दूसरी		
एक तो औषधी बनाने की बिधि में और उसकी पाकी ज़र्गी तथा बलवान रहने और असर तेज़ी रहने के प्रयोज़न में॥	१४	६
फ़सल तीसरी		
अकेली औषधी को शुद्ध करने और बनाने के प्रकर्ण में॥	१५	२५
अथ जीवादिक की शोधन और क्रिया का प्रकर्ण	२०	८
फ़सल चौथी		
ऐसी दवाइयों के बनाने की क्रिया में जिनकी असली हालत तुर्त दूर हो जाती है- और भीजी दवा बनाने की बिधि॥	२९	६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अध्याय	पृष्ठ	पंक्ति
फ़सल पांचवीं		
ऐसी दवाइयों के बनाने में जो विशेष दिन तांई ठहरती हैं ॥	२२	२४
फ़सल छठी		
खाने की दवाइयों के काम में लाने की रीतिमें ॥	३१	२५
फ़सल सातवीं		
अथ लगाने की दवाई काम में लाने की रीति के प्रकारों में ॥	३२	२३
फ़सल दूसरी		
कार्मिक वार्ताओं में ॥	५५	२३
फ़सल दूसरी		
अनोशदारू के नुसखों में ॥	६०	२५
फ़सल तीसरी		
अत्री फलात में ॥	६१	१९
फ़सल चौथी		
अचार ज़ात में ॥	६२	२०
फ़सल पांचवीं		
आवज़न के नुसखों में ॥	६३	१८
फ़सल छठी		
दून्कबाब अर्थात् भफारे में ॥	६४	११
फ़सल सातवीं		
वर्षी के नुसखों में ॥	६५	१३
फ़सल आठवीं		
वत्तीसा और पीडी के नुसखों में ॥	६६	१४

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अध्याय	पृष्ठ	पंक्ति
फ़सल नवीं		
बरूद के भेदों में से ॥	६८	५
फ़सल दसवीं		
वख़ूरात अर्थात् धूनियों में ॥	६८	१८
फ़सल ग्यारहवीं		
पाशोया के नुसखों में ॥	६९	१३
फ़सल बारहवीं		
तिरियाक अर्थात ज़हर मुहरों के नुसखों में ॥	७०	६
फ़सल तेरहवीं		
तेज़ाव के नुसखों में ॥	७२	१८
फ़सल चौदहवीं		
ज़वारशों में ॥	७३	२२
फ़सल पंद्रहवीं		
मस्तक और दरदों के रोगों की गोलियों में ॥	७७	१
फ़सल सोलहवीं		
नेत्र के रोगों के दूर करने की हबूबात अर्थात गोलियों में ॥	७७	२४
फ़सल सत्रहवीं		
मुंह के रोगों के दूर करने की गोलियों में ॥	७८	१२
फ़सल अठारवीं		
क्षुधा लगाने वाली और अन्नादिक को पचाने वाली तथा वादी और शूल दूर करने वाली गोलियों में ॥	७९	२
फ़सल उन्नीसवीं		

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आध्याय	पृष्ठ	पंक्ति
हस्त बंद करने की गोलियों में ॥		
फ़सल बीसवीं		
जुल्लाब की गोलियों में ॥	८०	२१
फ़सल इक्कीसवीं		
तिल्ली की सूजन दूर करने की गोलियों में ॥	८२	६
फ़सल बाईसवीं		
ज्वर खांसी दूर करने की गोलियों में ॥	८२	२१
फ़सल तेईसवीं		
आतशक और इन्द्री के रोगों को दूर करने की गोलियें	८४	५
फ़सल चौबीसवीं		
बाजीकरण और बल बढ़ाने की गोलियों में ॥	८५	१४
फ़सल पच्चीसवीं		
हलुओं में ॥	८७	१८
फ़सल छब्बीसवीं		
हसू अर्थात हरीरा और तिल्ली में ॥	९०	२२
फ़सल सत्ताईसवीं		
हुकनों में ॥	९१	१२
फ़सल अठ्ठाईसवीं		
ख़मीरों की दवाइयों में ॥	९२	४
फ़सल उन्तीसवीं		
तमाखू के खमीरों के नुसखों के प्रकरण में ॥	९३	१०
फ़सल तीसवीं		
ख़िज़ाब में ॥	९५	१४
फ़सल इकत्तीसवीं		

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अध्याय	पृष्ठ	पंक्ति
ठहरी हुई और अगली दवाइयों की विधि में ॥	९६	२३
फ़सल बत्तीसवीं		
दरबहरहमें ॥	१०२	४
फ़सल तेतीसवीं		
रोग़नों में ॥	१०३	५
फ़सल चौंतीसवीं		
कर्ण रोग दूर करने के तेलों में ॥	१०६	१२
फ़सल पेंतीसवीं		
पेट के दरद दूर करने वाले तेलों में ॥	१०७	८
फ़सल छत्तीसवीं		
गिरपड़ने की चोटों आदि और तलवार के घाव को दूर करने तेलों में ॥ Xके	१०८	६
फ़सल सैंतीसवीं		
इन्द्री के रोग दूर करने के तेलों में ॥	१०९	२३
फ़सल अड़तीसवीं		
वालों के तेल के प्रकर्णमें ॥	११०	५
फ़सल उन्तालीसवीं		
ज़रूक़ अर्थात् पिचकारीमें ॥	११२	१५
फ़सल चालीसवीं		
सऊत अर्थात् नाक में टपकाने की दवा में ॥	११३	२०
फ़सल इकतालीसवीं		
सनून अर्थात् मंजन में ॥	११५	२२
फ़सल ब्यालीसवीं		
सनून अर्थात् मिस्सी के भेदों में ॥	११६	२२

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आशय	पृष्ठ	पंक्ति
फ़सल तेतालीसवीं		
सिकंजबीनों में ॥	११७	१६
फ़सल चवालीसवीं		
सफूफों में ॥	११९	१०
फ़सल पेंतालीसवीं		
जुल्लाव और मल के दूर करने के सफूफ अर्थात चूर्णों में ॥	११९	२५
फ़सल छियालीसवीं		
ज्वर खांसी और नज़ला और रुधिर थूकने के रोगों को दूर करने में ॥	१२०	२१
फ़सल सेंतालीसवीं		
उदर को बलदेने वाले और भोजन पचानेवाले और बादी और वाय गोला वायसूल दूर करनेवाले चूरनों में ॥	१२२	६
फ़सल अडतालीसवीं		
दस्त बंद करने के सफूफों में ॥	१२५	१३
फ़सल उणंचासवीं		
वमन और उबाकी दूर करने वाले चूर्णों में ॥	१२६	२०
फ़सल पंचासवीं		
जलोदर और तिल्ली के साथ को और कमलवाय और कलेजे के रोगों को और ववासीर के दूर करने वाले चूर्णों में ॥	१२७	१२
फ़सल इक्यावनवीं		
प्रसन्न करने वाले और बलदेने वाले और मस्त		

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आशय	पृष्ठ	पंक्ति
क के रोग दूर करने वाले प्रारवतों में	१२६	६
फ़सल बावनवीं		
नाना प्रकार की खांसी और नज़ला और मस्तक पीडा, बग़ल पीडा – रीह अर्थात् फेंफडे की पीडा – और स्वास को दूर करने वाले प्रारवतों में ॥	१३१	६
फ़सल तिरपनवीं		
ज्वर के दूर करने के प्रारवतों में ॥	१३२	२०
फ़सल चोवनवीं		
कलेजे और तिल्ली के रोगों को दूर करने वाले प्रारवतों में ॥	१३५	८
फ़सल पचपनवीं		
गुर्दे और मसाने और छिद्र के रोगों के दूर करने वाले प्रारवतों में ॥	१३७	११
फ़सल छप्पनवीं		
उदर के रोग दूर करने के प्रारवतों में ॥	१३८	१५
फ़सल सत्तावनवीं		
कई प्रकार के प्रारवतों में ॥	१३९	२५
फ़सल अट्ठावनवीं		
नशीली मदराओं में ॥	१५३	३
फ़सल उनसठवीं		
शामूमों में अर्थात् नसवार कि जिसके सूंघने से रोग दूर होय ॥	१५५	२०
फ़सल साठवीं		
नेत्र रोगों के शयाफों अर्थात् लम्बी गोलियों में	१५६	१४

For Private and Personal Use Only

ग्राध्याय	पृष्ट	पंक्ति
फ़सल इकसठवीं		
कान ग्रीर नाक के रोगों को दूर करने वाले प्रयोगों में	१४८	२२
फ़सल बासठवीं		
छिद्र रोगों के प्रयोगों में ॥	१४९	२०
फ़सल तिरसठवीं		
वायशूल के दूर करने वाले प्रयोगों में ॥	१५०	८
फ़सल चौंसठवीं		
सवग ग्रर्थात त्वचा के रोगों के रोगों में ॥	१५१	६
फ़सल पेंसठवीं		
ज़म्मादों ग्रर्थात मस्तक ग्रीर भेजा के रोगों के दूर करने वाले लेपों में ॥	१५१	२४
फ़सल छियासठवीं		
नाक ग्रीर कान के रोगों को दूर करने वाले लेपों में	१५३	१२
फ़सल सरसठवीं		
मुंह ग्रीर कंठ के रोगों के दूर करने वाले लेपों में ॥	१५४	४
फ़सल ग्रडसठवीं		
पहलू के दर्द ग्रीर पीठ के दर्द ग्रीर फेंफडे के दर्द ग्रीर दम घुटजाने के दूर करने वाले लेपों में ॥	१५५	३
फसल उन्हत्तरवीं		
कुच के रोगों के दूर करने वाले लेपों में ॥	१५६	३
फसल सत्तरवीं		
उदर ग्रीर ग्रांत ग्रीर तिल्ली ग्रीर कलेजा के रोगों को दूर करने वाले लेपों में ॥	१५७	८
फ़सल इकहत्तरवीं		

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आशय	पृष्ठ	पंक्ति
गुदा के रोग दूर करने वाले लेपों में ॥	१५९	८
फ़सल बहत्तरवीं		
गुरदे और इन्द्री के रोग दूर करने वाले लेपों में ॥	१६०	६
फ़सल तिहत्तरवीं		
अंडकोष और इन्द्री के रोगों को दूर करने वाले लेपों में	१६२	३
फ़सल चौहत्तरवीं		
भग के रोग दूर करने वाले लेपों में ॥	१६३	६
फ़सल पिचत्तरवीं		
शरीर के बाहरी फोड़े और सूजन के दूर करने के लेपों में	१६४	९
फ़सल छिहत्तरवीं		
चोट और गिर पड़ने की चोट के दूर करने के लेपों में	१६५	१०
फ़सल सतत्तरवीं		
पृथक २ लेपों में	१६६	७
फ़सल अठत्तरवीं		
मस्तक से गरदन तांई के रोग दूर करने वाले तिलाओं में ॥	१६७	२१
फ़सल उनासीवीं		
बदन के तनूर के रोगों को गुण करने वाले तिलाओं में	१७०	२५
फ़सल अस्सीवीं		
अंडकोष और इन्द्री और जांघ की जड़ के रोगों के दूर करने वाले तिलाओं में ॥	१७२	७
फ़सल इक्यासीवीं		
गुदा के रोग दूर करने वाले तिलाओं में ॥	१७४	२५
फ़सल बयासीवीं		
हाथ पांव और जोड़ों के रोग दूर करने वाले तिलाओं	१७५	२७

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आपाय	पृष्ट	पंक्ति
फ़सल तिरासीवीं		
— सूर्य कोढ़ और छीप और त्वचा के दूसरे रोगों को दूर करने के तिलाओं में ॥	१७६	२५
फ़सल चौरासीवीं		
खुजली और दाद दूर करने वाले तिलाओं में ॥	१७९	१३
फ़सल पिचासीवीं		
कामदेव और इन्द्री के प्रबल करने और स्थंभन करने और स्त्री आदि का चित्त प्रसन्न करने के तिलाओं में ॥	१८०	१५
फ़सल छियासीवीं		
बालों के तिलाओं में ॥	१८२	१
फ़सल सतासीवीं		
ओसाथ और फुनसी और चोट और चोट लग जाने आदि के दूर करने वाले तिलाओं में ॥	१८३	४
फ़सल अठासीवीं		
दोषों के साफ करने और मादिल करने के अर्कों	१८४	१९
फ़सल नवासीवीं		
चित्त प्रसन्न करने वाले और ताकत बढ़ाने वाले और रोग दूर करने वाले तिलाओं में ॥	१८५	२२
फ़सल नव्वेवीं		
उजून अर्थात् आगीना में ॥	१८७	२३
फ़सल दक्याणवीं		
ग़रग़रे के नुसखों में ॥	१८८	१३
फ़सल बाणवीं		

For Private and Personal Use Only

आध्याय	पृष्ठ	पंक्ति
गुमरह अर्थात् उबटने और गालिये अर्थात सुंघनीयोमें ॥	१९१	२
फ़सल तिरानावीं		
फतील जात अर्थात बात्तियों में ॥	१९२	१
फ़सल चोरानावीं		
फुरज़जों में अर्थात् योनि की वातियों में ॥	१९३	१३
फ़सल पिच्यानावीं		
कुर्स अर्थात टिकिया मस्तक पीडा और ज्वर खांसी आदि मनुष्यों के रोगों के दूर करने में ॥	१९५	१८
फ़सल छियानावीं		
जो ज्वर और खुराकी आजारों के रोगों को गुण करने के कुर्सों में ॥	१९७	१८
फ़सल सत्तानावीं		
इन्द्री के रोगों को दूर करने के कुर्सों में ॥	१९८	२४
फ़सल अठ्ठानावीं		
कुस्ती अर्थात मांस रोगन में ॥	२००	१०
फ़सल निनन्यानावीं		
क़तूर अर्थात् कान में टपकाने की दवा में ॥	२०१	१८
फ़सल १०० सोवीं		
कुह्ल अर्थात सुर्मे में ॥	२०२	१८
फ़सल एकसोएकवीं		१२
काज़ल और धुर्रो अर्थात रिमडों में ॥	२०४	
फ़सल एकसोदोवीं		
कमाद अर्थात् सेंक में ॥	२०६	१
फ़सल एकसोतीनवीं		

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आशय	पृष्ट	पंक्ति
क़बूस अर्थात् लपटी में	२०६	२४
फ़सल एक सो चारवीं		
गुलकंद के वर्णन में ॥	२०७	१३
फ़सल एक सो पांचवीं		
लखलखा में ॥	२०८	२३
फ़सल एक सो छैवीं		
लतूख़ अर्थात् लंथडने में ॥	२०९	१०
फ़सल एक सो सातवीं		
लऊक़ अर्थात् चटनी में ॥	२१०	१
फ़सल एक सो आठवीं		
लबूब अर्थात् अवलेह और लोंज़ अर्थात् कातली	२१२	६
फ़सल एक सो नोवीं		
मायुल लहम में अर्थात् मान्स के पानी में ॥	२१४	१
फ़सल एक सो दसवीं		
माबुश्शईर अर्थात् जौ का घाट और मायुल अस़ल अर्थात् जंडों का पानी ॥	२१५	२०
फ़सल एक सो ग्यारहवीं		
मुक़ैयात अर्थात वमनादिकों में ॥	२१७	१२
फ़सल एक सो बारहवीं		
मज़मज़ह अर्थात् कुल्ली में ॥	२१८	१
फ़सल एक सो तेरहवीं		
मतबूख़ात अर्थात् उदर - आंतों - कलेज़ा - तापतिल्ली - और जलंधर के रोगों को दूर करने वाले काढों में ॥	२२०	७

For Private and Personal Use Only

अध्याय	पृष्ठ	पंक्ति
फ़सल एक सो चौदहवीं		
पेड़ और नरों के रोगों को दूर करने के काढ़ों में ॥	२२१	२२
फ़सल एक सो पंद्रहवीं		
मतबूखात मुदिरहेज़ में अर्थात स्त्री धर्म होने वाले काढ़ों में ॥	२२२	१७
फ़सल एक सो सोल्हवीं		
मतबूखात दाफ़ह औजा अर्थात् जोड़ों की पीड़ा के दूर करने वाले काढ़ों में ॥	२२३	५
फ़सल एक सो सत्रहवीं		
मतबूखात दाफ़ेह हमैयात अर्थात् ज्वरादिक दूर करने के काढ़ों में ॥	२२४	
फ़सल एक सो अठारहवीं		
मतबूखात मुतफर्कात अर्थात् पृथक २ काढ़ों में ॥	२२६	१२
फ़सल एक सो उन्नीसवीं		
मुरब्बों में ॥	२२७	१४
फ़सल एक सो वीसवीं		
मरहमों में ॥	२२८	१६
फ़सल एक सो इक्कीसवीं		
खास मरहमों में ॥	२३२	२५
फ़सल एक सो बाईसवीं		
माजूनात अर्थात पाकादिक जो सब प्रकार के रोगों को प्रबल करने और जोड़ों को प्रबल करने में हैं ॥	२३७	१०
फ़सल एक सो तेईसवीं		
माजूनात – जो कलेजा और पेड़ और नर और	२४४	२३

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आशय	पृष्ठ	पंक्ति
पांव की उंगलीओं की पीडाओं को गुण दाता पाकों में ॥		
फ़सल एकसौ चौबीसवीं		
माजूनात - मुकव्वी - मुवही - मुगल्लि ज़मनी - अर्थात ताकत देने वि त प्रसन्न करने वाले और वीर्य्य को गाढो करने वाले पाकों में ॥	२४७	९
फ़सल एकसौ पच्चीसवीं		
मुफर्रहात में अर्थात चित्त को प्रसन्न करने वाली दवाओं में ॥	२५१	१६
फ़सल एकसौ छब्बीसवीं		
नवीज अर्थात् नवीज - खुम्मा अर्थात् कुहारों में	२५४	४
फ़सल एकसौ सत्ताईसवीं		
नतूलात अर्थात् तरेडों में ॥	२५५	४
फ़सल एकसौ अठ्ठाईसवीं		
नफ़ूखात अर्थात् नाक में फूंकने की दवाओं में	२५६	१९
फ़सल एकसौ उन्तीसवीं		
नकूआत अर्थात् खिसांदों में ॥	२५८	५
फ़सल एकसौ तीसवीं		
वजूर अर्थात् कंठ में टपकाने की दवाओं में ॥	२५९	९
फ़सल एकसौ इकत्तीसवीं		
याकूती में ॥	२६०	१०
फ़सल दूसरी		
बर्फ़स्साअ़त्ता में ॥	२६५	२३

॥ इति ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भूमिका

यह बात प्रत्यक्ष है कि [तनदुरुस्ती हज़ार नियामत]अर्थात निरोग्यता ही जीवन मूल्य है और देह की रक्षा सब पर उचित है - उस्के उपाय वैद्यक विद्या में बिस्तार पूर्वक लिखे हैं - परंतु आज कल के समय में तीन प्रकार की वैद्यक विद्या प्रचलित हैं - १ वैद्यक - २ यूनानी - व ३ डाक्टरी - बहुधा हमारे स्वदेशी भाइयों की रुचि जो केवल हिन्दी भाषा जानते हैं यूनानी रीति पर वैद्यक सीखने की रुचि अत्यंत पाई जाती है - इसी कारण से बहुत सी तिब्ब की किताबों का उल्था हिन्दी भाषा में हो कर छापा गया - परंतु आज तक ऐसी पुस्तक का उल्था देखने में नहीं आया जिस्में मिली हुई औषधियों के बनाने की पूरी पूरी क्रिया लिखी हो - और उस्के साथ ही जिन जिन रोगों को लाभ दायक हो रीति पूर्वक वर्णन हो -।। जो कि उर्दू भाषा में करावादीन अहसानी जिस्को मीर अहसान अली ने बहुत श्रम से बनाया था और उस्से हजारों मनुष्यों को फ़ायदा पहुंचा - और उस्में मिश्रत औषधियों की तरतीब बहुत अच्छी है - इसी कारण से लाला श्याम लाल ने बहुत सा द्रव्य व्यय करके हिन्दी भाषा में उल्था कराकर छपवाया - यह सर्व - वैद्य - हकीम - अत्तार - अमीर - रईस - राजा - महाराजा - ज़मींदार - इत्यादि अर्थात गरीब व दौलत मन्द सब को फायदेमन्द है - आगे जो हिन्दी पढ़े हुए अत्तार तथा पंसारी जिन को बहुधा मिश्रत औषधियों के बेचने की इच्छा हो उन्को

For Private and Personal Use Only

आवश्यक है कि - इस पुस्तक की क्रिया के अनुसार ठीक २ दवाइयाँ बना कर बेचें - जिस्से उन्की दूकान को अत्यंत मुनाफ़ा पहुँचे और रोगी शीघ्र आराम पाकर आशीर्वाद देवें ॥

प्रार्थना

और इस पुस्तक पर अपनी मुहर प्रानारक्त के लिये कर दीनी है - जिस पुस्तक पर हमारी मुहर नहो वह चोरी की पुस्तक जानना चाहिये ॥

द० श्यामलाल के ॥

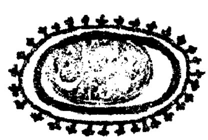

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तरजुमा

क़राबादीन अहसानी

भाषा

जिस को लाला श्यामलाल ताजर
कुतुबने अपना द्रव्य व्यय करके गुसां
ई आनन्दलाल मथुरा वासी से बोली
भाषा में उल्था कराकर

स्थान मथुरा

मुन्शी कन्हैयालाल व बन्शीधर स-
म्पादिकों के प्रबंध से मुम्बैउलउलूम
नाम निज शिला यंत्र में छापा गया ॥

माह नवम्बर सन् १८८२ ई०

पहलीबार १००० मोल्य १)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥श्री गणेशायनमः॥

करावादीन अहसानी लिख्यते॥

मुकदमह मश्रा ऊपर तीन॥

फसलों के

अर्थात इसस्थान की आदि में तीन॥
फसलें हैं

पहली फसल

जरूरती औषधी यों की क्रिया और दुरुस्ती चारों हालें में ईश्वर नें ऐसी जिद वनाई है कै गरमी के संग खुश्की और तरी के संग सरदी इषट्ठी नहीं होसकती और इन चारों का एक २ वल प्राप्त कीया है गरमी और खुश्की में करता और तरी और सरदी में कर्म इन दोनों पराक्रमों के विना किसी एक का वल मालूम नहींहोसकता अर्थात जव ताईं कर्म मौजूद न होंय तव ताईं करता की क्रिया किस की सहायता से जाहिर होसके इस कारण से निश्चै होता है कें औषधी में दो हालतें मौजूद हैं गरमी के संग तरी तथा खुश्की के संग

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरदी साथ तरी के तथा खुश्की के और औखधी का
म में लाने से इन चारों हालतों में चार दरजा निकल।
ते हैं और जो किसी हालता का असर काम में लाने से
मालूम नहैं परंतु अति काम में लाने सें मालूम होय तो
जानें के यह प्रथम दरजा की औषधी है और प्रतक्ष।
तो हो परंतु कोई काम मे औगुण न करें तो जान लेना
यह दूसरे दरजा की है और औगुण तो करे परंतु मोत
को प्राप्त न करें तो जानें कै वह तीसरे दरजा की है और।
जो औषधी मोत प्राप्त करें तो वोह चोथे दरजा की जान
नी निदान यह वी निश्चे कर कें सावूत हो गई के प्रति
औषधी में किसी दर जे का हो दो हालतें मोजूद हैं।
और वुद्धमान मनुष्यों की वुद्धमानी सें यह साव है कि
प्रति रोग उस्के वर खिलाफ दवा से दूर होता है जो रोग
गरम तर हो तो सरद खुश्क दवा से जाय और जो रोग
सरदी खुश्की का हो तो गरम तर दवा से दूर हो निदान
यह वात उचित है के एक रोग एक ही औषध सें दूर हु
आ करे परंतु औषधी यों का मिश्रित करना केई का
रण कर के जरूर पड़ता है एक तो यह के जिस एक ही
दवा से आरम हो वह प्राप्त न हो और दूसरें यह के दवा।
की सुगंधी और स्वाद की तेजी को कम करना तथा दूर
करना जरूर हो तीसरें दवा की सुगंधी और स्वाद वद।
लना चोथें दवा का वल कम जादे करना जरूर पड़े पां
चमें दवा को तेज तथा सुस्त करना हो छटे खास जोड़ों
में दवा का असर प्रेप्त करना दूसरी और औषधी मि।
लाये विना प्राप्त न हो सात में वोह के जोड़ों में के ई रोग

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हों और प्रतिजोड् के ली ये वेसी ही औषधी इषटीक।
रनीजरूरहीं आठवें रोगही वो हुत हो और हर रोग के
लीये एक औषधी में कैई औषधी मिलानीपडें नमें व
हुतदिन ताई वलदवाई का बना रषनें को इस में सहज क्रि
यासे काम आवे ॥

॥दूसरीफसल॥

वहु क्वन औषधीयों केजारी करने की आदि में॥सफू
फ अर्थात चूरन और फंकी सब क्रियाओं सें यह प्रथम।
क्रियाहै हकीम देफोरी दूस नेकिता वुस्तान इस प्रकारसे
वरनन कीयाहै के अस्कलीनूस के शिष्य वुकरातने।
प्रथम इसे वनाया है यह वोह पिछ ला वुकरातनहींहैं
जो सिकंदर वादशाह के समय में नामी हुआहै पश्चा।
त औषधीयों को जेसें जेसें काम में लाते गये तेसें तेसें।
प्रथक २ नाम पडते गये जेसें वत्ती। वुर्कनी। फूंकनी त
था कर्मो के अनुसार जेसहदीकलाने षाली औषधी औ
रपरसरामवैद्यकीवनईहुई सर्वसंग्रह की पुस्तक मेंलि।
षाहै के उत्तरा षंड में एक हंसराज नामी वैद्य पैदाहुआ
था उस नें हिंदुस्तान में चूरन वनाया था उस्से पीछेएक
जगर नाथ नामी कसमीर के मुल्क में पेदा हुआ उसनें
धातादिक भस्म कर के चूरन बनाया।।हब्ब॥अर्थात गो
ली॥ किताबुस्तात में लिषाहै के गोलीयोंके वनानेवालों
के वहुत से नाम हैं वाजोंनें सोलोन दादा मादरी अफला
तून को लिषा है और वाजोंनें लुकमान को और वाजों
नें उस्के शिस जामा सव को लिषा है ॥ प्रथम तर और ता
जा वस्तुओंसें छोटी और गोल २ वन तीथी पीछें और

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्रियाओंसे और २ रूपों में बनामें लगी जेगोले और
लंबी गोली। तिबूंटी जैसे २ समय आता गया तेसा २ ब
नाया गया और हिंदी पुस्तकों को लिखा के धनवन्त वै
द्यनें जो के प्रथम में मिस्रानी वैद्य हुए थे उनोंनें प्रथम।
में पारे की गोली बनाई और उस्का नाम गुटका धरा उ
स्सें विशेष प्राप्त हुए उस्सें पीछें और वस्तुओं की गोली
यां बनाई॥ माजून॥ प्रथम माजून को सुकरात नें बनाई
यह किताबुल स्जाल में लिखा है परंतु बाजोंनें लिखा है।
के इस्को दबूजालस नें बनाया प्रथम चूरन को सहत में मि
ला के बनाया था पश्चात और २ क्रियाओंसें बनाई गई।
और उन की चाशनी और प्रकृती के कारण से उन के प्र।
थक २ नाम हैं। जिसें खमीरा॥ मुफर्रह॥ चटनी॥ नामी हो
ते गए और सर्वसंग्रह की पुस्तक में लिखा है के हिंदुस्तान
में धनंतर वैद्य नें माजून को बनाया उस ने गोली की सी चा
शनी कडी बनाई थी॥ शरबत बहुत से मनुष्य यह कह
ते हैं के सरबत को फीसा गोरस नामी नें बनाया परंतु शेख
रईस बूअली नें लिखा है फीसा गोरस में तो फकत सिकं
जबी बनाई थी वतलम्युस नें सरबत को बनाया था प्र।
थम में अनेक औषधी का रस निचोड के मिठाई के संग
चाशनी बनाई पीछें सूखी दवा के काडे से बनाने लगे॥
और धरम पाल नामी वैद्य भदावल के नें उसे सात प्रका
र का काडा बनाया उस नें शरबत भी बनाया परंतु उस की
काडे में हीरवा कोई प्रथक नाम उस का न रषा यह तिक
स्था मुन की पुस्तक में लिखा है॥ मरहम॥ इस्को प्रथम।
यूनान के हकीम बुकरात नें बनाया उस नें अपनी पुस्त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कों में लिषा है के मरहम का वल वहुत दिना ताईं वाकी र
हता है जिस्में जैतून का तेल मिला हो उस्का वलभी नहीं
जाता और जिस्में अत्यंत गोंद हो उस्में वीस वर्ष परियंत
पराक्रम रहता है और जिस्में चरबी मिली हो उस्का वल
एक वर्ष ताईं रहता है॥ रोग्न ताईं॥ अर्थात सुर्मा नेत्रों में
जोत का वढानें वाला सव से प्रथम तो सकलीया के वा
दशाह अरस तंदूत के ताईं हकीम फीसा गोरस नें वना
या था॥ वरूद॥ उस्को प्रथम तो समये के वादशाह की
नेत्रों के जल दूर करने के ताईं ठंडी वस्तु और हकीम स
कीयानूस नें तैयार कीया उस्से पीछे और २ मुनासिव
वस्तु भी मिलनें लगी॥

॥ फसल तीसरी

खास इसी पुस्तक की तोल के प्रकर्ण में॥ गुण॥ केई
औषधी मिली हुई के नुसखा में उस्की प्रकृती अस्था
पत करना योग्य है अर्थात प्रत्येक वस्तु जो प्रथक २
हैं मिल कर किसी एक दरजा पर ठहराई जाय और
जिन २ रोगों के कारण वह मिलाई जाय सव की प्रकृ
त मिला लीजावे परंतु यह सव वातें उस समय हाथ
लगती हैं के जिस समय असल वस्तु गिनती और तो
ल कम जादा न हो और जो कोई वस्तु नापेद हो तो उस
के वदले दूसरी वस्तु मिला लीजाय हरद वा की अस
ली तोल रहना उचित नहीं असली हालत नहीं रह स
कती निदान इसी कारण से नुसखों में अजान लवजों
में तोलों के नाम हैं जैसे ओकीया॥ अस्तार। पुल। वंदका।
तरमसा जोजा। दांक। शुकरजा। तसवज। मिस्काल॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और
।दिरम।दांग।आदि के लिषा है और अगले समय के
अव के हकीमों की तोल में भी फरक है वल्क हरजगह
के तोले आदिक तोल प्रथक२ होती है तव मिले हुए नु
सखा की प्रकृती पर क्यों कर भरोसा करें याही कारण
से उस्का असर जाता रहता है इसलीये पहली तोल को
ठीक और वरावर कर के इस पुस्तक में मोरे वार नीचे
लिषा है कि॥मासा आठ रत्ती का और तोला वारह मासे
का और रतल चालीस तोले का और सेर अस्सी तोले
का और मन चालीस सेर का होता है।॥गुण॥ प्रघट होय
के वहुधा इस पुस्तक में अगले समय के हकीमों के नुस
खा भी लिषे गए हैं जो किसी दूसरी पुस्तक के सनमुष
प्रथक पाई जाय तो उस्का यह प्रयोजन है के प्रथम तो
करावादीनों के नुसखाओं को इषट्टा कर के उनकी कि
याओं को देषै तो उनकी मरोर और अतप्रत होने के प्र
ताप कर के विशेष क्रिया और प्रथकता पाई गई उनमें
से थोडी सी क्रिया जो सुद्ध समझ में आई और जिनकी
प्रतभी सुद्ध लिषी थी॥दूसरे जहां प्रथक वचन दृष्टी में
आये तो उन में से एक के वचन को समझ और सोचक
र तथा अजमा कर कवूल कीया॥तीसरे पहले तोलों
को समझ कर उन सव तोलों को जिन का ऊपर वरनन
कर आये थे वदल दीये हैं॥चोथे जो वह दवा प्राप्त न हो
तथा थोडी प्राप्त हो अथवा वहुत घघट न हो तथा प्रा
प्त तो हो पहचानने में न आवे उस्के वदले लिषा है तथा
किसी दूसरी वस्तु की दूतनी तोल कर दी गई के उस्की
कुछ दरकार नहीं॥गुण॥ और जानकार नुसखा जिन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में वाजठ क वस्तु नहीप्राप्तहो और थोडी वनानेका को
ई विचारनहुआ उनको इसपुस्तक में लिषनाउचित
नजानाजेसे। तिरीपाक। फारूक। लवूव। कवीर। क
लकलांज। जिसेचाहहो वह पहलीकरावादीनोंमें
देषले। ।गुण। ।जो नुसखा पांचरोगों को गुणलिषाहै
उस्का प्रयोजन यहनहीहें केजवसवरोगइकठेहोत
वहीकाममेंलावे उसमेंसेजोरोगहो उसमेंहीदेनाउ
चितहै। ।गुण। । वहुधा नुसखों मेंमात्रा कीतोलयाके
रणसेनहीलिषी के वैद्यरोगोका हालदेषकर आपत
जवीजकरलेगा। ।गुण। । जिसक्रियामें। हड। वहेडा।
आमला। लिषा है वहांपर यह प्रयोजन नही केगुठ
ली निकाल कर उनकी तोल करै औरजहांपर नि
रीहड लिषीहो तो जानें वडीहड है औरहलेलजात
होतो तीनों हड जाननी अर्थात वडीहड। जवाहडा। का
लीहड। तीनोंहडोंको मिलाके और वस्तो को उनकी
वरावर ले और त्रिफला अर्थात हड। वहेडा। आमले
इन तीनों सें प्रत्येककी तोल वरावर हो। ।गुण। । जिस
क्रियामें मुवजि लिषीहै उस्का प्रयोजन वीज निकाल
ने सेहै। ।गुण। । चूरनमें सोंठ को मेदा सी घोट कर ले औ
र क्रियाओं में गट्टी की सोंठ ले। ।गुण। । रंवंद मुतलक से
प्रयोजन रेवनचीनी सेहै। ।गुण। । वहमनेन का प्रयोजन
वहमन लाल और वहमन सपेद सेहै और तोदरीनका
प्रयोजन तोदरी पीली और सुपेद और लाल तोदरी सेहै
और मूसलेन का प्रयोजन काली मूसली सुपेद मूसली
सेहै और काक लेन का प्रयोजन छोटी वडी इलायचीसे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है॥ औरफिलफिलेनप्रयोजन॥पीपलमिर्चसेहै॥
औरसंदलेनप्रयोजन सुपेद चंदन औररक्तचंदन
सेहैकेयहप्रत्येकलिषीतोलकेतुल्यहो॥गुण॥ज्ञा
क्रियामेंसहतहैतोवहांझागलीयेहुवेसहतसेप्रयो
जनहै इसक्रियासे सहतको प्रथम अग्निपरधरै
जबवामेंसेझागउठे तबकपडामें छानले औरगर
मागरम मेंदवाई मिलावै औरक्रियामेंबूरा औरसह
तदोनोंहोंतोसहतबूरामिलाके थोडासापानीडाल
के आंचपरधरैजबबूराघुलजायतब औरसहत मेंझा
गउठेंतबकपडामेंछानके चाश्नी करके औषधीमि
लावै॥गुण॥ज्ञाकाथ औरयूषकीक्रियामेंअकासबे
लकेबीज औरतथा अमरबेलहो उनको कपडाकीपो
टलीमेंबांधकेकाडा तथा यूषकरके बिनागलनेकेनि
चोडले॥गुण॥हमूबजन॥मुसाबीपुलबजनप्रयोजन
सबदवाबराबरहों औरदुर्चंदासबसुदूनीसेप्रयोजन
है औरइसीप्रकारसे चंदा आदिहै॥गुण॥ औरजीरेसु
दबरकीयहक्रियाहैके कालेजीरेको सिरका मेंभिजो
वै औरफिर निकाल के सुषावै याभांततीनबेरकरै॥
॥गुण॥ औरबूरादहकीयहक्रियाहै के२॥को बडेक
डछामें धरके आंचपरधरै जबभुनेकीसुगंध आनेल
गे औररंगबदलजाय तबप्रथककरले॥गुण॥तस
कीया अर्थात पुट यहहै के सूषीदवाको जो कुटकरके
किसीवस्तुकेरसमें भिजोके सुषावै याप्रकारतीनबेर
कियेबिना पूरापुटनहीहोताहै॥गुण॥ शीरपिसर सेय
हप्रयोजनहै कै इस्त्रीनेटकीमाहो औरउसेदुग्धपान

For Private and Personal Use Only

करातीहोइसी प्रकारशीरदुखनर अर्थात वेटीकीमाहो॥ ॥गुण॥ गिलहिकमन अर्थात कपरोटी की यहक्रियाहै के एक कोरा कूडामें दवा रखें वाके ऊपरएकसकोराधरकेचू न सेवाको मुह वंदकरै और कपडाभिजोके वापरलपेटै और माटी लपेटके ठहरे समय नाई उसे आंचमें रखे॥गुण और जो अर्क षें वना हो तो दवामें दरयाका पानी डालना उ त्तम है और सव औषधी में कूआको मीठेपानी डालना उ चित है परंतु हुकनामें षारी कूआकोपानीडालना उत्तम है॥ मिकालह अव्वल व्यान अमूर कुलीये मुतलकहअ रवीये॥ अर्थात प्रथम षंड औषधीयोंसे लगेहुये सव क र्मोके प्रकर्णमें॥

फसलपहली

औषधी के धरण करने और उनको वल की समय वांधने के प्रकर्णमें उत्तम विधी तो यह है के जा अस्थान कीजो अ च्छी औषधी होती हों वहीं की काम में लावे और इन कर्मो को निघंट स समझ ले तथा वुद्धमंन और देशाटनी मनु ष्यों के मुष से उच्चारण करा ले और औषधीनर अर्थ न तथा अत गरम तथा अत सीतल और अतहवादा र और धूरमाटी के अस्थान में धरने से उसका वल जा ता रहता है और विगडजाती है और वुरी होजाती है अव प्रगट होय के औषधी के तीन भेद हैं॥ धातादिक काष्टादिक और जीवजंतु आदले के अथ वाइमीती न भेदों से उत्पत होती है॥ जमादात॥ अर्थात धाता दिक वोह वस्तु होती हैं जिनका न तो पेड है और उनमें जान है उनके लेने का कोई समयनही और उन कीयह

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चानदेषनेसेंनहीहोतीके यह कोंन से समय यह अपने अ
स्थान से लेगई है परंतु जो मांदिल और वसंत में अपने
अस्थानसे लीगई हे तो उत्तम हे और जो औषधी केउ
मजाने में और गाडेपन में प्रत्येक की कांति और रंगरू
प वेसाई वना रहे तो यह उन का उत्तम पना हे और प
तली और नरम हो और उसें कोई दूसरी वस्तनमिलाई
जाय उस्का वल तो कभीनजाय परंतु वुरी हो जाती हें
और विगड जाती हें और अत्यंत पुरानी होने से निर
वल होजाती है॥नवातात॥अर्थात काष्टादिक वहु
त वस्तु हें के जिन के पेड उपजते हें उन के भी दो भेद
एकतो वह जिन के पेड वर्षेपरियंत रहते हें और जवपे
ड वढजाताहे तोहर सालनवीन पत्ता आते हें दूसरा ह
र वर्ष में साष पे पेदा होतीहे और वर्ष दिन से विशेष न
हीरहेतीहे परंतु कोई कारण करके थोडा वहुत रह
जाते हें और सव काष्टादिक घुन सडजातीहें और उन
का रंगरूप स्वाद वदलजाताहे और दुरगंध आने लगा
तीहै और जव पुरानी पडजातीहै तव काम में लाने के
योग्य नहीरहतीहै पहली किसमके पेडोंके पत्ता पतझ
डहोजानेपीछें जवनयेपत्ते आवें तव उनको लेना
उचितहै और कलीजव षिलनेलगे तव ले और ज
व पेडपर सेगिर पडे तवले और फल कच्चे और प
केदोंनोंले अपने समय काम आतीहे जेसें वमूरका
कच्चाफल लीयाजायहै क्योंपूरा वल उसीमें होताहै
और इमलीकापक्काफल लेनेहें कच्चा वुरा होता है
और वीजपक्केफलकालायाजाताहै और जासमय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पेड़ में नये पत्ते निकलने लगे वा समय उस्की लकड़ी ।
और जड और छाल लेना उचित है और पेडों से जो ह
र वर्ष वस्तु पेदा होती है जे पत्ता । कली । फूल । फल ।
और बीज उनका पूरा बल एक वर्ष परियंत रहता है
पश्चात कम होता है और उनने अच्छी प्रकार से रषे
तो काम में लाने के योग्य रहती हैं नहीं तो बिल्कुल बिग
ड़ जाते हैं परंतु जो क्रिया से रषे तो विशेष दिनो परियंत
बलवान रहती हैं जैसे मुरब्बा और गुलकंद के बने से ।
तथा और किसी क्रिया में डालने से और जा पेड में गोंद
पेदा है उस का पेड जा समय बढ़ता है सो सरदी की ऋतु
में अकसर करके उस्का बक्कल फट कर बाहिर को गों
द दूध हो जाता है और जा पेड में मोटा बक्कल हो उस्में छे
द कर देने से भी गोंद निकलता है और दूध एक सुपेद रं
ग की तरी है के वा जे पेड की पतली डाली तोडो तथा उ
स्में छेद करो दूध वहने लगेगा उस्के रषने की भी केई वि
धि है एक तो यह के किसी वासन में दूध डाल कर के सु
षाले दूसरे कोई कपडा भिजो के सुषाले और समय
पर भिजो कर निचोड ले तीसरे दूध के पेड के बक्कल ।
को सूषे तथा हरे को औटा के और बहुत हिला के छा
न के सुषा ले ॥ गुण ॥ सूषने के पिछाड़ी जिस तर वस्तु
को भिजोवे और बहुचेपदार और काला तथा लाल ।
रंग का हो जावे सो गोंद और गार कहाते हैं और सुपेद
और धूंधले रंग का और वे चेप हो य उस्को दूध कहते
हैं और जब ताई उस्की रंगत और सुगंधी स्वाद न बद
ले तब ताई उस्का असल पराक्रम बना रहता है और

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दूसरे प्रकार के जो पेड अपने आप पेदा हों तथा वोंने
से पेदा होते हैं उनके पंचांग का वल के वल एक वर्ष
परियंत रहता है पीछे निरवल पड जाता है परंतु उज
चलाई उस्की सुगंधादिक वदले नहीं और वह सब उग
ले नहीं तव ताई काम में लाने के योग्य है और अव पे
ड फले फूले तव उस्के पत्ते लेना उचित है और कली
फूल फल और वीजों को समय के ऊपर ले अर्थात
जो समा पहले प्रकार के पेडों का है वह इन के लेने का
जाने और जव पेड फूल फल के सूष जाय तव की जड
छिलका लकडी और उस्का वक्कल लेना उचित है।
॥गुण॥ जो समा वस्तु के लेने का लिषा है उस्का यह प्र
योजन है के वा समय उस्में पूरा वल होता है यह वात
पहले तथा पीछे के लेने से काम में लाने के योग्य नहीं है
॥हैवानात अर्थात जीवादि औषधी में तीन प्रकार से
काम में लाये जाते हैं एक तो सव अंग उन का जेसे वीवु
हट्टी और कें चूवे। दूसरे के पुठे दूर कर के जेसे रेगमा
ही और कें गडा॥ तीसरे जीवों का कोई २ जो काम आ
ता है जेसे मच्छली का पित्ता और आस वच। जाना चाहि
ये के तरुण और वलवान जीवों का भाव काम आता
है और हरेक जीव के तरुणता की परीक्षा घयक २ लक्ष
णों से होती है या कोई पुस्तक में उन के प्रतक्ष होने का
समा व कहा और उन का तेज चाल तरुणता और पर
क्रम और मोटे दुवलेपन से उन का वल मालूम होता
है और हर जीव का सव का सव तथा थोडा सा उस्का भा
ग लेना होतो उस्की तरुणता में ले और उस्के सुषाने

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की और रखने की बहुत सी रक्षा रखनी चाहिये के सड न जाय और कीडा न पड जाय और रज यतांई उसका रंग रूप सुगंधी और स्वाद बदल न जाय तब तांई काम में लाने के योग्य है ॥

फसल दूसरी

एक तो औषधी बनाने की विधि में और उस्की पाकी ज़री तथा बलवान रहने और असर तेजी रहने के प्रयोजन में ॥ रुब ॥ ताजा जड तथा लकडी को पानी में पीस के छान ले वा पानी को आंच में औटा वे जब गाडा हो जाय तब धूप में सुषा ले और जड तथा लकडी सूषी हो तो उसे जो कुट कर के पानी में औटा के और मसल के छान ले फिर पका वे जब गाडा हो जावे तब सुषा ले और फूलों का रुब या प्रकार बनाया जाता है के उन का रस निचोड के सुषा लेते हैं ॥ असारह ॥ अर्थात ॥ रस निचोड । के वल हरे पत्ता और फल फूल लकडी जड इनका बन सकता है उस को कुचल के पानी निचोड के धूप में सुषा ले ॥ सत्ता ॥ के वल लकडी और जड का बनता है जो गीली हो तो उसे कुचले और जो सूषी हो तो उसे पानी में भिजो के कुचल के खूब जोर से हाथों से मीडे के कपडा में छान के वा पानी को कोई बासन में रक्वे जब नितर जाय और गाद नीचे बैठ जाय तब बाती लगा के टपका के पानी को दूर कर दे और उसे धूप में सुषा ले ॥ षार ॥ अर्थात नोंन और हर वस्तु के षार निकाल ने की यह विधि है के उसको जला के वा की थोडी सी थोडे से पानी में दो तीन पहर तांई भिजो राषे पीछे एक गाडो सो कपडा ले के वा के चारों कोंनों को प्रथक २ बांध के वा के

For Private and Personal Use Only

नीचें एक वासन धरै वा भस्म पर पानी डालै तो षार नीचें
टपक आवैगा वा पानी को फिर भस्म पर डालै इसी प्रका
र दो तीन वार टपका कर पानी को एक देगची में भर के आ
च पर चढावे जब एक उफान आ जाय तब ठंडा करै पो
डी सी भस्म नीचें बैठ जायगी वा को दूर कर के पानी को ज
ला दे तो षार नोंन के तुल्य जम जायगा ॥ धूंआ ॥ या को
काजल भी कहे हैं इस के बनाने की तीन बिधि हैं एक तो य
ह के केवल दवा को पवन से बचा के जला ले और वा के धूं
आँ पर कच्ची पारी धरे जितना धूआँ वा में लिपट जाय ति
तना प्रथक कर ले ॥ दूसरी विधि यह है के सूषी दवा को चूर
न कर के कपडा में बाती के प्रकार लपेट के दीये में धर के वा
में तेल भर के जलावै और काजर पाड ले ॥ तीसरे सूषी दवा
को पानी में पीस के तथा गीली दवा को रस निचोड के वा रस
में कपडा भिजो के सुषावे और बाती बना के दूसरी बिधि की
क्रिया से काजल पाड ले ॥ कोयला ॥ जा दवा को कोयला
बनानों हो वा को टूक टूक कर के कपरौटी चढा के भाड तथा
भूभल में जलावै जिस में वा को लों का धूंआं बाहर न निक
लने पावे ॥ खाक ॥ अर्थात भस्म जो कपरौटी कर के जला
वै के वा को धूंआ और लो बाहर न निकले और कोयला
भी न रहें और भस्म हो जाय तो उत्तम है और जो बिना कप
रोटी जलावे तो जा वस्तु को जलावे वा की भस्म जुदी करने
में चैन राषै ॥ रोगन ॥ अर्थात तेल बोध बीजों का तेल नि
कासने हैं वा की क्रिया तेलों के संग वरनन करेंगे

॥ फसल तीसरी ॥

अकेली औषधी को शुद्ध करने और वा बनाने के प्रकर्ण

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेंजाकारणसेवामें बलविशेषहोजाय श्रौरतुरंतगुणक
रनेलगे श्रौरनरमाई श्राजाय श्रौर श्रौगुणनकरै इकेसी
होनथाकोइक्रियामिलाईजाय श्रौरसवरी श्रौषधीऐसी
नहींहै के जिस्के शुद्धकियेविना कामनचले ॥ श्रथधाता
दिककासोधना श्रौर बनाना ॥ मुरवारीद ॥ श्रर्थातमोती
को गायके दूधमें श्रौटावे फिरपानीसे धोके खरलमें घोटे
सीफ श्रौर मूंगा श्रौरमूंगाकीजड को कपरोटीकरकेयाप्रकै
रसेश्रांचदे उनका रंगसुपेद होजाय॥ लाल। पाकूत। श्रौ
र पन्ना आदिको आंचमें गरमकर के पानी में बुझावै तो तु
रतपीसने में श्राजाय। चांदी। सोने। की घरिया श्रांचमें खू
व ताती करके एकवारसिरकामें एकवार पानी में भुजावै।
पी छे घिस के पानीमें बैठा वो नितार ले॥ फिटकिरी को लो
हे तथा तांवे के कडछा में श्रांच पर रक्खेजब पिगलसूख
जाय श्रथवा कपरोटी करके थोडीदेर श्रांचपर रक्खे ॥
॥ लोहे के मैलको॥ सात वार खूब गरम करके सिरका में
भुजावै फिरसात दिन सिरकामें डुवारहनेदे फिर वाको गा
य के घी में रांडक पानी में ओलदे ओक छू नीचे बैठजाय ता
य ले के सात वेर पानी से धोडाले॥ पारा चालीस वार गाडे क
परामें छान ले॥ वहरोजा॥ आधी हाडी पानी की भरके वा
के मुहपर भिर भिरी कपडा वांध के ऊपर वहरोजा रख के पा
रे से वंद करै श्रौर हाडी की श्रांच पर धरै जब वहरोजापानी
की गरमीपाकर टपककर हाडी में गिरजाय तव कपडा को मे
लस मेत दूर करदे श्रौर याही प्रकार पान्चार वेर करै जो चूर
न के योग्य हो जाय॥ गांधक॥ श्राधी हाडी में दूध गाय को भ
र के उस्के मुह पर भिर भिरो कपडा वांध के हाडी के किना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रोंपर चून सान के लगा दे और गंधक के टूक २ कर के
वा कपडा पर रक्खे और वा पर औंधा तवा या प्रकार २
कदे के गंधक से मिला रहे और कोयलों की आंच वा त
वे पर धरे तो गंधक पिगल के दूध में गिरे फिर गंधक की ले
के वा की तरी को दूर करे अर्थात दूसरे कपडा से पोंछ डा
ले॥ तूतीया॥ महीन पीस के पानी में टिकिया बना के आं
च पर सुषा ले अथवा तूतीया को पानी में घिस कर घोल
दे और वा की चके ले के सात वेर पानी से उजार ले॥ मुर
दार संग॥ अर्थात मुरदा सन को घोट के पानी में मिला
वे तीन दिन ताईं काईं वासन में धरा रहन दे और दि
न में दो तीन वार हला तो रहे फिर पानी को निकाल डा
ले और नीचे की की चड को पानी नये में मिला के रक्खे
तब कीच नीचे बैठ जाय जब पानी टपका के छान ले॥
॥ हरताल॥ हरताल के टूक २ कर के एक कुलडा में ध
र के सकोरा से वा के मोह पर चून लगा बंद करे और वा
सकोरा में एक छेद कर के मंदी आंच पर धरे जब ताईं
वा में से कालो धूंआं निकसै तब ताईं धरा रहने दे और
जब सुपेद धूंआं निकसने लगे तब उतार ले॥ संग सुर्मा
॥ संग सुर्मा को रुई में लपेट के जलावे जब धूंआं निक
लना बंद हो तब साफ कर ले अथवा बकरी की चरवी
में लपेट कर आंच पर रक्खे जब चरवी जल जा
य और सुर्मा लाल हो जाय तब निकाल के लडके की
मा के दूध में तथा गाय के दूध में भुजा ले अथवा घरल
कर के पानी में घोल के वा की गाद नीचे बैठ जाय तब
सुषा ले॥ नोंन॥ नोंन को एक देगची में धर के ढकना से

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

..द कर के आँच पर रक्खे जब ताईं वा को चटकनों बंद न हो ॥ सज्जी ॥ सज्जी के टूक २ कर के एक माटी के ठीकरा में धर के आँच पर धरे जब ताईं वा की रंगत न बदल जाय। तब ताईं न उतारे ॥ षपरिया ॥ षपरिया को आँच में गरम कर के कई वेर गुलाबजल तथा मठा अथवा अनार को रस तथा नीवू के रस में भुजावे तो सुद्ध होय ॥ चूना ॥ चूना और माटी के पानी में घोल के छान के रष ले जब वा की गाद बैठ जाय तब वा पानी को नितार के गाद को सुषा ले ॥ अथ काष्ठादिक की शोधन और क्रिया ॥ अफीम के टूक २ कर के पानी तथा गुलाबजल में चार पहर ताईं भिजो के आँच पर धरै और षूब मीड के घिल मिल हो जाय फिर छान के वा को मैल दूर कर के पानी को पका के गोली बांधने योग्य हो जाय और जो वा में आधी अंगूर की शराब डाल के पकावे तो अति नशीली और निरोग होजाय ॥ उत्तम अफीम वह होती है जो तुरत पानी में घुल जाय, आँच में मिल जाय और धूप में पिगल जाय और सुगंध विशेष देने लगे ॥ कुचला ॥ कुचला को तीन दिन ताईं पानी में भिजोवे और पानी को नित्य बदलता रहे पीछे गाय के दूध में औटा के और छील के चक्कू से वो हीतमहीन कतर के सुषाले ॥ एलुआ ॥ एलुआ को सेव तथा वीह तथा शलगम तथा गाजर में घोट के कपड़ा लपेट के चून लगा के आँच में डाल दे थोड़ी देर पीछें एलुआ ताईं गरमी प्राप्त होगी तब निकाल के सुषा ले ॥ भिलाये ॥ भिलाये के दो टूक कर के गरम कड छा तथा दो पत्थर के बीच दे दाबे जो शहत सो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निकलेता कों छुरी से पृथक कर ले और जो छिलका
सहित काम में ला वै तो तिल तथा अखरोट की मींगी ।
के संग कूट के और मिलावै ॥ और भांग कां धूर माटी ।
से पोंछ के दूब के रस अजवाइन के रस में मलके सुखाले
पीछें गाय के घी में मल के कोरे ठीकरा को आंच पर धर के
भूने परंतु जल नेन पावै ॥ निसोत ॥ निसोत को ऊपर से
छील डाले और भीतर से वा की मींगी निकाल डाले ॥ च
क सूषो पोटली में बांध के सोंफ तथा मूंग की दाल तथा
गधा की लीद में औटा के नस्का छिलका दूर कर ले ॥ ।
॥ कालादाना ॥ कालेदाने को कडछी में भर के आंच प
र धरै जब वा को रंग और सुगंधी बदल जाय ॥ जमालगो
टा ॥ जमालगोटा को एक पोटरी में बांध के प्रथम तो ग
धा की लीद में पानी डाल के औटावै पीछें दई में औटावै
फिर छील के दाल कर के वा के बीच में हरा सा है ताय ।
निकाल डाले तब काम में लावै ॥ तेल ॥ हर प्रकार के ते
ल को सीतल पानी में मिला के नितार ले ॥ माजूफल ॥
माजूफल को गाय के घी में भून ले जब षिल जाय और
जले नहीं तब उतार ले ॥ अंसल के दो भेद हैं एक तो गूदे
दार वह षाने के योग्य नहीं हैं दूसरा छिलके दार यह षा
ने के योग्य है चून को उसन के वा के ऊपर लपेट के भू ।
भल में गाड दे जब चून पक जाय और वह भीतर ही भी
तर सीज जाय तब चून को दूर के वा को काम लेवै ॥ गारीकूं
जा में तालूं कडे बीच में हो वह बुरा होता है वा को काम में न
लावै या कारण से के वा के निकाल ने की यह क्रिया है के
गारी कूं मल के गाडे तथा गजी के गाडे कपडा में छान के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तांतू दूर होजाय ॥ गोषरू ॥ गोषरू छोटे वडे दोनों गोष रू को गाय के ताजा दूध में भिजो के सुषा ले ॥ लाष ॥ लाष को पानी में औटावे जो नीचें वैठजाय ताय ले या भांत तीन वार करे और वा पानी को निकाल ता जा य ॥ हड ॥ काली हड को गाय के घी में तलें जव वे फूल जाय और लाल पडजाय ॥

॥ अथ जीवादिक की शोधन और क्रिया का प्रकर्ण

॥ अव रेशम ॥ रेशम को पोंछ के किसी वासन में भर के आँच पर धरै थोडीसी गरमी पा के कडा चूरन कर ने के योग्य होजाय ॥ वाल को ॥ सावन में धोके एक वा सन में भर के आँच पर धरे जव वा में से सुगंध आने ल गे परंतु जल ने न पावै ॥ अंडा के ॥ छिलका को दो दि न नोंन और पानी में भिजोवे और भीतर से मेल माफ करे सद पोंछ के कपरोटी कर के जलावे ॥ केकडा को पर वाजू दूर कर के कपरोटी चढा के भाड तथा भट्टी में इ तनी देर ताई धरे के सूष जाय और सुपेद पड जाय और घिसने के योग्य होजाय और जल के कोयला न हो जाय ॥ प्रघट हो ॥ के नर से मादा ह के कडा उत्तम होता है और उस्का यह लक्षण है के जो पीठ पर सुई चुवा वै जो सुपेद रुधिर निकले तो मादा है नहीं तो नर जानि ये ॥ वारहसींगा ॥ तथा और २ सींघों को कपरोटी में भस्म करना उचित है परंतु वाहरी चिकित्सा में जला ने से कुछ प्रयोजन नहीं है ॥ वीछू ॥ वीछी से वीछू उ त्तम होता है और वीछू के यह लक्षण हैं के वह वुवला

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पतला होता है उस्को इल नी आंच देके जल के कोयला न होजाय और जब भस्म करना चाहे तो उलनी आंच देजा से भस्म होजाय॥ मोम॥ मोम को पिगलाके नोंन मिले पानी में टपकावे और एक लकडी से मोम को और पा नी को हलाता जाय तो धूर माटी नीचे वेठ जायगी औ र मोम साफ ऊपर आजायगा और जो कोई वेर याप्र कार करे तो विशेष साफ होजायगा॥

फसल चोथी

रोसी दवाईयों के वनाने की क्रिया में जिन की असली हा लत तुर्त दूर होजाती है और भीजी दवा वनाने की विधि जो दवाई फल फूल और पत्ता की हो वा को वेसी की वेसी और जो लकडी और वीजों की हो वा को कुचल के गुन गु ने पानी में भिजो के वा को सीतल पानी से के तथा थोडा म सल के छान ले॥ अथ काडा वनाने की विधि॥ दवाई को भिजो के औटा वै जव थोडा सा पानी जल जाय तव उ स का नितरा पानी तथा थोडा मल के छान ले॥ अथ सी रा वनाने की विधि॥ दवाओं को पानी में पीस के छान ले और जो तेलीया वीजों का सीरा हो तो वा में चेत रषना उचित है के वा को तेल स्व फीन सो जाय और षुट्ट मींगी यों को केवल घिस ना ही उचित है॥ अथ अतर वनाने की विधि॥ दवा के ताजा पत्तों को घोट के पानी निचोड ले और एक प्याले में भर के आंच पर धरे जव गरम हो के फट जाय तव स्वाफी से पानी छान ले॥ अथ घीया को रस निकालने की विधि॥ छोटी लोकी पर कपडा गीलो लपेट के वा के ऊपर माटी लपेट के सुषावे भाड त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

याभूभलमें गाडै द जलने न पावै फिर निकालके कपरौ
टी दूर करके ठंडी क ने और स्वाफी से पानी निचोडले॥
॥अथ षीरा और न्ती और दूसरी वस्तों का रस नि
कालने की विधि॥ तोकी के प्रकार है॥ मायुल असू
ल की यह विधि है के दवाओं की जड जैसे का सनी और सो
फ कीजड को जोकुट कर के वीस गुने पानी में रात्री को भि
जो दे और प्रात काल के समय थोडी सी आंच में औटा
के जब चौथाई भाग को पानी रहे तब सीतल कर के गाडे
कपडा में छान ले और बोतल नया शीशी में भर के धरे
वामें से जितना चाहे उतना काम में लावे जब ताई वा की हा
लत न बदले तब ताई काम में लावे और जो नित्य नया ब
ना ले तो अति उत्तम है॥ और बीजों का अर्क॥ जडों की त
रह से निकाला जाता है॥ अथ मान्स के पानी बनाने
की विधि॥ जो के निरबल मनुष्य का अहार और दवा हैं
सो दो प्रकार से हैं॥ एक तो यह के केवल मान्स को इला
यची। धनियां और नोंन इन तीनों को मिला के पोटली बां
ध के औटावै जब मान्स घुल जाय तब वा पानी को घी से भ
गार ले या को आब यखनी कहते हैं॥ और दूसरा यह के
मान्स में मामूली मसाला मि ला के और नोंन मिला के प
कावै जब घुल जाय तब दही आद डाल के भूने जब भुने
की सुगंध आवै तब दो तीन गोश पानी डाल के दे के पानी
को काम में लावे॥ या को मुर्क और शोरो आ कहते हैं॥

फसल त्चवी

ऐसी दवाईयों के बनाने में जो वेशेष दिन ताई ठहरती है
॥अथ अनोशदारू बनाने की विधि॥ तरु ताजा औ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र पके आँमलों को तोल कर के पानी में पकावै और खू
व मसल के उन की गुठली निकाल डालै और फिर फि
रे कपड़ा में छान के तांतू निकस जाय तब गुठली और
तांतूओं को तोल के आँमलों की तोल मालूम कर ले
और गरमा गरम चाशनी में और दूसरी वस्तों का चूरन
मिलावै और जो सूखे आमले हों तो उन की गुठली दूर
कर के तोल कर ले आँमलों को धोडाले जो धूर माटी
से साफ हो जाय तब डुवान गाय के दूध में उन को भिजो
वै चार पहर पीछे और पानी डाल के औटावै जो आं
मलों का कसेलापन और दूध का गाड़ा पन निकल जा
य फिर दूसरे पानी में औटा के क्रिया की रीत से बना ले ॥
॥ अथ गुलकंद बनाने की विधि ॥ ताजे फूलों का जी
रा और सवजी दूर कर के और बूरा सुपेद तथा लाल अ
थवा मिश्री तथा कंद को चूरन कर के तथा शहत में म
ल के और मीठा फूलों के ढाई गुने ताई उत्तम है और चौ
गुने ताई डालते हैं सो विशेष मीठे से दवाई का बल घट जा
ता है और शहत में बनावै तो दस्तावर और मुवाद का फु
लाने वाला और जोडों की सफाई का करता हो जाता है ॥
और दो प्रकार होता है एक तो धूप का दूसरा पनीला ।
पहले में मुलायमियत विशेष होती है सो दूसरे में ठंडा
ई और तरी विशेष होती है ॥ और पहले किसम को तो
फूल और मिठाई को मिला के पंद्रह दिन ताई धूप में
रक्खे और वीच २ में दो तीन वेर थोड़ो २ मसलतो र
है ॥ और दूसरी प्रकार के में फूल और मीठे को मस
ल के एक वासन में भर के चौथाई वासन खाली रहे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ःनाडु

वासन को मोहबंद करके इक्कीस दिनं ताईं पानी में डुबा र
क्खे ॥ गुण ॥ और जो ताजा फूल न मिलें तो सूखे फूलों
को गुलाबजल तथा पानी में थोडी देर भीजा रक्खे फिर
मिठाई में मिला वै ॥ और मुरब्बा तो कै प्रकार से बनता
है या कारण उस्की क्रिया आगे लिखेंगे ॥ अथ मेवा के
रुब्ब बनाने की विधि ॥ रसीली मेवाओं को जेसे केला
और संगतरह और अनार इन के जीरे तथा दाने साफ
करके उस्के रस को मल के निचोड ले और रस से चौगु
ना मीठा मिला के पकावै जब खूब गाडा हो जाय तब रख
ले और मेवों के रस औटा के तथा ठंडा ही ले के बराबर का
मीठा मिला के गाडी चाशनी करले ॥ अथ नशीली म
ध के बनाने की विधि ॥ संगतरा आद रसदार मेवों
का रस निचोड के कपडा में छान के सत्रह वा भाग मी
ठा मिला के पकावै जब चौथाई भाग को रस जल जाय
तब वा को धूप में धरै जब वा में षटाई उठे तब काम में ला
वै इस में थोडा नशा होता है ॥ अथ रसदार मेवों के
सरबत बनाने की विधि ॥ मेवों का रस निकाल के दो
ई गुना मीठा मिला के चाशनी करले और पक्की चाश
नी के यह लक्षण हैं के एक दो बूंद चाशनी की पृथक क
र के उंगली से उठा वै जब वा में से लंबे २ दो तीन तार नि
कलें तब पक्की चाशनी जानें ॥ अथ सूखी वस्तु के स
रबत बनाने की विधि ॥ के दवाईयों को भिजो के औटा
वै जब तीसरे भाग को पानी रहे तब थोडा सा भीड के छा
न ले और मीठा मिला के चाशनी करले ॥ अथ उन मे
वों के शरबत बनाने की विधि ॥ जिन को रस निचोड

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ने सेभी नहीं फेके जाय॥ जो मेवा तर है जैसें आलू बुखा
रा और इमली तो उस्के सर्द पानी में मीठे मिला के चा
शनी करे और जो मीठी मेवा है जैसे उन्नाव और अंजी
र तो उन के काढे में मीठे मिला के चाशनी करे॥ अथ मा
जूम वनाने की विधि॥ जो सव वस्तु वा को चूरन के यो
ग्य हो तो चूरन कर के मिठाई की चाशनी में जो गरमा ग
रम हो वा में मिला वै॥ और कुछ औटा ने के योग्य हो
उन को प्रथम भिजो के औटा के फिर वा काढे में मिठा
ई मिला के चाशनी पका वै फिर वा में चूरन मिला वै॥
और जो दूधादिक मिला ने हों तो चाशनी में मिला के
एक जोश के पीछे दवा के चूरन को मिला के वना ले॥
॥ अथ इतरीफ ल॥ अर्थात अब लेह वना ने की बि
धि॥ हरड के चूरन को किसी चिकनाई में मकोय के भि
ला ले या से उस्का वल देर ताई रह ता है और चाशनी
भी नरम रहती है॥ खमीरा और मुफरह को माजूम की
तरह वनाते हैं और याकूती को भी माजूम की तरह वना
ते हैं॥ परंतु जो जवाहरात के चूरन को मिला वै तो प्रथ
म चाशनी में मिला लेना उचित है जा सें सव चाशनी में
मिल जाय और यही प्रकार से सौने चांदी के वर्क भी चू
रन से प्रथम मिलाना उत्तम होता है के सव चाशनी में
टूक २ हो के मिल जावे॥ और जवाहरात के चूरन क
रने की यह विधि है के याकूत आदि को शुद्ध कर के म
हीन कर के किसी अर्क के संग पांच दिन ताई खरल में
घोटे और जो दूसरी वस्तु अंवर। कस्तूरी आदि मिलाना
हो तो मिला के और एक दिन घोटे और सुखा के पीछें

For Private and Personal Use Only

जोजलदी त्यैयार करना होतो सुरमा सा कर के मिला
वै नहीं तो गोली वना के रष छोड़े समय के ऊपर सुर
मा सा कर के वना वै क्योंके चूरन कर के रषने से निर
बलता को प्राप्त होता है ॥ चटनी वनाने की विधि ॥
शरवत से गाड़ी और माजूम से पतली होय के जीभ
से चाटने से नीचे को उतर जाय और षाने पीने की ता
सीर समय के ऊपर मनुष्य के जोड़ों में देर से प्राप्त होय या
कारण कर के ॥ हकीमों नें यह क्रिया वनाई के गुजरे
समय से तुर्त तासीर प्राप्त होवैं ॥ और जवारश माजूम
के प्रकार से वनाई जाती है ॥ परंतु उस्का चूरन दरदरा हो
ता है के उदर में ठैरे ॥ और प्रथम मैं लबूब वनानें की य
ह क्रिया थी के वाजे वीजों की मींगी का शीरा निकाल के
सहत के संग चाशनी वना ते थे पीछे माजूम के प्रकार
से वनाने लगे अव कभी तो शीरा और कभी कतर के
और कभी जौकुट कर के मिलाते हैं ॥ अथ मान्स के
अर्क वनाने की विधि ॥ मान्स का अर्क षेंच के काम
में लावै तो उत्तम हैं और कच्चे मान्स का अर्क दुरगंधी
ले आता है और जो उदाभूंने तो प्रथम ही उस्को धूआं
का वल निकलता है या कारण यह उचित है के प्रथम
यखनी के प्रकार से मो हों वंधे वासन में पकावै जव पक
जावै तव वेसा ही मोह वंधे ठंडा कर के दूकला तथा दू
सरी वस्तु में मान्स का पानी मिला के अर्क षेंचे ॥ अथ
गुड की नशीली शराव वनाने की विधि ॥ गुड और
वमूर की वक्कल और वेर की वक्कल टूकर कर के पा
राव के मटका में डाल के और जितना चाहिये उतना

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पानीडालै और विना महुवा के लहन अच्छा नहीं उठता याकारण गुड का दसवां भाग महोआ कपड़ा की थैली में ढीली बांधके मटका में छोड़ दे और जो मेवा किशमिश मुनक्का आदि मिलाना होतो उन को भी मटका में डालै अब लहन उठे तब महुवा की थैली पृथक करके अर्क खेंचे॥ और जो विशेष नशा चाहै तो खुरासानी अजमान। भांग और धतूरे के वीज और पोस्त के डोडा मुना सिवभाग के एक दिन रात भिजोके लहन खेंचते समय मिलावे क्योंके ऐसी वस्तु मटका में डालने से लहन विगड़ जाता है॥ और जो बलवान वस्तु मिलानी होतो याही प्रकार भिजो के मिलावै और इन वस्तों की भी हालत और तासीर विगड़ जाती है और जो मान्स का पानी मिलाना हो तो इसी प्रकार से यखनी का पानी खेंचते समय मिलावै और जो दूध मिलाना होतो खेंचते समय गाय का कच्चा और ताजा दूध लहन में डाले॥ अथ दरभरहुवना ने की विधि॥ जौन शीला होता है के सब वस्तु को एक मांटी के वड़े वासन में धरै और वामें पानी भर दे और वाको आधो सो खाली रखै और वासन को घोड़ा की लीद में या प्रकार से गाड़े जो वा के मुह को खोल मूंद सके और अव गाड़े वा के दो चार दिन वा को लकड़ी से हलाता रहे पीछे वा को देखता रहै जव दवा उफन के अपने आप उफान बैठजाय तव विना मसले और टारने के एक गाड़े से कपड़ा में छान के शीशे तथा चीनी के वासन में धरै॥ नवीज के बनाने की विधि॥ यह है कै

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र यह भी नपुशीला होता है के थोडी सी वस्तु को भिजो
के ओटावे जब आधा पानी जल जाय तब दूसरी वस्तु
मिला के सब को ऐसे वासन माटी के मेंडा ल के आधा
षाली रहै और वाको धूप में धरै और दो चार वेर लक
डी से हला दिया करै और निगा ह रक्खे जब उफन के
उफान बैठजाय तब विना मसले और हलाने के गाडे
कपडा में छान ले और चीनी तथा शीशे के वासन में
धर दे॥ गोली के बनाने की विधि॥ यह है के जो गो
ली पचाव और सुधा और उदर के रोगों के लीयें हों
तो वाकी वस्तु दरदरी हों जो कछू देर ठैरे और गोलीयों की वस्तु
वहुत महीन काजल सी हो तो चाहियें के तुर्त धुल
जाय॥ टिकीया बनाने की विधि॥ के टिकीया गो
ली की तरह से बनाई जाती है॥ प्राफ॥ अर्थात लंबी
तिषूंटी गोली बनाने की यह विधि है के एक तरफ जि
धर से घिसी जाय उधर मोटी होती है॥ तेजाव के अर्क
षेंचने की विधि॥ दवाओं को जो कुट कर के एक घडा
में रक्खे और वाके मोह पर एक हांडी मोह रिगड के रक्खे
दोनों को आटे से बंद कर के चूल्हे पर घडा को तिरछा
धरै और आंच दे और हांडी ऐसी वस्तु पर रक्खे के व
ह भी चूल्हे के प्रकार हो और हांडी के पिछाडी एक छेद
कर के वाल की वाती लगा के चीनी तथा शीशे को प्याला वा
के सामने रक्खे जो वाही में अर्क टपके॥ मोम और व
हरोजा के तेल बनाने की भी यही विधि है॥ परंतु हांडी
की जगह घडा रक्खे और टेडे की जागह सूधा रक्खना
उचित है॥ और मोम के नीचे तीसरे बट का सांभर नोंन

For Private and Personal Use Only

रखना चाहिये और वह रोजा के नीचें पकी वालू रेत बि-
छाना चाहिये ॥ फूलों के तेल बनाने की विधि ॥ कई
प्रकार से हैं एक तो यह के साफ ताजे फूल चार भाग औ
र सुपेद तिलीका तेल पांच भाग डाल के धूप में धरें जव-
सड़ जाने के पीछे उत्तम सुगंध पैदा हो तव फूलों को म-
ल के छान ले और वा तेल में तीन वट के ताजे और फूल
मिला वें वाही प्रकार से धूप में धरें और छान के फिर दो भा
ग के फूल और ताजा मिला के धूप में धरें फिर छान ले ॥१॥-
और दूसरी यह के डेड गुने साफ ताजा फूल तथा बराबर के
ले और सुपेद तिली का तेल उत नों ही मिला के धूप में ध
रें और गल जाने पीछे जव फूलों में तरी न रहे तव खूब म
ल के तेल को छान ले ॥ और जो तरी रहे तो वा को धूप में ध
र के सुरभा ले ॥ और तीसरी यह के ताजे फूलों का रस निका
ल के रस से ड्योडा तिली का तेल मिला के पका वें जव रस ज
ल जाय तव तेल को छान ले ॥ चोथी ॥ सूखे फूलों को औटा
के वा काढे में फूलों से दूना तिली का तेल मिला के औटा-
वें जव वा में पानी न रहे तव तेल को छा न ले ॥ गुण ॥ तेलों
का वल फूलों के थोडे पन और विशेष ता पर है परंतु प्र
थम विधि में तो गुलाव के फूलों से प्रयोजन है ॥ जो पहली
और दूसरी में थोडे से नये फूल क्रिया के पिछाडी और-
मिला के रक्खे जाय और उन की तरी धूप में मार ली जा
य तो अच्छा और उत्तम है ॥ अथ पत्ते ॥ और जड़ ॥ औ
र तरो ता जा लकड़ी ॥ थोडे तेल के वी जों का तेल वना-
ने की विधि ॥ फूलों के तेल वनाने की तीसरी प्रकार के
तुल्य है ॥ परंतु थोडा पानी और मिला के रस निकाल-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाउचितहै।।के गस्का कसभ अच्छी प्रकारसे निकल आ
वे।। और सूखे पत्ते तथा जड और लकडी के तेल बनाने
की विधि फूलों की थोपी नरसे है।।गुण।।तेली या ल-
कडी थोडे तेल के बीजों का तेल कोल्हा यंत्र सेभी निका
ला जाता है।। और विशेष चिकनई के बीजों का तेल तो
केई प्रकार से निकाला जाता है।।जेसे बादाम और चि-
लगोजा आदि का एक तो यह के जो विशेष बीजहों तो
कोल्हू में पिलवा के निकाल ते हैं।। दूसरे बीजों की मींगी
को खूब कुचलके पानी में पकावे तो तेल ऊपर पानी के
आ जाय और गाद पानी के नीचें बैठ जाती है।। तब ठंडा
करके तेलनिकाल लेते हैं।।तीसरे बीजकी मींगी कोकु-
चलके थोडी सुपेद मिश्री मिलाके थोडेसे पानी में मि-
लाके गुन गुना निचोड लेते हैं तब तेल टपक आता है।।
।।चौथे कुचली हुई मींगी में थोडी सुपेद मिश्री और थो-
डा पानी मिलाके एक रकाबी के किनारे से रखवे वा केनी-
चे आँच रख देते हैं वाकी गरमी पंके रके बीके दूसरे कि-
नारे की तरफ जो नीचा होता है सो तेल भह आता है।।
।।अथ सब प्रकार के अंडों के तेल बनाने की विधि।।
केई रीत से हैं एक तो यह के अंडे को औटा के वाकी जर्दी
पृथक करले और सब जर्दीयों को हाथ से खूब मलके
प्रत्येक बडी जर्दी में एक माशे पानी तो सादर और छो-
टे मेंवा से थोडा चूरन करके मिलावे और वाको एक
शीशे तथा बोतल में भरके वाके ऊपर कपरौटी करे।।
और मोह में सीं के लगा वे।। और एक ठीकरा में छेद क-
रके चूल्हे पर धरै और बोतल की नार वा छेद मेसें नीचे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ठीकरा में हो कै लटका दे और ठीकरा में कंडा तथा उपले
की आँच करै और बोतल के मोह के नीचें एक चीनी को
प्यालो धरै जो वामें तेल टपक जाय॥ दूसरी विधि यह के॥
अंडा को ओटा के जर्दी दूर कर के एक थाली में मंदी आंच
पर तथा कड़ी धूप में रक्खे जा तरफ को अंडा हो वा तरफ
को ऊँचा रक्खे दूसरी तरफ को नीचा रक्खे तो तेल थाली
में इकट्ठा होजायगा॥ तीसरी विधि यह के अंडा को ओटा के
जर्दी निकाल लेवै और हाथ से खूब मल कर आँच दिषा के
निचोडै॥ अथ चना। गेंहू। जो। के तेल निकालने
की विधि॥ एक तो यह के जिने नाज को रात भर इतने
पानी में भिजोवै जो सब पानी सोष जाय पीछे शीशी में
रष के वाही प्रकार से टपकावै जा प्रकार से अंडों का ते
ल निकाला है॥ दूसरी विधि यह के गरम निहाई पर नाजों
को धर के बहुत गरम हथोडे से दबावै जो तेल निकल प
डे वा को जुदा करले जो कई वेर ऐसा करने से थोडे से दा
नें में कछू तेल इकट्ठा हो जाय है॥ और दाद तथा झांई आ
दि पर लगाना होवै तो वैसा ही ताजा लगाना उचित है॥ अ
थ मरहम बनाने की विधि॥ उत्तम और अच्छी क्रिया
तो यह के सब दवाई तो छै वट की हों और तेल पांच वट
का हो और मैम तेल से आधा होवै और या प्रकार से बना
वै के प्रथम मोम और चरवी को संग गलावै और गोंद
हो तो चूरन कर के मिलावै जब अच्छे प्रकार से मिल जा
य तब दूसरी वस्तु काजल महीन पीस के मिलावै॥

॥फसल छूटी॥

॥षाने की दवाईयों के काम में की रीत में॥ रीत॥

लाने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥जवारिश।गुलकंद।माजूम।मुफरीह।याकूती।इनव स्तों पर पानी पीना तथा कोई अर्क बिना दरकार पीना उचित नहीं परंतु रक्षा प्रकार से पीवे॥ शरबत की रीत॥ शरबत को किसी अर्क मुनासिब के संग तथा पानी में घोल के या कारण से पीना उचित है के पतले पन के सबब करके तुर्त घुल जाय और जारी कर दे॥ रीत॥ गोली तथा चूरन तथा कोई और वस्तु जो खाँसी तथा रुधिर थूक ने आदि और दम के रोगों को काम में आवे वाको मैंह में रख के धीरे २ चूसे पीछे निगल जाय जो फेफड़े की नली और फेफड़े में अच्छे प्रकार से वाको असर प्राप्त होय और वाके ऊपर बिलकुल पानी पीना उचित नहीं जो यासे उसकी तासीर जाती रहती है॥ रीत॥ चटनी पर पानी मिला के पीना हानिकारक है॥ रीत॥ अयारजात और जुलाब को दूसरे गोलीयें को गुनगुने पानी से निगल ले॥ जो यासे दवा की तासीर प्रबल हो जाती है और गुलकंद में गुनगुनो पानी मिला के पीने से विशेष प्रबलवान होता है॥ रीत॥ जो गोली तथा चूरन पचाव को बलवान करने को खाई जाय वाके ऊपर पानी पीने से दवाई की तासीर निरबल हो जाती है॥ दूसरें रोगों को चूरन तथा गोली के ऊपर कोई अर्क मुनासिब तथा ठंडा अथवा गुनगुना पानी पीने से तुर्त तासीर प्राप्त होंने के कारण उचित है॥

॥फसल सातमी॥

॥अथ लगाने की दवाई काम में लाने की रीत॥ के प्रकरण में॥ रीत॥ आबजन अर्थात पानी की नांद में बैठना। दवाई के काडे में गुनगुना पानी मिला के ऐसे चो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

डेवासन में भरेजो रोगी वा में बैठजाय जो नीचे के रोगों को। गुदा। और गुरदा। मसाना। गर्भाशय आतमां। इन के रोगो में नभि तक। और उदर विकार और छाती और पहलू के रोगो में कंधा तक और सव शरीर के विकार में कंठ तक रोगी को डुबाना उचित है और आवजान का गरम पानी वोतल में भर के रोगी के अस्थान को सेके तवभी गुणदायक होता है॥ इनकवाव कीरीत॥ अर्थात् वफारा मोह वंधे वासन में दवा को औटा के वा को ढकना उतार के एक दूसरा छेदन दार ढकना वा पर धर के असली जो इ पर धूआँ पहुंचावै और सव शरीर को धूआँ प्राप्त करना हो तो रोगी की नाड पर्यंत ढक के गरम दवा के वासन के ढकना को उतार ले और चेत राखे जो धूआँ की विशेष गरमी प्राप्त न होय नहीं तो वेहोशी आजायगी॥ वखूर कीरीत॥ अर्थात् धूनी॥ जो सूखी दवा आँच पर डाल २ के वफारे के प्रकार से उस्का धूआँ शरीर को पहुंचावैं॥ पाशोया कीरीत॥ वफारे से पीछे या की रीत चली या हो कर के यह रीत है कि पाशोया की दवा से सव शरीर का प्रथम चिकनाव होजाता है और यासो या ऐसे अस्थान में होना चाहिये जहाँ हवा का प्रवंध न होय और रोगी को गले ताई कपड़ा लेट क के वा के दोनों पाँव या शोया के गुनगुने पानी में धरे और वाही पानी को घोटू पर डाल २ के ऊपर से नीचे को मले जव पानी की गरमाई जाती रहै तव पामों को कपड़ा से पोंछ डाले और ऊपर से नीचे ताई वाँधे और तनु आ खुले राखे और रोगी को कपर्ड उढा के लिटादे दो तीन घड़ी पीछे नीचे के गाव से कपड़ा खोले

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

औरअगहाँभाफकेऊपरचढ़आनेकेडरहोतोतलुओं
कोगरमपानीमेंराषेंपाँमसेकपड़ादूरकरेंऔरपाँ
मोंमेंषालीसीगीलगानेकीजरूरतनहोतोउसेपाशो
येसेप्रथमकरैंऔरज्वरकीबकवाद औरज्वरकी
विशेषगरमीकेदिनोंमेंपाशोयाकरनामनेहैंऔर
जोज़रूरतपड़ेतोनिरेगारमपानीऔरनोंनसेकरैं॥
॥हुकनाकीरीत॥दवांईकेकाढ़ेकोषालकीथेली
मेंजाकेमोंहपरमोहनालकेतुल्यकोईपतलीवस्तु
छेददारबांधाहोभरकेमोहनालकोगुदामेंराषेऔ
रथेलीकोधीरे२दवावेंकिहुकनामेंकीदवाआंतोंमें
प्राप्तहोऔरजोरोगीकोकोईदवापीसकेजुलावकी
दवापिलाकेहुकनाकरैतोयाविधिसेअच्छेप्रकार
सेमुवादनिकलजायऔरहुकनाकीदवाविशेषगाढ़ी
नहोजोफुज़लेऔरआंतमांमेंनजासकेऔरविशे
षपतलीभीनहोजोफुज़लोंमेंलिपटनसकेऔरगु
नगुनीहोजोमुवादअच्छेप्रकारसेनिकालेऔरको
ईतेलभीमिलाहोतोतोकेफुज्लेआसानीसेनिकल
आवे॥ अथतेलकीरीत॥जोतेलकोशरीरमेंलगा
याजायथोड़ामरदनकरैजोउछिलेनहीं औरथोड़ीमा
लिससेतेलकीदुरगंधीदूरहोयऔरतुर्तअसरलेआवे
हैऔरजोसमादेषेतोकोईमुनासिबपत्ताऱषकेबांधा
नाउचितहैजोयासेज्योंकात्योंअसरआजाताहै॥अ
थजरूककीरीत॥अर्थातपिचकारीलगानादवाई
योंकारसतथाभिजोबनतथाकाढ़ालेकेऔरजोकोईसू
षीमिलानीहोतोकाजलसीमहीनकरकेमिलावेऔर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुकनेके प्रकार छेद में रष के थोडीसी बूंदे पोहोंचादे जो ।
विशेष पानी प्राप्त होने से अतिकडे रोग अंड वृद्ध आद
रोग होजाते हैं अब ठंडीदवा होनाउचित है॥ अथ स
ऊतकीरीत॥ अर्थात नाक में टपकाने की दवा रोगी को
सीधा लिटाके पतली दवा नाक में टपकाना और जो
रोगी अपने आप पतली दवा को मस्तक की तरफ वेंचे
तो याको नाम फारसी में नशूक है॥ परंतु गह्लासदीद
की यह कहावत है के पतली दवा कहीं टपकाई जाय स
बसऊत है॥ अथ शाम्म कीरीत॥ अर्थात हुलास सु
गंधित दवा रोग के दूर करने को सुंघाना॥ शयाफ की
रीत॥ अर्थात तिषूटी लंबी गोली को किसी अर्क त
था तेल अथवा पानी में घिस के ठंडी तथा गरम लेपक
रना तथा टपकाना और जो शयाफ महीन होतो ज्यों का
त्यों शरीर के छिद्र तथा नासूर में रषना॥ अथ शाफा
कीरीत॥ दवा की लंबी शयाफ सुनासिब तेल में चुपड
के तथा वा पर किसी दवा का चूरन बुरक के पतली तर
फसे गुदा में रषना जो दस्त की हाजत बंद होगई होतो द
स्त की हाजत हो आवे॥ अथ सवग कीरीत॥ अर्था
त रंगना दवा को पीस के ठंडी ही रोगी के बदन पर लगावे॥
॥जमाद और तिला की रीत॥ गरमी के ऐबों में ठंडी औ
र सरदी के रोगो में गरम लगाना चाहिये और चोट तथा
घाव को गुनगुना लगाना उचित है॥ जमे रुधिर को पतला
और बहादने के लीये॥ और पतला लेप ईद्री पर लगा
ये जाय तो सुपारी बचा के लगाना उचित है क्यों के सुपा
री की षाल अत्यंत पतली और मुलायम होती है उस पर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेज दवाई लगाने से फट जाती है और गरम पुल्ट
ती के पत्ता वा पर बांधने से तुर्त असर हो आता है।
और दाद को खुजला कर दवा लगाना उचित है जो
दाद के अ रदरे पन से दवा की तासीर आ ती रह ती है।
॥ अथ गर गरे की रीत ॥ गरगरा की दवा गरम हों
नी चाहिये और क्षा दूर कर हैं उसका पानी फेफड़े
की नली में न जाय कि ऐसा पानी फेफड़े को वहुत दु
ष देता है ॥ अथ गमरह की विधि ॥ अर्थात उवट
ना उवटने की वस्तुओं को पानी तथा किसी मुनासिव
अर्क में पीस के चहरा तथा सव शरीर में लगाना और
थोड़ी देर पीछे थोड़ा सा मल के धोना ॥ अथ गाली
या की रीत ॥ अर्थात अरगजा की वा स्तुओं सुगंधि
त को मिला के सुंघाना तथा किसी जोड़ अथवा सव
शरीर में लगाना ॥ अथ फतीलह की रीत ॥ अर्था
त् वाती को पतली दवा में भिजो के तथा वा पर सूषी द
वा छिड़क के अथवा सूषी वाती पर गाढ़ी दवा लगा के
शरीर के छिद्र तथा नासूर में रषना ॥ अथ फुर्ज
आ की रीत ॥ अर्थात् दवा के चूरन की पोटली वांध
के उन्नाव की वरावर योन में राखै नि पोटली धरन ताई
पहुचे और पोटली को कपर्ड खैंच लेने के लीयें वडा रहे
तथा चूरन कपड़ा में रष के वाती व ना के योन में रक्खे
परंतु दोनों सूरतों में कपड़ा महीन होंना चाहिये जो द
वा अच्छे प्रकार से असर करे ॥ केरूती की रीत ॥
मोम रोगन को ज्यों का त्यों रोग के अस्थान पर लेप से
थोड़ा लगाना चाहिये ॥ अथ कतूर की रीत ॥ अर्था

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त कान में टपकाने की दवा पतली हो जो शरीर के छिद्र तथा योनि तथा घाव अथवा नासूर में टपकाना परंतु कान में ठंडी दवा टपकाना न चाहिये जो वासे कान में पीडा होती है और गाढी दवा भी न टपकाना चाहिये बाती की तरह से कान में लगाना चाहिये ॥ अथ कमाद की रीत ॥ अर्थात् पोटली से सेकना सूषी दवा को जो कुटतथा चूरन करके वेसी ही तथा कोई तेल में भकरी के अथवा दवा भिजो कुचल के कपडा में दो पोटली बांध के एक के पीछें दूसरी गरम गरम जोड पर रषना ॥ अथ कबूस की रीत । सूषी तथा गीली दवा को पीस के वडी तथा छोटी टिकया वना के रोग के अस्थान में रष के ताजे और मुनासिब पट्टा बांधना जो दवा की तासीर देर ताई रहे ॥ ॥ अथ लखलखह की रीत ॥ पतली दवा को काई वासन में रष के सूंघना तथा दवा को पोटली में बांध के भिजो के सूंघना ॥ अथ लत्ूख की रीत ॥ कागज के परचा में बहुत से छिद्र कर के तथा कपडा पर गाढी दवा लेप के तुल्य रोग की जगे चिपकाना ॥ अथ मरहम की रीत ॥ मरहम को कपडा पर लगा के चिपकाना उचित है परंतु नये कपडा को फाया वनाना मने है क्यों कि नयो कपडा दवा के वल को सोषले ता है और थोरे घाव में पुरानी रुई में मरहम लगा के रषना और ऊपर से फाया लगाना चाहिये ॥ और नासूर में वाती पर लगा रषना चाहिये ॥ अथ मज़मज़ह की रीत ॥ अर्थात कुल्ला सरदी ॥ त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

री और नजला के रोगो में गरम दवा और गरमी के रोगों
को और गरमी के नजले को ठंडी दवा बहुधा कर के दे-
नी चाहिये ॥ अथ नतूल की रीत ॥ अर्थात नडेडा का
है तथा भिजी दवा को ठंडे पानी को थोडी दूर से काई बा
न जोड पर डालना जो दवा की तासीर अच्छे प्रकार से
असर करे और गुरदे तथा मसाने के रोग में दे के आब-
ज़ न करना भी उत्तम है ॥ अथ नफूरव की रीत ॥ अ-
र्थात फुकनी दवाई के महीन चूरन को कागज की पो-
ई में रख के नाक तथा कंठ अथवा रोग की दूसरी जगे-
में फूकना ॥ अथ वजूर की रीत ॥ जब के रोगी दवा न
पीस के तो पतली दवा वा के कंठ में टपकाना ॥ मिका-
लह दूसरा बयान वाज अदबी ये वो अगजीये में-
॥ अर्थात दूसरा षंड बाई और भोजनादिक के प्रकर्ण-
में जिन की निसबत नबी साहिब खबर देते हैं ॥ प्रघट-
हो के जना व नबीयों के सरदार के ईश्वर की उन पर कृपा-
र है वरणन करते हैं के जो कोई मनुष्य मेरी इन चाली
स वारता ओं को याद करे तो ईश्वर उस्का नाम स्वर्ग
में मेरी उम्मत्त में सिद्ध पुर्षो में रखेगा और संसार में वि-
द्या वान और सुषी रहेगा और उन को न तो कोई बात
का डर होगा और न चिंता होगी जो के या वारता को म
जमोन मत विद्या से मिला हुआ समझ जाता है परंतु-
सिद्धाई के कारण से दूर समझना उचित नहीं और के-
वा स च्चे प्यारे कओ इन खबरों को कंठ कर ले तो वैद्यक
विद्या में प्रबलता और अच्छापन विशेष आ जायगा
या कारण से बहुत ठीक और शुद्ध वारता लिषी जाती

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैं अगरइन मेंसे वहुतसी प्रत्यक्ष हैं वैद्यकविद्या में
नही मालूमहोती परंतु जवके हजरत का कोई काम
तथा वारता विना हिकमत के नथी और जवकिसी
वस्तु का हाल तथा वडाई तथा वुराई करनी होती तो
वह वैद्य विद्या से मिली मालूम होतीहै याकारण वस्तु
की प्रकृती और खासीयत अगले हकीमों की प्रथक्
प्रथक वातों को विशेषज्ञान केउनको छोडदिया औ
र मुझे जितना मिला और समझ में आया और जा
को मैंने आजमालीया उतना सही लिषता हुं ॥ पहली
फसल वार तिक खवरों में । उतरज ॥ अर्थात् विजो
रा पीले रंग का नींवु से वडा होता है और वाको छिलके
वहुत भारी और गूदा थोडा और मीठा होता है और ज
नावरसूलका कौल है के विजोरा पान करना उचि
त है क्योंकि वह दिलतथा मस्तक को प्रवल करता है
वाका जीरा दूसरे दरजा में सरद और तर है और दि
ल तथा मस्तक वलवान और तर करने वाला है ॥
और गरमी को दूर करने वाला हैं और उसका छिल
का दूसरे दरजा में गरम और खुश्क है और उदर को
अति पएक्रम वडा है और पाचक है और चित्त को प्र
सन्न राषै किसी मुनासिव वस्तु के संग में ॥ अथ अ
समद ॥ अर्थात सुरमास्पाह पहले दरजा में सर्द औ
र दूसरे में षुश्क हैं ॥ वाजे मनुष्य यह वरणन करते हैं ॥
कैजा समय हजरत मूसा को नूर के पहाड पर ईश्वर नें
लो दिषाई वा लो के प्रताप से तूर का पहाड तथा को
ई और अस्थान जलके कोयला के तुल्य होगया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वह सुर्मा है और जनाव का कोल है के सुर्मा लगाना आ
कनेत्रों को वहजोत वढाता है और वालों को उगा
ता है और रात को सोने के समय यह सुर्मा लगाना ।
नेत्रों की जोत वढाता है और वाहरी वालों को गिर
ने से रक्षा रषता है और जो गिरे हों उन को जमाता ।
है और जो कोई दूसरी वस्तु मुनासिब के संग मिला
के षाय तो षूनी ववासीर और रुधिर चूकने को ।
दूर करता है ॥ अथ अहलेलजअसद ॥ फा ।
रसी में हलेले स्याह और हिंदी में ज़ंगी हड और वि
शेष छोटी को जवाहड कहते हैं सो पहले दरजा में ।
सर्द और दूसरे में खुश्क है और हजरत का कोल ।
है के काली षाने से स्वर्ग प्राप्त होता है स्वाद में तो क
डुवी परंतु हर रोगों से वचाती है ॥ वाय को दस्त के ।
द्वारा निकालती है ॥ और रुधिर को निर्मल करती है
ववासीर को षोती है और गलित कुष्ट को गुण करै
और भीतरी ओड़ों को वल प्राप्त करै है और उदर की
तरी को दूर करै है ॥ अथ वनफसज ॥ फारसी में ।
ठीक २ वनफशा पहले दरजा में सर्द और दूसरे में तर
है और नवी साहव का कोल है के सब तेलों में वनफसा
का तेल सर्दार बुजुर्ग है जेसें सव मनुष्यों में मैं वडा हूं
॥ पित्त को षोवै और छाती × पर दरेपन को दूर करै है ।
और छाती और षांसी का ढकन ह षाने में और गुर ।
दह की पीडा और पहलू और मस्तक पीडा और कंठ
के रोगों को और सरदी को गुणदायक है षाने और ल ।
गाने से और जो या को लेप करै तो सूजन दूर हो जाय

For Private and Personal Use Only

॥अथ वतीरव॥ अर्थात खरवूजा तर गरम है॥ जा-
नाव का कौल है के निरने ही खरवूजा षाना जो पेट को-
साफ करता है अकसर पित्त को पचा वे है नही तो उद
र में प्राप्त हुऐ अहार को निकाल डाल ता है॥ या की ला
गगरम प्रकृत वाला तो सिकंजवी तथा नींवू को रस अ-
थवा षट्टा अनार॥ और सरद प्रकृत वाले को सोंठ और
खरवूजा को विशेष षाना शरीर को मोटा करता है और
स्त्री संग को प्रवल करता है और पेसाव लाता है॥ और
गुरदा और मसाना और आंत को निर्मल करने वाला
है और फेफडे की नली की सखती दूर करता है जो छि-
लका और बीजों सहित पीस के चहरा पर लगावे तो
चहरा की क्रांति को वढा ता है॥ अथ वकर॥ अर्था
त फारसी में तो मादहगाव और हिंदी में गाय है सो गाय
का दूध वाय के रोगों को दूर करै है और गरम है॥ अ
थ तिमर॥ अर्थात फारसी में खुर्मा हिंदी छुहारा औ
र षिजूर पहले गरम दूसरे में तर है जनाव का कौल है के
जा घर में छुहारे नही वह घर विना अन्न के तुल्य है व
ह इस्त्री संग को वलवान करै है और गुरदह को ताकत
देता है और रुधिर को वढा वै और निरमल करै और छा-
ती के खरदरा ट को और तरवता को गुण करै और जो-
डों के कडेपन को दूर करै॥ तीन॥ फारसी में अंजीर प-
हले दरजा में गरम और दूसरे में तर है और पक जाने में
वा को रंग सुपेद हो जावै वह उत्तम है पीली वा से कम-
और लाल वा से भी कम और मैथुनादिक में वल वढाने
वाला और शरीर को मोटा करने वाला और तबीयत को

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नरम करने वाला और जिगर तथा तिल्ली की गाँठ षोलने वाला और गुरदे के रोगों को और षांसी को और छाती और नरवना के षरदराट को दूर करै औ र नर अंजीर से सूषी अंजीर सब कामो में निरबलहोती है ॥ अथ सूम ॥ अर्थात फारसी में सीर लहसन हिं दी में लहसन तीसरे दरजा में गरम और खुश्क है ॥ ज नावका को लहै के कच्ची लहसन मत षाना पक्की षाना जो बादी और बिगड़े दोशों को निकाल ने वाला और उदर को और जोड़ों की नरी को सोषने वाला और स्त्री धर्म जारी करने वाला और स्त्री संग को प्रवल करने वाला सरदी दूर करने वाला और नेत्रों को नुकसा न करै है वा की लाग घटाई और घी है और गर्भनी स्त्री वा को षाय तो नुकसान कार क है ॥ अथ हिना ॥ अ र्थात महदी वल में बराबर बिगड़े रुधिर को निर्मल क रने वाली यहां ताई के जो या के पत्ता को छाया में सुषा के चूरन बना के चालीस दिन परियंत नित फांके तो ग लित कुष्ट को गुण दिषाई देता है और ताजा पत्ता को लेप करना कनपटी जलन को गुण करै और सोजन और गिलटी को दूर करै और गरमी की फुनसीयों को तथा छा लों पर अलसी को तेल लगा के या के पत्तों का चूर न धुर्के तो दूर होंय और सीतला निकल ने की आदि में ताजा पत्ता पांव पर लगावै तो सीतला थोड़ी निक ले और पीड़ा भी थोड़ी होती है ॥ अथ खब्ज ॥ अर्था त फारसी नान और हिंदी में रोटी और मुतलक खब्ज गेंहू की रोटी को कहते है सो वह पहले दरजा में गरम ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और तर है और जनाव का कोल है के तुमारा उत्तम भोजन रोटी हैं सो अच्छा मुवाद पैदा करती हैं और सूजीरोटी को चूरन मेथी में पका के थोडा नोन मिला के लगाना सरत्वसूजन को पका के फोड देता है और मेदा के वरवर की रोटी को चूरन करके ठंडे पानी में घोल के लगाना ववासीर को दूर करती है और मेदा की रोटी विशेष पराक्रमी होती हैं। परंतु देर में पचती है और सूजी की रोटी तुर्ल पच जाती है और आटे तथा मेदा के वषर की रोटी शरीर को मोटा करती है। अथ खल। फारसी में सरकामादिल है और सिरका मुनलक और अंगूर के सिरका को बोलते हैं परंतु ईक का रस तथा गुड को पानी में डाल के वनावे तो सव कामो में एकसा है बल्क वा सिरका के रूप है जो कई प्रकार से बनाते हैं तथा प्रथक है तुर्त असर प्राप्त करने वाला और मल को पतला करके निकालता है और भोजन को पचावे और क्षुधा को वढावे और भीतरी जोडों की ग्रंथ को खोलते हैं और कफ वाय दूर करै और तिल्ली सूजन दूर करे और भोजन में प्यास को बुझावे और सूथ को पटकावे और षुजली को दूर करै और अगन के जले को अच्छा करै और पसूओ के काटने के विस को गुणदायक हैं और जो या को लेप करै तो बीछू आदि के डंक के विस को उतारै है और पुट्टे के जोडों को और वाजीकरण दिक को नुकसान करै। अथ खमर। अर्थात फारसी में शराव और मैय और वादह

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और हिंदी में दारू और मद कहते हैं और खमर मुतलक अंगूरी शराव को कहते हैं प्रत्येक बोली में याके बनाने के भेद और स्वाद और रंग रूप पर हैं और तीसरे दरजा में गरम और दूसरे दरजा में तर है और जनाव का कौल है के शराव दवा नही हैं यह रोग है जो दुक सार पीवे तो चित्त प्रसन्न रहै और जो दों को बलवान करे और मूत्रजारी करे और ता- री को दूर करै और छिद्र और ग्रंथी को षोले और सुख करे और रुधि पैदा होंने के प्रताप कर के जो भोजन के आदि में थोडी शराव पी के भोजन करने की प्रक्रती डाले तो शरीर को मोटा करे है और शराव के ऊपर पानी पीना नुकसान करे है परंतु पानी मिला के पीना गुण करे है और बिशेष शराव पीने से कंपन वाय और नाना प्रकार के सीन के रोग और बावरेपन और होलदिली यह सा- व को पैदा करै है और गुड की शराव अंगूर की शराव के तुल्य होती है परंतु वा से गुण में न्यून है और नुकसान में अधिक है और जो जो शत रुने के स मय आठ वा भाग गुलाव के फूल मिला के षेंचे तो गुण में अधिकता और नुकसान में न्यूनता आ जाता है ॥ अथ खेरी ॥ अर्थात फारसी में गुलशा बो दूसरे दरजा में गरम और खुश्क है वागों वा जं- गलों नाना प्रकार का होता है और फूल भी सुपेद पीले लाल और वनफशाई होता है और जो वा के फूल को सूंघे तो वादी और मस्तक की मलामत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को निकालता है और याके फूल पत्ता तथा बीज अथवा जड को पीस वाके पानी को पीना तथा वाको वफारो लेना —— स्त्री धर्म को जारी करै है और गर्भ को गिरावे और मरे वच्चा को गर्भ से निकाले और वाको लेप सूजन को दूर करै और वा को तेल गुलाव के फूलों की तेल के समान वनाया जाता हैं और यह वात सव जानते हैं के या के फूल में छोटा कीडा होता है पास से सूंघने से नाक में धस जाता है और पीनस का रोग पेदा करता है ॥ अथ देक॥ अर्थात फारसी में मुर्ग और हिंदी में मुर्गा दूसरे दरजा में गरम और तर है जनाव का कोल है के जव मुर्गा वोलता है सो यह कहता है के ईश्वर को याद करो षडे ही षहे मान्स को फाडे के गरमागरम मस्तक पर वांधे तो सरसाम जाय जो गरम शोर वा पीवे तो वाय सूल जाय और पोटे के भीतर का छिलका काई मुनासिव वस्तु के संग चूरन करके षाय तो सव प्रकार का अतीसार जाय और जो मुर्गा के अंडा के छिलका को जला के वा को सुर्मा नेत्रों में लगावे तो नेत्रों का विकार जाय और जो वा को चूरन कर के षाय तो पुरानी सूजाक जाय ॥ अथ रमान॥ अर्थात फारसी में अनार मीठा गरमी और सरदी में वरावर है और दूसरे दरजा मे तर है। और षट्टा अनार दूसरे दरजा में सरद और तर है और षट मीठा अनार पहले दरजा में सर्द और दूसरे में तर है जनाव नवीजी का कोल है के वैकुंठ और अनार और अंगूर शाहरी वडपन से उत्पन्न हुयं हैं जो अनार जिगर और सांस को वल प्राप्त करै है और अच्छा मल पेदा करै और होल दिल को गुण करै और पेसाव

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लावे और रतूवत को पाक करै शरीर को मोटा करै॥ और चहरा के रंग को निषारै और क्रांत को वढावै औ र गरमी को शांत करै और रुधिर शुद्ध करै और मस्त क में गरमी चढजाने को गुण करै और दांतों को तथा उ दर को वल प्राप्त करै और दस्त को वंद करै वा कोष्ठिल का कबिज और षांसी को दूर करै॥ अथ जवींवा॥ अ र्थात फारसी में मुवीज हिंदी में दाष पहले दरजा में गर म और तर है पुरकार और वडी दाष अच्छी होती है गा ढे मल को फुलाता है और आंतों की तथा छाती की वाय को दूर करै और जिगर को वलवान करै और गु रदे और मसाने के रोगों को गुण दायक है पेट की सरदी और अजीरण को दूर करती है और वा को वीज पहले द रजा में सर्द और दूसरे में खुश्क है और पेट को वंद कर ता है और जो वीजों को घोट के पीवे तो खून की उलटी और खूनी दस्त और खूनी ववासीर को गुण करता है॥ और पीस के चावे तो रुधिर थूकने को दूर करता है॥ अथ जवरजद॥ अर्थात नीलम तीसरे दरजा में सर्द औ र षुश्क है और सव कामों में जमुरद जैसा होता है तवीयत को प्रसन्न राषै और नेत्रों की जोत को वढा वै और रुधिर वहने को तथा गलित कुष्ट को गुण क रै और गर्भनी स्त्री की वांई जांघ पर वांधे तो अ च्छे प्रकार से लडका जने॥ अथ जमुरद॥ अ र्थात पन्ना दूसरे दरजा में सर्द और खुश्क है॥ जना व रसूल का कौल है के पन्ना पहरने से दरिद्र में धना ढ्यता को प्राप्त है और जिगर को ताकत देता है और

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिलकोभीपराक्रमदेताहै औरसांसक्रांतीवढाताहै।
औररुधिरथूकनेकोंदूरकरताहै॥ औरपेसावकोव
हावे औरगुरदेतथा मसानेकीपथरीकोदूरकरैहै औ
रपसूओकेविसकाजरमोहराहै औरजोवाकोसुर्मा
लगावैतोनेत्रोंकीजोतवढे परंतु निपुनसज्ञाप्राप्त क
रैहै याकीलागसहतहै ॥ अथजाफरान॥ अर्था
तकेसर प्रथमदरजामेंखुष्क औरतीसरेदरजामेंगर
महै जोहवासप्रसन्न और बलवानकरै दिलप्रसन्न
राषै औरजिगरतथा मस्तककीताकतवढावै औ
रगपठोंमजवूतकरै औरवायकोदूरकरै मलको
शुद्धकरै औरनसोंकीगांठकोषोलतीहै॥ औरमू
त्रकोजारीकरतीहै औरगुरदातथा मसानेकोपुष्टक
रै औरताकतकोवढावै॥ औरनिद्रालावै मस्त
कमेंपीडापेदाकरै उसकीलागसहत औरवूरो
है॥ अथजीत॥ अर्थातजेतूनकोतेलआलीनूस
हकीमयाकोदूसरेदरजामेंगरम औरतरवताताहै
औरजनावकाकोलहैकेजेतूनकोषाओ औरलगा
ओक्योंके वहवरकतकापेडहै औरयाकेवहुत
सेभेदहैं याकेफलकोमेवाकेतुल्यषातेहैं औरतेल
कोइकेलातथादूसरीमुनासिववस्तुकेसंगषातेहैं औ
रलगातेहैं औरषायेहुयेविसकोतथापसूओंकेविस
को औरसरदीकीपीडाको औरवादीतथामडोडाको
दूरकरताहै औरघावोंकोभरलाताहै औरलकवात
थाकंपनवाय औरपक्षाघातकोगुणदायकहै और
नेत्रोंकीजोतवढाताहै औरनेत्रोंकीसुपेदी औरषाज

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और विवाईको दूर करे और मसूडे और दांतोंको मज-
बूत करता है और पसीना निकलने को गुण करै और गां
ठोंको षोलता है औरजोडोंको मजबूत करे और पठ्ठोंको
प्रबल करे और जिन ना तेल पुराना होता जाता है उतना
ही बलवान जादा होता जाता है ॥ अथ सफरजली ॥
अर्थात फारसी में आबी और बेह मोदिल सरदी और गर
मी और तर है दूसरे दरजा में अनावका कौल है के बीह-
के षानेसे दिल को बल प्राप्त होता है और कलेजा को म
जबूत करता है और संतान सपूत पेदा होती है और त-
था मस्तक को और उदर को अथवा जिगर को बलप्रा
प्त करती है और पेसाव को जारी करती है और मस्त-
क को गरमी नही चडने देती है और अचेत पने को दू-
र करे और पित्त की उलटी को बंद करे और गरमी-
को शांत करे है ॥ अथ सनाय ॥ उत्तम सनाय मक्की
होती है दूसरे दरजा में गरम और खुश्क है हजरत का
कौल है के मौत के सिवाय सब रोग जाते रहते हैं सना
य पान करने से कफ को और वाय को दस्त के द्वारा नि-
काल देती है और बहुधा कर के पित्त को भी निकाल
ती है और शरीर के भीतर प्राप्त हो के मुवाद को निकाल
लाती है और मस्तक को पाक करती है और जोडों-
की गांठों को गुण दायक है और पेट के कीडा को मार
ती है और रुधिर को मिर्बल करती है और पेसाव-
लगाती है और गांठों को षोलती है और वडे वडे पित्तों
की निरबलता होती है ॥ अथ शाहतरा ॥ अर्थात-
गोजई फारसी मे जो हिंदी में दूसरे दरजा में सर्द और ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तर और भोजन में गेहूं से कम तर है जनाब का कोल है के ईश्वर नें गेहूं जो पेदा की ये है सो पित्त में मादिल और वाय पेदा करने वाला है और जो का घाट गरमी के ज्वर की दवा और भोजन भी है और गरमी के ज्वर को विशेष गुणदायक है और एक जो नथा किसी मुनासिव वस्तु के संग याको पतलो २ लेप करै तो सूजन पटक जाय और गरमी की मस्तक पीड़ा को दूर करै है ॥ अथ तीं ॥ अर्थात फारसी में गिल और हिंदी में माटी है दूसरे दरजा में सर्द और खुष्क है जनेंव का कोल है के हर मुसलमान को माटी खानां हराम है और दवाई खाना हलाल है माटी का विज है और खून वहने को बंद करै याकी लाग गुलाव जल है और जो माटी गरम कर के सूजन पर लगा वे तो जलन दूर होय और मुवाद को रोके है ॥ अथ अस्ल ॥ अर्थात फारसी में शहत और अंगवीन और मद मांषी दूसरे दरजा में गरम और तर है जनाव का कोल है के पीने की वस्तों में सव से उत्तम शहत है याकी वडाई में और खाने भी हैं सव से उत्तम शहत लाल रंग पीलाई लीयें न गाढा और न पतला माफिक का सुगंधित और मीठा और वा को निकले दो वर्ष से विशेष न भये होंय और हरा तथा काला तथा कड़वा अथवा खट्टा और पुराना होय वह सव से बुरा होता है और कफ और तूवत का निकालने वाला और साफ करने वाला और मस्तक मुवाद को निकाले और छाती को साफ़ करै और घावों को भर लावे तथा ताकत को वढावे और दवाईयों के वल का रक्षक है और नेत्रों

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में आंजे तो जोत को बढ़ावे और जो पानी में घोल के पी
वै तो तरी लावे और डूके ला पीवै तो खुश्की लावे है॥
॥अथ अकीक॥ अर्थात लाल दूसरे दरजा में सर्द औ
र खुश्क है जनाव का कोल है के लाल की अंगूठी पहर
ना मुवारिक है ता है और उस्की भस्म खाने में अच्छी
होती है जिगर को ताकत देती है और जिगर और तिल्ली
की गांठ खोलती है और गुरदे तथा मसाने की पथरी को
तोड़ के निकाले है और गुरदे को नुकसान करै तो याकी
लाग वंशूर का गोंद है॥ अथ अनव॥ अर्थात फारसी
में अंगूर उस्का पीला छिलका पहले दरजा में गरम तथा
खुश्क है और वा को गूदो पहले दरजा गरम दूसरे में
तर है और उस्का वीज दूसरे दरजा में सर्द और खुश्क
है जनाव का कोल है के सब मेवों से अंगूर उत्तम है औ
र खाने में सब से अच्छी मेवा है निर्मल रुधिर पैदा करे
है और विगड़े रुधिर को शुद्ध करै है और गुरदे को बलवा
न करै और छाती तथा नवता को गुण करै और वाय को
दूर करै और शरीर को वलवान तथा मोटा करै और उ
दर की तरी को नुकसान करै याकी लाग मीठा अनार है।
॥अथ ऊदहिंदी॥ अर्थात अगर है दूसरे दरजा में ग
रम और तीसरे में खुश्क है और काला। करारा। सुंग
धित। और कडुवा और जो पानी में डूब जाय वह अगर
अच्छा होता है जनाव का कोल है के अगर का लेना ही
उचित है क्यों के या में सात प्रकार के आराम हैं या की प
हलू के दर्द में नास देय तो पीड़ा जाय एक तो उन में सेय
ह है कफ को दूर करै चित्त को प्रसन्न राखै गांठों को खोले

For Private and Personal Use Only

वायकोदूर करे उदर को बल प्राप्त करे और दिल त
था मस्तक तथा जिगर और हो सहवास को पराक्रम
करे और पाचक है और पके और ताक़त तथा वाजू को
मजबूत करे और उदर और षांसी तथा स्वास अथवा ज
लंधर और वेहोसी और तिल्ली की सूजन को दूर करे औ
र गर्भनी स्त्री के बच्चा की रक्षा करे इन रोगों को दूर क
रे और याकी लाग गुलाव के फूल है ॥ अथ करह ॥
अर्थात फारसी कद्दू हिंदी में लोकी और घीया दूसरे दर
जा में सर्द और तर है जनाव का कोल है के घीया षाने से
बुद्धि और भेजा की वृद्धि होती है और मुलायम करने
वाली षोलने वाली और पेशाव जारी करने वाली तथा
पसीना लाने वाली और प्यास वुझाने वाली और दिल
की गरमी शांत करने वाली और घीया का अर्क तुर्त पचा
देता है और पित्त को तुर्त शांत करती है या कारण या में ष
टाई मिला के पीना उचित है ॥ अथ कुतुम ॥ अर्था
त फारसी में वसमा और नील हिंदी में लील कहते हैं ॥
पहले दरजा गरम दूसरे में खुश्क कहते हैं जनाव का को
ल है के यासे और महदी से निश्चै वद्ध तें दूर होती है प
रंतु षाने के काम नहीं आती है और याके पत्तों को वालों
में लगावे तो वाल काले भमर हो जाय और कोइ केली
तथा और किसी वस्तु के संग लगावे तो मस्तक में पीडा
पेदा होय याकी लाग लोंग है ॥ अथ करास । अर्थात फार
सी गंदना तीसरे दरजा में गरम और खुश्क है जनाव का
कोल है के गंदना खोटी कस्तूरी मे से है यह तवीयत को
मुलायम करती है और स्त्री धर्म को जारी करती है और

ताकत तथा जिगर को बलवान करता है और पाच। क है और वाय को दूर करे और गांठ को खोले और सू। ल को दूर करै और पुराने अती सार को गुण दायक है। और मरोड़ा को बंद करै याकी लाग धनीयां॥ अथ कुं दरु॥ अर्थात फारसी में लोवान हिंदी में कुंदरू गोंद दू। सरे दरजा में गरम और तीसरे में खुश्क है जनाव का कौ ल है के लोवान मेरी और देवता ओं की सुगंध है और न रम करने वाला और वाय को दूर करे और रुधिर वहने को बंद करै और प्रमेह तथा नये सोजाक और पुराने सो जाक को दूर करै और दिल तथा मस्तक तथा उदर को प राक्रम करै और पाचक और बल को रक्षक और गरम प्रकृती वाले के मस्तक में पीड़ा करै याकी लाग वूरो औ र वदल याकी मस्तगी है॥ अथ लब्न॥ अर्थात फारसी में शीर और हिंदी में दूध मादिल है जनाव का कौल है के गर्भनी स्त्री को दूध प्याने से बच्चे की वुद्धि तीव्र होती है॥ और दूध की वड़ाई में वहुधा वारता भी मिली है और प्रकृ ती पनीलापन और चिकनई और मलाई से पनीली। पन में प्रथम दरजा में सर्दी और खुश्की है और चिक न ई में प्रथम दरजा में गरमी और तरी है और मठा में दू सरे दरजा में गरमी और तरी होती है स्त्री के दूध से उपरा त गाय को दूध उत्तम है और खाने में भैंस को दूध पराक्रमी होता है या के नीचे गाय को दूध है और भेड़ वकरी को ऊंट नी के दूध में आहार पना थोड़ा होता है और घोड़ी। गधी। ख च्चर। और हिरनी आदि को दूध काई मुनासिव दवा की जगह काम आता है और शीर मुतलक गाय के दूध को क

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हते हैं स्त्री प्रसंग को प्रबल करै और मस्तक को
रोशन करै और वीर्य को पैदा करै और असलीत
री की रक्षा करै और तबीयत को नरम करै याकी ला
ग बूरो और शहत है और अध भुने अंडे और मान्स के
पीछे यह उत्तम भोजन है ॥ अथ लहम ॥ अर्थात
फारसी में गोश्त और हिंदी में मान्स कहते हैं हजरत का
कौल है के दीन और दुनियां में सब भोजन का सर्दार मा
न्स है यह अच्छा भोजन है और मान्स की बडाई और
प्रकर्ण में बहुत सी वार्ता है और कहांनी यों से यह वा
त सावित होती है के हजरत को मान्स बहुत पसंद था स
व रे मान्स गरम तर हैं कोई बहुत कोई थोडा और पसू
ओं की प्रकृती के अनुसार परंतु मछली का मान्स सर्द
और खुश्क है और जंगली परंद का मान्स गरम और
खुश्क है और चरागाह में पहले तरुण और मोटे अं
ड को शा न्कि ले हुये बकरे का मान्स उत्तम होता है और
दुबले निर्बल वृद्ध अवस्था के बकरे का मान्स बुरा हो
ता है और ठेंगने पसू का मान्स नरम होता है और लंबे
का भारी होता है ॥ अथ मरजनजूश ॥ अर्थात दो
नामरूआ दूसरे दरजा में गरम और खुश्क है और जा
लीनूस याको तीसरे दरजा में बतावै है और जनाब का
कौल है के दोंना मरूआ ताकी जड गुण करै है पचाने
वाला और षोलने वाला और प्रसन्न करने वाला पेशा
ब और स्त्री धर्म को जारी करने वाला गुरदे और मसाने
की पथरी तोड के निकालने वाला आंतों को गरम करै
उदर और आंतों की तरी को पोषण करै और बाय शूल को

For Private and Personal Use Only

और वाय केमडोडा तथाजलंधर अथवा लकुआ और
छातीकीपीडा और स्वास कासकोदूरकरै याकी लाग ।
कासनी और वदलकलोंजी है। अथ मिस्क॥ अर्थात्
फारसी में मुश्क और हिंदीमें कस्तूरी कहते हैंदूसरे दर्जा
मेंगरम और तीसरे में खुश्क है और जोंजोंपुरानीपडती ।
जातीहै त्योंत्यों विशेष खुश्कीलाती हैजनावका कोल है
के सुगंधित कस्तूरी सव सुगंधों से उत्तमहोतीहैजोडों को
मजवूत करती है अग्नि कोप्रवल करतीहै वाहरी और भीत
रीजोडों को और हवास तथा ताकत को प्रवल करतीहै गां ।
ठों को पीलती है और सीत के दोषों कोपचावेहै और वि ।
षों कोदूरकरै और मस्तक के शीतकेरोगों कोदूर करती है
और गरम प्रकृतीवाले कोनुकसान करतीहै और दवाई
यों के वल को शरीर के भीतर प्राप्त करती है और वाको सदैव
सूंघे तोरंग कोपीला करतीहै याकीलाग कपूर और गुला
वहै और वदल आसवचहै॥ अथ मलह॥ अर्थात् ।
फारसी मेंनमक हिंदी मेंनोंन सवप्रकार कादूसरे दर्जामें
गरम और खुश्क है औरहालतों की कमीवेशी इनके ।
प्रथक २ गुणजेसेजेसे नोंनहैं तेसेही हैंजनाव काकोल
है के नोंन से भोजन का प्रारंभ करो और नोंनहीसे वाको
समाप्त करोकेनोंन सवरोगों कीदवाहै और लाहोरी नों
न सवसेउत्तमहोताहै वाय कफ कोदस्तोंकेद्वारा नि
कालै और चेपदार तरी कोदूर करै और अधिकनोंन ।
खानेसे नेत्रोंकीजोत घटतीहै और वीर्य पतला पडजा
ताहै और खुजलीचलउठतीहै॥ अथवर्द॥ अर्था
त्फारसीमें गुलसुर्ख और हिंदीमें गुलाव के फूलमा।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिल है और जनाव का कोल है के जो गुलाव सूंघो तो ना
ना रंग का संघो जो बिलकुल खिले को तोडे तो अच्छा
है और गुलाव केई प्रकार का होता है वाजे फसली औ
र वाजे सदा गुलाव की प्रकृती और गुण में ठीक २ फर्क मा
लूम नहीं पडता यद्यपि वाजों ने लिषा है के मन को प्र
सन्न वलवान करने वाला और पित्त तथा पतले कफ को
मादिल और दस्त के द्वारा निकालने वाला और दुवलेप
न तथा उलटी और उदर और जिगर की और गुरदे की नि
र्वलता को गुणदायक है और मस्तक तथा कामदेव को नुक
सान करे है और नजला पेदा करे है ॥ अथ हिंद वाय ॥
अर्थात् फारसी में कासनी दूसरे दरजा में सर्द और तर है ज
नाव का कोल है के गांठों को षोले जिगर को ताकत दे रु
धिर की गरमी को शांत करे और पित्त को शांत करे और
मूत्र जारी होना और गुरदा की सफाई करे और षांसी को
गुण करे या की लाग षूरी है ॥ अथ याकूत ॥ पहले दरजा
में गरम और षुश्क है और शेखरईस याको मादिल वता
वे है और जनाव का कोल है के जो मनुष्य पीले याकूत की
अंगूठी पहने तो वाकी काष में फोडा न होय अर्थात् कषरा
ई न होगी और हकीम याकूत रम्मानी को षाना उत्तम सम
झते हैं दिल मस्तक और सांस को अत्यंत वलदायक है
और चित्त को प्रसन्न राखे और विसों का जहरमोहरा है

॥ फसल दूसरी ॥

कार्तिक वार्तायों में खरबूजा की यह प्रकृती है के जो वस्तु को
उदर में पाता है वाही की तरह पचता है जो उदर में खिजूर
के संग प्राप्त हो तो जरूर अच्छा रुधिर पेदा करेगा और ख

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रवूना ओर छुहारे को संग षाने में ओर भी वारता है ॥ अथ
दजाज ॥ अर्थात मुर्गी मुर्गा सो मुर्गी को मान्स वृद्ध को
तीव्र करता है ओर दिल को विशेष प्रवल करता है ओ
र मुर्गा को मान्स जहां लाग न दे तव तांई ओर मुर्गी जव तांई
अंडा न दे तव तांई षाना उचित है ॥ अथ ककड़ी ॥ क
कड़ी को बिजूर के संग षाने से यह गुण पाया जाता है के क
कड़ी तरी पतला कफ पेदा करै ओर कभी पित्त के कारण
से पच जाती है ओर षिजूर रुधिर पेदा करै ओर अपनी
हालत ओर स्वाद में ककड़ी से विशेष वलवान है या को
मिला लेने में दोनों अच्छा ओर निकाल डालने से विशेष
पेदा होता है ओर इन दोनों को संग षाने से ओर भी विशे
ष वढ़ता है ॥ अवदुल्ला जाफर का वेटा कहता है के नवी
साहव ककड़ी को षिजूर के संग षाते थे या में यह वात है के
ककड़ी ओर घीया दोनों सर्द तर हें ओर नोंन चिराया मान्स
गरम रवुश्क है या मिलाव से सव की प्रकृती गरम तर ओर
रुधिर पेदा करने वाली ओर सांस की मदत गार हो गई है ॥
॥ अथ सरीद ॥ अर्थात दूध तथा शोरवा में भीजी रोटी य
ह भोजन तुर्त पच जाता है ओर स्वाद में अच्छा होता है ओर
उत्तम सांस ओर निर्मल रुधिर पेदा करता है ओर निर्वल म
नुष्यों को अति गुणदायक है ओर या की प्रकृती गरम तर है ॥
॥ अथ हलुआ ओर पूाहन ॥ यद्यपि सव मीठी वस्तु
से हलुआ मुराद है परंतु यह एक प्रकार का भोजन है गेंहू की
मेदा को घी में भून के मीठे की चाशनी पका के मेदा मिला के व
नाते हें जो स्वाद में अच्छा गरम ओर तर है रुधिर ओर रूह
को पेदा करे परंतु देर में पचता है यह भोजन हजरत के पसंद

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आताथायाकीप्रकृतीगरम और तरी लीयेमादिल है॥ और कफ को दूर करै रुधिर को पैदा और तबीयत को बलवान करै याबात से यह साबित होता है के रसूल ने निर्बलता की हालत में छुहारा षाना मने कीया है क्यों के छुहारा रुक्ष और उदर को भारी है और चुकंदर और जो षाना बताया है क्यों के वे दोनों मिल के तबीयत को मुलायम करते हैं और थोडी गरम और तुर्त पच जाती है और निर्मल रुधिर पैदा करने वाले हो जाते हैं और जौ की रोटी पर छुहारा रष के षाय तो केई प्रकार को गुण करै है प्रघट हो के हजरत ने जिन वस्तों के संग छुहारा षाया जो लाल बूरा और गुड के संग षाय तो भी वह गुण करता है क्यों के ये दोनों छुहारे की प्रकृती के तुल्य है॥ मिकालह तीसरा अक साम अदवीये मुरक्कबह में॥ अर्थात् तीसरे षंड की मिली हुई दवाई यों के भेदों में अलिफ के अक्षर। फसल पहली की थोडी मिली हुई दवा जिन का एक ही तुस खा है॥ अकेने रूया॥ या को बकरात हकीम नें बनाया और जो के मिलाये जिन का सब से बडा भाग है याकारण से या को यह नाम पडा॥ पक्षाघात। लकुआ। मिर्गी। सन्यवाय। भूल और कफ सब प्रकार के रोगों को दूर करै और अग्नि को बढावै और कामदेव को प्रबल करै॥ अथ क्रिया॥ अकरकरा। कलौंजी। मीठो कूट। काली मिर्च। बच। जरावंद मदहरज एक २ तोले चीता। सोंठ। राई नौं नौं मासे। नागरमोथा। बाल छड। लोबान। बडी हड। काली हड छे छे मासे। मिलायों का तेल पांच तोले शुद्ध शहत डेढ गुनो पाक की विधि से बनावै॥ अथ अमरो सीया॥ यह अमरूस नामी बादशाह के लीं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ये वकरात हकीमनें बनायाथा। या कारण करके याके यह नाम धस्यो। उदर को बल प्राप्त करै और जिगर औ रतिल्ली और गुरदे कोवल दे और नसों कीगांठ औरगंदे और मसाने की पथरी को दूर करै पेशाबलगावे और हाले ही जलंधर को गुण दायक है॥ विधि॥ मीठाकूट। सुपेद मिर्च। पीपल। स्याहजीरा। अजखर अर्थात गन्धी लड़े ढ डेढ तोले। पोदीना। ऊदविलसां। तज। अजमोद। वच। पिस्ता के छिलका एक २ तोले केसर छै मासे दूनों शहत ले के पाक बना ले॥ अथ अफलूनीया॥ याकी अफलनरूमी हकीम ने चलाया जो नजला और पीड़ा और रुधिर की उलटी और खून के दस्त और वाय के शूल औ विसूची और उदर इन रोगों को वहुत गुण दायक है॥ विधि॥ सुपेद मिर्च। पीपल। खुरसानी अजवायन। छै छै तोले। अफीम तीन तोले। केसर डेढ तोले। पहाड़ी अजमोद। बालछड़ दो दो। अर्थात जंगली गाजर के वीज। तेजपाल। तज। ऊदविलसा। अकरकरा नोंनोंमासे छै गुने शहत में बना वे और छै महीने पीछे। काम में लावै और याके ऊपर से जो वाय शूल हो तो सोंया के वीजों का काढा दे और गुरदा की पीड़ा में खरबूजा के वीजों का काढादे और उदर पीड़ा में अनीसूं को काढादे और सूपरज के दर्द में सिर्कजवी पीवै और मसाने की पीड़ा में सोंफ को काढो पीवै और रुधिर के वंद करने में तलली को काढो पीना उचित है॥ अथ अरसतूं। या को अरसतूंनें वनाया या कारण से या का यह नाम रखा गया॥ योनि की पीड़ा को और पेट की पीड़ा को और वाय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूल और चौथीया ज्वर को दूर करै है॥ विधि। तज।
अकरकरा। पोदीना। कलौंजी एक२ तोले। कालीमि
र्च। गंधकपीली छै छै माशे। केसर तीन माशे। डेढगु
नों शहत में माजून बनावे॥ अथ अबकामह॥ य
ह पहले हकीमों का बनाया हुआ है॥ उदर को ताकत
देता है और क्षुधा को वढावे कफ को निकाल कर दूर।
करे और थोडी लाष गेर के पावै तो शरीर को सुषा देहै।
॥ विधि॥ आध सेर की मोटी गेंहूं की रोटी एक हांडी में।
वंद करके राषै जव फफूंडन चढ जाय तव खूव कुचल
के पॉन सेर सिरका और आध पाव साँभर नौंन मिला के।
एक महीना भर धूप में धर के छान ले छै तोले पोदीना॥
तीन तोले सोंठ। मिर्च काली पाँच तोले। पालक के वीज।
तोले दो मिला के सात दिन धूप में रष के कपडा में छान के
शीशी में रष लें॥ अथ असूदसलीम॥ याको सली
म हकीम नें चलाया है या कारण से याको यह नाम र।
षा गया। पक्षाघात और लकुआ और सून्यवाय पु
रानी मस्तकपीडा और सीत के सव रोगों को गुण करै
है और अफीम षाने की आदत को छुडावे है॥ वि
धि॥ वालछड। मस्तगी। नरकचूर। अफीम। सुपेद मि
र्च। नकछीकनी। अकरकरा। लोवान। चीता। एलु
आ। डेढ२ तोले॥ वच। जरावंद तवील। जरावंद मह
र्जी। राई। गूगल। कुटकी। आसवच। इंद्रायन। गंध
क आमलासार। लटजीरा। सम्हालू के वीज। ततली
के वीज। कलौंजी। जायशीर अर्थात वदवूको गोंद।
दो दो तोले। तीन गुने शहत में माजून वनावे और॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दो महीना तांई नाज में गाड रखे ॥ अथ अगवरलू लवी ॥ पुरानी क्रिया हैं विशेष घिसने के कारण से काजल के तुल्य की या जाय या कारण से याको यह नाम पडो सुर्मा को भेद है ॥ नेत्र की षुजली और ढलका और वामनी और कुथी और मंदो दीषने को गुण करै है ॥ विधि ॥ शुद्ध सुर्मा शुद्ध फटकरी नौं नौं मासे अवींधे मोती तीन मासे सुपेद मिश्री पाँच मासे ले के सुर्मा बनावै ॥ अथ अकसीरे ॥ यह अगली क्रिया है विशेष गुण करने के प्रताप से यह नाम रषा गया नेत्रों के मान और मोर सुर्ख को दूर करता है ॥ विधि ॥ बंग। चंदी की मूस। बंबूर की गोंद। प्रत्येक छै छै मासे। गेंहूं को सत्त। अफीम। ये दो मासे फूल का सी के बासन में सुरमा सा महीन घोटे ॥

॥ फसल दूसरी ॥

अनोंषा दारू के नुसखों में ॥ अथ अनोंषा दारू य सादह ॥ ताक़त को बढ़ावे और भीतर के जोड़ों को तया उदर को बल प्राप्त करै और शरीर की कांति को बढ़ावे और मुंह को सुगंधित करै और चित्त प्रसन्न रषे तैयारी से चालीस दिन पीछे काम में लाने के योग्य है और या को असली बल दो वर्ष तांई रहता है ॥ विधि ॥ एक रतल आमरे और डेढ रतल बूरो एक रतल शहत की चाशनी कर दो या में गुलाब के फूल। लौंग। मस्तंगी। नेत्र वाला। छोटी इलायची के दाने। नौं नौं माशे। केसर चार माशे। इन को चूरन कर के मिलावै ॥ अथ अनोंषा दारू यल्लूलवी ॥ मन को ताक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त देने वाली और प्रसन्न करने वाली और माथे को पराक्रम दे और होलदिली तथा गरमी के ज्वरों को और मस्तक पीड़ा को दूर करै ॥ विधि ॥ अनबीधे मोती दो माशे । संग यशब चार मासे । केवड़े अर्क में तीन दिन तांई घोट के सुषाले और सुरमा सा महीन कर के । अगर । वंशलोचन । बाल छड़ । गुलबनफशा । कच्चा रेशम छे छे मासे चूरन कर के एक रतल आमले की चाशनी में जामें दो रतल सुपेद बूरो । और एक रतल गुलब जल तथा अर्क गावजबा में बनी हो वामें मिला के राखे ॥ अथ अनोशदारू यमुरक्किब ॥ उदर । मस्तक । और दिल को बल प्राप्त करै और जीर्ण तथा नजले को दूर करै ॥ विधि ॥ आध सेर आमले की चाशनी में चंदन चूरो । तालीस पत्र । गुलाब के फूल । सेवती के फूल । जरिष्क । नींबू को छिलका । गिलोय सत्त । एक २ तोले । छोटी इलायची के दाने छै मासे । बबूर को गोंद । कतीरा । पिस्ता के छिलका नौं नौं माशे । केसर तीन माशे । चूरन कर के मिलावे ॥

॥ फसल तीसरी

॥ अत्रीफलात में ॥ अत्रीफल त्रफला से बना है ॥ और हिंदी में । हड़ । बहेड़ा । आमले को । त्रिफला कहते हैं या क्रिया से त्रिफला है या कारण से यह नाम रखा है ॥

॥ अथ अत्रीफल कशनीजी ॥ अर्थात् धनिये को अवलेह ॥ मस्तक और नेत्र और कान की पीड़ा जो नजले की गरमी के प्रताप से हो और नेत्रों की जोत घट गई होय ताको और हर प्रकार की बवासीर को गुणदायक है ॥ वि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धि ॥ वडीहड। छोटीहड। कालीहड। एक२ तोले। वहेडा। आमले। सूखे धनीयें। तीन२ तोले। चूरन करके गायको घी तथा वदाम रोगन में मकरोके पोन पाववूरे। और शहत की चाशनी करके मिलावे॥ अथ अत्री फल उस्तुखुदूसी॥ मस्तक और त्वचा के रोगों को। गुणदायक है॥ विधि॥ छोटीहड। वहेडा। आमले तीन२ तोले। उस्तुखुदूस। गुलाव के फूल दो२ तोले। अमरवेल। अनीसू। विस्फी लोटन। चीता। एक२ तोलेति गुने शहत में मिलावे॥ अथ अत्री फल किंवीली ॥ अर्थात् कमेले का अवलेह पेट के तीनों प्रकार के कीडों को मारके निकाले है॥ विधि॥ वडीहड। वहेडा। आमले। कमेला। दो२ तोले। वायविडंग। मीठाकूट। एक२ तोले। इंद्रायन। राई। मोथा। हल्दी छे२ मासे तिगुने शहत में मिलावे॥ अथ अत्रीफल सादह॥ उदर को वलवान करे और मस्तक को ताकत दे और विगडे मल को उदर से साफ करे है॥ विधि॥ वडीहड। वहेडा। आमले वरावर लेके और कूट छान के वदाम रोगन में मकरोके छे गुने भाग लीये भये शहत में मिलावे॥

॥फसल चोथी॥

अयारजात में यद्यपि इस के अर्थ तो बहुत से हैं परंतु असली ते नाम रषने की यह है के अयार जस कमूनीया को कहते हैं और सकमूनी या या का वडा भाग है या कारण से वाही के नाम पर नाम रषा है और अगले समय के हकीमों नें जुलाव से प्रथम याको चलाया था ॥ अथ अयारज॥ वायकफ के मुवाद को निकाले

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रोर मस्तक पीड़ा श्रोर कान की पीड़ा श्रोर भारीपन श्रोर पक्षाघात श्रोर लकुश्रा श्रोर कंपन वाय तथा छीप श्रोर सुपेद दाग श्रोर गलत कुष्ट को गुण दाय करै है॥ विधि॥ सुपेद निसोत। इंद्रायन। गारीकूं। सक मूनीया। श्रमरवेल। एक२ तोले। गूगल। श्रनीसू। तज। काली मिरच। सोंठ। उस्तुखुदूस। गुलाव के फूल। पांच२ मासे दोनों शहत॥ श्रथ श्रयारज फैकरा॥ उदर के विगड़े मुवाद को पाक करै श्रोर नाना प्रकार की मस्तक पीड़ा श्रोर माथे के रोगों को दूर करै है॥ विधि॥ जटामासी। सुगंधवाला। तज। छे२ मासे। मस्तगी नों मासे। केसर तीन मासे। वरावर की सकमूनीया। श्रोर सव से दूनों शहत॥ श्रथ श्रयारज॥ माथे के मुवाद को दूर करै श्रोर माथे के रोगों को दूर करै॥ विधि॥ सकमूनीया। एक तोले। इंद्रायन छे मासे। निसोत सुपेद। सनाय की पत्ती। गुलाव के फूल नों नों मासे। झाग लीये हुये शहत वारह तोले मिलावै॥

॥ फसल पांचवीं॥

श्रावजन के नुसखों मे॥ श्रावजन॥ मूत्र को श्रोर वादी से पेट फूल जाने को श्रोर गुरदे तथा मसाने की पीड़ा को दूर करै है॥ विधि॥ श्रनीसू। स्याहजीरा। सोया के वीज। सातर। दोंना मरवा। वावूना के फूल। सव वरावर लै। श्रावजन को वारवार काम में लाने से गुरदा श्रोर मसाने की पथरी को दूर करै॥ विधि॥ तुलसी। पोदीना। कवूतर की वीठ। खुष्क दाना की मीगी। पांच२ तोले। वावूना के फूल। गुलाव के फूल। खतमी के वीज। नारखूना।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खरबूजा की मींगी। लाई। कुलथी। तीन २ तोले। सौं फ की जड चार तोले॥ आवजन॥ खून के पेशाव होने को और पैर जारी होने को दूर करै॥ विधि। माजूफल। अनार भाऊ के पत्ता। मीठे अनार के पत्ता। गुलाव के फूल। सव वरावर ले॥ आवजन॥ स्त्री धर्म को जारी करै और मरे वच्चा को पेट से निकाले॥ विधि॥ तज। दोंना मरुआ। अजखर। पोदीना। कडवा कूट। नाखूना। अजवायन। कलोंजी। ततली। अजमोद। तुलसी। सव वरावर लेनी॥

॥ फसल छटी॥

अन कवाव अर्थात भफारे में॥ अन का वाव॥ कान के वोझ को जो वहुधा कर के विसूचिका के पिछाडी रोग होता है और कफ वाय की कर्णे पीडा और कान के भारी पन को दूर करै॥ विधि॥ वावूना के फूल। नाखूना। तुलसी के पत्र और शाखा। दोंनामरुआ। सोंफ की जड को छिलका नोंनों माशे। कायल की जड को वक्कल। गुलाव के फूल। मूली के वीज। पांच २ मासे ले॥ अनकवाव॥ कान के वहरे पन को और फूटे पड जाने को दूर करै॥ विधि॥ ततली। सोया के वीज। मूली के वीज। नोंनों मासे। लोवान। एलुआ तीन तीन मासे ले॥ अनकवाव॥ कान की पीडा को और कान की सूजन को दूर करै॥ विधि॥ वनफशा की पत्ती। मकोय के पत्ता। सभालू के पत्ता। वावूना के फूल। गुलाव के फूल। नीलोफर के फूल। खतमी के फूल सव वरावर ले॥ अनकवाव॥ मसा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ने की पीडा और दूसरी पीडा और जोडों के जिड वंद हो जाने को दूर करे॥ विधि॥ नीम की पत्ती। मकोय की पत्ती। अमर वेल। सभालू के पत्ते। महुआ के पेड की छाल। सव वरा वर ले॥ अनकवाव॥ अंडकोस और इंद्री की सूजन को गुण दायक है॥ विधि॥ सक मूनीयां तीन मासे। सोये के वीज। मकोय के पत्ता। दोदो तोले। खूवकला। हड। आमले। एक २ तोले ले॥ अनकवाव॥ छाजन अर्थात हाथ पाव के फटजाने को दूर करे॥ विधि॥ नीम की छाल दो तोले। कडवा कडू आध पाव। काय फल तीन तोले॥ हर्फवाय ताजी॥

॥ फसल सातवीं॥

वर्ष के नुसखों में असल में यह वर्ष अप्रा है आगले हकीमों का वनाया हुआ है अव विशेष काम में लाने से वर्ष के नाम कर के प्रतिष्ठ हो रहा है॥ वर्ष के सरदी और नजला और नेत्रों की स्याही और भौर आजाना और कान के शब्द को और लकुआ तथा पक्षा घात और कंपन वाय तथा मिर्गी और निद्रा भूल माली खूलीया अर्थात वावला पन और कमलवाय और पठ्ठों की निर्वलता और सर्वांग वात तथा मसूडे का रोग तथा जड वुद्धि मुंह की वास तथा मुंह मे लार वहना और खांस तथा रुधिर थूकना कफ की पीडा उदर की और जिगर की निर्वलता और नाना प्रकार के जलंधर और वीर्य्य के प्रमेह स को गुण दायक है और विषों का जहर मोहरा है॥ विधि॥ का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ली मिर्च। सुपेद मिर्च। खुरासानी अजवायन। चार२ तोले। अफीम। मिश्री दो२ तोले। केसर एक तोले। वाल छड। अकरकरा तीन२ मासे जुदा२ चूरन कर केति गुने शहत झाग लीये हुए में मिला के तीन महीना जो में गाड के कैमखावें मात्रा एक दो रत्ती से मासे ताई की है। और याको वल पांच वर्ष ताई रहता है॥ अथवा॥ गुल वनफसा। कदसलीव। तुख्म खुरफ़स। वडी हड छे२ मासे। चूरन करके दो तोले अफीम गरम पानी में घोल के मिला के गोली बना वैं॥ अथवा॥ लोंग। केसर। अकरकरा। खुरासानी अजवायन। पाँच२ मासे चूरन करके दो तोले अफीम। के वडे अर्क में गरम कर के मिला वै जो वह माजून सा हो जाय।

॥फसल आठवीं॥

वत्तीसा पीडी के नुसखों में॥ वत्तीसा॥ इस्त्री योंके पानी पडने को और रितु हो जाने को और कमर के दर्द को और निर्वलता और तवीयत की नकाहत को गुण करे है और पुर्षों के प्रमेह को और वीर्य पतला पड जाने को और ताकत को वडावे है॥ विधि॥ माजूफल। माई। लोद। वायविडंग। वाजषमा। धाइ के फूल। वडा गोषरू। छोटा गोषरू। सुपारी को फूल चीकनी डली। सेमर को मूसला। समुद्रसोष। मोलसरी की छाल। ढाक को गोंद। छोटी इलायची छिलका समेत। मजीठ। पलंगतोड। कमरकस एक२ तोले। सेलषडी दो तोले। वमूर का गोंद सात तोले सव को कूट छान के गाय के घी में भून के और आध

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेर साठी चावल की मेदा और तीन पाव सुपेद बूरे में मिला वै। और गिरी। छुहारे। चिरोंजी। एक २ छटांक टूक २ कर के मिलावे और तीन पाव गाय के घी में मिलां के चाहे तो साही चाहे थोड़ा सा पानी मिला के लडु वांधे॥ अथवा वत्तीसा॥ सेमर की मूसरा। मजीठ। पुरानी सुपारी। पलंग तोड। सरयानी के वीज। गाजर के वीज। वीज वंद। कौंच के वीजों की मींगी। धाय के फूल। चिडीपा गोंद। चुन्नी गोंद। पलास पापडे का गूदा। इंद्रजो। तेज वल। पीपला मूल। माई। समंदर सोष। वाय विडंग। देसी। अजमायन। ताल मषाने। सोंठ। वडे छोटे दोनों गोषरू। दोनों मूसरी। माजूफल। दालचीनी। वालषमा। लोद। मोचरस। कमरकस। कामराज। सींगडी व बूर की। वडफली। वडी इलायची। असगंध एक २ तोले। सेल षडी तीन तोले। गेंहूं की मेदा साठी चावल की मेदा पाव २ सेर। सुपेद बूरा और घी आध २ सेर लेके वनाले॥ पींडी॥ इन्द्रियों की शक्ती को अत्यंत गुण दायक है॥ पानी को सुषावे और पचावे शरीर की कांत को वढ़ावे और वलवान करै और उत्तम रुधिर पेदा करै। और पत्थर के पतले वीर्य पड जाने को और इन्द्री की सुस्ती को दूर करै॥ विधि॥ ताल मषने। चाकसू। उटंगन के वीज। वहेडा। आमला। माजूफल। स्याह जीरो। सुपेद जीरो। लोद। दो २ तोले छोटी वडी दोनों इलायची। सिरयानी के वीज। जायफल। लोंग। एक २ तोले। विनोले की मींगी। सुपारी।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चार २ तोले घी में भूने नो तोले बबूर की गोंद और गें हूं को सत्त डेढ पाव। ढाई पाव सुपेद बूरो। और मेवा। और घी पहले नुसखे के प्रमाण मिला के बना ले॥

॥फसलनवीं॥

वरूद के भेदों में से है॥ वरूद॥ नेत्रों के मैल को और पानी को दूर करै फूले और जाले को काटे। और नेत्रों की सुर्खी और रतोंधा को दूर करैं॥ विधि॥ सुर्मा शुद्ध मासे भर। वडी हड की वक्कल दो मासे। अंगी हड की गुठली जली हुई एक नग। कपूर दो रत्ती॥ चार रत्ती सेंधोनोंन सुर्मा की तरह घिस के काम में लावै॥ वरूद॥ नेत्रों की जोत वढा वे और रोगों॥ से नेत्रों की रक्षा करे॥ विधि॥ चेंदी की घरीया तीन मासे। केसर एक मासे। कपूर चार रत्ती॥ वरूद॥ नेत्रों की जलन और षुजली को दूर करैं॥ विधि॥ षपरीया। जली हुई सीप तीन २ मासे। रसोत पांच मासे। कपूर एक मासे। सुपेद वंश लोचन छे रत्ती॥

॥फसलदसवीं॥

बखूरात में अर्थात् धूनी यों में॥ बखूर॥ ववासीर॥ के मस्सों को और गुदा की सूजन को दूर करै और चनूनों को मारे है॥ विधि॥ गंधक। सिंदूर। छे २ मासे मुलहटी। आक की जड। वेर के पत्ता दो २ तोले जला के गुदा में धूआं पहुंचावे॥ बखूर॥ ऋतु को जारी॥ करै और इस्त्री के गर्भ से मरे वच्चा को निकाले और जो वच्चा कठिन से जने ता को आसान करे॥ विधि॥ नकछीकनी। नष। कंकोल मिर्च। गूगल। गंधक॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सव वरावर ले के चूरन कर के गाय के पित्ते में सा
न के गोली तथा शायाफ वना रक्खै समय पर ज-
ला के धूनी लै ॥ वखूर ॥ वाय की ववासीर को-
दूर करे ॥ विधि ॥ भट कटैया को फल । नीम के प-
त्ता । असपन्द के दाने । सव वरावर ले के धूनी ले ॥
॥ वखूर ॥ इस्त्री आसानी से लडका जने ॥ विधि
॥ सांप की कांचली एक भाग । और घोड़ा तथा गधा के खु
र चार भाग जला के धूनी लै ॥ वखूर ॥ हाथ के नों
ह के अपरस को दूर करै ॥ विधि ॥ अंडी को तेल रो
ग के अस्थान पर लगा के आक की लकडी की धू-
नी ले ॥ अलिफ वाय फारसी ॥

॥ फसल ग्यारवीं ॥

पासोया के नुसखों में ॥ यासोया ॥ गरमी की मस्तक
पीड़ा और पित्त को सरसाम और निद्रा न आने को
गुणदायक है ॥ विधि ॥ वेर की पत्ती । गेंहूं की भुसी -
आध २ पाव । वनफशा के पत्ता । नीलो फर के फूल ।
षतमी के फूल । मकोय । कुलफे के पत्ते । पालक के
पत्ता । चार २ तोले । घीया काट के छै तोले । धारीनों
न तीन तोले ॥ अथवा ॥ नीलो फर के फूल चार तो
ले । गुलाव के फूल एक तोले । कटा हुआ पेठा । कटी हु
ई घीया । गेंहूं की भुसी छै २ तोले । हरो धनियों । धारी
नोंन । दो २ तोले । वेर के पत्ता छै ले लेय ॥ याशोया
॥ सरदी की मस्तक पीडा को और निद्रा को और क-
फ के सरसाम को और कफ ज्वर को गुणदायक है ॥
॥ विधि ॥ गुल वावूना । नाखूना । गुल षतमी । राई ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साँभर नोंन। खूबकला। तीन २ तोले। गेंहूं की भुसी।
वेर के पत्ता। छै २ तोले॥ अथवा॥ कालीझाँप। गु
ल बाबूना। खतमी के बीज। तीन २ तोले। वेर के पत्ता
सहजने के पत्ता। चार २ तोले। साँभर नोंन दो तोले ले
॥ हर्फ ताय॥ ॥ फसल वारवीं॥
॥ तिरीया॥ अर्थात् जहर महुरों के नुसखों में॥ प्रग
ट हो के पहले तो तिरीयाओं की क्रिया हकीमोंने फाद
जहर की वस्तु से करी थी पीछें कड़ी कड़ी वस्तु से बना
ने का प्रारंभ किया या से यह प्रयोजन है के सामने रोग
को तिरीयंक इतना गुण करे है जितना फादजहर विसों
के दूर करने में दूर करे है॥ तिरीयाक॥ अर वह॥
या को अंदरूमे खस हकीम नें चलाया बन जाने से
चालीस दिन पीछे काम में लाने के योग्य होता है॥
या को वल पराक्रम दो वर्ष तांई अच्छे प्रकार से रह
ता है॥ वादी के जमाव को दूर करे और जिगर तथा
तिल्ली को अच्छा है और गाँठें को खोलता है और प्र
त्येक पसूओं के विस का जहर महुरा है और मुवाद
को बहावे और मरे बच्चा को निकाले और मिरगी त
था होल दिली और सीत के विकारों को गुणदायक है
॥ विधि॥ जवासे के बीज। पाषान वेद। बीजा बोल।
जरावंद तवील तथा जरावंद मदहरज सब बराबर ले
के चूरन कर के भाग लीये तीन गुने सहत में मिलाके
मात्रा एक मासे से चार मासे तांई की है और जो एक भाग
केसर मिलावे तो बहुत मुलायम और वलवान हो
जाय॥ तिरीयाक समानीये॥ अर्थात् आठ वस्तों के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जहर मुहरा वलीदूनस हकीम ने आठवस्तुओं का व-
ना के यह नाम रक्खा विश्श खाये हुये विष को और
काठने वाले तथा डंक मारने वाले पसूओं के विष
को दूर करता है और वायशूल को तथा उदर कीस
पती को तथा तिल्ली की गांठ को और पक्षा घात त
था कंपन वाय और मिरगी को गुण दायक है और
वाय को पचावै और नसों की गांठों को पोले ॥ विधि
॥ वीजा वोल। जवासे के वीज। पाषान वेद। कडवा
कूट। एक २ तोले। काली मिर्च। तज आठ २ मासे।
केसर। दाल चीनी। चार २ मासे शहत तिगुनों लेनों
॥ तिरीयाक सगीर ॥ अर्थात् छोटा जहर मुहरा या
को पोरवुल रईस ने चलाया विष के जहर को दूर करे
और पसू के विषदूर करने में तिरीयाक अरवासे व
ढ के हे॥ विधि ॥ जरा वंद तवील। जवासे के वीज।
पाषान वेद। कब्र की जड को छिलका। अफसनती
न। हल्दी। दंती। सववरावर और सहत सव से ड्योढा
लेय ॥ तिरीया कुल मसाना ॥ अवुल माहर हकी
म ने वनाया है॥ गुरदे और मसानों के घावों को दूर
करै और पेशाव जारी करै और पुरानी जलन और
पेसाव वंद हो जाने को गुण दायक है और थोडे गाय
के दूध के संग गर्भाशके रोगों को गुण करै और ऋतु
को जारी करै और इन्द्री की पीडा को आराम देहै औ
र ओचने को पानी में भिजो के वा पानी के संग लेय
तो माथे को गरमी न चढै और सांस के जोडों को पा
क और प्रवल करैहै और शहत के पानी के संग॥ वि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धि॥ वनगाय के सींग की भस्म। मूंगा। मोती। नौं
नौं मासे। अफीम एक मासे। मुलहटी का सत्त। तंत
शीक। गेरू। गिलपुगी राजी अर्थात्। खुरासान की मां
टी। रेवतचीनी। सूखेजूफ। पहाडी पोदीना। अजमोद
अनीसू। चार मासे। गिल मखतूम। खतती के बीज
खूबाजी के बीज। कुलफा के बीज। खीरा ककडी की
मींगी। घीया के बीजों की मींगी। खरबूजा के बीजों की
मींगी। दमुल अषवेन। पांच २ मासे। छडीला। कती
रा। कुलथी। मीठे बादाम की मींगी। सात २ मासे। हुब
का कनज। अर्थात् राज पूतका नौं मासे। तिगुनों शह
त लेय॥ तिरीया कुल असनान॥ दांत और मस्
डे की पीडा को सरदी से हो जिस को दूर करने में बहुत
गुण करे है॥ विधि॥ काली मिर्च। अकरकरा। हींग
नरकचूर। नोंन संधे। सब कूट छान के शहत में मि
ला के गोली बना के छाया में सुषा के दांतों के नीचे
दवा लीया करे॥

॥ तेरहवीं फसल॥

तेजाब के नुसखों में॥ तेजाब॥ घावों के विशेष
मान्स को काटता है और कडे फोडा को तोडता है
और पुरानी फुनसीयों के मुवाद को बहाता है॥ वि
धि॥ सोरा कलमी। फिटकरी। नोंशादर। सब बराब
र जो कुट कर के वदस्तूर अर्क षचें॥ तेजाब॥ सुपे
द दाग की षाल को और बुरे मान्स को काटे और अ
च्छा मान्स और षाल को जमावे॥ विधि॥ सुपेद फि
टकरी दो तोले। पीली फिटकरी चार तोले। कलमी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घोरा सात मासे वदस्तूर वनावे और वाल षुजाके ल गावे ॥ तेजाव ॥ ववासीर और विशेष मान्स को का ट के दूर करदेताहै ॥ परंतु यहदवा दुष वहुत देतीहै मान्स के कटजाने पीछे करनवले अर्थात् गोभी के पत्तों को औटा के वा को पानी ले के वामें गाय । को घी भिला के घोटेजव मरहम सा होजाय तव । लगावे और जोया से घाव दूर न होय तो दूसरा मर हम काम में लावे और एक दिन के लगा नेसे मा । न्सन कटे तो एक दो दिन वीचदे के फेर लगावे ॥ ॥ विधि ॥ पारा । नौसादर । चार २ तोले । जंगाल । पत्थर को चूनों आठ २ तोले । सजी । लोवान । गंध क । हल्दी । चोवीस तोले । पारे और जंगाल को । सिरका में षरल करै जव पारे को चिन्ह न रहै तव दूसरी दवा मिला के घोटे और दवा को सुषावै वा । में पीछे ठंडे पानी में धर के एक माटी के सकोरा में राषे और दूसरो सकोरा औंधोवा के ऊपर राषे औ र मुंह चून से वंद करै और मंदी आंच देतो रहै ज । व सवरी दवा को सत्त उड के ऊपर के सकोरा में लि पट जाय तव षोल के सत्त को लेके रषले और का म में लावे । हर्फ जीम ॥

॥ फसल चोधवीं ॥

जवारषोंमें याकी चाल भाजू नके पीछे चली वहु । भा करके उदर के रोगों के लीयें और जोडों के लीयें । भी वनने लगी ॥ जवारश दारचीनी ॥ सव जोडों को और कामदेव को वलवान करै और मस्तक पीडा ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को और कफ की खाँसी को तथा वाय की ववासीर। और दाद और पाँव की उंगली ओं का दर्द तथा छीप और गुरदे तथा मसाने की पथरी को गुण करै है॥ विधि॥ वाल छड। छोटी इलायची के दाने। तज। दार चीनी। कुलीजन। लोंग। मोथा। सोंठ। काली मिर्च। पीपल। मीठा कूट। नेत्र वाला। प्रत्येक दो२ भाग। केसर एक भाग। मस्तगी पाँच भाग। सव की वरावर सुपेद वूरो और दोनों की वरावर शहत॥ जवारश कमूनी॥ उदर को ताकत दे और पाचक है वाय को दूर करै और फुजलों को दूर करै है॥ विधि॥ काले जीरे। सिरका में भिजो के सात भाग। काली मिर्च। सोंठ। ततली। पीपल। पोदीना। हड पीली। तीन२ भाग। नोंन सेंधा चार भाग। तिगुने शहत में वनावै॥ जवारश मस्तगी॥ उदर को और कलेजे की तरी और मुंह से लार वहने को दूर करै और उदर को वल दे और पाचक है॥ विधि॥ रूमी मस्तगी एक भाग। चूरन करै सोलह भाग सुपेद वूरे की चाशनी जो गुलाव जल में वनी हो उसमें मिलावै॥ जवारश ऊद तुर्श॥ उदर को वलवान करै और भोजन को पचावै॥ विधि॥ अगर पाँच तोले। लोंग। वाल छड। जरिश्क एक२ तोले। डेढ पाव सुपेद वूरे की चाशनी जामें आध पाव कागदी नींवू रस तथा वारह तोले खट्टे अनार को रस। मिला के वनावै॥ जवारश जालीनूस॥ सव जोडों को और ताकत को वलवान करै और की विशेषता और वाय की प्रवलता को और मस्तक पीडा को और

मूत्र

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कफ की खांसी को और वाय की ववासीर को और। दाद तथा हाथ अंगलीयों की। पीडा और छीप तथा गुरदे और मसाने की पथरी दूर करै और वालों की रक्षा करैहै ॥ विधि ॥ वालछड। इलायची। तज। दारचीनी। कुलीजन। लोंग। मोथा। सोंठ। चिरायतो। काली मिर्च। पीपल। मीठो कूट। ऊदविलसां। नेत्रवाला। एक २ तोले। केसर छै मासे। रूमी मस्तगी दो तोले। सव की वरावर सुपेद कंद और दवा से दूनों शहत लेनों ॥ जवारष्ण खोजी ॥ खोजसतान के हकीमोंने चलाया भोजन को पचावे। और दस्तों को वंद करैहै और तिल्ली की सूजन को जलंधर को पेसाव की विशेषता को दूर करै है॥ विधि ॥ मीठो कूट। तज। वालछड। एक २ तोले। जायफल दो तोले। वडी इलायची के दाने। लोंग। अनीसूं। चीतो तीनों मासे। दरूनज अकरवी। जरावंद मदहरज। छडीला। वडी हड। जंगी हड प्रत्येक छै २ मासे सव से दूनी सुपेद मिश्री। और दो महीना पीछे काम के योग्य होगी ॥ जवारष्ण वूअली ॥ वादी और होलदिली को और वावले पन को और घवराहट। दिल को और वाय के स्वास को दूर करै है ॥ विधि ॥ अगर। जाविंत्री। रामतुलसी। तालीसपत्र। नरकंचूर। गावजुवां के पत्ता। वालछड। एक २ तोले। दालचीनी। मस्तगी। सोंफ। छै २ मासे। कपूर तीन मासे। सवकी वरावर शहत और सुपेद मिश्री सव से दूनी ॥ जवारष्ण अस कफ ॥ असकफ अली

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हकीमनें लिषा है के मैंनें कोई मिश्रित दवाई उत्त
म और तासीर करनेंवासे नहीं पाई है शूला दिक उ
दर के रोगों को आतमाओं को और ववासीर तथा
पीठ की पीड़ा और गुदा की पीड़ा तथा दूबलापन औ
र जलटी के रोगों को दूर करै है ॥ विधि ॥ सोंठ। दाल
चीनी। आमले। लोंग। विसफायज। जायफल। एक
२ तोले। काली मिर्च। छोटी इलायची। डेढ २ तोले। म
सक मुनीयां। निसोत। नोंनों मासे। मिश्री सुपेद वरावर
की। दूनों शहत लेनों ॥ जवारषु ॥ पित्त के अतीसा
र को और मरोड़ा और पेट की पीड़ा जो नित्य प्रति रहै
और ववासीर को गुण करै ॥ विधि ॥ तंतरीक। हा
लों के वीज। सुगंध लीये। कालो जीरो। मस्तगी। का
ली मिर्च। इलायची। एक २ तोले। शाक मूनीयां। नि
सोत। पांच २ मासे। शहत तिगुणो लेनों ॥ जवारषु
॥ मस्तक और गुरदा तथा कलेजा को ताकत दे औ
र वीर्य को गाढा और बांधे करै ॥ विधि ॥ प्याज के वी
ज। चूका के वीज। हालों के वीज। शलगम के वी
ज। गाजर के वीज। अजमोद। सकाकुल मिश्री
पीपलामूल। वडी इलायची। कुलीजन। दाल
चीनी। तज। सोंठ नोंनों मासे। असगंध। दोंनों
मूसली। कंकोल मिर्च। षीललचीनी। अकर
करा। छै २ माशे। लोंग। जायफल। तीन २ माशे।
वंबूर को गोंद गाय के घी में भून के तीन तोले औ
र वूरो सुपेद तिगुनो लेनों ॥

॥ फसल पंधरवीं ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मस्तक और दरदों के रोगों की गोलीयों में ॥ हुब ॥ अर्थात् गोली पक्षाघात को और लकुआ और कंपनवाय को दूर करै ॥ विधि ॥ पीपरामूल ॥ कुटेरी के बीज । अजवायन । अजमोद । पीपर । सीतलचीनी । सांभर नोंन सब बराबर लेके जो कुट कर के । आक के पत्ता के रस में वा शीरा की पुट देके चूरन करके गुआर पाठे के गूदे में गोली चने प्रमाण बनाके एक गोली प्रातःकाल और सायं काल सोते समय खाय ॥ हुब कुला ॥ पक्षाघात और कंपन वाय और अंग का फरकना और जोर की पीडा और नजले की विशेषता और रजस्वला होने के पीछे खाय तो गर्भ धारन करै ॥ विधि ॥ दालचीनी । जायफल । जाविन्नी । ऊदसलीब । लोंग । एक २ तोले कुचला को गाय के दूध में भिजो के छिलका दूर करके पतले २ पत्र काट के दो तोले सब को चूरन करके । अजवायन और पोदीना के रस की दे के गोली बनावे ॥ हुब ॥ पैरों की उंगली यों की पीडा को दूर करै है ॥ विधि ॥ कलोंजी । कब्र की जड । गूगल । अकरकरा । सात २ मासे कालीहड बिहेडा । आमला । चीता । सोंठ । पीपलामूल संभरनोंन नोंनों मासे और सब की बराबर मीठे सूरन जान लेके सोंफ के अर्क में गोली बनावे ॥ हुब ॥ दस्तों के द्वारा पहलू के दर्द को दूर करै है ॥ विधि ॥ एलुआ । बडी हड । मीठो सूरनजान सब बराबर लेके गोली बनावे ॥

॥ फसल सोलहवीं ॥ नेत्र रोगों के दूर करने की हवूवात ॥ अर्थात् गोली यों में ॥ हुब सुर्ख ॥ नेत्रों के सब रोगों को बढ़ा कर के नेत्रों की सुर्खी को वि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दोष गुण दायक है ॥ विधि ॥ गेरू चार भाग अफीम । एक भाग । सोंठ आधो भाग लेके हड के पानी में गोली बडी बनाय राखे जो नेत्र पर सूजन हो तो धनीये के पानी तथा मकोय के रस में और सूजन न होय तो पोस्त के डोडा के पानी में घिस के लगावे ॥ हुव ॥ नेत्र के रोगों को गुण करे है ॥ विधि ॥ फिटकरी भुनी चार मासे । अफीम । दो मासे । रसोत आठ मासे । नीम के ताजा पत्ता पांच वग के सर पांच रत्ती । सब को लोह की कढैया में लोह के दस्ता से रगड के गोली बनाय राखे समय के ऊपर पलको२ लेप करे ॥

॥ फसल सत्तरेहवी ॥

मूंह के रोगों के दूर करने की गोलीयों में ॥ हुव ॥ १ जीभ की जलन को दूर करे ॥ विधि ॥ खरबूजे के बीजन की मींगी । खीरा ककडी के बीजन की मींगी । मीठे घीया के बीजन की मींगी । एक२ भाग । गेंहूं को सत्त सब की बराबर लेके बंबूर के गोंद के पानी में गोली बना के मोंह में राखै ॥ हुव ॥ मूंह की दुरगंधना को दूर करे । ॥ विधि ॥ जावित्री । मोथा । नीवू को छिलका । फिरंजन मुश्क । सुपेद चंदन । एक२ तोले । वंशलोचन । कपूर । छडीला । तीन२ माशे । कस्तूरी एक मासे । लेके गोंद के पानी में गोली बनावे ॥ हुव ॥ कंठ के बैठ जाने को और भारी होजाने को दूर करे ॥ विधि ॥ छिली हुई मुलहटी । भुनी अलसी । कतीरा । गोंद । मीठे बादाम की मींगी चिलगोजा की मींगी । सब बराबर के लेके और सब की बराबर को शहत लेके गोली बनावे और मोंह में राखे ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥फसल अठारेहवीं॥

क्षुधा लगाने वाली और अन्नादिक को पचाने वाली तथा वादी और शूल दूर करने वाली गोली यांमें॥हुब॥ ॥गोगिर्द॥ अर्थात गंधक की गोली जो भोजन को पचावै और अजीरण को और दस्त को और उलटी को और उवासी को दूर करे है॥विधि॥ सोंठ। मिर्च। पीपल। पीली गंधक। सेंधव सब बराबर ले के नीबू के रस में गोली बांधे॥अथवा॥ काली मिर्च। आक के फूल। अजवायन। अजमोद। सेंधव सब बराबर लेके अदरक के रस में गोली बनावे॥अथवा॥ तज। दारचीनी। सोंठ। मिर्च। सज्जी। जवाषार सब बराबर ले के गोली बनावे॥हुब॥ गिरानी को दूर करे॥विधि॥ तनली तीन भाग। काली मिर्च दो भाग। सेंधव एक भाग। ले के सिरका में गोली बनावे॥अथवा॥भोजन को पचावे॥विधि॥ सुहागो। जवाषार। नोंसादर। सेंधोनोंन। हींग। काली मिर्च। सब बराबर ले के सिरका में गोली बनावे॥अथवा॥ अन्न को पचावे और क्षुधा को लगावे॥विधि॥ अमलवेद। सोंठ। काली मिर्च। पीपर। पीपरामूल। देसी अजवायन। अजमोद। एक २ तोले। कारोनोंन। सेंधोनोंन। नोंनों मासे। नीबू के रस में गोली बनावे॥हुब॥ बायगोला को और शूल को और पेट के दर्द को दूर करे है॥विधि॥ सोंठ। सुहागो कच्चो। हींग। सेंधोनोंन। सब बराबर ले के सहजने की छाल के रस में जंगली बेर के प्रमाण गोली बनावे। और एक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गोली षा के ऊपर से गरम पानी पीवै॥ हिंदी मस॰
लाहै॥ वायशूल के दर्द को दूर करै॥ दोहा॥ सोंठ।
सुहागो। सेंधो। गाँधी॥ सहजने के रस गोली वाँधी
चौंसठ वाय चोरासी शूल वाहै धनंतर रहै न मूल॥

॰करने ॥ फसल उन्नीसवीं॥

दस्त वंद करने की गोली यों में॥ हुव॥ अतीसार को दूर
करै और कब्ज करै॥ विधि॥ सब्ज माजूमाई छै छै।
मासे। और अफीम दो मासे लेके चना प्रमाण गोली
वनावै॥ अथवा॥ अनार को छिलका। तंतरीक। मा
जू फल। तीनों वरावर लेके चना प्रमाण गोली वना
वै अथवा सहत में गोली वनावै तो रात्री के समये के॰
दस्तों की विशेषता को दूर करै और जो नीवू के रस में
वनावै तो दिन के दस्तों को गुण करै है॥ विधि॥ भुनें
सुहागो एक भाग। अफीम चार भाग लेके गोली वना
वै॥ अथवा॥ वच्चे के नाना प्रकार के दस्तों को गुणदा
यक है॥ विधि॥ अनार की छोटी कली एक भाग। चा
क सू। रसोत। नरकचूर। सुपेद जीरो। हल्दी छिली हु॰
ई। नीम के पत्ता। वकायन के पत्ता। वंबूर के पत्ता। दो२
मासे। अफीम एक मासे॥

॥ फसल वीसवीं॥

जुलाव की गोली यों में॥ हुव शवयार॥ मस्तक
की सफाई करै और मस्तक के रोगों को गुण करैहै
॥ विधि॥ जवाहड। सनाय मकी। वहेडे तीन२ भाग
गूगल। एक भाग। गुलाव के फूल। काला दाना। ए
लूआ चार२ भाग। उसारे रेवन। मस्तंगी दो२ भाग॰

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ले के गोली वनावे रात को सोते समय चाय चाहे जि
तना ॥ हुबूको काया ॥ क़ोकयूना नीबोली में सोधे
को कहते हैं ॥ जो या गोली से मस्तक के मुवाद की स
फाई होती है और सिर के रोगों को और जोड़ों को गु
ण करे है या कारण से जाली नूस हकीम नें या गोली
को यह नाम धरा ॥ विधि ॥ एलूआ । उसारह अफ-
सन तीन । रूमी मस्तंगी । प्रत्येक एक तोले । इन्द्रायन
निसोत छै २ मासे । अजमोद के पानी में गोली वनाए
वै और जो उसारा अफसन तीन न मिले तो यासे दूनी-
अफसन तीन मिलावे ॥ हुब ॥ लाजवर्द ॥ वाय के मु
वाद को निकाले और सब वाय के रोगों को गुण करे है
और जो मालजीवन में देतो अत्यु त्तम है ॥ विधि ॥
शुद्ध लाजवर्द नौं मासे । गूगल । सकमूनीया तीन २ मासे
ग़ारीकूं अफतीमूं अर्थात अमर वेल । बिसफायज अ
र्थात कंकाली । अयारज फीकरा । एक २ तोले । अनी
सू के पानी में गोली वनावे ॥ हुब ॥ अजीर्ण और पेट
के दर्द को दूर करे ॥ विधि ॥ काली मिर्च । पीपल । ब
डी हड । वहेडा । गुलाब के फूल । चीतो । सोंफ छै २ मा
से । सनाय की पत्ती नौं मासे । निसोत तीन मासे । काले
नोंन । सांभर नोंन । सेंधो नोंन चार मासे । लेके गोली ब
नावे ॥ हुब मुसहल विधि ॥ सनाय की पत्ती । निसो
त । गारीकूं । सुधाजमाल गोटा । सब वराबर लेके नीबू
के रस में गोली वनावे ॥ अथवा ॥ शुद्ध जमालगोटा
एलूआ बडी हड । आमले । सब वरावर लेके गोली व
नावे ॥ हुब ॥ कंठमाला और सुला अर्थात रसोली -

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और गदूद की सूजन को पटकावे और दस्तों के द्वारा निकाले है ॥ विधि ॥ अयारज फीकरा नो मासे भुनी सोनामाखी एक तोले। निसोत डेढ तोले। सकमूनीयां चार मासे। गंदना के पानी में गोली वनावे मात्रा तीन मासे की ॥

॥ फसल इक्कीसवीं ॥

तिल्ली की सूजन दूर करवे की गोली यों में ॥ हुव ॥ तिल्ली की सूजन दूर करे ॥ विधि ॥ कच्चो सुहागो। अजवायन। कलौंजी सोया के वीज। नोंसादर। सज्जी। सव वरावर लेके गुआर पाठे के लुआव में गोली वनावें ॥ अथवा ॥ हींग भुनों सुहागो एक २ तोले पुरानों गुड चार तोले चने की वरावर गोली वनावें ॥ १ ॥ अथवा ॥ वडीहड। चीता। सोंठ। सज्जी। भुनों सुहागो। कालोजीरो। सेंधो नोंन सव वरावर और सव की वरावर पुरानों गुड लेके गोली वनावे ॥ अथवा ॥ हड। सोंठ। चीतो। भुनों सुहागो। सज्जी। कलमीशोरा। वायविडंग। सेंधो नोंन सव वरावर लेके सिरका में गोली वनावें ॥ अथवा ॥ सोंठ। मिर्च। पीपर। दरहल्दी। जवाखार। चीतो। कवेलो। सव वरावर लेके गोली वनावें ॥

॥ फसल वाईसवीं ॥

ज्वर खांसी दूर करने की गोली यों में ॥ हुव ॥ चोथीया ज्वर को दूर करै है ॥ विधि ॥ पलास पापडे के वीजन की मींगी को छिल्का दूर कर के और वाकी वरावर कंजा के वीज की मींगी लेके कालीमिर्च

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की बराबर गोली बांधे और एक नित्य प्रातःकाल खा वे ॥हुव॥ नाना प्रकार के ज्वर को दूर करै है ॥विधि॥ पीपरा मूल। कंजा के बीजन की मीगी ए क २ तोले। सुपेद जीरो। बम्बूर की ताजा पत्ती। छे छे मासे। लेके चने के प्रमाण गोली बनावे और तीन दिन ताई एक गोली प्रातःकाल और एक दुपहर को और एक संजा के समय खाय ॥हुव॥ कफ ज्वर औ र कफ की पीडा को दूर करै है ॥विधि॥ बडी हड। काली हड। एलूआ। सोनमाखी। गूगल। इन्द्रायन दस २ मासे। राई। नागरमोथा। स्याह जीरो। सैंधो नों न। मस्तगी। दो दो तोले॥ छोटी २ गोली बनावे मात्रा दो तीन मासे ताई की है ॥हुव ष्रापा॥ नज़ले के रो गों को और बाय कफ ज्वर को गुण करै है लपनाय बह अर्थात् कफ ज्वर में चार घडी पहले नोवत से लेवे खाना उचित है ॥विधि॥ धतूरे के बीज तीन भाग। रेवत चीनी। दो भाग। सोंठ एक भाग। गोंद के पानी में चने प्रमाण गोली बनावे ॥हुव॥ नाना प्रकार के स्वा स कास को दूर करै है ॥विधि॥ पीपला मूल। का कडासींगी। मुलहटी छिली हुई। लोंग। मीठे अ नार को छिलका। जवाखार छै २ मासे। लेके स हत में गोली बनावे ॥अथवा हुव सुआल॥ अ र्थात् खांसी की गोली ॥विधि॥ गोंद बम्बूर को भु नो। कतीरा। गेंहू को सत्त नोंनों मासे। मुलहटी छि ली हुई। खुबाजी के बीज। मीठे। घीया के बीज। १ की मीगी एक २ तोले। केसर तीन मासे लेके गोली

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बनावे ॥ अथवा बच्चों की ॥ षाँसी को दूर करै है ॥ ॥ विधि ॥ गेहूं को सत्त । बंबूर को गोंद । मुलहटी को सत्त । अफीम । सब बराबर लेके बीहदाने के लुआब में गोली बनावे ॥

॥ फसल तेईसवीं ॥

आतशक और इन्द्री के रोगों को दूर करने की गोलीयों में ॥ हब आतशक ॥ आतशक को दूर करै सफाई के आदि और अंत में षाना गुण करै है ॥ विधि ॥ काली हड एक तोले । बंशलोचन छै मासे । नीला थोथा तीन मासे । पाव सेर नीबू के रस में घोट के जंगली बेर के प्रमाण गोली बनावे और संजा सवेरे एक २ गोली षाय और मिठाई से परहेज करै ॥ अथवा ॥ पारो । खुरासानी अजवायन । सुपेद कत्था आठ २ मासे । लोंग नग आठ । पानी में घोट के छोटे जंगली बेर के प्रमाण गोली बनावे और संजा सवेरे एक २ गोली दही के तोड के संग निगले और मूंग की दाल । घीया । दही । दूध । इत्यादिक वस्तु न षाय ॥ अथवा ॥ १ आतशक के दूर करने में यह गोली आजमाई है ॥ विधि ॥ काली जवाहड छै तोले । नीला थोथा । मुरदासंग । डेढ २ तोले । चूरन करके लोह के बासन में नीम के घोटा से जामें तामे का पैसा गडा होय । और कागदी नींबू को रस डाल डाल के घोटे जो बा में सब बासे रस सूक जाय पीछे बा में बंग चार मासे मिला के रगड़े और बड़े चना के प्रमाण गोली बना वै और सात दिन तांई लगातार एक २ गोली थोडे नींबू के रस के

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संग निगल जाया करै॥ दुव कारमात॥ फफोले॥ और घाव और आतशक और हर तरह की फुनसी यों को जो कोई जोडों और सब शरीर में होजाती हैं उन को दूर करती है॥ विधि॥ कमेला। चूना। नीला थोथा। वडी हड। मपडीया कत्था। सब बराबर लेके गोली बनावै समय के ऊपर गाय के घी में घिस के लगावै॥ दुव वुकरात॥ म शाने के घाव और इन्द्री के घाव और पेशाव रुकजाने को दूर करै॥ विधि॥ धनमी के बीज। खीरा ककडी के बीजों की मीगी। दोदो तोले। सुपेद लोवान। खरबूजा के बीजन की मींगी। कुलफा के बीज। पोस्त के दाने। सुपेद कत्था एक २ तोले। ईसबगोल के लुआब में गोली बनावै॥

॥फसल चौबीसवीं॥

बाजीकर्ण और बल बढाने की गोलीयों में॥ दुव। जालीनूस॥ जो मनुष्यों की मुस्ती और लोंडे बाजी के कारण से नपुंसक हो गया हो तो या गोली से फिर करती मर्द हो॥ विधि॥ सका कुल मिश्री। प्याज के बीज। गंदना के बीज। सालब मिश्री। लटजीरे के बीज। रेग माही प्रत्येक बराबर लेके चिडे के माथे को भेजा। जो तरुन में निकाल लीया हो एक न ग ले के गोली चने प्रमाण बनावै और तीन मासे गोली अंगूरी शराब के संग तथा अंगूर रस के संग खावै॥ दुव मुबही वो मुमसिक॥ अर्थात् वीर्य पैदा करने वाली और स्थम्भन की गोली॥ ॥ विधि॥ दोनों तोदरी। माई। तेजपात। नागरमो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

था। केसर। लोंग। धोरनआन मीठा। जायफल। ।
जा विन्नी। मस्तगी। अनीसू। पोस्त के डोडा। छो।
टी इलायची। वंशलोचन। गुलाव के फूल। सुपेद
चंदन। वाल छड। अगर। दरूनज अकरवी। वूजी
दां। वंमूर को गोंद भुनों। दालचीनी। षसषस के दाने
। खुरासानी अजमायन। एक २ तोले। सालव मिश्री
शका कुल मिश्री दोदो तोले। चूरन कर के वादाम।
रोगन में भकरो के आधपाव सुपेद मिश्री आध पाव
गुलावजल में चाशनी कर के वादवा को मिला के
गोली बनावें॥ हुव॥ मस्ती लाती है स्थंभ न कर
ती है॥ विधि॥ जाय फल। कुलीजन। सालव मि
श्री। एक २ तोले। जाविन्नी। निरविसी। छे छे मासे।
अफीम तीन मासे लेके चने के प्रमाण गोली बनावे
॥ हुववाजीकर्ण॥ मन को प्रसन्न करने वाली गो
ली॥ विधि॥ नेत्रवाला। केसर। अजमोद। दाल
चीनी। वालछड। छे छे मासे। खुरासानी अजमाय
न। नरकचूर। अकरकरा। लोंग। जाविन्नी। वमूर को
गोंद। तीन २ मासे। अफीम चार मासे लेके गुलावज
ल में गोली बनावे॥ हुव अस्फहानी॥ चित्त को वि
शेष प्रसन्न करे। और वलवान करे और सुर्त प्रमेह।
को दूर करे॥ विधि॥ वर्स। दरूनज अकरवी। साल
व मिश्री। नोंनों मासे। निर्विसी। तीन मासे। पोस्त के डो
डा के पानी में गोली वनावे॥ हुव हींदी॥ स्त्रीप्रसंग
में चित्त प्रसन्न करे और स्थंभ न करे मैथुन के सम
य एक गोली खाना उचित है॥ विधि॥ असपंद जला

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुश्राभून केडेढ तोले। पोस्त के डोडा। काले तिलए
क २ तोले। कूटकारदस तोले पुरानों गुड़ मिला के सा
त मावा करले ॥हुबहिंदी॥ ताकत को बढावे श्रो
र स्तंभ नकरै ॥विधि॥ कुचला गाय के दूधमें
भिजो के छिलका दूर कर के चार तोले। काली मि
र्च। पीपल। दोदो तोले लेके जंगलीवेर की बराबर
गोली बनावे श्रोर मैथुन से दो घडी पहले षाना उ
चितहै ॥श्रथवा॥ केसर। लौंग। जायफल। श्र
फीम सब बराबर लेके शहत भाग उठे हुए में गोली
बनावे चने प्रमाण मैथुन से प्रथम षाय॥ श्रथवा
॥ चिडाजवान को सिरकाट कर के मारे श्रोर परतथा
श्रांत वाकी दूर कर के श्रोर एक छुहारे की गुठली
निकाल के वो गुठली की बराबर श्रफीम भर के वा
चिडा के पेट में रष के श्रोर गेंहूं के चून की कपरोटी
कर के पकावे पीछे चून दूर कर के सब को पीस के
चना प्रमाण गोली बनावे श्रोर मैथुन से पहले षाले

॥फसल पच्चीसवीं॥

हलूश्रा श्रोंमें ॥हलूश्रा॥ चित्त को प्रसन्न रषे ।
श्रोर शरीर मोटा श्रोर बलवान करै॥ विधि॥ श्राध
सेर छुहारे गुठली निकाल के सेर भर गाय के दूध में
पका के पीसे श्रोर गेंहूं को सत्त श्रोर चना को वेसन दों
नों पाव पाव सेर सूषे भून के मिला के श्राध सेर गाय
के घी में सब को भून के तीन पाव सुपेद बूरे की चाश्र
नी में मिला के हलूश्रा पकावें ॥ श्रोर वादाम की मी
गी श्रोर फंदक की मीगी। श्रोर चिलगोजा की मीगी

For Private and Personal Use Only

पिस्ता की मींगी। अखरोट की मीगी एक २ छटांक औ कूट कर के मिलावें॥ हलूआ॥ चित्त को प्रसन्न करै॥ विधि॥ चने की दाल को भैंस के दूध की तीन पुट दे के गाय के घी में भून के मेदा करै और बूरा और गाय को घी और मेवा मुनासिब वजन अर्थात् तोल के हलूआ पकावै॥ हलूआ॥ गाजर को॥ ताकत को अति वलवंन करै और चित्त को प्रसन्न राखै और जोडों को प्रबल करै और पुष्टकारक है॥ विधि॥ गाजर को छील और हड्डी निकाल के वाको तीन सेर गूदा ले और एक सेर सुपेद बूरा ताकी चाशनी करके। पिस्ता की मींगी। चिलगोजा की मींगी। अखरोट की मींगी। बादाम की मींगी। फंदक की मींगी। चिरोंजी। प्रत्येक पाँच २ तोले। पीस के आध सेर गाय को घी मिला के हलूआ पकावै॥ अथवा॥ छिली हुई गाजर दो सेर और वाकी बराबर गाय के दूध में पका के दूध समेत पीसे और आध सेर गाय के घी में खोवा भून के जब वाकी तरी जाती रहै तब। चिरोंजी आधपाव। मीठे बादाम की मींगी। गिरी की स्याही दूर कर के एक २ छटाँक लेके महीन कुचल के मिलावे और एक सेर सुपेद बूरे की चाशनी मिला के हलूआ बनावै॥ अथवा॥ यह विशेष बलवान है छिली हुई गाजर दो सेर छिली हुई सलगम एक सेर और छुहारे गुठली निकाल के और किसमिश पाव २ सेर लेके गाय के दूध में पका के खूब पीसे और तीन पाव घी में भून के एक सेर कंद मिलावै॥ हलूआ मुर्ग॥ कामदेव को बलवान

करै ओर शरीर को मोटा करै ओर क्रांति को बढ़ा
वे ॥ विधि ॥ मोटे ओर तरुण मुर्गा को मांस तीन
सेर । इलायची बड़ी । दाल चीनी । सूखे धनियें एक
२ तोले । आध पाव प्याज मिला के ओर एक हांडी
में भर के वा को मोंह बाध कें खूब पकावें ओर वे
साही ठंडा कर के खूब मसल के छान ले जब गाढ़ो
गाढ़ो रस निकल आवे तब सेर भर बूरा सुपेद की चाश
नी करके मिलावें ओर वामें बादाम की मीगी ओर
चिरोंजी आध २ पाव । पिस्ता की मींगी । चिलगोजा
की मीगी चार २ तोले महीन पीस के मिलावें ॥ ह
लुआ मुर्गी के अंडा को ॥ चित्त को प्रसन्न करै औ
र बल को बढ़ावै ॥ विधि ॥ अंडान ग बीस की सुपे
दी ओर जरदी को वांस की पतली तलीयें से खूब मि
ला के पीछे डेढ़ पाव घी मिला के मंदी आंच पर रखे
ओर उन ही तलीयें से हिलातो रहै जो गांठ न बंधने
पावै जब धुघला होजाय तब ढाई पाव सुपेद बूरे की
चाशनी मिला के इन वस्तों का चूरन मिलावै । दाल
चीनी । जावित्री । केसर । तीन २ मासे ॥ छोटी इलाय
ची छौ माशे । शकाकुल मिश्री । सालब मिश्री । एक २ तो
ले ॥ हलवा चोब चीनी ॥ जिस मनुष्य को आतश
क के पीछे निर्बलता आगई होय अथवा घाय के सु
वार के चिन्ह वाकी रह गये होंय वा को विशेष गुण
दायक है ॥ विधि ॥ आध सेर गेहूं का चून ओर पाव
सेर घी ओर पाव सेर सुपेद तिल का तेल में भून के बार
ह तोले चोब चीनी । इन्द्र जो । सालब मिश्री । शकाकुल

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिश्री। दाल चीनी। कुलींजन। नागर मोथा। बह मन सु
पेद। एक २ तोले चूरन कर के मिलावे और तीन पाव
सुपेद बूरे की चासनी में मिला के। चिल गोजा की मींगी
पिस्ता की मींगी। बादाम की मीगी चार तोले। चिरोंजी छै
तोले। खूब कुचल के मिलावे॥ हलवा॥ ताकत को
बढ़ावे और ― गाढ़ा और पैदा करै॥ विधि॥ चार सेर
गाय को दूध। एक सेर बूरो सुपेद मिला के। खोया जेसे प
कावे। कुलीजन। सिता वर। पूाका कुल मिश्री। असगं
ध एक तोले। महीन पीस के मिलावे। छुहारे छै तोले।
मघाने की खील दो तोले। बादाम की मीगी। चिल गोजा।
की मीगी। पिस्ता। चिरोंजी तीन २ तोले। महीन पीस के
मिलावे मात्रा डेढ़ तोले की॥ अथवा॥ ताक़त को ब
ढ़ावे और गुर्दे तथा मसाने को बल वान करै और वीर्य।
को गाढ़ा करै और सुर्त प्रमेह को दूर करै॥ विधि॥ तुरं
ज बीन खुरासानी। सुपेद मिश्री नों २ मासे। निर्मल सहत
अठारह तोले। दो सेर गाय के दूध में मिला के गरम करै।
और छान के खोया जेसा बना के। वह मन। कौंच के बीजों
की मीगी। शाका कुल मिश्री। सितावर हिंदी। बादाम की मीं
गी। चिल गोजा की मीगी। पिस्ता तीन २ तोले। नर कचूर।
जाविन्री छै छै मासे। केसर। चूरन करके मिलावे॥

॥फसल छब्बीसवीं॥

॥हसू॥ अर्थात् हरीरा और तलीभी कहते हैं॥ हरी
रा॥ मस्तक पीड़ा को जो माथे की निर्बलता से होय उस
को दूर करै॥ विधि॥ गेंहूं की भुसी छटांक भर पानी में
भिजो के मल के छान ले और बबावश्ता केदाने का शीरा और

For Private and Personal Use Only

कद्दू के बीजनं की भींगी को पुरा और धनिये को पुरा ए क २ तोले। सुपेद बूरो ४ तोले मिला के पका वे और घीर्ले गंधित कर के गुनगुना कर के पी ले ॥ हरीरा ॥ फेफड़े के मुवाद को सफा करै ॥ विधि ॥ गेहूं की भुसी प तोले मटर को चून १ तोले। चिलगोजे का पुरा नौं मासे बुल हटी छिली हुई तीन मासे। सुपेद बूरो तीन तोले मिला के पका वे ॥ हरीरा ॥ रुधिर थूकने को दूर करै ॥ विधि ॥ जो छिले हुए ४ तोले। चार तेग छे मासे। सुपेद खसखस के दाने १ तोले। उन्नाव गुठली निकाल के दस दाने। मिश्री सुपेद ४ तोले। लेके हरीरा बनावे

॥ फसल सत्ताईसवीं ॥

हुकनों में ॥ हुकना ॥ सरसाम को जो कफ और पित्त से हो य उसको गुण करै ॥ विधि ॥ गाजुवां के पत्ते। वनफसा के पत्ते। अलसी के बीज। एक २ तोले। मकोइ। सोंफ छे २ मासे औटा के पानी को छान ले और गुलरोगन मिला के एक तोले फिर हुकना करै ॥ हुकना ॥ वाय शूल को गुण करै है ॥ विधि ॥ अनीसूं। सोंफ। कासनी के बीज। नीलोफर के फूल। गाजुवां के पत्ते। वनफसा के पत्ते नौं २ मासे। परशीयाबशां। बाबूना के फूल। खतमी के बीज। छे २ मासे। सनाइ मक्की डेढ तोले। अंडी को तेल दो तोले मिला के हुकना करै ॥ हुकना ॥ आंतों के घाव को और पेचश को गुण करै ॥ विधि ॥ मसूर। गुलाब के फूल। गुलनार। छिले जो एक २ तोले। दम्मुल अ खवैन। अकाकीया। बंबूर को गोंद छे छे मासे ले ॥ ॥ अथवा ॥ बंबूर को गोंद। गुलाब के फूल। अलसी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के बीज। खतमी के बीज। ईसबगोल। गुलाब का जीरा एक तोले। ल्हिसोड़े नग दश। केसर दो मासे। वदस्तूर काम में लावे॥ हरफुल खाइ॥

॥फसल अठाईसवीं॥

खमीरों की दवाई यों में॥ खमीरह संदलेन॥ होसदिली को और दिल की घबराहट को और बाय की जलन को गुण करे है॥ विधि॥ सुपेद चंदन नौं तोले। लाल चंदन पांच तोले। चूरन कर के एक दिन रात गुलाब जल आधसेर में भिजोके ओटावे और ढाई पाव सुपेद मिश्री पीस के मिला के ओटा के गाढ़ा करले॥ खमीरा गावजुवां॥ दिल को और मस्तक को ताकत दे और होलदिली को और अचेतनता को गुण करै॥ विधि॥ गावजुवां के पत्ते दस तोले। बिल्ली लोटन पांच तोले। बालछड़। गुलाब के फूल। चंदन चूरो एक २ तोले। तिगुणो पानी और दुगुने गुलाब जल में भिजो के ओटावे जब चौथाई रहे तब मल के छान ले और तीन पाव सुपेद बूरे की चाशनी करे और केसर चार मासे महीन पीस के मिलावे॥ खमीरह अबरेशम॥ हकीम मुबारक उद्दीन मेरे दादे का बनाया हुआ है॥ कि रीवां के राजा के लिये तैयार किया था नफरत को दूर करे और बंदी ताकत दे और अग्नि को बढ़ावै है॥ ॥विधि॥ सब्ज पन्ना। मोती। तीन २ मासे। तीन दिन के बड़े के अर्क में घोटे। मस्तगी। एमतुलशी। गुलगावजुवां। छै छै मासे। कच्चा रेशम दो तोले चूरन करके आधसेर कंद। की चाशनी में दो तोले गावजुवां। धि

ली लोटन के काडे में किया हो मिलावे॥ खमीरह व नफशा॥ मेरे छोटे भाई हकीम अमान अली का वनाया हुआ है के छाती और पहलू के दर्द को और फेफडे के दर्द को गुण करे और पित्त के दोश को निकाले है॥ विधि॥ गुल वनफशा। गुलाब के फूल। गावजुवां के फूल तीन तीन तोले। डेढपाव कंद कूट के आध सेर गुलावजल डाल के खूव भीड के पाकावे जो गाढा हो जाय॥

॥फसल उनतीसवीं॥

तमाषू के खमीरों के नुसखों के प्रकर्ण में॥ अगली पुस्तकों में तमाषू की तारीफ या प्रकार से लिषी है के यात्रा के दिनों में सिकंदर वादशा के लशकर में हवा और वादी विशेष पेदा हुई और लशकरी वहुत से मरने लगे वहुत से हकीम चिकितसिका और इस रोग के दूर करने दर पेहुये और वुकरात ने तषूमो का जंगल देख के धूनी तमाषू की देने की तजवीज करी सो वाकी धूंआ से फोज की हवा और वाय दूर हो गई फेर धूंआ को हवा की लाग समझ के वाकी रिवाज और रसम जारी हो गई फिर हर मुल्क में उस्के धूंआ षेंचने की विधि प्रथक २ तरहे से ठेरी और नाना प्रकार के दुष पेदा हुये या कारण कर के अजीरन को दूर करना और पेट की वाय पचाने वाली और मोंह और गले की तरी निकालने वाली और मस्तक की तरी को सुखाने वाली है या कारण से थोडे से नुसषे लिखे जाते हैं॥ खमीरह पानडी॥ दो सेर गुड की चाशनी कर के आध सेर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तमाषू का चूरन करके वा में मिलावै और दोनों चंद- न। अगर। तगर। लौंग। दोनों इलायची। नागरमोथा। वाल छड। छडीला। नर कचूर छे २ मासे। पानडी छे तोले चूरन कर के मिलाय राखै २१ दिन पीछे थोडा य ह खमीरा वा तमाषू में जिस्में बराबर का गुड मिलाके कुटा हो वा में मिलावे ॥ खमीरा कस्तूरी का॥ षा लिस कस्तूरी दो मासे पानी में घोल के आधपाव तमा षू के चूरन में मलै और जायफल। जावित्री। लौंग। चा र २ मासे चूरन कर के पाव सेर गुड की चाशनी में मिला के वा तमाषू में मिला राखै थोडा यह खमीरा ले के और तैयार तमाषू में मिला के काम में लावे॥ खमीरा अ- नन्नास ॥ पका अनन्नास। और गुड पाव २ सेर चाशनी क र के आध पाव तमाषू का चूरन कर के मिलावै। छडी ला। वाल छड। नागर मोथा। कपूर कचरी। लौंग। एक २ तोले। चूरन कर के मिलाके माटी के वासन में बंद कर के राखै और दो तीन वेर हाथ से मल के वा के पीछे तै यार तमाषू में मिला के काम में लावै॥ केला और क टहल और अमरूद का खमीरा इसी प्रकार से बना- या जाता है॥ खमीरा सेव का॥ पाव सेर सेव का मु र्बा पाव सेर सूषा तमाषू कूट के मिलावै। छोटी इला यची के दाने। सुपेद चंदन दो २ तोले। चूरन कर के मि लावै और माटी के वासन में बंद कर के २१ दिन ताईं धरती में गाडे वा से पीछे तैयार तमाषू में मिला के का म में लावै॥ पक्के आमले तथा गुठली निकाल के मु रब्बे का खमीरा भी याही प्रकार से बनाते हैं थोडी ब

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृत सुगंधित वस्तों के संग में॥ खमीरह गुल कंद॥ एक सेर धूपको गुल कंद आधसेर सूषो तमाषू आपसमें कूटके मांटी के वासन में भरके धरती में गाडे चालीसदिन पीछे थोडासा तैयार तमाषू मिलावे॥ खमीरह कनार॥ बेर पक्के दो सेर गुड दो सेर पानी में पका के मल के गुठली बेर की निकाल के सेर भर सूषी तमाषू कूटके मिला वै और २१ दिन ताई धरती में गाडे पीछे तैयार तमा षू में मिलावे॥ अथवा॥ पक्के सूषे बेर की गुठली दूरकर के और गुड और तमाषू के संग कूटे और थो डे दिन रष के काम में लावे॥ घघट हो के जब कोई ख मीरा सूष ने लगे ता को सुगंधित अर्क मिलाना उचि त है॥

॥फसल तीसवी॥

खिज़ाव में यद्यपि खिज़ाव के नुसषे सैकडों प्रत क्ष हैं किताबी नुसषो की कछू दरकार नही है क्यों के नील के पत्तों से कोई उत्तम नही होता है परंतु थोडे स हल और शुद्ध नुसखे लिषे जाते हैं॥ खिजाव॥ मेंह दी के सूषे पत्ते एक भाग। जंगली नील के पत्ते पांच भा ग प्रथक २ सुरमा सा चूरन कर के पानी में घोल के गाढे और अंड के पत्ता बांधे॥ खिजाव॥ मीठे अ नार का छिलका। तथा त्रिफले का वक्कला और टाके उस्के पानी में वसमा घोल के लगावे और बांधे॥ १ ॥ खिजाव॥ सेलषडी। चूना सिंगमरमर का एक १ २ भाग। मुरदासिंग चार भाग। सुरमा सा कर के रषे हाजत के समय पानी में घोल के लगावे और पान बां

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धे॥ खिजाव॥ लोह का चूरन एक भाग। गेहूं का।
चून दो भाग। पानी में घोल के धूप में धरें जब ख।
मीर हो जाय तब लगावै और बांधे॥ खिजाव॥
बिना छेद के माजूफल आध पाव। काले तिल के
तेल में भूनै जब लाल हो जाय तब कपड़ा में मल के
तेल दूर कर देवै और काली हड़। ७ पैसा भर। तांबे का
बुरादा छै पैसा भर। फिटकिरी दो पैसा भर। नौंसा
दर एक पैसा भर। लेके चूरन करके और त्रिफला
के काढ़े के पानी में बराबर के में मिला के और लो
ह की कड़ाई में लोह के दस्ता से घोट के गोली बना
के राखे हाजत के समय आमले के पानी में घिस के
लगावै और अंड के पत्ता से बांधे॥ अथवा॥ तां
बे का चूरा पांच तोले। कसीस। लौंग एक २ तोले। ज
वा हड़ छटांक भर। वंशलोचन छै मासे। बड़े माजूफ
ल पाव सेर। माजूफल को ऊपर की क्रिया से भून।
के गोली बनावै और वाही प्रकार करि के काम में
लावै॥ अथवा॥ हरा माजूफल आधा पाव भून
के तांबे का चूरा। जवा हड़। एक २ छटांक। सुर्मा। से
लखड़ी। लौंग। एक २ पैसा भर। कसीस चार पैसा भ
र लेके ऊपर की क्रिया से गोली बनावै और काम
में लावै॥ हरफुलदाल॥

॥ फसल इकतीसवीं॥

दहरी हुई और अगली दवाइयों की विधि में॥ दवायु
ल मुस्क॥ माली खोली या मीरए की और जलन और
पित्त और मनुष्यों से नफरत और होल दिली को दूर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करे॥ विधि॥ उत्तम कस्तूरी २ मासे। केसर १ मासे। मोती २ मासे। कहरुवा। मूंगा की सांक। पन्ना। रेशम। वंश लोचन छै २ मासे। गुलाव जल में घोट के सूषे धनिये के सीरा में॥ और कुलफा के वीज। षीरा ककड़ी के वीज। एक २ तोले। मिलाके आध सेर सुपेद वूरे की चाशनी वना के दवाई को वामे मिलावे॥ दवायुल करकम॥ कलेजे और तिल्ली। और कफ के जलंधर को। और पुठ्ठों की गांठों को और वाय को दूर करै और गुरदे तथा मसाने को ताकत दे॥ विधि॥ केसर १ तोले। नेत्रवाला। वालछड़। अजखर। अर्थात् गंधील। अनीसूं। रेवतचीनी। रेवंद खनाई छै २ मासे चूरन करके आध सेर वूरे की चाशनी में मिलावै॥ दवायुल कुस्त॥ याका वनाने वाला शेख रईस है॥ उदर पीड़ा और आंत और कलेजे की पीड़ा को दूर करै॥ विधि॥ मीठा कूट १ तोले। दालचीनी। तज। अनीसूं। अजमोद। नेत्रवाला। सवा २ मासे। रेवतचीनी छै मासे। शहत डेढ पाव के॥ दवायुल किबियूत॥ याका वनाने वाला मेरा दादा मुवारकउदीन हकीम है। उदर का जहर मोहरा है उदर और कलेजे और पुठ्ठों को ताकत दे और पक्षाघात और लकवा और कंपन वाय और भूल के रोगों को स्वास और वाय और शरीर की निर्वलता को दूर करै और ताकत को वढावे॥ विधि॥ गंधक सुधी १ तोले। वालछड़। कूट। तज। मस्तगी। सोंठ। लोंग। जाविची छै २ माशे। का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ली मिर्च। अजमोद। अनीसूं। अजमायन। काला जीरा जंगली पोदीना नोनो मासे चौगुनें सहत खालिस।
॥दवा कूंजा॥ षाँसी और ज्वर और नजले। को गुण करै है॥ विधि॥ पोस्त के डोडा दाने समेत। दो तोले। मुल्हटी छिली हुई। षतमी के बीज। खुबाजी के बीज। सब जौ कुट कर के। तीन २ तोले। बंभूर को गोंद। बिही दानों। ईसबगोल। एक २ तोले लेके सवा सेर पानी में ४ पहर भिजोवे और औटा के छानके ढाई पाव लाल बूरो मिला के चाशनी करे॥ दहमरस॥ बायसूल और बादी के ——— और रोगों को गुण करै और स्त्री धर्म को जारी करै है॥ विधि॥ असबंद के बीज। वायविडंग। दो २ तोले। काली मिर्च। अकरकरा। सुगंध बाला। सोंठ। तज। मीठा कूट डेढ २ तोले केसर एक तोले सहत सब से दूनों ले॥ दवी दुल्लवर्द। जिगर और कलेजा को ताकत दे और जलंधर को गुण करै॥ विधि॥ बाल छड़। मस्तंगी। केसर। दाल चीनी। वंशलोचन। गंधील की जड़। सुगंध वाला मीठा कूट। अकास बेल के बीज। अजमोद। जरवंद। छोटी इलायची। केदाने। अगर। सब बराबर और सब के बराबर गुलाब के फूल तिगुने शहत में मिलावे॥ दवाई जोडों के सुन्न पन दूर करने को॥ तेजी के समय जोडों की वगली में लगाना चाहिये मर्क अकलादिक में जहाँ कि नवी अंश को नरम करना दरकार हो॥ विधि॥ काहू के बीज खुरासानी अजमायन। एक २ तोले। चीनी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अफीम तीन २ मासे। चिलगोजा जेसी गोली बनावै और एक गोली षाय॥ दवायुल हरमल॥ कफ को और वाय की सूजन को गुण करै गर गरा करने और कंठ पर लेप करने से॥ विधि॥ असवंद। मूली के बीज। हींग। बीजा बोल। पापड़ी षार। नोंसादर। सब बराबर लेके चूरन करके बराबर के शहत में मिलावै॥ दवायुल हलतीत॥ गला वैठ जाने को दूर करै॥ विधि॥ काली मिर्च। हींग। राई। केसर। सब बराबर और सब की बराबर शहत ले॥ दवायुल खतातीफ॥ कंठ के कफ की और वाय की सूजन को गरगरे और लेप करने से गुण करै है॥ विधि॥ जावित्री। वालछड़। छै २ मासे। अजमोद। अनेसू। अजवायन। असवंद। दाल चीनी। बीजा बोल। जरावंद शवील। नोंनों मासे। गुलाब के फूल। माजू फल। एक २ तोले। स्वाकिस्तर खतातीफ। अर्थात् छोटे चमगी दड़ की भस्म डेढ तोले। केसर ३ मासे। तिगुना शहत लेय॥ दवायुल हलतीत॥ जहरी जानवरों के काटने को और डंक मारने को यह दवा षाने और लगाने से गुण करे॥ विधि॥ हींग। ततली। बीजा बोल। काली मिर्च। सब बराबर। और सब की बराबर शहत लेके तैयार करले॥ दवायुल हात॥ अर्थात्। काग लटक जाने की दवाई यह कुव्वा लटक जाने को विशेष गुणदायक है॥ ॥ विधि॥ ततरीक। बिना छिद्र के माजूफल। मीठे अनार की कली। अकाकिया या माई। गलैब कोजी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ए। सब बराबर लेके सुर्मासा करके आंखा के लिपटा
वे॥ अथवा॥ सुपेद मिर्च। बीजा बोल। तीन२मासे।
माजूफल छै मासे। चूरन कर के काग पर लगावै अ
थवा॥ चूल्हे की माटी सिरका में पीस के सिर पर लगा
वै॥ दवायुस्सुआल॥ सब प्रकार की खांसी को दूर
करे॥ विधि॥ रोसे का खार३ मासे। बंमूर को गोंद।
कतीरा। मुलहटी नौनों मासे। सब की बराबर मिश्री ले
के सब चूरन कर के जैसा मुनासिब जाने वैसा खाय॥
॥दवायुलरबू॥ स्वास और कफ की खांसी को दूर
करै॥ विधि॥ गुआर पाठो१ सेर खारी नोंन२ छटा
क। देसी अजमायन आधपाव। पीपर१ तोले सब को
कोरी हंडी में भर के बा को मौंह पारी से ढक के उरद के
चून से बंद कर के धूप देवे अब सब की भस्म होजाय।
तब काम में लावै॥ दवायुलफजल॥ स्वास के
दूर करने में विशेष अजमाई है॥ विधि॥ बडी मू
ली की जड टूक२कर के बराबर के भाग लीये शह
त के संग मौंह बंधे देग में पका के ठंडे होंने के पश्चात
खूब मल के चटनी बनावै॥ दवायुलसाफ॥ अ
र्थात् बुकंदर और सुर्षबूरे की इसी प्रकार से बनावै
जो विशेष गुण दायक और अजमाया है॥ दवायुप्र
सूत॥ और सीत को गुणकरे॥ विधि॥ कुंदरू गों
द। नरकचूर। पीप२ मासे। निर्बिसी ४ मासे। काढा कर
के ४ रत्ती कस्तूरी घोट के पीवै॥ दवाईअसूत॥ औ
र झोले की॥ विधि॥ काले धतूरे के बीज २ मासे।
सोंठ। काली मिर्च। छै२ मासे पानी में छोटी२ गोलीब

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नावे। मात्रा रत्ती २ तथा प्रकृती के अनुसार विशेष ले
नी॥ अथवा॥ शिंगरफ २ मासे पानी में घोट के। का
ली मिर्च। साभालू के वीज। पीपर। दो २ मासे। चूरन क
र के घोट के गोली वनावे। मात्रा रत्ती दो की॥ दवायु
ल जंजवील॥ अर्थात् सुहागी सोंठ जो सीत के रोगों
को और प्रसूत के रोगों को जो वहुधा करके स्त्री के व
च्चा जन्ने के पीछे होता है उस को विशेष गुणदायक कहै
॥ विधि॥ सोंठ की मेदा ३ छटांक। सवा सेर गाय के दू
ध में पकावे जव गाढ़ा होजाय तव पाव सेर गाय के घी
में भूने और तीन पाव सुपेद वूरे की चाशनी में मिलावे
और नागरमोथा। काला जीरा। सुपेद जीरा। धनियाँ।
सोंफ। सोया के वीज। नरकचूर। सुगंधि वाला। लोंग।
जावित्री। सुपेद चंदन। पठानी लोद। हाऊवेर। तेलिया।
अगर। पीपर। पीपरामूल। काली मिर्च। एक २ तोले। चू
रन कर के मिलावे और जो विशेष रोग की वलवान कर
ना होय तो मुनासिव मेवा और सोने चांदी के वर्क भी थो
डे मिलावे॥ दवायुल कनवील॥ पेट के कृमों को
दूर करै॥ विधि॥ नीम के पत्ता। वाय विडंग। वरावर को
कवेलो। थोडो सो शहत मिला के षाय॥ दवायुल दु
र्जि॥ हकीम अली गीलानी नें संग्रहणी को अजमा
या हुआ लिषा है॥ विधि॥ तीतर को मारके वाकी
मलामल निकाल के पोंछ के वामें तसडीक औ
र अनारदाना वरावर चूरन कर के वाके पेट में भ
र के कपरोटी करके जलावे जो कोयला होजाय
और कोयला की वरावर गेंहू की रोटी जली हुई

For Private and Personal Use Only

मिलाके चूरन करै और जितना उचित जाने उतना पिलावे॥

॥ फसल बत्तीसवीं॥

दर वहरह में॥ दरवहरह घी गुवार॥ कफ वात और शीत के रोगों को और कलेजा और जलंधर के रोगों को दूर करै और नशा लावे॥ विधि॥ गुड सेर १० बंबूर के पेड को भीतर को वक्कल सेर २॥ और वेर के पेड को भीतर को वक्कल सेर १ गुआर पाठे को गूदो ३ पाव। आमरे पाव सेर। नेत्र वाला। तज। उस्तुखुदूस। बिल्ली लोटन। दाल चीनी। सोंफ। वेल छड। चोव चीनी। नाग केसर। सीतल चीनी। खुरासानी अजमायन। पांच २ तोले। नीबू के ताजा पत्ता। नरंगी के ताजा पत्ता छै २ तोले। और मन भर पानी डाल के ऊपर के लिखे की तरहे बना लेय॥ दरवहरह वला दुर॥ कामदेव को प्रबल करै और नशा लावे। और शीत के रोगों को और पांव की उंगलीयों के जोडों के दर्द को और गठिया बाय को दूर करै है॥ विधि॥ गुड सेर ५ भिलाये जो कुट कर के पाव सेर। काली हर्ड। जवा हर्ड। काली मिर्च। पीपर। पीपरा मूल। धाय के फूल। हालों के बीज। दाल चीनी छै २ तोले पानी ३० सेर मिला वे दस्तूर के माफिक बनाले॥ दर वरह अंजीर॥ कामदेव को प्रबल करै और नशा लावे और पथरी और तिल्ली की सूजन को पचावे और पेट फूल जाने को दूर करै है॥ विधि॥ गुड सेर ५। पीली अंजीर पाव सेर। मुनक्का। लोहे को मेल। अजमायन। अजमो

द। दालचीनी। खुरासानी अजमायन। लोंग। चार२ तोले। २० सेर पानी मिला के बदस्तूर बना वे। हर फु लराय॥

॥फसल तेतीसवीं॥

रोगनों में "जो" लगाने से मस्तक के रोग और पी डा को गुण करै॥ रोगन॥ कोकूबवि.॥ मस्तक। की पीडा और निद्रानाशक की जो गरमी और खु श्की से उस को दूर करे॥ विधि॥ काहू के पत्तों का रस २ भाग। सुपेद तिल्ली को तेल एक १ भाग मिला के पकावे जब रस जल जाय तब तेल को ठंडा कर के ललाट और मस्तक कै लगाया करे॥ रोगन कद्दू॥ इस के लगाने से मस्तक पीडा गरमी की औ खुश्की नाक की और नेत्रों की जलन को दूर क रे है॥ विधि॥ लंबी घीया छिलका गूदे और बीजों सहित कुचल के उस्का रस निचोड लै औ र उस्के चौथाई भाग का सुपेद तिल्ली का तेल मि ला के पकावे और रस जल जाने पीछे तेल को का म में लावे॥ अथवा॥ मीठे बादाम को तेल औ र घीया गूदे का तेल भी यही गुण रखता है॥ रोग न सीमाब॥ अर्थात् पारे को तेल पक्षाघात औ र कंपन वाय और सवरे सीत विकारों को दूर क रे है॥ विधि॥ पारो। धतूरे के बीज एक २ तोले और काले तिलों का तेल दो तोले। लेके पहले तेल को खूब गरम करै जो लाल हो जाय तब ठं डा करके धतूरे के बीजों को महीन पीस के और

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पारो मिला के खूब घोट के काम में लावै॥ रोग़न कुस्त॥ अर्थात् कूटका तेल पक्षा घात को और लंकुवा को दूर करै और सीत के विकार को दूर करै है॥ विधि॥ कड़वा कूट। नक छिकनी। चीतो। अकरकरा। छै मासे। पीपर। बालछड़। कोयला की जड़। तज। छड़ीला। आँवा हल्दी। लोंग। अजमायन। अजमोद। तगर। सोंठ। नरकचूर। कुदरू गोंद। मस्तंगी तीन २ माषे। बाबूना के फूल तोले भर कड़वे बादाम की मींगी २ तोले। अंडी के बीयों की मींगी। ३ तोले। सब को जौ कुट कर के डेढ पाव पानी में ८ पहर भिजो के फिर औटावै जब आधा रहै तब मल के छान लै और कड़वे और मीठे दोनों तेलों को पोन पोन पाव मिला के फिर औटावै जब पानी जल जाय और तेल मात्र रहि जाय तब काम में लावै॥ रोगन खूब॥ बंदों के तन जाने को और बावले पन को और जो निद्रा न आवै ता को दूर करै लगाने खाने नाक में टपकाने से॥ विधि॥ फंदक की गिरी। पिस्ता। मीठे बादाम। की मींगी। सुपेद तिल। चिलगोजा की मींगी। मीठे घीया के बीजन की मींगी। अखरोट की मींगी। सब बराबर लेके बादाम रोगन की तरह तैयार कर लेवै॥ रोग़न बलादुर॥ अर्थात्। भिलाये के तेल जो सर्वांग बात पट्ठों की और अर धांग बाम और लकवा अथवा और २ रोगों को दूर करै और पचावै है॥ विधि॥ जटा मांसी। जायफ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ल। काली मिर्च। तज। चीतो। पीपरामूल। आँबाहल्दी। पीपर। मेंनफल। भिलाये। सोंफ। कडवाकूट। नरकचूर। एक२ तोले। जो कुट कर के ३ पाव पानी में ४ पहर भिजोय राखे। और आध सेर गाय को दूध और सुपेद तिली का तेल। ढाई पाव मिला के पकावे जब पानी और दूध जल जाय तब तेल को छान ले॥ रोगन चोवचीनी॥ जो पक्षाघात। और सर्वांगबात और कंपन वाय और गलो टेढो हो जाने को और जोडों के दर्द को। और उपदंश की पीडा को और कफ के सब प्रकार के रोगों को दूर करे है॥ विधि॥ चोव चीनी २० तोले। शोरनजान कडवा। ततली पांच२ तोले। चिरायता। छडीला। जटामांसी। तेजपात। दोंनामरुआ। अरावंद तवील। अकरकरा तीन२ तोले। कूठ कडवा १० तोले सब को जो कुट करके २ रात दिन ५ सेर दरियाव के पानी में भिजोवे और सरसों का तेल। गुलरोगन। बाबूना का तेल आध२ सेर और भिलाये का तेल और चमेली का तेल। और सोया का तेल डेढ२ पाव मिला के पकावे जब पानी जल जाय तब तेल को छान ले और जा समय काम में लावे वा समय थोडी मीमथाई वा आस वच मिला के काम में लावे तो बिशेष बलवान हो जाय॥ रोगन हरमुल॥ अर्थात् असपंद का तेल॥ जो कंपन बाय को और जोडों के तनजाने को और हाथ पाव के भारी पने को और बाय कफ की पीडा जो किसी जोड तथा सब शरीर में होय ...... दूर करे॥ विधि॥ असपंद जलाहुआ १२ बारह तोले। सोंठ ३ तोले पाव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेर पानी में ४ पहर भिजो के आध सेर तिली के तेल में मिला के पका वै जव दवा जल जाय तव तेल को छान के और जायफल नग ५ को सुर्मा सा कर के तेल में मिला के राखै और जव तेल लगा वै लव ठंडे पानी से शरीर को वचायें राखै ॥ रोगन कुचला ॥ गठी या के दर्द को और दूसरी पीडाओं को दूर करै ॥ विधि ॥ अफीम २ तोले। गाय के २ पाव दूध में घोल के और कुचला नाग १० के टूक २ कर के मिलावै और काले तिलों का तेल डेढ पाव मिला के पका वै जव दूध और कुचला जल जाय तव तेल को छान ले॥

॥ फसल चौंतीसवीं ॥

कर्ण रोग दूर कर ने के तेलों में ॥ रोगन ॥ कर्ण पीडा को और वहरे पन को गुण दायक है और आज़माया हुआ है ॥ विधि ॥ अजमायन खुरासानी। असपंद जला हुआ दो २ तोले आध सेर पानी में ४ पहर भिजो के औटा वै जव तीसरा भाग पानी रहे तव मल के छान ले और या पानी में सुपेद तिली का तेल। आध पाव मिला के पका वै जव पानी जल जाय तव तेल छान के रख ले और गरम कर के कान में टपकावै ॥ रोगन तुर्व ॥ अर्थात् मूली का तेल ॥ विधि ॥ मूली की जड कुचल के उसका डेढ पाव रस छान ले और आध पाव सुपेद तिली का तेल मिला के पका वै जव रस जल जाय तव तेल को छान ले और गुन गुना कर के कान में टप का वै ॥ रोगन ॥ जो कान के पाद और भारी पने को दूर करै ॥ विधि ॥ आल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की कुल्ली की मीगी १ तोले ४ तोले गाय के पिन्ने से पी सके ५ तोले गुल रोगन मिला के पकावै जब पानी जल जाय तब तेल को छान ले ॥ अथवा ॥ प्रथम १ तोले बाबूना को तेल छै तोले सिरका में मिला के पका के कान में बफारा ले के थोड़ी सी बूंदें वा तेल की गुनगुना कर के कान में टपकावै ॥

॥ फसल पेंतीसवीं

२ वाले

पेट के दर्द दूर करने तेलों में ॥ रोगन ॥ बनाया हुआ शेर अली मेरे पिता का जो कई वेर या को अजमा लीया है पेट की पीड़ा को और सूल को और पेट के फूल आने को और अजीरण को दूर करे है ॥ विधि ॥ जटामांसी। पीपरामूल। बाबूना के फूल। तलली। सोया के बीज। कलौंजी। मस्तगी। एक २ तोले। काला जीरा। पोदीना। अजरखर। डेढ़ २ तोले सब को आधसेर पानी में भिजो के औटावै जब चोथाई भाग रहे तब मल के छान ले और उस में अंडी का तेल और सरसों का कडवा तेल एक २ छटांक मिला के पकावै जब पानी जल जाय तब तेल को छान ले और काम में लाने के समय थोड़ा एलूआ वा इन्द्रायन घोट के मिलावै और गुनगुना पेट पर लगावै ॥ रोगन ॥ अजीरण को दूर करे है ॥ विधि ॥ इन्द्रायन एक तोले। एलूआ छै मासे पानी में पीस के छै तोले अंडी के तेल में मिला के पकावै और लगावै ॥ रोगन ॥ पेट के दर्द को दूर करे ॥ विधि ॥ सहजने के पेड की छाल। से

For Private and Personal Use Only

भालू के हरे पत्ता। आक के पत्ता ४ चार २ तोले कुच। ल के रस निचोड़े वा रस में छै तोले सरसों का तेल डा ल के पकावै जव रस जलजाय तव काम में लावै तो तुर्त आराम होय॥

॥फसल छत्तीसवी॥

गिर पडने की चोटों आदि और तलवार के घाव को दूर करने के तेलों में॥ रोगन देवदार॥ अग ले लोगों की क्रिया और मातवर पुरुषों से प्रत्यक्ष हुई है जो चोट लग जाने को और गिर पड ने की चो ट की सूजन को और पीडा को दूर करै और घाव भर जाने में कए मात की जगह है लेप करना तथा टप काना तथा कपडा या रुई भिजो के उस अस्थान प र रखना चाहिये॥ विधि॥ आंवा हल्दी। देवदार। मुलहटी। दारहल्दी। दो २ तोले। खूब चूरन करै औ र दो तोले भाड के मकान का धूंआं मिला के थोडी देर घोट के ३ पाव पानी में मिला के पकावै जव आ धा पानी जलजाय तव डेढ पाव तिली का तेल मि ला के बद स्तूर मंदी आंच पर पकावै जव सव। पानी जल जाय और तेल काला न पड ने पावे तव आंच पे से उतार ले और हकीम गीलानी ने आप ने तजरवात में लिखा है के जो या तेल में वहरोजा मिला के लगावै तो रानीया के दर्द को तथा पुराने और दर्दी ओं को दूर करै और जो सीतला के फ। फोला सड गये हो और उन में घाव पड गये हों तो थोडा कपूर उस में घिस के लगावै॥ रोगन फो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रवसूने ग्रान॥ जो घाव नासूर और ववासीर को दूर करै और सरदी के सोय को पट करे और जोड़ों को प्रवल करै और जो या तेल को षायतो अतीसार दूर होय॥ विधि॥ निर्विसी। सुपेद कस्या। जायफल। । सुपेदराल। दारहल्दी। भाऊ की लकडी। देवदार। महिक की जड। वहरोजा। हर्ड। बहेड़ा। आमले। अंबनूस। बमूर की छाल दो२ तोले। कंकोल मिर्चा सुपारी. चोवचीनी। मेथी। छप्पर का धूंआं। मकड़ी घर। आंवा हल्दी। एक१ तोले। महेंदी के हरे पत्ता। ककरी पान। डेढ१ तोले। सब को जौ कुट कर के ३ सेर पानी में पकावै जब चोथाई पानी बाकी रहे तब छान लो और मोम पाई जप्रक। हरताल। सिंगरफ। मुर्दासंग। सुपेद राल। छे६ मासे चूरन कर के मिलावै। और ढाई पाव तिल का तेल मिला के पकावै जब पानी न रहे तब उतार के राषे॥ अथवा॥ यह तेल चोट धमक और जन के घाव और सूजन के दूर करने में अजमाया हुआ है॥ ॥ विधि॥ महिक की जड। देवदार। बंबूर के पेड की छाल। आंबा हल्दी। दारहल्दी दो२ तोले। जौ कुट कर के आध सेर पानी में रात को भिजोवै और सवेरे डेढ पाव अलसी को तेल मिला के पकावै जब पानी जल जय तब तेल छान के काम में लावै॥

॥ फसल सेंतीसवीं॥

— इन्द्री के रोग दूर करने के तेलों में॥ रोगन मोरवगान॥ अर्थात चेंटी का तेल जो इन्द्री को सखत और मोटा करै और लंबा करै और कामदेव को प्रबल क

For Private and Personal Use Only

रै और चित्त प्रसन्न करै अगर बहना उमेद भी होगया
या हो ॥ विधि ॥ चमेली का तेल आध पाव एक शी
शी में रख के कवरस्यान की बड़ी बड़ी चेंटी एक सो ले
के वा में डाल के ४० दिन धूप में राखे फिर इन्द्री पर खु
जला के लगाया करै ॥ रोगन खुस्क ॥ अर्थात गोख
रू का तेल जो वीर्य को गाढा करै और कामदेव को प्रवल
और मसाने और गुरदे की शुद्धी करै ॥ विधि ॥ बडे
गोखरू ताजा को कुचल के उसका रस निकाले डेढ पा
व और गाय का दूध डेढ पाव और सुपेद तिली का ते
ल पाव सेर और छटांक सोंठ का चूरन मिला के मंदी
आंच पर पकावै जब दूध और रस जल जाय तब तेल
को छान ले और जितना चाहे उतना षाया करै ॥ रो
गन ॥ यह मेरे छोटे भाई अमान अली हकीम का ब
नाया हुआ जो या का लेप करना इन्द्री पर कामदेव को
बढावै और रगों की सुस्ती को दूर करै और जोडों की षु
स्की और नसें बाहर निकल आने को विशेष उत्तम
है ॥ विधि ॥ सुपेद चिरमिठी का छिलका । सुपेद फू
ल की कनेर की जड । असगंध नागोरी । तज । दालची
नी । अकरकरा । ताल मषाने । उटंगन के बीज । इन्द्र
जो । असबंद । कलोंजी । प्याज के बीज । बिनोले की
मीगी । माल कांगनी । घोडे के षुर । कटे हुये । छे २ मा
से । चिरोंजी । चिलगोजा । ऊंटकटारे की जड । देवदार
अगर । काली मूसली एक २ तोले । जायफल । लोंग ।
रसकपूर । धतूरे के बीज । तीन २ मासे । अफीम २ मा
से सब को कूट के । डेढ छटांक भेड के घी में तथा गाय

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के घी में मल के और मुर्गी के अंडा नग १० की जरदी में मिलावै और सीसी में ४ पहर रख के पीछे पहले दस्तूर के माफिक तेल निकाले और काम में लावें॥

॥फसल अड़तीसवीं॥

वालों के तेल के प्रकर्ण में ॥रोगन॥ जो वालों को लंबा करै और स्याह करै और गिरने न दे॥विधि॥ हर्ड। वहेड़ा। आमला दो २ तोले। परपुीया वसा। अगरकन्धा। एक २ तोले। बेर के पत्ता। मीठे अनार के पत्ता। महेंदी के पत्ता। बंमूर के पत्ता। हर एक ताजा तीन २ तोले। पानी सेर एक में औटावै जब तिहाई पानी रहे तब छान ले फिर उस पानी में सुपारी मो कुट के ४ तोले। रूमीमस्तंगी तोलेभर। बंशलोचन सुपेद। छे मासे। सुपेद तिली का तेल पाव सेर मिला के पकावै जब पानी जल जाय तब तेल छान के सीशी में कर राखै ॥रोगन वैजैय॥ अर्थात् अंडे का तेल जो १५ दिन में वालों को जमावै है॥विधि॥ खरबूजा नग १ अधकच्चा में छेद कर के उस्के बीज निकाले और मुर्गी के अंडा नग १० की जरदी और तोलेभर लोह चूरा २ तोले बेर के ताजा पत्ता। और सरसों का तेल वा में भर के उस्का मोंह बांध के कपरोटी चढ़ाय के ४ पहर गरम भाड़ में राखै व प्रातःकाल माटी दूर करके और रगड के मरहम जैसा बना ले और लगा वे॥रोगन॥ जो वालों को लंबा और खूब सूरत करै॥विधि॥ हर्ड वहेड़ा आमला। नगरमोथा। जटामांसी। छड़ीला। ए

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क २ तोले। गुलाब के फूल। नरकचूर। कपूर कचरी। छै मासे सब को जो कुट कर के और सुपेद तिली का तेल डेढ पाव में मिला के शीशी में रषे और थोड़े दिन पीछे काम में लावै॥ रोगनु॥ जो वालों के फट जाने को और गिर पड़ने को और वालों की जड़ की षुजली को दूर करै है॥ विधि॥ आमले। महेंदी के ताजा पत्ता। वंभूर के ताजा पत्ता दो २ तोले। पाव सेर पानी में औटावै जब चौथाई रहै तब मल के छान के सुपेद तिली का तेल पाव भर मिला के पकावै जब पानी जल जाइ तब तेल को छान ले। और उसमें सेवती के फूल। छड़ीला। गुलाब के फूल। तोला तोला मिला के काम में लेवै धूप में राष के

॥ फसल उनतालीसवी

जरूक अर्थात् पिचकारी॥ जो १ स्त्री और पुरष की इन्द्री में चलाई जाय है॥ जरूक॥ जो सूजाक के नये और पुराने घाव को दूर करै है॥ विधि॥ फिटकिरी १ तोले। लीला थोथा छै मासे दोनों को भून के सेर भर पानी में घोल के शीशी में भर राषे और नित्य पांच च्यार वेर काम में लावै और भून्या न चाहै तो औटा के काम में लावै। ॥ अथवा॥ यह तेल मसाने और इन्द्री के घाव को अच्छा है॥ विधि॥ बंबूर का गोंद। कतीरा निशासता। चांदी की मैल। एक २ मासे। षीरा ककड़ी के बीजन की मीगी। वंगदो २ मासे। शीरखिष्त

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वना

छे मासे लेके लंबी लिभूटी गोली राखै और समय प र लड़की की माके दूध में तथा बकरी के दूध में घिस के इन्द्री के छेद में टपकावे ॥ अथवा ॥ यह सोजाक के घाव दूर करने में थाकी बराबर कोई नहीं है ॥ विधि ॥ सफेदा काशगरी । कुदरू गोंद । फिटकरी भुना। बंमूर का गोंद । निशासता । दम्मुल अरब बेन । सब ब रा बर लेके नीम के ताजा पत्तों के रस में गोली बना राखै समय पर लड़की की माके दूध में तथा गधी अथवा ब करी के दूध में घिस के काम में लावे ॥ अथवा ॥ सुफे दा काशगरी । गेरू तोले भर । चोषी अफीम नो मासे । लीला थोथा छे मासे । सुरमा सा कर के दूध तथा पानी में घोट के पांच चार बेर दिन में नित्य काम में लावे ॥ अथवा ॥ यह पिचकारी सोजाक के दूर करने में अच्छी है ॥ विधि ॥ सुपेद फिटकरी । गेहूं का सत्त । वंग । सब बराबर खरल कर के बकरी के दूध में मिला के काम में लावे ॥ अथवा ॥ हर्ड का छिलका । आमला । ब राबर लेके जौ कुट कर के रात को पानी में भिजो के ठंडाई तथा काड़ा कर छान के काम में लावे ॥

॥ फसल चालीसवीं ॥

सऊत में अर्थात् नाक में टपकाने की दवा ॥ सऊत जो सरसाम और गरमी की मस्त पीड़ा को गुण करे है ॥ ॥ विधि ॥ बनफसा का तेल बादाम रोगन । घीया का तेल । काहू के ताजा पत्तों का रस । कासनी के ताजा पत्तों का रस बेटी की माको दूध सब बराबर लेके एक सीसी में डाल के खूब हलावे जो सब मिल जाय फिर काम में लावे ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥गुण॥ इन चीजों में से एक ना या दो चीज काम में लावै तो भी गुण करै है॥ सऊत॥ जो आंखों के नीचें अंधेरा आने को और सरदी से चक्कर आने को दूर करै॥ विधि॥ कूट का तेल छे मासे। ४ रत्ती कस्तूरी घोट के काम में लावै॥ सऊत॥ जो लकवा और पक्षाघात को गुण करै॥ विधि॥ एलवा। कलौंजी। पपड़ी खार बराबर लेके चुकंदर के रस में घोट के काम में लावै॥ सऊत॥ जो मोतिया बिंद को दूर करै॥ विधि॥ २ रत्ती कस्तूरी। मासे भर केसर। २ बाल छड़। ४ मासे काय फल। लेके गोली बना रखे और पानी में घिस के नित्य एक दो बूंद नाक में टपकावै॥ सऊत॥ जो नकसीर को बंद करै॥ विधि॥ कागज जला हुआ। मुर्गी के अंडे का छिलका जला हुआ। माजूफल जला हुआ सुर्मा सा पीस के बबूर की ताजा पत्ती में घोट के काम में लावै॥ अथवा॥ बबूर की ताजा पत्ती। बेर की ताजा पत्ती। मीठे अनार की ताजा पत्ती। कुचल के रस निचोड़ के टपकावै और माथे के लगाना भी गुणदायक है॥

॥फसल इकतालीसवीं॥

सनून अर्थात् मंजन में॥ सनून॥ जो मसूड़ों के घाव और रुधिर जाने को दूर करै और दांतों को मजबूत करै॥ विधि॥ सुपारी जली हुई। गुलनार। बारह सींगे के सींग जले हुए। तंतरीक जले हुए। बेन की जड़। सुपेद कत्था लोचन। माई। गुलाब की क

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ली। बड़ी हड़ की गुठली। दो २ मासे। दम्मुल अखवे। न। लोबान सुपेद। नागर मोथा तीन २ मासे। फिटकि री भुनी। ५ मासे। सब का चूरन कर के मसूड़े और दांतों पर मले॥ सनून॥ जो मसूड़े और दांतों को मजबूत करे॥ विधि॥ नागर मोथा। गुलनार। तंतरीक। अगर जला हुआ। फिटकरी। सब बराबर लेनी। अथवा लीला थोथे को किसी तेल में ऐसा भूने जो जलने न लगे। सोंठ। कत्था सुपेद। सब बराबर ले॥ अथवा॥ यह दर्द और दांतों के विशेष हलने को दूर करे॥ विधि॥ मस्तगी। माजूफल। सुपारी जली हुई। छे २ मासे। चोबचीनी। कत्था पपरया एक २ मासे। लोहे का मेल २ तोले। लीला थोथा भुना २ मासे। लेके मनजन करे के पीछे २ वेर सुपेद तिली के तेल के कुल्ले करे फिर केई वेर गुन गुने पानी से कुल्ला करे और पान की बीड़ी खा के पीके को दूर करे॥ अथवा॥ यह मनजन दांतों की पीड़ा और निर्बलता को हलने और रुधिर निकलने और मसूड़ों के घाव को दूर करे॥ विधि॥ सेलषडी। माजूफल। गुलनार। फिटकिरी भुनी। कत्था सुपेद। बंश लोचन सुपेद। हीरा कसीस। नागर मोथा। अकरकरा। रेवंद चीनी। जली हुई मूंस सब बराबर ले॥ अथवा॥ दांतों को मजबूत करे और उन के रंग को निखारे और मोंह की सुगंधित करे॥ विधि॥ माजूफल। सोंठ। समुद्र फेन। पीपल। छूलायची के दाने दो २ मासे। सांभर नोन भुना १० मासे। अगर जला हुआ ५ मासे। जौ जले हुए

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५ मासे लेके काम में लावै ॥ अथवा ॥ यह मंजन मोंह को सुगंधित करै और दांतों को मजबूत करै और निखारै और मसूड़ों के मान्स को जमावे और मजबूत करै ॥ विधि ॥ पीरी कोडी नग ५ भस्म करके । समुद्रफेन । सज्जी । सेंधा नोंन तीन २ मासे । जौ जले हुए । और अगर जला हुआ । अकर करा । सीतलचीनी । पांच २ मासे । लोंग २ मासे । लेके काम में लावै ॥ ५ ॥ अथवा ॥ दांतों को मजबूत करने में या मंजन की तुल्य नहीं हैं ॥ विधि ॥ हर्डे । बहेडा । आमला । सों मिर्च । पीपर । मंजूफल । पतंग । सेंधानोंन । कालानोंन । सांभर नोंन । लीलाथोथा सब बरा बर लेके जेसें हिंदी वैद्यक में लिखा है ॥ दोहा ॥ त्रिफला । त्रिकुटा तूतीया तीनों नोंन पतंग ॥ दांत बज्र सम होत हे माजूफल के संग ॥ १ ॥ अथवा ॥ यह मंजन कई बेर अजमा लीया है जो दांतों की पीड़ा और हलने को दूर करै ॥ विधि ॥ कुचला को कोदूलें आम ले । तास के बीजों का कोदूला एक २ तोले काली मिर्च । सेंधा नोंन छै २ मासे लेके मंजन करै और या के ऊपर कुल्ला न करै और पान की चीडी चावे तो तुर्तही अधिक गुण करै ॥

॥ फसल व्यालीसवीं ॥ सनून अर्थात मिस्सी के भेदों में ॥ मिस्सी ॥ जो दांत और मसूड़ों को मजबूत करै और सुगंधित करै ॥ विधि ॥ लोह चूरा ८ तोले । हरा माजूफल ४ तोले । लीला थोथा भुना १ तोले । सुपेद कत्था २ तोले । छो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टी इलायची के दाने छे मासे चूरन कर के काम में लावे ॥ अथवा ॥ लोह चूरा पाव सेर। बिना छेद के माजूफल आधपाव। छोटी इलायची छिलका सहित। लीला थोथा। लाल कत्था एक २ तोले। रूमीमस्तंगी। हीराकसीस। सोंना माषी। चार २ मासे लेके मिस्सी बनावे ॥ अथवा ॥ तांबेका बुरादा। अनार का छिलका छटाक २ भर। माजूफल २॥ तोले। फिटकिरी तोले भर लेके काम में लावे ॥ अथवा ॥ यह मिस्सी दांतों को मजबूत करै ॥ विधि ॥ मस्तगी। माजूफल। हीराकसीस। मार्दू। बडी हर्ड़ का छिलका। फिटकिरी भुनी। लीला थोथा भुना। मोलसरी के पेड की छाल। सब बराबर लेके मंजन कर के। मोंह से लार टपकावै और ऊपर पान षाके लार को दूर करै ॥

२न

२नो ॥ फसल तेतालीसवीं ॥

सिकंजवी में ॥ सिकंजवी ॥ जो पित्त की प्रबलता और कलेजा की गरमी और तृषा और अचेतनता और मोंह के कडवाट को दूर करै और नसों की गाठों को षोले और पेसाव जारी करै ॥ विधि ॥ षालिस सिर्का पाव सेर। ढाई पाव सुपेद बूरा आग पर रष के छान ले और चाशनी कर के जो चाहै के विशेष बलवान होतो सिर्का को बढा दे ॥ गुण ॥ जिस शरबत में सिर्का मिलाया जाय उस्का नाम सिकंजवी है। जैसें शरबत बजूरी सर्द में जो सिर्का मिलाया तो सिकंजवीन बजूरी सर्द हो जाता है और सादह सिकंजवी का गुण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उस सरबत से विशेष होजाता है ॥ और इसी प्रकार
से सिकंजबी नवजूरी गरम। सिकंजबीनवजूरी मादि
ल और सिकंजबीनदी नारी आदि हैं॥ सिकंजबी
नअूल सली॥ कलेजे के और तिल्ली और नसों
की गांठ के कड़ेपन को और स्वास कास और गा
ढा मल होजाने को दूर करै॥ विधि॥ प्याज अ
मसूल ५४ मासे। बांस की षपांच से टूक २ करके।
पोने २ सेर सिर्का षालिस में औटावे और मल के
छानके ढाई सेर बूरे सुपेद में मिलाके चासनी क
रे और जो विशेष बलवान कीया चाहे तो प्याज के
आठवें हिस्से के हिसाब से। परसियावशां और जू
फा सूषी प्याज के संग औटावे और जो सिर्का थोड़ा
करै तो पानी भी मिलाय के दवा खूब पक जाय॥ १
॥ सकंजबी नरम्मानी॥ जो ज्वर की जलन औ
र जिगर और उदर की गरमी को दूर करै और प्या
स को बुझावै॥ विधि॥ सिरका॥ षट्टे और मीठे
अनार का रस पाव २ सेर गाय को दूध आध सेर षटा
ई सेफाड के जितनों वा को रस निकले और छटां
भर अरिप्रक। सब मिला के औटावे अब आधो वा
की रहै तब छानके ३ तीन पाव बूरो मिला के चाश
नी करे॥ सिकंजबी नरेवंदी॥ जो उदर की गर
मी और अजीरण को दूर करै॥ विधि॥ धूप का
बना गुलकंद पाव सेर। पाव सेर गुलाब जल में।
पीसे और पाव सेर सिरका मिला के छान ले और
चासनी कर ले॥ सिजंकबीनदूफनी मूनी॥ १

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो वावले पन को और जिस रोग में मनुष्य न अच्छे ले
गे वा रोग। और मिर्गी रोग को जुलाब के गुण करै
॥विधि॥ अमर वेल विसफायज। पिस्ती। सुपेद नि-
सोत। गावजुबा के पत्ता। पर सीया वसां। कासनी के वी
ज। राम तुलसी। विस्नी लोटन। छे २ मासे। धूप का बना
गुलकंद। ५ तोले। सिर का खालिस आध सेर और पा
व सेर पानी में ४ चार पहर भिजो के औटा वे फिर छान
के आध सेर बूरे की चाशनी करै॥

॥फसल चवालीसवीं॥

सफूफ के जिस रोग में मनुष्य न सुहाय वा को और हो
ल दिली और जीर्ण ज्वर को और मस्तक पीड़ा जो गर
मी से हो उस्को दूर करै॥विधि॥ सूखो धनियां २ तोले
गावजुबा के पत्ता। आमले। मुनक्का। गुलाब के फूल
सुपेद चंदन। एक २ तोले। १० तोले। सुपेद बूरो लेनों
॥अथवा॥ गुल गावजुबा। गुल नीलो फर। गुलाब
के फूल। छे २ मासे। दोनों चंदन तीन २ मासे। सूखो ध-
नियों तोलेभर। सुपेद बूरो २ तोले ले॥अथवा॥ गु-
लाव के फूल। सुपेद श्रोव लोचन। कपूर तीन २ मासे।
सूखो धनियां। छे मासे। जौ का सत्त २ तोले। और सब
की बरा बर सुपेद मिश्री लेनी॥अथवा॥ सेवती के
फूल। गुलाब के फूल। एक २ तोले। गावजुबा के फूल
। गुल बनफशा छे २ मासे। सुपेद चंदन। रेशम कच्चा।
नों २ मासे। और सब की बरा बर सुपेद मिश्री लेनी॥

॥फसल पैंतालीसवीं॥

जुलाब और मल के दूर करनें में सफूफ अर्थात चूर्ण।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में ॥ सफूफ ॥ जो वाय के मल को दूर करे ॥ विधि ॥ सनाय मक्की। अमरवेल। सुपेद निसोत। छिली हुई। छूनागारी कुं नों २ माशे। काली हर्ड। गुलाव के फूल। विसफायज। फिस्ती। अर्थात्। पिस्ती छै २ मासे। रेवतचीनी ३ मासे॥ और सव की वरा वर मिश्री लेनी ॥ सफूफ ॥ जो कफ के और वाय के मल को दूर करे ॥ विधि ॥ सनाय की पत्ती। तीनों हर्ड। वहेडा। आमले। सुपेद निसोत एक २ तोले। सोंठ छै मासे। सेंधा नोंन २ तोले। लेनें ॥ अथवा ॥ काली हर्ड। वडी हर्ड। सोंफ। गुलाव के फूल। एक २ तोले। सनाय मक्की। नों मासे इन्द्रायन ३ मासे। और सव की वरा वर लाल वूरो लेनें ॥ सफूफ ॥ सनाय ॥ जो पेट के दर्द और शूल को गुण करे और गाडे मल को निकाले और पेट के कीडों को मार के दूर करे ॥ विधि ॥ सनाय। सोंठ। वडी हर्ड। कालो नोंन। सव वरावर लेके चूरन करे और गरम पानी के संग फांके ॥ सफूफ तुर्बद ॥ अर्थात ॥ निसोत का चूरन जो दस्त लगावे और उदर को वल प्राप्त करे ॥ विधि ॥ सनाय मक्की। अनार दानों। डेढ २ तोले। सोंठ। सांभर नोंन। निसोत सुपेद। सोंफ। एक २ तोले लेनी ॥

॥ फसल छियालीसवीं ॥

ज्वर षांसी नजला और रुधिर थूकने के रोगों को दूर करे ॥ सफूफ ॥ विषमज्वर दोषाज्वर षांसी और गरमी के नजला को गुण करे ॥ विधि ॥ खतमी के वीज। गुलनार चार २ मासे। कतीरा। निशासता। वंमूर को गोंद। मीठ घीया के वीजन की मींगी। तर वूज के वीजन की मींगी।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुल्हटी कासत्त। सुपेद वंश लोचन। षीरा के वीजन
की मीगी। गेरू। सात २ मासे। वाकला के वीज छिले
हुए। पोस्त के डोडा तीन २ मासे। के कडा जला हुआ।
और सब की वरा वर मिश्री ले॥ अथवा॥ यह चूर
न षांसी के मुवाद को पका के निकाले हैं॥ विधि॥
खतमी के वीज। बंबूर को गोंद। कतीरा वंश लोचन सु
पेद दो २ मासे। मुल्हटी का सत्त। बीह दानो। खुबाजी
के वीज। निसासता। वादाम की मीगी। तीन २ मा
से। पोस्त के दाने। वाकला को चून चार २ मासे। औ
र सब से आधो लाल बूरो ले॥ अथवा॥ यह चू
रन रुधिर थूकने को शुण करे॥ विधि॥ अंजुवा
र की जड। दम्मुल अरब वेन। निसासता। छै २ मासे।
कुलफा के बीज भुने। बंबूर को गोंद। कहरुवा। का
हू के बीज। अकाकीया। पोस्त के दाने। कतीरा।
मुल्हटी का सत्त। गेरू। सुपेद चंदन चार २ मासे। क
पूर २ मासे। के कडा जला हुआ। नो मासे और स
बसे आधी मिश्री सुपेद लेनी॥ अथवा॥ सेलष
डी २ मासे सुगंधित पोस्त के डोडा। दम्मुल अरब वेन।
कहरवा। अंजुवार की जड। पांच २ मासे। निशा
सता नों मासे। सब की बरा बर सुपेद मिश्री लेनी॥
॥ अथवा॥ यह चूरन की फक्की षांसी और स्वैस
को दूर करे॥ विधि॥ मुल्हटी। पीपर। अकरकरा
वंस लोचन। सब की बरा बर लाल बूरो मिलाके सोने
समय जितना चाहै उतना षाय ऊपर से थोडा गरम
पानी पीले॥ अथवा॥ देशी अजवायन षारीनों

For Private and Personal Use Only

न दो २ तोले। पानी में पीस के और आक के पत्ता नग ५
पर पीले हो के गिर पडे हों लगा के तह कर के सुषावे
और एक कूलडा में रष के कपरोटी करके जलावे उस
की भस्म थोडी २ मूंह में रषे तो बहुत जलदी आराम है

॥फसल सैंतालीस वीं॥

उदर को बल देने वाले और भोजन पचाने वाले। औ
र बादी और वाय गोला। वायशूल दूर करने वाले चूरनों
में॥सफूफ॥ उदर को बल प्राप्त करै॥विधि॥ऽ
सीतलचीनी। जटामासी। नर कचूर। रूमी मस्तगी।
मीठे अनार के दाने। बिजोरे का छिलका। पांच २ मा
से। लौंग। जावित्री। तीन २ मासे। कच्चा अगर तोले भर
और सब की बराबर सुपेद बूरा लेनें॥अथवा॥ऽ
यह चूरन उदर के बिगड जाने को और जलन को और
अचेतनता को दूर करै और भोजन को पचावै और मों
ह की दुर्गंधी को दूर करै दिल और मस्तक को बल प्रा
प्त करै॥विधि॥ तज। पत्रज। अगर। तगर। मस्तगी
अजवाईन। राम तुलसी। काला जीरा। दालचीनी। छडीला
। दोनों इलायची। मिर्च। पीपर। सोंठ। लौंग। जायफल।
मीठे अनार दानें। सब बराबर और सब की बराबर मि
श्री लेनी॥सफूफ बजूर॥ उदर को बल प्राप्त करै
और वाय को दूर करै॥विधि॥ कालाजीरा। तज। अ
जवायन। अजमोद। बडी इलायची। के दाने छै २ मा
से। लौंग २ मासे। सोंठ। पीपर पांच मासे। और सब से डो
ढा बूरा लेना॥सफूफ॥ क्षुधा लगाने में अपने तुल्य
नहीं रषता है॥विधि॥ सांभर नौंन आध पाव फोडके

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किसी वासन में रख के आंच पर धरै और खालिस। सिरका उस के ऊपर छिड़ के और लकड़ी से हला ता जाय जब आध पाव सिरका सोष जाय तब उता र ले ॥ भुना धनियां। जारिष्क। भुना अनारदाना। तं तरीक। एक २ तोले। मिला के चूरन कर ले॥ अथ वा॥ पोदीना सूखा ।१ तोले। काली मिर्च छै मासे। ६ अजमायन। सोंठ। वाय विडंग। लोंग तीन २ मासे। सेंधा नोंन नों मासे लेना॥ सफूफ हिंदी॥ हिंदुस्ता नी वैद्य का चलाया हुआ क्षुधा लगाने में अजमाय और अपनी तुल्य नहीं रखता है॥ विधि॥ नकछि कनी। मूली। पोदीना। कटेरी। आक का खार पृथक २ निकाल के सब बराबर मिला के। अजमायन का अतर तथा दालचीनी के अतर में मकरो के चूरन बना लेवै॥ सफूफ नमक सुलेमानी॥ जो भो जन के पचाने में अपनी तुल्य नहीं राखता है और। जो मुर्गा के अंडे की जर्दी में मिलावै तो कामदेव को प्र बल करै है॥ विधि॥ काला नोंन। सांभर नोंन। ला होरी नोंन। नोंसादर सात २ तोले। अजमोद। अजमा यन। काली मिर्च। सोंठ। लोंग। कालोजीरो। जायफ ल। जावित्री। एक २ तोले। जो कुट कर के आधसेर खालिस सिरका डाल के औटावै जो सब एकसा हो के सूख जाय तब सब का चूरन कर ले॥ सफूफ॥ जो। उदर की तरी को दूर करै और भोजन को पचावे॥ वि धि॥ दालचीनी। नागरमोथा। अगर। अजमायन। सोंफ खताई। काली मिर्च। पीपर। छोटी इलायची

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के दाने। पोदीना। अनेसूं। धनियां भुनों। कालोजीरो भुनों। सोंठ। मस्तगी। सब बराबर और सब की बराबर सुपेद बूरो लेनों॥ सफूफ॥ वाय गोला और विशेष डकार आने को दूर करै॥ विधि॥ मिर्च। पीपर। सोंठ काला जीरा। अजमोद। हींग। सेंधानोंन। सब बराबर। लेके चूरन कर के राषे और जैसा मुनासिब जाने जो भोजन के आदि अंत में॥ अथवा॥ काली मिर्च। अजमायन। मूली का षार। सब बराबर लेके चूरन बनावे। और थोडा २ षाया करै॥ अथवा॥ सज्जी। जवाषार कारो नोंन। सोंठ। कारो जीरो। बाबूना के फूल। सब बराबर लेके चूरन बनावे॥

॥ फसल अड़तालीसवीं॥

जो दस्त बंद करने के सफूफों में॥ सफूफ॥ जो पेट के नरम करने को दूर करै॥ विधि॥ तंतरीक। अजमायन। सोंठ। अनार दानों भुनों। जरीश्क। बेर की गुठली ৮ की मीगी। सब बराबर और सब की बराबर बूरो लेनों॥ ॥ सफूफ॥ जो दस्तों को बंद करै॥ विधि॥ गुलनार। बबूर को गोंद भुनों। हब्बुल्लास। तंतरीक। गुलाब का जीरा। पांच २ मासे। भुनों अनार दानों। नों मासे। और सब की बराबर सुपेद बूरो लेनों॥ सफूफ॥ जो संग्रहणी को दूर करै॥ विधि॥ काली हर्ड भुनी। तज बेलगिरी। भुनी सोंफ। पोस्त के डोडा भुने। सुपेद राल मरोरफली। धनियों नागर मोथा। आम की गुठली। सब बराबर सब की बराबर सुपेद बूरो लेनों॥ अथवा॥ मोचरस। माई। धाय के फूल पांच २ मासे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रूमीमस्तंगी। वेल गिरी। पोस्त के डोडा सुपेद राल। चार२ मासे और सव की वरावर वूरो लेनें॥ सफूफ॥ मरोडे और पुराने अतीसार को दूर करै॥ विधि॥ हालों के वीज भुने। कंकोल मिर्चे। तंतरीक। सात२ मासे। कारोजीरो। गंदना के वीज। सोया के वीज। पोस्त के दाने। अनेसूं। अजमोद। खुरासानी अजमायन नों२ मासे। अफीम ३ मासे। सुपेद मिश्री सव से आधी लेनी॥ सफूफ॥ जो दस्तों को वंद करै वहुधा करके अफीमी के दस्तों को दवा कठिन है॥ विधि॥ धायके फूल। सुपेद राल। दोनों वरावर चूरन कर के षाय और लोहा मठा में वुझाके उस्के ऊपर से पीवे॥ सफूफ॥ जो पित्त और रुधिर के अतीसार को दूर करै॥ विधि॥ वंबूर को गोंद। कतीरा। सुपेद वंश लोचन। सेलषडी। गेरू। दम्मुल अरव वेन। दो२ मासे चूरन कर के। एक तोले वीहू का रुव तथा मीठे अनार के रुव के संग षाय॥ सफूफ॥ जो आम और मरोडा और आंतों की पीडा को दूर करै॥ विधि॥ षुवाजी के वीज। खलमी के वीज। एक२ तोले। भुनों निसासता नौं मासे। ववूर को गोंद। गेरू। वंश लोचन। छै२ मासे। मात्रा संजा सवेरे ३ मासे पानी के संग जिस्में ३ मासे ववूर का गोंद घुला होवे फांके॥ सफूफ॥ जो दस्तों को वंद करै॥ १॥ विधि॥ वल्लूत। माजूफल। मीठे अनार का छिलका। एक तोले। तंतरीक। हव्वुलास। डेढ२ तोले चूरन कर के छै मासे ठंडे पानी के संग फांके॥ सफूफ॥ १ अतीसार को जिस्में षांसी भी हो उस्को दूर करै है॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ विधि ॥ हब्बुल्लास। वलूत। पोस्त के डोडा भुने नो-
मासे। बंबूर को गोंद भुनों। छै मासे लेनें ॥ अथवा ॥
वंबूर को गोंद। वंश लोचन। गेरू। हब्बुल्लास। एक २
तोले। परसीयावशां। कुदरू गोंद। तीन २ मासे। थोड़े
से षसषस के सरवत के संग फांके ॥ सफूफ ॥ रु
धिर और विना रुधिर के दस्तों को अच्छा करे है ॥
॥ विधि ॥ भुनों वंबूर को गोंद। वंश लोचन। गेरू।
हब्बुल्लास। पिस्ता के छिलका। पिस्ता की मींगी ज-
ली। छुहारे की गुठली जली। मुनक्का के दाने। माजू-
फल। मीठे अनार को और षट्टे अनार को छि लका
का। जुफ्त वलूत। कहरुवा। गुलनार। अषरोट का
छिलके जला माई। वेर की गुठली की मींगी। अकाकि
या। चंदन चूरो सुपेद। पोस्त के डोडा। काला जीरा। -
कुलफा के बीज भुने। जामन की गुठली की मींगी। (
आम की गुठली। छै २ मासे। बारतंक। कौंच। तुषम
रेहां। ईसवगोल। हालम। चूका के वीज। छै २ मासे
भून के मिलावे। और सब से आधो सुपेद वूरो मि-
ला वै। और संजा सवेरे ठंडे पानी के संग फांके ॥

॥ फसल उणंचासवीं ॥

वमन और उवाकी दूर करनेवाले चूरनों में ॥ सफूफ
॥ पित्त की वमन और उवाकी को दूर करें ॥ विधि
॥ कपूर २ मासे। वंशलोचन सुपेद २ मासे। गुलाव
के फूल। तंतरीक। पांच २ मासे। चूरन के थोड़ी २ षट्टे
अनार के सरवत के संग फांके ॥ अथवा ॥ कच्चे
अगर। पिस्ते का छिलका। पोदीना। छै मासे। जरी

For Private and Personal Use Only

पूक। तंतरीक। षट्टो। अनारदाना नों २ मासे। और सब
की बराबर सुपेद बूरो लेनों॥ अथवा॥ छोटी इलै
यची। के दाने। कमलगट्टा की मींगी। सूखो धनियों।
तीन २ मासे। सुपेद बूरो तोले भर लेनों॥ सफूफ॥
जो कफ की वमन को दूर करै॥ विधि॥ पोदीना।
दालचीनी। सोंठ। एक २ तोले। जरिश्क। मिर्च। पी
पर। तीन २ मासे। सेंधा नोंन नौ मासे। लेनों॥ अ
थवा॥ लोंग। जायफल। छोटी इलायची के दाने
तीन २ मासे। दालचीनी। मीठे अनार को छिलका छे
२ मासे। और सो बूरो सुपेद ले के चूरन कर के षाया करै

॥ फसल पंचासवीं॥

जलोदर और तिल्ली के शोथ को और कमल वाय
और कलेजे। के रोगों को और ववासीर के दूर करने
चूरनों में॥ सफूफ॥ जो जलंदर को अच्छा क
रैहै॥ विधि॥ हींग नौ मासे। पीपर। सोंठ। अजवा
यन डेढ २ तोले। बडी हर्ड। चीता। मीठा कूट। वहम
न सुपेद। सनाय मक्की दो २ तोले। सेंधा नोंन छठा भा
ग सवका॥ सफूफ॥ जो तिल्ली की सूजन को घट
कावै॥ विधि॥ जूफा। परशीया वसा। कनेर की ज
ड को छिलका। मकोइ। संभालू के वीज। तंतरीक के
वीज। सब बराबर ले के चूरन कर के सिकंजवी न
सादह के संग फांके॥ अथवा॥ भुनों सुहागो १ तो
ले। राई ३ तोले ले के फांके॥ अथवा॥ यह चूरन
पुरानी सूजन और तिल्ली के वढाव को दूर करै है॥
॥ विधि॥ नोंसादर। भुना सुहागा। कलमी सोरा।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कालीमिर्च। सव वरावर लेके चूरन कर के रषै और नित्य प्रात काल गुवार पाठे का एक टुकडा २ मासे। का लेके वामें जितनों चूरन लिपटे उतनों लपेट कै निगल जाया करै ॥ सफूफ ॥ जो कमल वाय को दूर करै ॥ विधि ॥ पीली गंधक २ माशे। अमर वेल। अजमोद। सुपेद कादरू गोंद चार २ मासे। चिलगोजा की मीगी। नो मासे। मुनक्का सूषी १ तोले चूरन कर के थोडा सा फाँक के ऊपर से सोंफ का अर्क पीवे ॥ सफूफ ॥ जो कलेजे की सूजन को गुण करै और उस्कों ताकत देहै ॥ विधि ॥ गुलाव के फूल नो मासे। जरिपूक। लाष धुली हुई। सात २ मासे। सुपेद वंश लोचन। सुपेद चंदन। निशास्ता। ववूर को गोंद तीन २ मासे। रेवत चीनी २ मासे। केसर १ मासे २ तोले सुपेद मिश्री लेनी ॥ १.

॥ सफूफ ॥ जो कलेजे की सूजन को दूर करै है ॥ और पेसाव जारी करै ॥ विधि ॥ खरवूजा की मीगी। षीरा ककडी के वीजन की मीगी। कासनी के वीज। अकास वेल के वीज नौं २ मासे। अनेसूं। सोंफ। अजमोद। मुल्हटी। को सत्त। जरिपूक। रेवत चीनी। लाष धुली। वाल छड। मस्तंगी छै मासे। केसर १ तीन मासे। कापूर २ मासे। और सव से आधी सुपेद मिश्री लेनी ॥ सफूफ ॥ जो ववासीर खूनी और वादी को दूर करै ॥ विधि ॥ वकायन के वीज की मीगी। निवोली की मीगी। रसोत। काली हुई। सव वरावर लेके चूरन ३ मासे ठंडे पानी के संग फाके और उस्के ऊपर यो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

डे से भुने चने चावे ॥ अथवा ॥ खूनी ववासीर को अच्छा है ॥ विधि ॥ धिनोले की मीगी २ मासे। रसोन १ मासे। सुपेद मिश्री ३ मासे चूरन कर के षाय और ऊपर से ठंडा पानी पीवे ॥

॥ फसल दूसरी क्या बनावी ॥

प्रसन्न करने वाले और बल देने वाले और मस्तक के रोग दूर करने वाले सरबतों में ॥ सरबत गावजुवां ॥ जो होल दिली और मनुष्यों से नफरत करने वाला रोग और कंठ की सूजन को गुण करे है ॥ विधि ॥ गावजुबां के पत्ते २ तोले। बनफशा के फूल। गुलाव के फूल। उस्तुखुदूस। राम तुलसी। मैंनों मासे। विल्ली लोटन। नीलोफर के फूल एक २ तोले आध सेर पानी में ४ पहर भिंजो के औटावे फिर थोडा मल के छान के आध पाव गुलाब मिला के डेढ पाव सुपेद बूरे की चाशनी सरबत की करें ॥ सरबत अबरेसम ॥ यह हकीम मसी हुज्जमान ने जहांगीर बादशाह के लीये तैयार कीया जो होल दिली दूर करने को विशेष गुणदायक हुआ ॥ विधि ॥ कच्चा रेशम १० तोले। विल्ली लोटन १ तोले ३ पाव पानी में भिंजोके औटावै और पाव सेर गुलाब जल और ढाई पाव मिश्री मिला के चाशनी करै। संगयशब छै मासे। अबीधे मोती २ मासे केवडे के अर्क में घोट के। सुपेद चंदन। कच्चा अगर। रूमीमस्तंगी सात २ मासे चूरन कर के मिलावै ॥ सरबत सेब ॥ प्रसन्न करने वाला दिल और जिगर को बल देने वाला।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

औरवमन और दस्तों को बंद करने वाला है॥ विधि॥ सेव को छील के बीज निकाल के और कुचल के निचोडे जव सवा सेर रस निकल आवे तव पकावे जव आधा रहे तव ढाई पाव सुपेद कंद मिला के चाशनी कर लेवे॥ शरवत संदल॥ जो दिल को वल दे होल दिली को दूर करे कलेजे को गुण करे और उदर की गरमी शांत करे और प्यास को बुझावे॥ विधि॥ सुपेद चंदन को चूरो आध पाव और आधसेर गुलाव के अर्क में ४ पहर भिजो के थोड़ा औटा के मल के छान ले और आध सेर सुपेद कंद मिला के चाशनी करले॥ शरवत नारंजा॥ जो दिल और उदर को ताकत दे और चित्त प्रसन्न करे॥ विधि॥ सेरभर सुपेद वूरो ३ पाव गावजुवां के अर्क में मिला के चाशनी करे जव खूब गाढ़ होजाय तव बराबर का नारंगी का रस निकाल के मिला के तीन चार जोश दे के और तीन मासे केसर तोले भर गुलाव जल में घिस के मिलावे॥ शरवत विजोरे के पत्ते का॥ जो दिल और उदर की निर्वलता और हैल दिली को गुण करे॥ विधि॥ विजोरे के पत्ता नग ढाई सो सेर भर पानी में औटावे जव तीसरा भाग रहे तव विना मले छान ले और ३ पाव सुपेद वूरो मिलाके चाशनी कर ले॥ शरवत विजोरे के छिलके का॥ जो उदर को अति वल दे और चित्त प्रसन्न करे॥ विधि॥ विजोरे का छिलका जो गीला होय तो सेर भर और जो सूखा होय तो आध सेर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ओटा के आध सेर सुपेद बूरा उस्के पानी में मिला के चाशनी करे ॥ शारबत गाजर का ॥ जो दिल और इन्द्री को ताकत दे चित्त प्रसन्न रखे और रुधिर निर्मल पैदा करै ॥ विधि ॥ छिली गाजर को रस आधसेर लेके ११ छटांक सुपेद कंद की चाशनी करे ॥

॥ फसल बावनवीं ॥

नाना प्रकार की खांसी और नजला और मस्तक पीड़ और बगल पीडा। रीह अर्थात् फेफड़े की पीडा और। स्वास को दूर करने वाले शारबतों में ॥ शारबत उस्तुखदूस ॥ जो ज्वर और कफ खांसी और छाती के गुबार को दूर करे ॥ विधि ॥ उस्तुखदूस २ तोले। मुल्हटी। खतमी के बीज डेढ २ तोले। वनफशा के पत्ता। एक तोले। मुनक्का के दाने ६०। लिसोड़े के दाने ४०। उन्नाब के दाने। ३० और आध सेर लाल बूरा और आध पाव शहत लेके चासनी करके शारबत बनाले ॥ शारबत जूफा ॥ जो ज्वर कफ की खांसी और स्वास को दूर करे है ॥ विधि ॥ सूखा जूफा। मुल्हठी। डेढ २ तोले। सोंफ। परसीयावशां। अजमोद। छै २ मासे। पीले अंजीर नग १० मुनक्का के दाने ४०। मेथी नौ माशे। धूप को गुलकंद छै तोले। लाल बूरी आध सेर चाशनी करके शारबत बनाले ॥ शारबत वनफशा ॥ जो पहलू की पीडा और फेफडे पीडा और मस्तक पीडा को दूर करे है ॥ विधि ॥ वनफशा के पत्ता आध पाव २८ तोले पानी में ४ चार पहर भिजो के ओटावै जब तीसरा भाग रहै तब आध सेर सुपेद बूरी मिला के चाशनी कर ले ॥ शारबत नेलोफर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो मस्तक पीड़ा को और पित्तज्वर को और पहलू के दर्द को फेफड़े के दर्द को गुण करै है ॥ विधि ॥ नीलो फर की सुपेद गिरी पत्ती ले जो हरी हो तो १ सेर ६॥ छटांक और जो सूखी हो तो २८ तोले ११ छटांक पानी में औटावे जब तीसरा भाग पानी रहे तब ११ छटांक सुपेद बूरो मिला के चाशनी करै ॥ शार वत अंजाज ॥ जो सूखी षांसी और विषम ज्वर को गुण करै है ॥ विधि ॥ उन्नाव के दाने नग ३० लिसोड़े के दाने नग ६० मुल्हटी छिली हुई। खब्बाजी के बीज। खतमी के बीज। नीलोफर के फूल। गुल बनफशा डेढ २ तोले। बीह दानो छै मासे। बंबूर को गोंद नो मासे। सेर भर पानी में भिजो के र्क करके २ पाव सुपेद बूरो मिला के चाशनी करै और नो मासे कतीरा पीस के मिलावै ॥ शार वत अंसल ॥ या शार वत को नरगी सभी कहते हैं जो पुराने नये स्वास को दूर करै ॥ विधि ॥ प्याज अ सल जाके छिलका पर छिलका हो जो पाने की प्याज के तुल्य होती है। उस छील के बाँस की छुरी से काट के चौगुने पानी में औटा के प्याज से ढाई गुनो सुपेद बूरो मिला के चाशनी करै ॥

॥ फसल तिरेपनवीं ॥

ज्वर के दूर करने के शार बतों में ॥ शार वत कास नी ॥ जो पित्तज्वर को दूर करै और दिल और कलेजे और उदर को ताकत दे और गांठें को षोले और पेशाब को जारी करै ॥ विधि ॥ कासनी के पत्तों का रस २८ तोले में आध सेर सुपेद बूरो मिला के चाशनी करै हो।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ती चाशनी में चार तोले नीबू को रस मिलावे ॥ शरबत आलू ॥ जो रुधिर और पित्त ज्वर और मलज्वर को दूर करे और मस्तकपीडा और हाथ पावों की जलन और उवाकी को गुण करे ॥ विधि ॥ कुलफा के बीज । खीरा ककडी के बीज । काहू के बीज । बिजोरे को छिलका एक २ तोले । आलू बुखारे नग ५० इमिली ४ तोले । ३ पाव । पानी में औटावे और छान के ढाई पाव सुपेद बूरा मिलाके चाशनी करै ॥ शरबत गिलोइ ॥ जो विषम ज्वर को गुण करै और नित्य ज्वर हो तथा खांसी भी संग में हो ॥ विधि ॥ हरी गिलोइ जो कुटकर के छै तोले । नीलोफर के फूल साफ ४ तोले । गुलाब के फूल २ तोले । सुपेद कंद २८ तोले लेके शरबत बना ले ॥ शरबत फरीयादिरस ॥ जो ज्वर और नजले की खांसी को दूर करे ॥ विधि ॥ गावजुवां के पत्ता । सुपेद चंदन । परसियावशां दो २ तोले । मुलहटी । सोंफ । खतमी के बीज । गुलब के फूल । सेवती के फूल । पोस्त के डोडा । पोस्त के दाने । एक २ तोले । मुनक्का के दाने नग २५ सुपेद बूरी ३ पाव की चाशनी करै ॥ यह शरबत ॥ हकीम शेर अली का बनाया हुआ है ॥ हुम्ज के विषम ज्वर को गुण करे ॥ विधि ॥ खीरा ककडी के बीज । कुलफा के बीज । नीलोफर के फूल एक तोले । गावजुवा के पत्ते । हरी गिलोय । दो २ तोले लेके औटाके छान ले और पीछे और घीया को अर्क चोदह २ तोले और २० तोले सुपेद कंद मिलाके चाशनी करै ॥ यह शरबत ॥ मरदान अली हकीम मेरे वडे भाई का बनाया हुआ है ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मंद विषमज्वर को दूर करै ॥ विधि ॥ नीलोफर के फूल । गावजुबां के पत्ता दो २ तोले । वनफशा के पत्ता । सुपेद चंदन चूरो । हरी गिलोइ । एक २ तोले खीरा को रस । लंबे घीया को रस आध २ पाव । षट्टे अनार को रस छटांक भर । सुपेद कंद ११ छटांक की चाशनी करै ॥ शारवत वजूरी ॥ मादिल ॥ जो ज्वर और कलेजे और गुरदे को रोगों को गुण करै और मुवाद को वहा के निकाले है ॥ विधि ॥ कासनी के बीज । सोंफ । खरबूजा के वीज । एक २ तोले । कासनी की जड । सोंफ की जड । डेढ २ तोले । सुपेद वूरो पाव सेर लेके शारवत वनाले ॥ शारवत विजूरी गरम ॥ जो कलेजे की सरदी और गुरदे और उदर की सरदी के रोगों को और ज्वरों को .... गुण करै ॥ विधि ॥ कासनी की जड का छिलका । ३ तोले । सोंफ की जड का छिलका । कासनी के वीज । दो २ तोले । सोंफ । अजमोद की जड । एक २ तोले । अकासवेल के वीज छै मासे । आध सेर सुपेद वूरो लेके शारवत वनाले ॥ शारवत विजूरी ठंडा ॥ जो कलेजे की गरमी के रोगों को और पित्तज्वरों को और गुरदे और मसाने के रोगों को गुण करे है ॥ विधि ॥ कासनी की जड का छिलका २ तोले । खरबूजा के वीज । खीरा ककडी के वीज । डेढ २ तोले । ढाई पाव सुपेद वूरा लेके चाशनी करके शारवत वनाले और होती चाशनी में तरबूज की मींगी । पेठे की मींगी एक २ तोले कुचल के मिलावे ॥ शारवत विजूरी ॥ जो जीर्णज्वर और कमलवाय को दूर करै और मूत्र और स्त्रीधर्म को जारी करै

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ओर गुरदे ओर मसाने की पथरी को गलावे ओर क।
लेजे की गांठों को षोले ओर तिल्ली को दूर करे हे॥६
॥विधि॥ कासनी के वीज। सोंफ। खर बूजा के वी
ज। घीया के वीज। कद्दू के वीज। दो २ तोले। कासनी
की जड़ का छिलका। खतमी के वीज। मुल्हटी। वाल
छड़। गुल वनफशा। गावजुवा के पत्ता। डेढ़ २ तोले
३ पाव सुपेद वूरे की चाशनी कर के शार वत वनाले॥

॥फसल चौञ्चनवी॥

कलेजे ओर तिल्ली के रोगों दूर करनेवाले शारवतों में
॥शार वत अज़ खर॥ जो कलेजे की गांठ ओर क
मल वाय ओर उदर की वाय ओर मरोड़ा को गुण दा
य क है ॥विधि॥ वाल छड। तज। वच तुर्की। रेवत
चीनी। मस्तंगी नों २ माशे। अज वर की जड। ओर गुदा
दो २ तोले। अनेसूं। अजमोद। गुलाव के फूल। एक २
तोले। सुपेद वूरा ढाई पाव ले के शार वत वनाले॥ज
डीं का शार वत॥ हाथ पांव की सूजन ओर जलंधर
को विशेष गुण दायक है ओर गांठों को षोले ओर वाय
को तोडे ओर फुज़लों को जारी करे है॥ विधि॥ सोंफ
की जड का छिलका। अजमोद की जड का छिलका।।
कासनी की जड का छिलका। डेढ़ २ तोले। सोंफ। का
सनी। अजमोद। एक २ तोले। मुनक्का २ तोले। पीले
अंजीर के दाने नग २० कित्र की जड का छिलका नों
माशे। ओर अजरवर का गुदा। वाल छड। नेत्र वाला
तज सात २ माशे। सुपेद वूरा ३ ले के शार वत वनाले
॥शार वत अकाशवेल का॥ जो कलेजा ओर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न्दर को ताकत दे गांठों को खोले और तबीयत को न
रम करे और हाथ पांव की सूजन और द्वन्दज ज्वरों
को गुण करे है ॥ विधि ॥ सौंफ की जड का। छिलका।
गुलाब के फूल। अनेसूं। नौ २ मासे। खीरा ककडी के बी
ज। कासनी के बीज। खरबूजा के बीज। एक २ तोले।
अकासबेल के बीज छै माशे। आध सेर सुपेद कंद।
और चार तोले शीर खिष्त लेके शरबत बनाले ॥१

॥ शरबत रेवंद ॥ जो कलेजे और तिल्ली के रोगों को
गुण करे और गांठों को खोले और तबीयत को नरम क
रे ॥ विधि ॥ रेवत चीनी डेढ तोले। सुपेद निसोत। गा
रीकूं। बिसफायज छै मासे। कासनी के बीज २ तोले ॥१
सोंठ ३ माशे। सुपेद कंद २० तोले लेके शरबत बनाले

॥ शरबत दीनार ॥ इस्को हकीम नहशूय ने बनाया
है इस्के कई भेद हैं एक तो यह कि मोहोर की बराबर बे
चता था दूसरे दीनार नाम अकास बेल के बीज का है
या प्रकार से कि दीनार थेली में रहता है और अकास
बेल के बीजों को भी थेली में भर के औटाते हैं तीसरे
वह यामें रूप रस डालता था चोथे यह कि पीले रंग का
होता है ज्वर और बिगडे मल को दूर करे और तबीय
त को नरम करे और गांठों को खोले और हाथ पांव
की सूजन और जलंधर और पहलू की पीडा और क
लेजा की पीडा और पेट की पीडा और योनि और इन्द्री
की पीडा को गुण करे और मूत्र को जारी करे ॥ विधि
॥ कासनी के बीज। गुलाब के फूल दो २ तोले। कासनी
की जड का छिलका ४ तोले। नीलोफर का फूल। गाव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जुवा के पत्ते एक २ तोले। अकास बेल के वीज डेड तोले ३ पाव सुपेद कंद लेके शर्बत बनाले ॥ अथवा॥ यह शर्बत दीनार इस्का चलाने वाला हकीम सुरीद है यह शर्बत मादिल है और नानाँ करता और कलेजे की गाँठें षोलने वाला और नसों की और पुठों की गाँठों को और उन के सोथों को दूर करें ॥ विधि ॥ रेवत चीनी। खताई। अकास बेल के बीज छे २ माशे। गुलाव के फूल २ तोले। कासनी के वीज ३ तोले। कासनी की जड का छिलका ४ तोले। सुपेद कंद ८॥ छटांक लेके शर्बत बनाले॥

॥ फसल पचपनवीं॥ ५५

गुर्दे और मसाने और छिद्र रोगों के दूर करने वाँ शर्बतों में ॥ शर्बत कुलथी का ॥ जो गुर्दे और मसाने की पथरी को तोडके पेशाव के द्वारा बहाइके निकाले ॥ विधि ॥ कासनी की जड। सोंफ की जड। मेथी के दाने २ तोले। कासनी के बीज। सोंफ। षीरा ककडी के वीज। खरबूजा के वीज डेढ २ तोले। अजमोद। परसीषावशाँ। छे २ माशे। सुपेद बूरी सात छटांक लेके शर्बत बनाले ॥ शर्बत हल्यों ॥ गुर्दे और मसाने के रोग को और सुवाद को बहाय के निकाले ॥ विधि ॥ हाल्यों के वीज ४ तोले। कबाब चीनी। खरबूजा के बीज एक २ तोले। आध सेर सुपेद कंद लेके शर्बत बनाले ॥ शर्बत आलू वालू ॥ जो गुर्दे और मसाने के रोग और पथरी को मूत्र के द्वारा बहावे ॥ विधि ॥ आलू वालू २० तोले लेके औटा के छान ले। और दू

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गने कंद की चाशनी कर के शरबत बनाले ॥ शरबत बड़े गोखरू का ॥ ऊपर कहे हुए रोगों को दूर करै और कामदेव को बढ़ावै है ॥ विधि ॥ बड़े गोखरू का रस और छोटे गोखरू का रस ताज़ा जोदह २ तोले सात छटांक सुपेद कंद की चाशनी करै और जो सूखे गोखरू हों तो पाव पाव सेर नल अर्थात् सात २ तोले जो कुट कर के भिजो के औटा के शरबत बनावे ॥ अथवा ॥ काक नज अर्थात् पिट की आको शरबत ॥ जो बुन्द्री के घाव और पुराने सोजा को दूर करै ॥ विधि ॥ अनेसूं । अजमोद । गावजुबां के पत्ते । गोखरू नो २ माशे । परसीया वशां । बनफशा के फूल । छै २ माशे । काक नज डेढ़ तोले । औटा के छान के डेढ़ पाव सुपेद बूरे की चाशनी में मिलावे

॥ फसल छप्पन वीं ॥

उदर के रोग दूर करने के शरबतों में ॥ शरबत अनार ॥ जो उदर और भूख और पाचन शक्ती को बलवान करै और मूंह को सुगंधित करै ॥ विधि ॥ अगर । आमले गुठली निकाल के दो २ तोले । बालछड़ । लोंग । मस्तगी । जायफल । नो २ माशे जो कुट कर के औटा वै और छान के उस्के पानी में पाव सेर गुलाब और आध सेर सुपेद बूरा मिं के चाशनी करै ॥ शरबत इमली का ॥ जो उदर को बल दे और वमन और उबाकी को दूर करै और तबीयत को नरम करै और पित्त को धोवै है ॥ विधि ॥ पाव सेर इमली । ४ तोले जरिशूक । भिजो के छा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न ले और आधसेर सुपेद बूरे की चाशनी करके शरब
त बना ले॥ शरबत लोहे के मेल का॥ जो उदर को
और पाचन शक्ती को बल दे और बवासीर की बाय
को दूर करै॥ विधि॥ अजमोद। सोंठ। कुदरू गोंद।
सोंफ की जड। अनेसूं। छै२ माशे। कालो जीरो। पोदी
ना। धनियें सूखो। दाल चीनी। बाल छड। नागर मो
था। एक२ तोले। लोहे का मेल ५ तोले। दो सेर पानी
में औटा के वा पानी में सुपेद मिश्री ढाई पाव मिला के
चाशनी करै॥ शरबत पिस्ते का॥ जो उबाकी औ
र वमन को दूर करै और उदर को ताकत दे॥ विधि।
पिस्ते के छिलका दो तोले। पोदीना। गुलाब के फूल।
जरिश्क। अगर। एक२ तोले। रूमी मस्तगी नो माशे।
सेव छील के छे तोले। औटा के छान के ढाई पा सुपेद
मिश्री की चाशनी कर के शरबत बना ले॥ शरबत॥
जो उदर की सूजन को पकावे और फोड डाले॥ विधि।
मेथी। अलसी। चार२ तोले। विलायती अंजीर नग २०
मकोय दो तोले औटा के छान के आध सेर लाल बूरे
की चाशनी करै और छै माशे केसर थोडे गुलाब के अ
र्क में पीस के मिलावे॥ शरबत मुलैयन॥ विधि
॥ आलू बुखारो नग १। इमली १४ तोले। निसोत सुपे
द। तोले भर। चूरन कर के पोटली में रख के सब को औ
टी छान के छै तोले सिकंजबी और डेढ पाव सुपेद बू
रे की चाशनी करै॥

॥ फसल सत्तावनवीं

कई प्रकार के रंग बनाने में॥ शरबत शहत का॥ जो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कंपन वाय और अर्द्धांग वाय और प्रकार के कफ विर्कार और सीत विकारों को विशेष गुण दायक है ॥ विधि ॥ निर्मल शहत ११ छटाँक २॥ सेर दरयाव के पानी में मिला के आँच पर धरै और भाग दूर कर के। काली मिर्च। सोंठ। कुलीजन। लोंग। मस्तंगी। पोदीना। अकर करा एक २ तोले। कूट के पोटली में वांध के डाले और पोटली को हलाता रहे जब शरवत गाढ़ा होजाने लगे तब पोटली को निचोड़ ले और शरबत की चाशनी कर ले। और कस्तूरी और अंवर एक २ माशे। त्यार होने के पीछे मिलावै तो विशेष बल होजाय ॥ शरवत अफ़सनतीन ॥ जो वावले पन को और नदर की निर्वलता जो तरी कर के हो और हाथ पांव की सूजन को अत्यंत गुण दायक है और तबियत को नरम करै ॥ विधि ॥ वाल छड दो तोले। सुपेद निसोत। सुपेद गारी कूं ३ तीन तोले। अफ़सनतीन रूमी। ४ तोले गुलाव के फूल छे तोले। सुपेद बूरो आध सेर ले के चाशनी वनाले ॥ अथवा ॥ यह शरवत ॥ कलेजे की निर्वलता और उदर की निर्बलता और तिल्ली की सूजन को और आँतों की वाय को दूर करै और तबियत को नरम करै ॥ विधि ॥ अफसनतीन छे तोले। वाल छड। अजमोद की जड़ चार २ तोले। ३ पाव सुपेद बूरे की चाशनी कर के शरवत बनाले ॥ शरवत तूत ॥ जो कंठ के भीतर की सूजन को दूर करै ॥ विधि ॥ शाह तूत का रस निचोड़ा हुआ ११ छटांक। खालिस शहत पौन छटाँक। चाशनी करै और एक मासे केसर

५ सब

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घिसके मिलावै ॥शरवत अंजुवार का॥ जो रुधिर थूकने को और रुधिर की वमन को और स्त्री धर्म को और ववासीर के रुधिर वहने को दूर करै ॥विधि॥ अंजुवार की जड दो तोले। मीठे अनार को छिलका। हबुल्लास। एक २ तोले। सुपेद चंदन चूरा नो माशे। औटा के छान के मस्तक के पानी। वबूर की ताजा पत्ती का ४ तोले। आधसेर सुपेद बूरे की चाशनी कर के शरवत बनाले ॥शरवत पान का॥ जो चित्त को प्रसन्न करै और इन्द्री को वल दे और घरावतरी को दूर करै ॥विधि॥ पक्के पान बंगला नग दो सौ। महीन कतर के तथा जौ कुट कर के। ११ छटाँक पानी में औटावै और छान ले और ८॥ छटाँक सुपेद क़ंद की चाशनी करै और होती चाशनी में। केसर। जौ विन्नी। जायफल। छोटी इलायची के दाने छै २ माशे लौंग। ३ माशे। गुलाव के अर्क में घोट के मिलावै ॥शरवत अंगूर॥ जो इन्द्री को वल दे और चित्त को प्रसन्न करै और शरीर उजला करै ॥विधि॥ अंगूर को रस ११ छटाँक ८॥ छटाँक सुपेद कंद की चाशनी करै और होती चाशनी में सालिव मिश्री। दो तोले। सलजम के बीज। वहमन। इन्द्र जो। गाजर के बीज। छै २ माशे के वडे अर्क में घोट के मिलावै ॥शरवत वर्द मुकर्रर॥ जुलाव पित्त का है और थोडे से मादिल मात्रा पित्त की है और रुधिर की जलन को दूर करै और तबियत को नरम करै ॥विधि॥ गुलाव के फूल ताजा विने हुए ५॥ छटाँक और एक सेर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छै छटाँक पानी दरयाव के में औटा वै जव ५॥ छ
टांक पानी जल जाय तव मल के पानी छान ले ।
और वाही पानी में ५॥ छटाँक और फूल मिला
के औटा वै याही प्रकार ३ वेर एक २ रतल अर्था
त् ५॥२ फूल मिला के पकावे और मल के छान
ले और पीछे की वेर ५॥ छटाँक वूरो मिला के चा
शनी करै प्रघट होय के याही प्रकार से जितने फू
ल विशेष वीये जायं उतनी हीं प्रवलता विशेष हो
गी ॥ शार वत गुलाव के फूल का ॥ जो पित्त
को मादिल और गरमी को शांत कर ने वाला और
प्यास का वुभाने वाला है ॥ विधि ॥ ताजा गुलाव
के फूल ५॥ छटाँक ११ छटांक पानी में औटा वै मल
के छान ले और ५॥ छटाँक सुपेद वूरे की चाशनी क
रै ॥ शार वत गुड़हल ॥ जो गरमी चढ़ आने को दू
र करै और रौकांती के रोग को दूर करै और होलदि
ली को खोवे और चहरे की क्रांति वढ़ावे और प्रच्छै
करै और उदर और सव ताकतों को प्रवल करै है ॥
॥ विधि ॥ गुड़हल के फूल नग एक सौ। सवजी।
और जीरे दूर कर के लै और १४ तोले कागदी नींवू
के रसमें ७ पहर भिजो के ११ छटाँक सुपेद मिश्री की
चाशनी जो मेह या दरयाव के पानी में वनी हो मिला
वै और शीशी में भर के आधी शीशी खाली रहे औ
र शीशी का मूंह मोम से वंद कर के नाड़ तांईं पानी
में डूवी राखे चार पाँच दिन जव उवाले और छान के
शार वत शीशी में राखे और यह शार वत किंचित खस

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न्त्र ताभी करैहै ॥

॥फसूल अठावनवीं॥

नशीली मदिरा औ में॥शराब फंजन्योश॥ १ जो मस्त करै और शुत प्रमेह को दूर करै॥विधि ॥ततरीक। माजूफल। गुलनार। गुलाब के फूल धनियां सूषा। लोबान। पोदीनापहाडी। नागर मोथा। दो२ तोले। लोह का मैल। १ तोले। दो सेर पानी में भिजो के लहन में जो साल सेर गुड और आध सेर किशमिश का बना होय मिला के अर्क खैंचे॥ १ ॥शराब रेहानी॥ कि यामें उत्तम नशा है और कफ के रोगों को दूर करै॥विधि॥ गुड सेर २०। अंगूर मलेहुए सेर ५ और जो अंगूर न मिलें तो किशमिश जो कुटकर के दो सेर मिला के लहन औटावै जब लहन त्यार होजाय तब। दाल चीनी। लोंग। जावित्री जायफल। अगर। तीन२ तोले। गावजुवां के पत्ते। विल्ली लोटन एक२ छटांक मिला के दूसरे दिन अर्क खैंचे॥ शराब॥ जो दिल और मस्तक को ताकत दे। १ और इन्द्री को बलवान करै और शरीर को बल बढावै और चहरे की कांति बढावै॥ विधि॥ किशमिश सेर ७ कुचलके २५ सेर गुड। १ मन गाजर को रस। और २ सेर आमले को रस और दरयाव को पानी मिलाके पीपा में राखै जब उफन ने लगे तब पाव सेर दालचीनी। शालगम के बीज आधपाव। ढाई सेर गाय के दूध में ४ पहर भिजो के मिलावै और अर्क खेंचे॥ शराब॥ जो इन्द्री और उदर को ताकत दे और नशा खूब ला

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वै और वडे गुण करे॥ विधि॥ वेर के दरखत की
छाल और वबूर की छाल पाँच२ सेर और गुड १
मन को लहन उठा के। खर बूजा के वीज जौ कुट क
र के। बिहनी लोटन। गावजुवाँ। गुल गावजुवाँ सु
पेद चंदन का चूरा। लाल चंदन का चूरा। बूरा दा आ
वनूस का। शीशम का बुरादा। पाँच२ तोले। शाल
जम के वीज। अजखर दोनों। बहमन। शाका कुल
मिश्री। चीता। नालीस पत्र। तेज पात। दाल चीनी
रेशम कच्चा। कुलीजन। बडी इलायची के दाने।
गुलाव के फूल। चार२ तोले। मुंडी १। सेर भिजो के
मिला वै और १ शीशी गुलाव जल की डाल के अ
र्क षेंचे॥ शराव दुआतशा॥ जो अत्यंत उत्तम
है और गुण दायक और नशी ली और पिछाडी पै सु
स्ती नहीं लाती॥ विधि॥ गुड १ मन। वबूर की छाल
सेर१०। आँम की छाल। वेर की छाल पाँच२ सेर। पीपा
में भर के शराव षेंचे। और या शराव में ७॥ सेर लोंग।
३ तोले जायफल। जाविन्त्री२ तोले। नागर मोथा। वाल
छड। दाल चीनी। गावजुवाँ। अगर। दोनों तोदरी। से
मर को मूसला। चार२ तोल। किशमिश। सुपेद कंद।
एक२ सेर ३ दिन तांई भिजो राषे और आतशा षेंचे॥ र्दु
॥शराव दुआतशा॥ जो या में गुण विशेष है औ
र दुर्गंधी और पिछाडी पै सुस्ती नहीं लाती है॥ वि
धि॥ गुड मन१। वबूर की छाल ३ सेर की लहन उठा
के और भिजो के। दाल चीनी। वाल छड। छडीला।
सुपेद चंदन का चूरा। बडी इलायची। नागर मोथा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आध २ पाव। गुलमुंडी सेर १ डालके अर्क षेंचे। फिर वाही अर्क को दुबारा षेंचे॥ शराब॥ जो निर्बल मनुष्य को वल तरुणता का प्राप्त करे और इन्द्री को चलवान करे और स्थंभन में अपनी ल्येतुनही रषती॥ विधि॥ गुड मन २। मुनक्का काली सेर १०। वंबूर की छाल सेर २०। आमले सेर दो का लहन उठावे और पाव २ सेर। वालछड। छडीला। भंगरा। घस। भिजो के। तज। तेजपात। इपुक पेचा लाल फूल के बीज। पान की जड। बिल्ली लोटन। वडी इलायची। ताल मखाने। बीज बंद। झाडी वेर। धाय के फूल। सुगंधवाला। इन्द्रजो। नरकचूर। नागरमोथा। माई। दोंनों चंदन। दोंनों मूसली। उटंगन के बीज। असगंध। सिलावर। आध २ पाव मिला के अर्क षेंचे। सालव मिश्री। अगर। लौंग। जायफल। जावित्री। गाजर के बीज। सलगम के बीज। प्याज के बीज। कोंच की मींगी। दोंनों बहमन। दोंनों तोदरी शाका कुल मिश्री। नागकेसर। दो २ तोले। चोवचीनी। विजोरे का छिलका पाव २ सेर वामें मिला वे और ३ दिन पीछे। दो सेर सुपेद कंद। गाय को दूध सेर १० मिला के दुवा नशा षेंचे॥

॥फसल उनसठवी॥

शमूमों में अर्थात नसवार में कैं जिस्के सूंघने से रोग दूर होय॥ शमूम॥ जो सरदी की मस्तक पीडा को गुण करे है॥ विधि॥ जायफल। लौंग। वरावर लेके चूरन कर के सूंघे॥ शमूम॥ जो गरमी की मस्तक पीडा। को गुणदायक है॥ विधि॥ कपूर। छोटी इलायची

For Private and Personal Use Only

के शाने घिस के सूंघे ॥ अथवा ॥ ताजे २ फूल मा-
निं द गुलाव और नीलो फर के सूंघे ॥ अथवा ॥ व
हार्षीरा काट के सूंघे ॥ प्रामूम ॥ जो भूल और मस्त
क पीडा को गुण करे है ॥ विधि ॥ जायफल। जावि
त्री। लौंग। काली मिर्च। चूरन कर के दौंना मरुवा को
रस तथा ततली के पानी में मिला के सूंघे ॥ प्रामूम
॥ जो चक्कर आने को गुण करे है ॥ विधि ॥ हराधे
नियां। तथा ताजा सेव तथा पक्का अमरूद सूंघे ॥ प्रा
मूम ॥ जो विशेष निद्रा को दूर करे है ॥ विधि ॥ १
काली मिर्च जौ कुट कर के सिरका में डाल के सूंघे ॥ १
॥ अथवा ॥ कस्तूरी सूंघे ॥ अथवा ॥ कुट की ^
काली। बच। कडवा कूट सूंघे ॥

॥ फसल साठवीं ॥

नेत्र रोगों के प्रयाफों * अर्थात् लंबी गोलीयों में ॥ ^
॥ प्रयाफ ॥ जो नेत्र पीडा को तुर्त दूर करे ॥ विधि ॥
गुलाव के फूल सवा तोले। केसर छे मासे। अफीम १० ^
माशे। बाल छड। बंबूर को गोंद तीन २ माशे। दरयाव के
पानी में प्रयाफ वनावै ॥ प्रयाफ ॥ जो नेत्र के कोने के
नासूर को गुण करे है ॥ विधि ॥ एलूआ। लोबान। १
गुलनार। सोहन माखी। दम्मुल अरव वेन। सुर्मा। फि
टकिरी। तीन २ माशे। गुलावजल में प्रयाफ वनावे औ
र नासूर को मूंह पोंछ के टपकावे ॥ प्रयाफ ॥ जो षु
जली और ढलका और वामनी। नाखना और पलकों
के कडेपन को गुण दायक है ॥ विधि ॥ घुला लीला
थोथा। मर्मीरा चीनी। समुद्र फैन। रसोत मक्कीचार २

* उसमें

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माषे। वडी हर्ड को छिलका। तेजपात। तीन२माषे केसर। कतीरा। वंबूर को गोंद२ दो माषे लेके प्याफ बनावे गुलाबजल में॥प्याफ॥ जो नजले का पानी कि नेत्रों में उतर आता है वा को अजमाया और गुण दायक है॥ विधि॥ चांदी की घडीया। सोंने की घडीया। पीपल। उस मकान का धूंआं जहां तांवा गलता हो। सब बराबर के ले सोंफ के अर्क में प्याफ बनावे॥ प्याफ अमरूद॥ जो ढल का और वामनी और खुजली पल कों की को गुण करै है॥ विधि॥ जंगाल छै माषे। उष्रक। बंमूर को गोंद चार२मासे। सोने की घडीया। अफीम दो२माषे। माजू फल१माषे। ततली के पानी में प्याफ बनावे॥ प्याफ॥ नेत्रों में नजले का पानी उतर ने को और खुजली और ढलका और नेत्र की ललोंई और पल कों के दूसरे रोगों को गुण दायक और अज़ मूदा है॥ विधि॥ पानी में पला हुआ लीला थोथा। विजोरे का छिलका। नो२ माषे। कतीरा। गेंहूं को सत्र। सोंना माषी। गुलाव के फूल। गेहू गुआर। रसोत मक्की। दो२मासे। वंग ३माषे। वडी हर्ड नग१ गुठली समेत। अफीम१माषे व दस्तूर प्याफ वनावे॥ प्याफ अबीज॥ नेत्र की गरमी के रोगों को दूर करै॥ और सूजन को पटकावे और सूजन के मुवाद को निकाले॥ विधि॥ गेंहूं का सत्त ३माषे। वंग। वंबूर का गोंद। कतीरा। नो२माषे। ई सब गोल के लुआब में वा अंडा की सुपेदी में प्याफ बनावे॥ प्याफ अबीज॥ सोहन माषी के नज़

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ले की आदि को गुण करे है ॥ विधि ॥ वंग छे माशे अंज़रूत अर्थात् सोंना माषी भुनी हुई। गधी के दूध को पुट दे के। बड़ी हर्ड की छिलका १ तोले। ३ माशे अं डे की सुपेदी में शुयाफ बनावे ॥ शुयाफ चमेली ॥ जो ढलका और नाखने और वामनी और निगाह के अंधेरे पन को दूर करे ॥ विधि ॥ चमेली की ताजा कली नग ३०। सुर्मा। खपरिया। तीला थोथा। सोरा कलमी। सिर्स के बीजों की मीगी। तीन २ माशे। केशर २ माशे ले के। कागदी नीबू के रस में ३ दिन घोट के शुयाफ बनावे ॥ शुयाफ अहमर ॥ जो ढलका और नाखने और कुथी और फुल्ली और वामनी और नेत्रों की पुरानी सुर्खी को दूर करे ॥ विधि ॥ फिटकिरी आधी कची आधी पकी। सोंने की घड़ीया। खपरिया। सुर्मा तीन २ माशे। दम्मुल अखवेन छे माशे। मुर्गी के अंडे की सुपेदी में शुयाफ बनावे ॥ शुयाफ अखज़र ॥ जो खुजली और ढलका और वामनी। और नाखना और फूली। को गुण दायक है ॥ विधि ॥ सुधी जंगाल ३ माशे। चाँदी की घड़ीया। बंबूर को गोंद। वंग। समुद्र फेन। दो २ माशे। हरी ततली के पानी में। शुयाफ बनावे ॥

॥ फसल इकसठवी ॥

कान और नाक के रोगों को दूर करने वाले शुयाफों में

॥ शुयाफ ॥ जो बहरे पन को दूर करे ॥ विधि ॥ १ दोंना मरूआ। रई। ततली। इन्द्रायन। सब बराबर लेके बकरी के पित्ते में शुयाफ बनावै और कड़वेव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राम रोगन में घिस के कान में टप कावे ॥ प्रयाफ ॥ जो वहरे पन को और कान के शब्द को दूर करे ॥ विधि ॥ पपडीया षार । जवासे के वीज । आसवच तीन २ माशे ॥ राई ४ माशे । अंजीर नग १ । पुरानी मदिरा । तथा गाय के पित्ते में प्रयाफ बनावे ॥ प्रयाफ ॥ जो कान की निर्वलता और भारी आवाज को दूर करै ॥ विधि ॥ इन्द्रायन । अफसन तीन । आसवच । जरावंद मदहरज । तीन २ माशे । सज्जी छे मासे । ततली के पानी में तथा हरे सोया के रस में प्रयाफ बनावे ॥ प्रयाफ ॥ जो नकसीर मोड़ती है ॥ विधि ॥ नकछिकनी । मुनक्का । सज्जी । जंगाल । सब बराबर लेके वकरी के पित्ते में प्रयाफ़ बनावे महीन और समय पर नाक में टप कावे ॥ प्रयाफ ॥ जो नाक की बवासीर को दूर करै ॥ विधि ॥ कच्चा अनार लेके कुचल के तस्का पानी शीशे के वासन में भर के धूप में राषे जब गाढ़ा होजाय तब शीशे के घोटा से षरल कर के प्रयाफ बनावे और समय पर नाक में राषे ॥ अथवा ॥ गुलनार । माजूफल अनार को छिलका । रसोत । सब बराबर लेके वकरी के पित्ते में प्रयाफ बनावे

॥ फसल वासठ वीं ॥

छिद्र रोगों के प्रयाफों में ॥ प्रयाफ ॥ जो सोजाक के घावों को साफ कर के बराबर करै ॥ विधि ॥ नीला थोथा घुला हुआ दो माशे । मुर्दासंग १ माशे । षपरीया । लोवन । फिटकिरी । भुनी । माजूफल । अकाकीया । दम्मुल अखवेन । खदे अनार की कली । कागद जला हुआ । बंबूर को गोंद तीन २ माशे लेके प्रयाफ बनावे ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथवा ॥ इलायची छोटी। के दाने। ३ माशे। ऽ लीला थोथा धुला हुआ। मुर्दासंग एक २ माशे। गु॰ आलीयरा गेरू। दो माशे लेके प्याफ वनावै॥ अथवा॥ सेलखड़ी। गेरू। लोवान तीन २ माशे। मेंह॰ दी के पत्ते। बंबूर की पत्ती दो २ मासे। नीम के पानी में गोली लंवी बनावे॥

॥फसल तेरसठवीं॥

प्याफों में ॥प्याफ॥ जो वायशूल को दूर करै है॥ ॥विधि॥ इन्द्रायन। अजमोद। सोंफ। सेंधानोंन। ततली। सव वरावर लेके प्याफ बना यराषे समय प॰ र अंडी के तेल से चिकना करके काम में लावै॥ अ॰ थवा॥ वनफशा की पत्ती। सनाय मक्की। खतमी॰ के बीज एक २ तोले। थोड़े पानी में औटा के मल के॰ छानले और उसमें ४ तोले अमलतास का गूदा मल के छानके और एक तोले शहत खालिस और छै मा॰ शे संधा नोंन मिला के आंच पर धरै और जब गाढ़ा॰ हो जाय तब प्याफ बनाय राखे। समय पर किसी तेल से चिकना करके काम में लावे॥ अथवा॥ गुलव॰ नफशा नौ माशे। एलुआ। निसोत सुपेद छै २ माशे सेंधानोंन दो माशे। सावुन १ तोले लेके प्याफ वनावे और गुलरोगन से चिकना कर के काम में लावे॥ १ प्याफ॥ जो अजीर्ण और बच्चों की गांठों को गुणक रे है॥ विधि॥ पोदीना। निसोत सुपेद। मूसे की मेंग नी। छै २ माशे। अमलतास को पानी २ तोले में प्याफ। बनाय राषे समय पर गुलरोगन से चिकना करके का॰

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

म में लावै ॥ अथवा ॥ मूसे की मेंगनी। लालचू-
रो एक २ तोले। सेंधा नोंन ३ मासे आंच पर पका के।
प्र्याफ वना राखे और गुल रोगन से मकरो के काम
में लावे ॥

॥ फसल चौंसठवीं ॥

सवगो अर्थात् त्वचा के रोगों के रंगों में ॥ सवग ॥
जो आंखों को स्यह और सुर्मा भरी और अच्छे रंगी-
ली करै ॥ विधि ॥ सुर्मो ३ माशे। काजल २ माशे। मा
जूफल १ माशे। लेके सुर्मा करके लगावे ॥ सवग ॥
जो सुपेद दाग को काला करै ॥ विधि ॥ माजूफल
मेंहदी के पत्ता हरे। अंजीर की जड को छिलका वराव
र लेके घिस के लगावे ॥ अथवा ॥ अंजीर के पेड-
की छाल कैं सिरका में सिंधि के लगावे ॥ सवग ॥
जो छीप के दाग को दूर करै ॥ विधि ॥ नकछिकनी।
कडवा कूट। तीन २ माशे। मूली के वीज नों माशे। पु
रानै सिरका में पीस के लगावे ॥ सवग ॥ जो छाले
के चिन्ह और घावौं के चिन्हों को एक सा करै ॥ वि
धि ॥ मुर्दासंग। ३ माशे। ने की जड छे माशे। च
ना को चून। चांवल को चून। पुरानी हड्डी। खरबूजा
के वीज। कडवा कूट। अलसी के वीज। एक २ तो
ले। पानी में पीस के लगावे और गरम पानी से धो-
डाले ॥

॥ फसल पेंसठवीं ॥

ज़मादों अर्थात् मस्तक और भेजों के रोगों के दूर-
करने के लेपों में ॥ जमाद ॥ जो गरमी की विशेष

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मस्तक पीडा को दूर करै ॥ विधि ॥ गुल नीलोफ़
र। धनियाँ। वनफशा की पत्ती। पोस्त के डोडा। गुला
वजल में पीस के ४ रत्ती अफीम और १ माशे कपूर मि
ला के लगावै ॥ ज़माद ॥ जो वाय की पुरानी मस्तक
पीडा को दूर करै ॥ विधि ॥ नतली। दोंना मरूआ।
तीन २ माशे। जौ को चून १ एक तोले। पानी में पीस के
सिरका और गुल रोगन मिला के लगावै ॥ ज़माद ।
जो गरमी की मस्तक पीडा को दूर करै ॥ विधि ॥ कुल
फा के पत्ते। कटी घीया। खतमी के फूल। सुपेद चंदन
सब बराबर ले के गुलावजल में पीस के थोडो सिरका
मिलाके लगावै ॥ ज़माद ॥ कि गिरपडने की
चोट की पीडा मस्तक की दूर करै है ॥ विधि ॥ गेरू
। एलूआ दश २ माशे। मूंग। भठ वांस। गुलाव के फू
ल एक २ तोले। वाबूना के फूल। चिरायता दो २ माशे
पीस के लेप करै। और जो घाव सूज गया हो तो सेके
मसूर और गुलनार दो २ माशे वट्टा के लेप करै ॥
॥ ज़माद ॥ जो भौंर और चक्कर को गुण करै है ॥
॥ विधि ॥ वाल छड। मस्तगी तीन २ माशे। एलूआ
गुलाव के फूल छै २ मासे। चूरन कर के मोंम पीला १ तो
ले घी ३ तोले में गरम कर के मिलाके ललाट और म
स्तक पर लेप करै ॥ जमाद ॥ जो बच्चों के सरसाम
को गुण करै है ॥ विधि ॥ गुल बनफशा ४ माशे। क
द सलीब। उस्तुखदूस तीन २ माशे। मूंग की धोवा दाल
दो तोले। मुर्गी को अंडा नग १ की जरदी और थोडा बे
दी के माके दूध में मिला के लेप करै तथा कपडे पर

For Private and Personal Use Only

लगा के मस्तक पर राखे ॥ ज़माद ॥ जो कफ के सरशाम को गुण करे है ॥ विधि ॥ उस्तुखुद्दूस। अगर। ऊदसलीब। छै २ माशे। मूंग को चून ४ तोले। मुर्गी का अंडा नग १ की। जरदी मिलाके। गुलरोगन और पानी के संग लेप करे॥ ॥ ज़माद ॥ जो धूप और निर्दई को गुण करे है ॥ विधि ॥ राई। चीता। दोनां नरूआ। नों २ माशे। गाय के दूध में पीस के गरमा गरम लेप करे ॥ ज़माद ॥ जो सकते को गुण करे ॥ विधि ॥ कौयल के फूल। कलोंजी। राई। छै २ माशे। जायफल। लौंग। अकरकरा। दो २ माशे गाय के दूध में पीस के लेप करे ॥

॥ फसल छियंसठ वीं ॥

नाक और कान के रोगों के दूर करने लेपों में ॥ ज़माद। जो कान की कडी सूजन को गुण करे है ॥ विधि ॥ वाकले को चून। जौ को चून एक २ तोले। गुलबाबूना। गुन बनफ्शे। गुलखतमी छै २ माशे। नारवूना २ माशे। वनफशा के तेल में मल के लेप करे ॥ ज़माद ॥ जो कान के उघड जाने और कुचल जाने को गुण करे है ॥ विधि ॥ सुगास। अकाकीया। सनोवर का गोंद छै २ माशे। ताजा मेंहदी के पत्ता लेके पीस के लेप करे ॥ अथवा ॥ सूखी रोटी जौ की पानी में भिजो गाय को दूध और गुलरोगन मिला के लेप करे ॥ ज़माद ॥ जो ललाट पर लगाने से नकसीर को बंद करे है ॥ विधि ॥ गुलनार। गेरू। बबूर की ताजा पत्ती एक २ तोले। कपूर ३ माशे। अफीम १ माशे लेके लेप करे ॥ १ ॥ अथवा ॥ हरा माजूफल। अनार को छिलका। गु

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाव के फूल छे २ मा० मसूर की चून १ तोले। रसोत ३ मासे। गुलाबजल में पीसके मस्तक और ललाट देश में लेप करे॥ ॥फसल सडसठवीं॥ मोंह और कंठ के रोगों को दूर करने के लेपों में ॥जमाद॥ जो दंतपीडा को दूर करे है ॥विधि॥ भटकटेया की जड। कालीजीरी। पीस के गालों पर लगावे॥ अथवा॥ भटकटाई का फल। अजमायन। देशी। अकरकरा पीस के लगावे॥ जमाद॥ जो कंठ के भीतर की सूजन को दूर करे है ॥विधि॥ मेथी के दाने। अलसी के बीज। सोया के बीज। गुलबाबूना। दोंना मरूआ। कंठ के ऊपर लेप करे॥ अथवा॥ जौ को चून। मकोय के पत्ते एक २ तोले। बारलंग। अलसी के बीज छे २ मासे। गुलाबजल में पीस के थोडा सिरका मिलाके लगावे॥ ॥जमाद॥ जो कंठ माला को गुण करे है॥ विधि॥ बीजाबोल। अजमायन। एलूआ। दो २ माशे। जाएबंद मदहरज। काली मिर्च। मेथी के दाने। एक २ माशे। अलसी के बीज ३ माशे। लेके लेप करे॥ अथवा॥ राई। समुद्रफेन। रेवतचीनी। गूगल। सब बराबर लेके लेप करे॥ अथवा॥ यह लेप कंठमाला की सूजन को पटकावे॥ विधि॥ जराबंद। नकछिकनी छे २ माशे। अभ्रक ३ माशे। शहत तोले १ लेके लेप करे॥ अथवा॥ यह लेप कंठ के भीतर की सूजन को और गले की हड्डी उषरने को और बिषरने से हुई हो दूर करे॥ विधि॥ माजूफल। अनार को छिल्का। भटबांस। अकाकीया। ईसबगोल के लुआब में कंठ और

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गर व्रन पर लेप करे॥

॥फसल अड़सठवीं॥

पहलू के दर्द और पीठ के दर्द और फेफड़े के दर्द और दम घुट जाने के दूर करनेवाले लेपों में॥जमाद॥जो पहलू के दर्द को आराम करे॥विधि॥जो को चून। २ तोले। नारवूना। पोस्त के डोडा। एक२ तोले। पानी में। पीस के लेप करे॥जमाद॥जो पहलू के दर्द को और फेफड़े के दर्द को आराम करे और मुवाद को पचावे। तथा पका के निकाले॥विधि॥वनफशा के पत्ता। खतमी के बीज। गुल बावूना। छे २ माशे। बाकला को चून अलसी के बीज। एक२ तोले। मुलहटी डेढ़ तोले। गुल रोगन मिला के लेप करे॥जमाद॥जो छाती की नस फट जाने को गुण करे जिस्के प्रताप से रुधिर थूके॥ ॥विधि॥आरेनो को छिलका। माजूफल। गुलनार। गेरू। छे २ मासे। जौ को चून डेढ़ तोले। लेके लेप करे॥अथवा॥यह लेप पहलू के दर्द को आराम करे॥विधि॥बाकला को चून। जौ को चून। गेहूं को चून एक२ तोले। वनफशा के पत्ता। खतमी के बीज। घीया के बीजों की मीगी छे २ माशे। बीही दाने के लुआब ३ माशे में लेप करे॥जमाद॥जो तंगी सांस को। गुण करे है॥विधि॥घीया को रस। तथा बीरा को रस। तथा ईसबगोल के पत्तों का रस। और जौ के पानी में अलसी का लुआब निकाल के कपड़ा भिजो के छाती पर रखे तथा उन्हीं वस्तों को पीस के लेप करे॥अथवा॥मस्तगी। वाल छड़। एलूआ। चिरायता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सब बराबर लेके लेप करे॥

॥फसल तनतरवीं॥ ५ले

कुच के रोगों के दूर करने वा लेपों में॥जमाद॥१ कुच के सोथ को दूर करे॥विधि॥ मेदा लकडी। कच्चनार के पेड का वक्कल। मेथी के दाने। अरंड के पेड का वक्कल। गेरू। सब बराबर लेके लेप करे॥अथवा॥ कागजंगा के पत्ता। मकोय के पत्ता। गेरू। सब बराबर लेके लेप करे॥अथवा॥ जौ को चून। बाकला को चून। मसूर को चून। गुलाब के फूल सब बराबर लेके लेप करे॥जमाद॥ जो दूध को बढावे॥विधि॥ वनतुलसी के बीज। बाकला को चून। बराबर लेके लेप करे॥जमाद॥ जो गाढे दूध को पतला करे॥विधि॥ वनफशा के पत्ता। खतमी के बीज। जौ छिले हुए। सब बराबर लेके लेप करे॥जमाद॥ जो गाढे और जमे दूध को पतला करे॥विधि॥ लोंग। दो माशे। साठी चावल दो तोले लेके गरम कर के लेप करे॥जमाद॥ जो कुचों के सोथ को और पीडा को जो दूध की विशेषता से हो दूर करे॥विधि॥ बाकला को चून। छिली मसूर को चून। जौ को चून। एक२ तोले। काहू के बीज। गुलाब के फूल। गेरू। पांच२ माशे। गुल रोगन और सिरका मिला के लेप करे॥जमाद॥ जमे रुधिर को दुरुस्त करे॥विधि॥ तिल। बाकला। गेंहूं की सूखी रोटी सब बराबर लेके पीडे सो गाय को घी और पाहत मिला के लेप करे॥जमाद॥ जो कुचों के फोडों को

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पका के फैंडे ॥ विधि ॥ अलसी। काले तिल। कोयल की जड। वकरी की मेंगनी। कबूतर की बीट। सब बराबर लेके थोडा गुलरोगन मिला के लेप करे ॥ जमाद ॥ जो कुच के कुचल जाने दूर करै ॥ विधि ॥ मूंग। मुनक्का दाने समेत लेके बराबर लेप करे ॥

॥ फसल सत्तरवी ॥ १ ले

उदर और आंत और तिल्ली और कलेजा के। रोगों को दूर करने वाले लेपोंमें ॥ जमाद ॥ जो उदर की सखत सूजन को दूर करे ॥ विधि ॥ अफसन्तीन। बाल छड। एक२ तोले। एलूआ। केसरतीन२माशे। गरम करके लेप करे ॥ जमाद ॥ जो उदर के पुराने सोथ को पट कावे ॥ विधि ॥ करनब के बीज। बाल छड। एक२ तोले। नागर मोथा। मस्तंगी। अजरवर छै२मासे। उपूक३ माशे। गुनगुना कर के लेप करे ॥ अथवा ॥ दाना मेथी। अलसी के बीज। खतमी के बीज। गुल्लबाबूना। नागर मोथा एक२ तोले। फिटकिरी। मस्तंगी छै २ माशे। थोडा गुलरोगन मिलाके लेप करे ॥ जमाद ॥ जो तिल्ली के सोथ को दूर करे ॥ विधि ॥ अंजीर विलायती। सिरकें में पीस के गरम कर के लेप करे ॥ अथवा ॥ अंगूर की लकडी की भस्म। वकरी की मेंगनी की भस्म। बराबर लेके सिरका में मिला के लेप करे ॥ जमाद ॥ जो फुलाव और तिल्ली की सखती को दूर करे ॥ विधि ॥ ततली। पोदीना नों२ माशे। पपडीया खार ३

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माशे। पुराने सिरका में मिला के लेप करे॥ **ज़माद॥** जो तिल्ली की सखती और सोथ को दूर करे॥ **विधि॥** मेथी। बावूना। वाल छड। एक २ तोले। अंजीर पीली नग ५ सिरका में पीस के लेप करे॥ **अथवा॥** गूग ल छै मासे। वाकला को चून। मटर की चून। एक २ तो- ले। अलसी के वीज। वाल छड। नाखुना नो २ माशे। सिरका में पीस के थोडो बावूना को तेल मिला के लगा वे॥ **जमाद॥** जो कलेजा की सूजन को दूर करे॥ **वि धि॥** सुपारी। गुलाव के फूल सुपेद चंदन। चिरायता चार २ माशे। जौ का चून १ तोले। कपूर ३ माशे। सिरका में मिलाके लगावे॥ **ज़माद॥** कलेजे की निर्बलता को दूर करे॥ **विधि॥** रसोत मक्की। धनियां। अगर तंतरीक। छै २ माशे। मस्तंगी ४ माशे। केसर २ माशे॥ थोडा बावूना को तेल मिला के लेप करे॥ **जमाद॥** **जो कलेजे की गरमी की सूजन को गुण करे॥ विधि॥** कपूर। रूमी मस्तंगी। तेज पात तीन २ माशे। गेरू। गुल बनफशा। गुलाव के फूल। सुपेद चंदन। सूषो धनियां। छै २ माशे ले के लेप करे॥ **जमाद॥** कले जे की सरदी की सूजन को गुण करे॥ **विधि॥** वा- ल छड। नेत्र वाला। तज। पांच २ माशे। केसर २ माशे वावूना को तेल मिलाके लगावे॥ **जमाद॥** जो दस्त को बंद करे॥ **विधि॥** बंबूर की पत्ती। अनार की पत्ती। वेर की पत्ती। गेरू। बराबर लेके लेप करे॥ ॥ **अथवा॥** आमले। सूषो धनियां। नीलोफर- की जड। गेरू। सब बराबर लेके लेप करे॥ **अथ॥**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वा ।। रसोत । मीठे अनार का छिलका । अकाकीया । सुपारी को फूल । पिस्ता के फूल । गुल नार । माजूफल सब बराबर लेके लेप करे ।। अथवा ।। यह लेप बवासीर के मस्सों को गुण करे है ।। विधि ।। गुलाव को जीरो । अंतरीका सूखो धनियां तीन ३ माशे । अनार को छिलका पांच माशे लेके लेप करे ।।

।।फसल इकत्तरवीं।।

गुदा के रोग दूर करने के लेपों में ।। जमाद ।। जो गुदा की सूजन को दूर करे है ।। विधि ।। मसूर छिली । अनार की छिलका । जुफ तव लूत । थोडा गुल रोगन । मिला के लेप करे ।। अथवा ।। यह लेप गुदा की खुजली और सूजन को गुण करे ।। विधि ।। भांग की पत्ती १ तोले । वनफशा की पत्ती ४ माशे लेके लेप करे ।। ।। अथवा ।। अकाकीया । रसोत । दम्मुल अखवेन । बराबर लेके लेप करे ।। जमाद ।। वायकी ववासीर की सूजन और पीडा को गुण करे है ।। विधि । गंदना के वीज । अलसी के वीज । गूगल । सब बराबर लेके थोडा गाय का घी लेके मिला के लगावे ।। अथवा ।। गाय के सींग की मीगी । पीले आलू की गुठली की मीगी । मुर्गी के अंडे की जरदी । गाय के घी में मिलाके जिस्में प्याज का दाग दीया जाय मिला के लेप करे ।। अथवा ।। प्याज गाय के घी में भून के लेप करे ।। अथवा ।। अकाकीया । दम्मुल अखवेन । बंग तीन ३ माशे । गूगल छे माशे । अफीम १ माशे । थोडे गुल रोगन में मिला के लेप करे ।। अथवा ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निवोलीकी मींगी। वकायन के वीजों की मींगी। रसोत। सब बराबर लेके लेप करे॥ अथवा॥ मीठे घीया के बीजों की मींगी। आलू की गुठली की मींगी। गाय के घी में पीस के लेप करे॥

॥फसल बहत्तरवीं॥

गुरदे और इन्द्री के रोग दूर करने वाले ॥जमाद॥ जो गुरदे की सूजन दूर करे॥ विधि॥ गुल बनफशा। हरे धनिये की पत्ती। कुलफा की पत्ती। छे २ माशे। मीठे बादाम की मींगी ५ दाने। गुलाब जल में पीस के लगावे॥ अथवा॥ यह लेप गुरदे की सूजन की सखती को दूर करे॥ विधि॥ उश्क। मुक़ल। अर्थात् गूगल। मस्तगी। तीन २ माशे। पानी में घोल के खतमी के बीज। खुब्बाजी के बीज। सोये के बीज। गुलबाबूना। अलसी के बीज। मेथी के दाने। पांच २ माशे। चूरन करके मिला के लेप करे॥ अथवा गुरदे की सूजन को पका वे॥ विधि॥ गेहूं का चून। सोया के पत्ता। गुलबाबूना। मुल्हटी। छे २ माशे। पुराहन डेढ़ तोले। गाय का दूध मिला के पका के लेप करे॥ जमाद॥ इन्द्री में रुधिर जमजाने को पेसाब की राह से निकाले॥ विधि॥ अजमोद। अजवायन। सात २ माशे। जवासे के पत्ता। नाखूना। गुल बाबूना पांच २ माशे। जौ का चून। चनों का चून :एक २ तोले। करनब के पत्तों के रस में पीस के लेप करे॥ जमाद॥ जो पेशाब के बंद जाने को इन्द्री में राध जम जाने के कारन कर के बंद हो जाय बा को गुण करे॥ विधि॥ चुकंदर के पत्ता। मेथी के दाने

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुलवाबूना। नाखूना। वाकलाको चून। चनाको चून। भुनी प्याज सव वरा वर लेके थोडी कवूतर की वीट। ओर सरसों का तेल मिला के लेप करै ॥ज़माद॥ जो पेशाव में रुधिर आने को दूर करै ॥विधि॥ अकाकीया। दोनों चंदन। तंनडीक। सूखे धनियां। वरावर लेके लेप करै ॥अथवा॥ यह लेप उस रुधिर के पेशाव को दूर करै जो गरमी से हो ॥विधि॥ गेरू। एलूआ। रसोत। अकाकीया। वरा वर लेके गुलावजल में थोडा सिरका मिलाके लेप करै ॥जमाद॥ जो इन्द्री और गुरदे की पथरी को तोडके दूर करै ॥विधि॥ मेंहदी की पत्ती। परसिया वशां। तुलसी के पत्ते। पोदीना के पत्ते। सोया के पत्ते। सौंफ का अर्क मिला के लेप करै ॥अथवा॥ कछूआ के अंडे। हालों। के वीज। सेलखडी पीस के विछू का तेल मिला के लेप करै ॥अथवा॥ विछू जला के। स्याह मूसे का पत्थर। कछूआ के अंडे। आलू वालू। गुलाव के फूल। सव वरा वर लेके सोया को रस मिला के लेप करै ॥जमाद॥ कि इंद्री की सूजन को गुण करै जो सर्दी से हो ॥विधि॥ छुहारे की गुठली एक तोले। तुख़्म ख़तमी। १ तोले। सिरका में पीस के लेप करै ॥जमाद॥ जो इन्द्री की गरमी की सूजन को गुण करै ॥विधि॥ सोया के वीज। गुलवाबूना। ख़तमी के वीज सव वरा वर लेके लेप करै ॥अथवा॥ यह लेप इन्द्री की सरदी की सूजन को गुण करै ॥विधि॥ वाकला को चून। मुनक्का। कालो जीरो। नों २ माशे। छुहारे की गुठली की भस्म। ख़तमी के वीज तीन २ माशे। लेके

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेपकरे॥

॥फसल तिहत्तरवी॥

जो अंडकोष और इन्द्री के रोगों को दूर करने के लेपों में ॥ज़माद॥ जो अंडकोष और इन्द्री की सरदी की सूजन को गुणकरे ॥विधि॥ संभालू के बीज। चना को चून। वाकला को चून। नों२ माशे॥ मुनक्का नग१५ सरसों तेल। बनक की चरबी थोडी२ मिला के लेप करे॥जमाद॥ जो अंड कोष को गुण करे॥विधि॥ नागर मोथा। पपड़ीयाषार। कालाजीरा। इन्द्रायन के फल के बीज। एलूआ। दो२ माशे। जौ को चून। बकरी की मेंगनी। गेरू आर२ माशे। सिरका षालिस मिला के लेप करे॥अथवा॥ चिरोंजी। अनार को छिलका। माजूफल। गुलनार। लोर्वन तीन२ माशे। वाकला को चून१ तोले। पुराने मदरा में पीस के लेपकरे॥अथवा॥ नागरमोथा। बीजा बोल। बंबूर को गोंद। दोना मरूआ। माजूफल। अकाकीया। लोवान। सब बराबर लेके पुरानी सराव में पीस के लेप करे॥ज़माद॥ जो इन्द्री लिपटजाने को दूर करे॥विधि॥ बीजाबोल१० माशे। कडवा कूट रेवल चीनी। अफीम तीन२ माशे। मस्तंगी। फिटकिरी। पाँच२ माशे। केसर१ माशे। अंगूरी शराव में पीस के थोडा गुल रोगन मिलाके लेप करे॥ज़माद॥ जो इन्द्री के कुचलजाने को दूर करे॥विधि॥ मुर्गस। एलूआ। बीजा बोल। अकाकीया। बराबर लेके महीन पीस के मुर्गी के अंडे की सुपेदी में मिला के लगावे॥ ॥ज़माद॥ जो रोग दूर होने पीछे इन्द्री को सरवत क

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रै ॥ विधि ॥ रसोत मक्की । अकाकीया । गुलनार । माजूफल भुना । मीठे अनार को छिलका । सोंना माखी भुनी । गिल मखतूम बराबर लेके लेप करै जो रोग दूर हो जाने के पीछे छिद्र में रह जावै तो गुल रोगन टपकावै ॥

॥ फसल चौहत्तरवीं ॥

भग रोग दूर करने के लेपों में ॥ जमाद ॥ जो भग पीड़ा को दूर करै ॥ विधि ॥ केसर । अफीम । खुरासानी अजमायन । दो २ माशे । खतमी के वीज । अलसी के वीज । पांच २ माशे । मुरगी का अंडा नग १ लेके लेप करै ॥ १ ॥ ज़माद ॥ जो ः स्त्री धर्म के रुधिर वहने योनि के मूंह फट जाने को दूर करै ॥ विधि ॥ गुलनार । जुफत । बंबूर के पत्ते । वेर के पत्ते । छुहारे की गुठली बराबर लेके लेप करै ॥ अथवा ॥ छिली मसूर । षट्टे अनार को छिलका । वेर के पत्ता । हरी माजूफल । बराबर ले ॥ अथवा ॥ गुलाव के फूल । गुलनार । मोथा । छिली मसूर । षट्टे अनार को छिलका । माजूफल । छुहारे की गुठली । चार २ मासे । भांग छै मासे । लेवे ॥ जमाद ॥ जो गर्भणी ः स्त्री के रुधिर जारी हो जाने को बंद करै ॥ विधि ॥ माई । माजूफल । अनार को छिलका । गुलनार सब बराबर लेके सिरका मिला के लेप करै ॥ जमाद ॥ जो ः स्त्रियों के विना दर्द पेट फूल जाने और अचेतन्यता हो जाने को दूर करै ॥ विधि ॥ रूमी मस्तगी । वाल छाड । छै मासे । नारखूना । तज । कलोंजी । पोदीना । पहाड़ी । सोया के बीज नौ २ माशे । और रोगन बाबूना मिला के छाती से टूंडी ताईं और कमर से कूल्हे ताईं लेप क

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रे ॥ ज़माद ॥ जोमरे वच्चा को योंनसे निकाले ॥ विधि ॥ इन्द्रायन । तलली केपत्ता । कड़वाकूठ । बराबरले के गाय के पित्ते में वा शहत में मिला के पेडू और टूंडी पर लेप करे ॥ जमाद ॥ जो वच्चा आसानी से जने ॥ विधि ॥ अलसी के वीज १ तोले । शहत १ तोले पीस के थोड़े काले तिल का तेल मिला के गरम करके पेडू और टूंडी पर लेप करे ॥

॥ फसल पिचत्तरवीं ॥

शरीर के वाहरी फोड़े और सूजन के दूर करने के लेपों में ॥ जमाद ॥ जो सूजन की आदि में मुवाद को फिर करलावें ॥ विधि ॥ लालचंदन । गेरू । रसोंत । हरे धनिये के पानी तथा मकोय के अर्क में लेप करे ॥ अथवा ॥ गुलाव के फूल । छिलकी मसूर । गुलनार । अनार की छिलका जौ का चून । बराबर लेके थोड़े गुल रोगन में मिला के लेप करे ॥ जमाद ॥ जो सूजन को पटकावे ॥ विधि ॥ गुल खतमी । गुल बन फशा । मसूर का चून । बराबर ले के थोड़ा सिरका षालिस लेके मिला के लेप करे ॥ अथवा ॥ गुल खतमी सुपेद । गुल बनफशा । सूखी धनियों । गुल बाबूना । नारवूना । छै २ माशे लेके लेप करे ॥ १ ॥ अथवा ॥ पीला मोम छै माशे । डेड़ तोले सरसों का तेल । १ तोले मुनक्का । अंजीर पीली नग २ पीस के मिली के लेप करे ॥ अथवा ॥ बाबूना के फूल । नारवूना । अलसी के बीज । मेथी के दाने । जौ का चून बराबर के लेके । थोड़ा गुल रोगन मिला के लेप करे ॥ जमाद ॥ जो सूजन को पका के तोड़े ॥ विधि ॥ कवूतर की वी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ट। मुरगी की बीट छै २ माशे। गेंहूं की रोटी का खमीर ३ तोले। सांभर नोंन २ माशे। पका के लगावै॥ अथवा॥ यह लेप फोडे को तोडे॥ विधि॥ लीला थोथा। २ माशे। हालों के बीज। हल्दी। एल छै २ माशे। गूगल। गुड एक २ तोले। लेके लेप करै॥ अथवा॥ यह लेप फोडे को पकावै तथा पका के तोडे॥ विधि॥ मूंग। को चून। जौ को चून। लोभीया को चून। मसूर। गेरू। सब बराबर लेके सिरका या पानी में खमीर कर के गु नगुना लेप करै॥

॥फसल छिहत्तरवीं॥

— चोट और गिर पडने की चोट के दूर करने के लेपों में॥ ज़माद॥ जो सूजन और चोट और गिर पडने की चोट लगने की पीडा को दूर करै॥ विधि॥ मेदा। लकडी। आमला। आंबा हल्दी। पंवार के बीज। साबुन। पुरानी ईंट सब बराबर लेके थोडा काले तिल का तेल मिलाके गरम गरम लेप करै॥ अथवा॥ मुगास। गेरू। खतमी के बीज। गरद। एलुआ। एक २ तोले। हल्दी सोया। लोवंन। छै २ मासे लेके लेप करै॥ ॥ज़माद॥ जो चोट और गिर पडने की चोट और कुचल जाने को दूर करै॥ विधि॥ गेरू छै माशे। मेंहदी के पत्ता। गुलाब के पत्ता। बेर के पत्ता। नौं २ माशे। लेके। लेप करै॥ अथवा॥ हल्दी। हरीमकोय के पत्ता। गेरू। एक २ तोले। पिली सरसों। २ तोले। लेके लेप करै॥ ॥अथवा॥ गेरू। काले तिल। आंबा हल्दी। हालों के बीज। बराबर लेके थोडा अलसी का तेल मिलाकेले

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प करै॥ ज़माद॥ जो आसार चोट और गिर पड ने की चोट की स्याही को दूर करै॥ विधि॥ मटर को चून। चना को चून। छड़ीला। अलसी के बीज नो २ माशे। लाल बूरो छे माशे। काली मिरच ३ माशे। थोडे सिरका में मिला के लेप करै॥

॥फसल सत्तर वीं॥

प्रथक २ लेपों में॥ जमाद॥ जो बीडर को दूर करै॥ १ ॥विधि॥ वाकला को चून। माजू फल। खट्टे अनार को छिलका। एक २ तोले। पानी में पीस के मुरगी के अंडे के छिलका १ तोले चूरन कर के मिलावे॥ ज़माद॥ जो गडा को दूर करै॥ विधि॥ मसूर को चून। अनार को छिलका। गेरू। गुड पुरानो बराबर लेके के गडा के आस पास लगावे और उसके ऊपर कोई दवा न लगावै यही तदबीर गुणदायक है॥ ज़माद॥ जो शरीर की कांती को बढावे॥ विधि॥ वाकला को चून। चना को चून। छडीला। बादाम की मींगी छिली हुई। खर बूजा के बीज। खीरा ककडी के बीज। समुद्र फेन। सब बराबर। लेके गाय के दूध में पीस थोडा शहत मिला के लेप करै और एक पहर पीछे धोडाले॥ जमाद॥ जो कांटा आदि शरीर में चुभ जाय ताको निकाले॥ विधि॥ ने की जड। जराबंद मदहरूज। बराबर लेके पीस के शहत मिला के लेप करै॥ जमाद॥ जो सांप के काटने के घाव में पहले सूजन आजाने को सोख लेवे ॥विधि॥ अबहल। प्याज जंगली। जवासे के बीज। मटर को चून। बराबर लेके मदरा में पीस के लेप करे

For Private and Personal Use Only

॥अथवा॥ चिड़ा तथा मुर्गी जीता फाड़ के बाँध देवै॥ ॥अथवा॥ साँप तथा मेंडका का मान्स बराबर पीस के लगावै॥ जमाद॥ वतोड़े को काट के गिरावै॥ विधि॥ सज्जी। चूना। सिंदूर। चिड़ा की बीठ। साबुन। बराबर लेके लेप करै॥ अथवा॥ जा समै रोग दूर होजाय तब गाय का घी लगा के पीपल की पत्ती नरम नरम बांधै जो फिर कभी न निकले॥ अथवा॥ इस पर पछने लगा के। साबन। सज्जी। चूनों। नौंसादर। सिंगरफ। बराबर लेके पीस के तिली को तेल मिला के लगावै जब सब मुवाद दूर हो जाय तब घाव के भरने की तदबीर करै॥ अथवा॥ सेमल खार। अफीम। लीला थोथा। सज्जी। छप्पर को धूआं बराबर लेके लेप करै॥ अथवा॥ यह लेप अत्यंत गुण दायक है। चौक। लीला थोथा। सज्जी। नौंसादर। काले तिल का तेल मिला के लगावै॥ जमाद॥ गरमी की सूजन और जोड़ों की पीड़ा और योनि की पीड़ा और इंद्री और जांग और सब जोड़ो के टेढे पन को आज मूदा यो म है॥ बिधि॥ ईसबगोल बिना। पोस्त के डोडा चूरन कर के पका के और थोड़ा गुल रोगन मिला के लगावै॥ हरफुलताय॥ गुण तिला को मस्त हभी करते है॥

॥फसल अठारवीं॥

मस्तक से गरदन ताईं के रोग दूर करने के तिला यों में ॥तिला॥ जो सरदी की आधा सीसी को दूर करै॥१ ॥विधि॥ राई एक भाग। मुनक्का दो भाग। सिरका में पीस के लगावै॥ अथवा॥ सोंठ २ माशे। मेंहदी के हरे पत्ते १ तोले। पानी में पीस के लगावै॥ अथवा।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केसर १ माशे। मीठे बादाम की मीगी नग २ दोंना मरूवा के ताजा पत्ते में पीस के तिला करै॥ तिला॥ जो गरमी की आधासीसी को दूर करै॥ विधि॥ सुपेद चंदन। नीलोफर के फूल एक२ तोले। कपूर दो माशे ले के लेप करे॥ अथवा॥ मुचकंद के फूल। ताजा। दूब। कसेरू। बराबर लेके लेप करै॥ अथवा॥ गुलाब के फूल। काहू के बीज। कासनी के बीज। सूखा। धनियों पानी में पीस के तिला करै॥ तिला॥ जो गरमी की मस्तकपीडा को दूर करै॥ विधि॥ दोनों चंदन। नीलोफर के फूल। गुलाब के फूल। काहू के बीज। तीन२ माशे। अफीम ४ रत्ती। केसर २ रत्ती। गुलाब जल में पीस के तिला बनावै॥ अथवा॥ सूखा धनियों। सुपेद चंदन बराबर लेके तिला करै॥ अथवा॥ वनफशा के पत्ते। नीलोफर के फूल। बराबर ले के पानी में पीस के थोडा गुलरोगन मिला के तिला करै॥ तिला॥ जो सरदी की पुरानी मस्तक पीडा को दूर करै॥ ॥ विधि॥ आमलासार गंधक १ भाग। पपडीया खार दो भाग। पानी में पीस के लगावै॥ अथवा॥ सुपेद चंदन। लोंग नग ५ लेके लगावै॥ अथवा॥ अजमायन। अजमोद। सोया के बीज बराबर लेके लगावै॥ तिला॥ जो सब प्रकार की मस्तक पीडा और पीडा जो दर्द के कारण से हो दूर करै॥ विधि॥ पोस्त के डोडा। खुरासानी अजमायन। एक२ तोले। अफीम २ माशे। पानी में पीस के लेप करै॥ तिला॥ नेत्रों की ललाई को गुण करै॥ विधि॥ पठानी लोध।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रसोत। फिटकिरी भुनी। वडी हर्ड़ को छिलका। तीन ३ माशे। अफीम १ माशे। पानी में पीस के गुनगुना लेप करे ॥ १ ॥ तिल्ला ॥ जो बच्चों के नेत्रों की लाली को दूर करे ॥ विधि ॥ भुनी फिटकिरी। रसोत चार २ माशे। कत्था सुपेद। अफीम एक १ माशे। महीन पीस के कागदी नींबू को रस डाल के लोहे के वासन में लोहे के दस्ता से आठ पहर रगड़ के काम में लावे ॥ तिल्ला ॥ जो कान के पीछे की सूजन को दूर करे ॥ विधि ॥ रक्त चंदन। सुपारी। एलूआ सब वरावर लेके गुलाव के अर्क में पीस के तिल्ला करे ॥ तिल्ला ॥ जो नाक की वाहरी भीतर की फुनसी को दूर करे ॥ विधि ॥ गेरू २ माशे। कपूर। केसर एक २ माशे। गुल रोगन में घिस के लगावे ॥ अथवा ॥ मुर्दासंग। सिरका में घिस के लगावे ॥ तिल्ला ॥ जो गंज को दूर करे ॥ विधि ॥ कवेला। सुहागो कच्चा। हल्दी। सब वरावर लेके सरसों के तेल में षरल कर के लगावे ॥ अथवा ॥ भुना लीला थोथा। काली मिरच छे २ माशे। जली मसूर। आमले। अनार को छिलका। पोस्त के डोडा। कवेलो। सब वरावर लेके चूरन कर के सरसों के तेल में मिला के लेप करे ॥ अथवा ॥ तंदूर की ठीकरी जला के १ तोले। नोंन छे माशे सिरका में घिस के लगावे ॥ अथवा ॥ मुर्दासंग। षट्टे अनार को छिलका। माजूफल। सब वरावर लेके सिरका में पीस के लगावे ॥ अथवा ॥ सावन। गुलाव जल में पीस के लगावे ॥ तिल्ला ॥ बच्चों के गंज को दूर करे ॥ विधि ॥ वादाम की मींगी जली। सूखे मेंहदी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कें पत्ते। कवेला। एक २ तोले। मुर्दासंग छै माषे। काली मिरच। लीला थोथा। एक २ माशे। चूरन करके सिरका मे घोल के थोडा गुल रोगन मिला के लगावे॥ तिला॥ जो सिर में सेंभुसी सी उडने को दूर करें॥ विधि॥ कडवे वादाम को असारो। तिल के पत्ता। और सिरका में पीस के लगा वै॥ अथवा॥ मेथी को चून। चना को चून। सिरका में घोल के लगा वै॥ तिला॥ जो चहरे की झांई को दूर करें॥ विधि॥ गुलाव के फूल। मसूर को चून। मुनक्का। वरावर लेके सिरका में पीस के लगावे॥ अथवा॥ एलूआ। जानवर की पुरानी हड्डी। लोवान। छै २ मासे। ततली ३ माषे। सिरका में पीस के लगावै॥ अथवा॥ कागदी नीवू में हल्दी को चूरन भर के ७ सात दिन ताईं धर राखे फिर हरे सरकंडे की जड के साथ पीस के रात को लगा वै प्रात काल धो डाले॥ अथवा॥ छडीला। घर वूजे के रस की ३ पुट देके दो तोले मसूर को छिलका छै मासे। सरकंडे की जड को छिलका छै माषे। पानी में पीस के लगावै॥ तिला॥ जो मुहाँसे को दूर करें और रंग को साफ करें॥ विधि॥ आध पाव जो छिले। पाव सेर। गाय के दूध में औटा के सुषाय राखे फिर थोडे से तो यह जो और थोडी सी हल्दी दोनों को पीस के तिला किया करें॥ अथवा॥ कोयले के पत्ते। नीम की पत्ती। सिरस की पत्ती। थोडी २ पीस के लगावै॥

॥ फसल उनासी वीं॥

वदन के तनूरे के रोगों को गुण करे॥ तिला॥ जो व

For Private and Personal Use Only

मन को दूर करै ॥ विधि ॥ बेर के पत्ते । अनार के पत्ते
तंतडीक । बराबर लेके पानी में पीस के उदर पर लगा
वै ॥ अथवा ॥ अकाकीया । मोषा । माजूफल । गु
लाब के फूल । आमले । सुपेद चंदन । बराबर । लेके ल
गावै ॥ अथवा ॥ गुलनार । गुलेब के फूल । सुपेद ।
चंदन । बेर के पत्ता लेके बराबर लगावै ॥ अथवा ॥
पिस्ता के छिलका । गुलाब को जीरो । सुपेद चंदन छे
२ माशे । मस्तंगी ३ माशे । गुलाबजल में पीस के लगा
वै ॥ तिला ॥ जो तुर्त आराम करै और कुचों को नर
म करै और लट की दुई को सरबत करै ॥ विधि ॥ अ
नार के पेड को बक्कल । फल कच्चो । फूल । पत्ता । सब
बराबर लेके चूरन करके एक रात दिन पानी में भिजो
के औटावै जब तिहाई पानी रह जाय तब कडवा तेल
डाल के फिर और औटावै जब पानी जल जाय तब ते
ल छान ले और जस्ता तथा शीशे के बासन में राखे औ
र तिला कीया करै और जो लगाने के समय जस्ता तथा
शीशे के बाशन में लोहे के दस्ता से खूब घिस लीया क
रै तो विशेष प्रबल हो जाय ॥ तिला ॥ जो पीठ के ब
डे फोडा को दूर करै ॥ विधि ॥ कुरंड पत्थर और रसी
सा । धनिये के रस में तथा मकोय के रस में घिस के ।
लगावै ॥ अथवा ॥ सीसे को मकोय के रस में घि
स के लगावै ॥ अथवा ॥ सीसे को मकोय के पानी
में घिस के उसमें थोडा २ एलूआ और नीला थोथा मि
ला के लगावै ॥ तिला ॥ जो बगल का दुर्गंधी को दू
र करै ॥ विधि ॥ कपूर १ तोले । चांदी की घरीया ।

लोंग। मस्तंगी। फिटकिरी चार २ माशे। चूरन कर के गुलावजल में घोल के लगावै ॥ अथवा॥ मुर्दासंग। गुलावजल में घोल के लगावै॥ अथवा॥ लीला थोथा १भाग। कपूर ३भाग। गुलावजल में। पीस के लगावै॥

॥फसल अस्सी वीं॥

— अंड कोषा और इन्द्री और जांग की जड़ के रोगों के दूर करने के तिलाओं में॥ तिला॥ जो अंड कोषकी सूजन को दूर करै॥ विधि॥ काकनज। पोस्त के डोडा। जौंको चून। मसूर को चून। वरावर लेके मुर्गी के अंडे की जर्दी और गुल रोगन मिला के तिला करै॥ ॥अथवा॥ गेरू। रसोत एक२ तोले। सोंठ ४ मासे। नोंन को पानी हरीमकोय तथा धनिये के पानी में पीस के लेप करै॥ अथवा॥ गुलवावूना। अजमयन एक२ तोले। सूखी तमाषू के पत्ता छे माशे। पानी में पीस के थोडा गुल रोगन मिला के गुन गुना कर के लगावै॥ ॥तिला॥ जो अंड कोषकी मुटाई को दूर करै॥ विधि॥ कुरंड पत्थर। और पुरानी चक्की को पत्थर। वरावर लेके हरे धनिये के पानी में तथा मकोय के पत्तों के पानी में पीस के लगाया करै॥ तिला॥ जो अंड कोश और इन्द्री में आने की खुजली को दूर करै॥ विधि॥ एलूआ। नोंसादर। गेंहूं को सत्त। गुलाव के फूल दोनों चंदन। गुलावजल तथा पानी में पीस के थोडासिरका मिला के लगावै॥ तिला॥ इन्द्री की टेढे और सोंकी सुस्ती को दूर करै॥ विधि॥ अफीम ३

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माशे। जायफल। अकरकरा। दाल चीनी। पाँच २ माशे। प्याजनर्गस १ तोले। सुपेद कनेर की जड को छिलका। डेड तोले। दो पहर ताईं मदरा में घोट के लगावे तथा लंबी वाती करे राषे और समय पर मदरा में घिसके लगावे ॥ तिला ॥ जो लोंडे वाजी के कारण कर के इन्द्री की जड पतली पड गई हो ताको दूर करे हैं ॥ विधि ॥ जाय फल। जावित्री। छडीला। मनुष्य के कान को मेल छे २ माशे। गधा के अंड कोश को रुधिर ४ तोले। दुआ तथा शराव में यहाँ ताईं घोटे जो पाव सेर शराव सोष जाय और तिला के लायक हो जाय तव काम में लावे ॥ तिला ॥ लोंडे वाजी के नुकसान को दूर करे ॥ विधि ॥ कडवे घीया की मींगी। २ तोले। सुपेद चिर्मिठी। अकर करा छे मासे। तेज वल। पीपरा मूल। तीन २ मासे। ३ दिन ताईं गाय के घी में घोट के तिला करे और ऊपर से पान बाँधे ॥ तिला ॥ जो लोंडे वाजी और नपुंसकता को गुण करे ॥ ॥ विधि ॥ जमाल गोटा गधा की लीद में औटा के। सुपेद चिर्मिठी। कुचला जला। अकर करा। सुपेद कनेर की जड को छिलका। दो २ तोले। गाय के दूध में यहाँ ताईं घोटे जो ३ सेर दूध सोष जाय पीछे चोये की तरह षेंचे और सुपारी वचा के तिला करे ऊपर से पान बाँधे ॥ अथवा ॥ सुपेद कनेर की जड लाल कनेर की जड। दोनों को छिलका। डेढ २ तोले वडा जायफल। मग १। अफीम नों माशे। सब को चून कर के वडे गोह की चरवी २ तोले मिला के १ दिन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घोटके गोली वना राषे समय पर शराव दुआतशी में। घिस के सुपारी छोड के तिला करे और पान से वांधे। ॥ तिला ॥ जो नामर्द और सुस्ती वाले को गुणदायक है आज मूदा है ॥ विधि ॥ कनेर की जड को छिलका। सुपेद चिर्मिठी। आध २ पाव। कडवो कूट। अमाल गोटा दो २ तोले। चूरन करके १५ सेर गाय के दूध में खूब मिला के पकावे और दही जमा के प्रातःकाल ४ सेर पानी मिला के विलो के माषन निकाले और मठा को गाड दे जो यह विष के समान है और माषन को ताय के राषे और इन्द्री पर लेपकर के पान से वांधे और १ रत्ती के प्रमाण पान में धर के षाया करे तो १५ दिन में अच्छा हो जाय ॥ तिला ॥ जो वद को दूर करे ॥ विधि ॥ रक्त चंदन। गुलाव के फूल। चीनी यां रसोत। सुपारी। छे २ माशे। केसर २ माशे। हरे धनिये के रस में तथा हरी मकोय के रस में पीस के तिला करे ॥ अथवा ॥ रक्त चंदन। गेरू रसोत। एलूआ। अकाकीया। नों २ माशे। अफीम १ मासे। केसर ४ रत्ती। हरी मकोय के रस में वा धनिये में पीस के तिला करे ॥ तिला ॥ जो गरमी के घाव और चट और फुनसी यों को दूर करे ॥ विधि ॥ हरताल। पारो तीन २ माशे। अजमायन षुरासनी १ तोले। गाय को घी २ तोले। फूल कासी के वासन में नीम के घोटा से घोट के लगावे ॥

॥ फसल इकक्यासी ॥

गुदा के रोग दूर करने के तिला ओं में ॥ तिला ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो ववासीर की पीड़ा के आराम करने में अजमाई और तुल्य नंही रखती हैं ॥ विधि ॥ कपास के हरे पत्तों का रस किस्मनर मा में। आंवा हल्दी। घिस के तिला करे और सूख जाने पर दुवारा तिवारा तिला करैं ॥ अथवा ॥ यह तिला ववासीर और भगंदर को अच्छा है ॥ विधि ॥ कें चुआ को गधा। के रुधिर में पीस के सुखा राखे समय पर पाषानभेद के काढे में घिस के लगावे ॥ अथवा ॥ वेगनकी डोय और कडवे वादाम दोनों वरावर पीस के गुलरोगन मिला के तिला करे ॥ अथवा ॥ डगर के कवजे की हड्डी। गुलाव जल में घिस के तिला करै ॥ अथवा ॥ वकायन के वीज की मींगी। निवोली की मींगी। रसोत। पानी में पीस के लगावे ॥ अथवा ॥ आलू की गुठली की मींगी। मीठे घीया के वीज की मींगी वकरी के दूध में घिस के लगावे ॥

॥ फसल वयासी ॥

हाथ पांव और जोडों के रोग दूर करने के तिलाओं में ॥ तिला ॥ जो हाथ पांव की सूजन को जो वडी वीमारी यों में पैदा होती है ...... दूर करे ॥ विधि ॥ अका कीया। अफाक मामीषा। वीजा वोल। मोथा। केसर। रसोत। गेरू। सव वरावर लेके सिरका और मकोय के हरे पत्तों के रस में पीस के तिला करे ॥ अथवा ॥ समुद्रफेन। सेंधा नोंन। पपडीया खार। अगर। कच्चा। नर कचूर। एलूआ सव वरावर ले के गुलाव जल में पीस के लगावे ॥ अथवा ॥ गेरू। मकोयके

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरे पन्ना। सोंठ बराबर लेके पीस के थोडा गुलरो गन और सिरका मिला के लगावे ॥ तिला ॥ जो खाजन को दूर करे ॥ विधि ॥ विलायती साबन गुलाबजल में घिस के लगावे ॥ अथवा पारो अजमायन। कत्था एक २ तोले। छे तोले गाय को घी लेके तांबे के बासन में नीम के घोटा से रगड के लगावे ॥ अथवा ॥ सरेस २ तोले। थोडा पानी डाल के आंच पर पगलावे। और हरताल को चूरन एलूआ छे २ माशे। तरबूज के बीज की मीगी १ तोले मिला के मरहम जेसी कर के लगावे ॥ तिला ॥ जो एडी के फटने और दर्द को दूर करे ॥ विधि ॥ बडो इन्द्रायन को फल नग १ और नजान कडवो १ तोले। मेंहदी के हरे पत्ता नो माशे। पानी में पीस के थोडा कडुवा तले मिला के गरमा गरम लगावे ॥ और बांधे ॥ तिला ॥ जो हाथ पाव की सखती। और जोडों की सखती को दूर करे ॥ विधि ॥ बतख की चरबी। मुर्गा की चरबी। बकरी के सींग की मीगी। तथा गाय के सींग की मीगी। एक २ तोले फुलेल २ तोले में घोट के लगावे ॥ अथवा ॥ ताजा माखन। सेंधा नोंन चूरन कर के बकरी दूध में मिला के लगावे ॥ तिला ॥ जो नोंह उखडजाने को दूर करे ॥ विधि ॥ मस्तगी छे मासे। सेंधा नोंन १ माशे। चमेली के तेल में घोट के लगावे ॥

॥ फसल तिरासी ॥

जो सून्य कोढ और छीप और त्वचा के दूसरे रोगों को

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दूरकरने के तिला श्रों में ॥ तिला ॥ जो त्वचा की सुन्य-
ता को दूर करे ॥ विधि ॥ पारा। वच्छनाग तीन २ माशे ॥
धतूरे के वीज जले हुए। २ तोले। काली मिर्च १ तोले ॥
आक के दूध में घोट के लगावै ॥ अथवा ॥ अकर
करा। मुनक्का। पोदीना वरा वर लेके पुराने सिरका में
पीस के लगावै ॥ अथवा ॥ बीजा वोल। एलूआ।
वरा वर लेके हरे धनिये के पानी में पीस के लगावै ति-
॥ जो थोड़े से दिन के लगाने में कोढ़ दूर हो ॥ विधि
॥ चीता। अकरकरा। रसोत। राई। कलोंजी। भुनी व
रा वर लेके वकरी के रुधिर में गोली वना राखे और व
करी को ताजा खून तथा बासे पानी में घिस के तिला क
रे ॥ अथवा ॥ मूली के बीज। नकछिकनी। कड़वे
वादाम की मींगी। चीता। हरताल। असपंद। स्याह कूट
अकरौठ का छिलका। सब वरा वर लेके महीन चूर
न कर के तेज शराव में घोट के लगावै ॥ अथवा ॥
तेलन कीड़ा। भिलाये का तेल। मूली के वीज। ची-
ता। कबूतर की वीठ सब वरा वर लेके सिरका में
घोट के तिला करै घाव कर के मुवाद को निकाल के
अच्छा कर देता है ॥ अथवा ॥ राई। कलोंजी। प
पड़ीया खार। गंधक। कनेर की जड़। वरा वर लेके
खालिस सिरका में पीस के लगावै ॥ अथवा ॥ अं
जीर की जड़ का छिलका। आमले दो २ तोले। वकु-
ची १ तोले। ढाक के फूल के काढ़े में गोली वनाराखे
और तिला करै ॥ तिला ॥ जो कोढ़ और खाजन
को दूर करै ॥ विधि ॥ अलसी के बीज। तरा तेज

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क के बीज। राई। सिरका में पीस के तिला करै॥ अ-
॥ चिरौंजी। चना को चून। सिरका में पीस के लगावै॥
॥ अथवा॥ मदरा की गार। सिरका। गंधक मिला के
लगावै॥ अथवा॥ चूका की जड सिरका में पीस के
लगावै॥ तिला॥ जो सुपेद दाग को दूर करै॥ विधि
॥ हरताल। गंधक। फिटकिरी। बराबर चूरन कर के।
सिरका और शहत में मिला के लगावै॥ अथवा॥
कडवे बादाम की मींगी। भटवांसू। मूली के बीज। ल
टजीरा के बीज। करमकला के बीज। तरातेज के बीज
कडवो कूठ। चतावर। सब बराबर ले के सिरका में
पीस के लगावै॥ अथवा॥ चितावर की छाल। स
रकंडे की जड। नीबू के रस में घिस के लगावै जब घा
व हो जाय तब नीम को तेल लगावै जो घाव भर के सही
खाल निकल आवेगी॥ तिला॥ जो छीप को दूर करै
॥ विधि॥ चीतो मूली के बीज। नकछिकनी। राई
बराबर लेवे सिरका में पीस के लगावै॥ अथवा॥
मूली के बीज १० माशे। कडवा कूट नकछिकनी पांच
२ माशे। अंगूर के सिरका में पीस के लगावै॥ तिला॥
जो अकोता को दूर करै॥ विधि॥ सुपारी छालाथा।
मिलाये ना चार २। आदमी की खोपरी की पुरानी हड्
डी डेढ तोले। सब को गधा की लीद में जला के कोय
ला करै और प्रथक २ सुर्मासा कर के। कत्था छै माशे
लीला थोथा १ माशे। सुर्मासा कर के आधपाव गाय
के घी में मिला के काम में लावे॥ अथवा॥ जला
कुचला १ तोले। फिटकिरी। लीला थोथा। कत्था।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छै मासे। गाय का घी १ छटाँक मिला के मरहम बना
ले॥ अथवा॥ बकुची के बीज छै तोले। जो कुट क
रके। आध पाव गाय के दूध की पुट देके। कपास के पे
ड की छाल। खट्टे अनार के छो डेढ २ तोले। सब पी
स के गोली बनावे। और हरी मकोय के पत्तों के रस में
मिला के तिला करे॥ अथवा॥ सुपारी। हल्दी। बकु
ची। मसूर। पोस्त के डोडा। सब जला के एक तोले। ^
सुपेद राल। सुहागो भुनों। फिटकिरी भुनी। पपडीयार
कत्थ्या। छै २ माषे। काली मिरच ३ माषे। सब को महीं
न चूरन करके सरसों के तेल में मिला के लगावे और
र दो तीन दिन ढाक को पत्ता सेक के बांधे फिर बुलाए
मे॥

॥फसल चौरासी वीं॥

खुजली और दाद के दूर करने के तिलाओं में॥ ति-
॥ जो तर और सूखी खुजली को दूर करे॥ विधि॥
गंधक। पारो। लीला थोथा। हरताल। बकुची। स
ब बराबर लेके दूने कडवे तेल में घोट के तिला क
रे॥ अथवा॥ पारो। चाँदी की घडीया। गंधक। ^
कनेर के पत्ता जले हुए। नक छिकनी। मुर्दासंग क
वेलो। हल्दी। लीला थोथा। एक २ तोले। सुपेद क
त्था नों माषे। हरी मेंहदी के पत्ता २ तोले। सरसों के
तेल में घोट के लगावे॥ अथवा॥ सीसे की भस्म
३ तोले। गंधक २ तोले। हरताल। पारो एक २ तो
ले। सिरका में घोट के लगावे॥ तिला॥ जो खा
स जोड़ों की खुजली और छालों के चिन्हों को दू
र करे॥ विधि॥ पारो ३ माषे। कडवे बादाम ^

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की मीगी छै मांशे। षर बूजा के बीज नौं माशे। सि रका में पीस के रात के समय तिला करै प्रातःका ल धो डाले॥ तिला॥ जो दाद को दूर करे॥ वि॥ पंवार के बीज। आमरे। र्लंष क ची। कलोंजी। सब बराबर लेके चूरन करके पानी में पीस के दा द को षुजा के तिला करे॥ तिला॥ जो दाद के दू र करने में अजमायाहै॥ विधि॥ पंवार के बीज। नौंसादर। कत्था सुपेद। हल्दी। चूनें कली को। भ नेन्नूआ। गंधक। सब बराबर लेके कागदी नाबू के रस में गोली बनावे समय पर नीबू के रस में तथा पानी में घिस के लगावे॥ और हिन्दी कहावतहै॥ अर्फू बीज पंवार के नौंसादर और घी॥ हल्दी चू नानेन्नूआ करै दाद सों बीह॥

॥फसल पिच्चासीवीं॥

काम देव और इन्द्री के प्रबल करने और स्थंभ न करने और स्त्री आदि को चित्त प्रसन्न करने के तिलाओं में॥ तिला॥ जो इन्द्री और गुरदे की ता कत को बढावे॥ विधि॥ सुपेद राल आध सेर। सुपेद चंदन चूरो पाव सेर। सुपेद लोबान आध पाव लोंग २ तोले। लेके चोहे की राह से चोहा षेंचे। औ र गुरदे और इन्द्री के लगावे॥ तिला॥ जो इन्द्री को प्रबल करे॥ विधि॥ शिंगरफ। हरताल तब कीया। पारो। कवेलो। अकरकरा। प्याज नरगस दाल चीनी सब बराबर लेके गाय के पित्ते में षरल। करके तिला करे॥ तिला॥ जो इन्द्री की सुस्ती।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोदूर करे ॥ विधि ॥ पीपरा मूल। कडवा कूट। असगंध। नागोरी। सब बरा बर लेके सुर्मा सा महीन कर के गाय के माखन में मिला के लगावे ॥ तिला ॥ जो इन्द्री को मोटी और मजबूत करे ॥ विधि ॥ असपंद। अंडी के बीज की मीगी। राई। सब बरा बर लेके। चमेली के तेल में घोट के लगावे ॥ तिला ॥ जो इंद्री को मोटा और बडा करे ॥ विधि ॥ बडी कटेरी के फल पक्की सरसों। असपंद। कडवो कूट। असगंद। बरा बर लेके पानी में पीस के केई बेर तिला करे और बांधे॥ ॥ तिला ॥ जो इन्द्री को ताकत दे और स्थम नकरें ॥ विधि ॥ आक की जड को छिलका २ तोले। बुचला १ तोले। कनेर की जड को छिलका ४ तोले। रसकपूर छै माशे। सब को गाय के पित्ते में घिस के। श्याफ बना रखे समय पर पोस्त के पानी में घिस के लगावे ॥ तिला ॥ जो स्त्री प्रसंग में सुष उपजावे ॥ विधि ॥ अकरकरा। सुहागो कच्चो। कपूर। बरा बर लेके सुर्मा सा। कर के शहत में मिला के तिला करे और थोडी देर पीछें कपडे से पोंछ डाले और १ स्त्री संग करे ॥ अथवा ॥ यह लेप १ स्त्री संग में ताकत दे और सुष बढावे ॥ विधि ॥ सूर की चरबी में थोडे उटंगन के बीज का चूरन कर के मिला के तिला करे थोडी देर पीछे पोंछ के १ स्त्री संग करे ॥ तिला ॥ जो १ स्त्री को वीर्य तुर्त आजाय ॥ वि॥ कच्चो सुहागो। कपूर बरा बर लेके शहत में मिला के। तिला करे और १ स्त्री के संग भोग करे ॥

॥ फ़सल छियासीवीं ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वालों के तिलाओं में ॥ **तिला** ॥ जो वालखोरा को
दूर करै ॥ **विधि** ॥ काली बकरी को खुरजला हुआ
। गधा को खुरजला हुआ। छे २ माशे। माखी की बीट ३
माशे। सरसों के तेल में पीस के लगा वै ॥ **अथवा** ॥
नकछिकनी। मुर्गी के अंडे के तेल में घिस के लगा
वै ॥ **अथवा** ॥ समुद्रफेन। नेकी जड को छिल
का। मूसे की मेंगनी। कडवे वादाम की मींगी। सब व
रा वर लेके सरसों के तेल में घोट के लगावै ॥ **अ**॰
॥ हाथी दांत को बुरादो। माखी की बीट। बराबर लेके
मुर्गी के अंडे के तेल में मिला के लगा वैं ॥ **अथवा**
॥ बकरी के वाल जले हुए। बुज के वाल जले हुए।
गंधक आमलासार। बरा बर लेके सरसों के तेल में
पीस के जगे को खुजला के तिला करै ॥ **तिला** ॥ जो
दाढी और मूंछ के वालों को जमावै ॥ **विधि** ॥ स
मुद्रफेंन। कडवे वादाम की मींगी। बरा बर लेके पुरा
नी सरसों के तेल में तथा मुर्गी के अंडे के तेल में पीस
के लगा वै ॥ **तिला** ॥ जो सब प्रकार की जूओं को
मारै ॥ **विधि** ॥ एलूआ। हरताल। बरा बर ले के गु
ल रोगन में घोल के लगावै ॥ **अथवा** ॥ पारो। चमे
ली के तेल में घिस के लगा वै और वालों को कपडे
से बांधे ॥ **अथवा** ॥ भट बांस के वीज। खरबूजा के
वीज। एक २ तोले। लीला थोथा छै माशे। पानी में पीस
के लगा वै दो पहर पीछे धोडाले ॥ **अथवा** ॥ वाक
ला को चून। मसूर को चून। भट वांस को चून। सब
बराबर लेके पानी में घोल के लगा वै ॥ **अथवा** ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सीता फल के वीज की मींगी। षिरनी के वीज की मीं
गी। सब बराबर लेके पीसके लगावे॥

॥फसल सत्तासीवीं॥

जो सोथ और फुनसी और चोट और चोट लगजा
ने आदि के दूर करने के तिला ओं में॥ तिला॥ जो
जलन सहित फुनसी और तर फुनसी को दूर करे
॥ विधि॥ रक्त चंदन। सुपारी। गेरू। बराबर लेके
हरे धनिये के रस में तथा मकोय के पत्तों के रस में
पीस के तिला करे॥ तिला॥ जो जलन उपजाने
वाले सोथ को दूर करे॥ विधि॥ दोंनों चंदन सूखे
धनियें एक २ तोले। जौ को चून २ तोले। गेरू छे मा
षे। पानी में पीस के लगा वे और उस पर कपड़ा भि
जो के राषे॥ तिला॥ जोडों के टूट जाने और कुच
ल जाने और सूज जाने को दूर करे॥ विधि॥ गेरू
सुपारी। सुपेद चंदन। एक २ तोले। रसोत। मुर्दासिंग।
एलूआ छे माशे। हरी मकोय के पत्तों के रस में पीस
के लगा वे॥ तिला॥ जो .... चोट लग जाने
को दूर करे॥ विधि॥ एलूआ ३ माशे। खतमी के
वीज। वनफशा के पत्ते। दोंनों चंदन। भट वाशे। नाखू
ना छे माशे। चूरन कर के मुर्गी के अंडे की सुपेदी मि
ला के गुन गुना कर के लगावे॥ अथवा॥ षिले
काले तिल। षिली सरसों। गेरू। एक तोले। संभालू
के पत्ते। मकोय के पत्ते। डेढ़ २ तोले पानी में पीस के
गरमा गरम लगावे॥ तिला॥ जो चोट और चोट के
लग जाने के असर को दूर करे और जोड के रंग रूप को

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साफ करै ॥ विधि ॥ वारहसींगे के सींग की भस्म। लो बान। तीन २ माशे। भट बाँस को चून। वाकला को चून में २ माशे। नौसादर। वंबूर को गोंद छै २ माशे। कडवे वादाम की मींगी १ तोले पानी में पीस के लगावे ॥ ॥ अथ० ॥ कडवे वादाम की मींगी। पुरानी हड्डी एक २ तोले। सीप की भस्म। समुद्रफेन। पीली फिटकिरी। छै माशे। पानी में पीस के लगावे ॥ तिला ॥ जो वढे मान्स को बैठादे ॥ विधि ॥ हरताल। काली कुट की। पाँच २ माशे। माषी की बीठ १० माशे गुलरोगन में पीस के लगावे ॥ ॥ तला ॥ जो आँच के जले हुए को आराम करै ॥ विधि ॥ मसूर ४ तोले पानी में पकावे और गुलाव के फूल १ तोले मिला के पीस के लगावे और कपडे से तर राषे ॥ अथवा ॥ मुर्गी के अंडे की सुपेदी गुल रोगन में मिला के लगावे ॥ तिला ॥ जो जहरी जिनावरों के काटने को। नुकसान को दूर करै ॥ विधि ॥ हींग। गंधक। पोदीना के पत्ता। कवूतर की बीट पीस के लगावे ॥

॥ फसल अठासीवीं ॥

दोषों के साफ करने और मादिल करने के अर्कों में ॥ अर्क ॥ जोश और जले हुए रुधिर और षुष्की और जलन। और षुजली और षाज और फुनसीयों को दूर करै ॥ विधि ॥ पित्तपापरा। आमले। चिरायतो। सरफोका। गुलमुंडी। जलनीम। शीशम का बुरादा। कचनाल के पेड के भीतर की छाल। नीम और वकायन के पेड के भीतर की छाल। मेंहदी के बी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज। चोवचीनी। उन्नाव। आध२पाव। दोनों चंदन चूरे। ख
स। सूखे धनियें। गावजुवा के पत्ता। विह्मी लोटन। उस्त
खद्दूस। काली हर्डे। कसूम के फूल। नीम को फूल। बकाय
न के फूल। ब्रह्मडंडी। आवनूस का चूरा एक २ छटांक ले
के अर्क की रह से सात सेर अर्क खेंच ले॥ प्रघट हो के जो
इन वस्तू में कितनी वस्तू ओं का अर्क इसी तोल से पारखी
या जाय तब भी यह गुण रहता है॥ अर्क॥ गुलमुंडी। पि
त्तपापरे के पत्ता। पाव२ सेर। चोवचीनी। खस। आध२पा
व। कावली हर्डे। वहेडा। आमले। खतमी के फूल। गुला
व के फूल। एक छटांक। ८ सेर पानी में भिजो के और लंबी
घीया को काट के डेढ सेर और पेठे के टूक २ पाव २ सेर गा
य को दूध मिला के ५ सेर अर्क खेंचे॥ अथवा॥ छडी
ला। विह्मी लोटन। कासनी के बीज। कसौंदी की जड के
छिलका। कासनी की जड को छिलका। कच्चो रेशम ए
क२ छटांक। आमले। ...... । कचनाल के पेड के भीत
र की छाल। खस। गोंद। नीम के पेड की छाल। जलनीम।
मुंडी। नीलोफर के फूल। गुडहल के फूल। चोवचीनी। क
सूम के फूल। आध२ पाव १० सेर पानी में भिजो के और
२ सेर वह पानी जो नीम के पेड से टपकता है सो डाल के ७
सेर अर्क खींचे॥

॥फसल नवासी वीं॥

— चित्त प्रसन्न करने वाले और ताकत बढाने वाले।
और रोग दूर करने वाले अर्कों में॥ अर्क॥ जो निर्व
ल को वलवान करै और इन्द्री को वलवान विशेष क
रै और हौलदिली को दूर करै॥ विधि॥ चोवचीनी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नागर मोथा। तेजपात अगर। दोनों वहमन। नर कचूर। कुलीजन। जटामासी। छडीला। सपेद चंदन चूरो आध २ पाव। गावजुवा के पत्ता। बिल्ली लोटन पाव २ सेर। छोटी इलायची। जायफल। जौविन्त्री। दरूनज अकरवी। सालव मिश्री। मस्तंगी। तीन २ तोले। मुनक्का ५ सेर। निर्मल शहत २ सेर। २५ सेर पानी दरयाव के में दो रात दिन भिजो के। आधपाव गुलाव के फूल डाल के १५ सेर अर्क खेंचे। और छै माशे केशर की पोटली नीचें फेंक के पेंदे में लगावे ॥ अर्क गुल संवुल ॥ जो ताकत देने वाला और वल वढाने वाला और आनंद देने वाला। और मस्त करने वाला ॥ विधि ॥ संवुल के फूल सवजी दूर कर के। गुलाव के फूल। गुल मुंडी। सव छाया में सुखा के आध २ सेर। चमेली के फूल आध सेर ताजा ले के अर्क की क्रिया से अर्क खेंचे ॥ अर्क गाजर ॥ जो चित्त प्रसन्न करै और इन्द्री को वलवान करै ॥ वि-॥ गाजर सेर २५ हड्डी छिलका दूर कर के। किशमिश सेर ५ मुंह वंधी देगची में औटा देके देगची वंद कर दे जो उस्में से धूआं न निकले। पश्चात दालचीनी कुचल के। गुलाव के फूल। नागर मोथा। विजोरे का छिलका। चोवचीनी। जौ कुट कर के। वहमन सुपेद जौ कुट के आध २ पाव। सपेद चंदन १ छटांक। सुपेद इलायची दो तोले मिला के अर्क खेंचे ॥ अर्क पान ॥ जो उदर पीडा और पेट के दर्द और वायशूल को दूर करै और इन्द्री को प्रवल करै ॥ विधि ॥ ताजा पान बंगला नग ५०० सो। पोदीना ताजा आध पाव। कुलींज।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न।१ छटाँक। लौंग ३ तोले। इलायची छोटी १ तोले।। अर्क की क्रिया से ३ सेर अर्क षेंचे।। अर्क।। जो प्रसन्न करै और दिल और मस्तक को ताकत दे।। विधि।। गाजर को गूदो कोल्हू में पेल के उस्को १५ सेर रस निकाल के। किशमिश। आमरे गुठली निकाल के एक २ सेर लेके अर्क की क्रिया से अर्क षेंचे।। अर्क। गुडहल।। जो ताकत दे और मस्त करै और प्रसन्न। करै।। विधि।। गुडहल के फूल ताजा सबजी और जीरा दूर कर के सवा सेर। किशमिश आध सेर। दाल चीनी १ छटांक। सालिब मिश्री ४ तोले लेके अर्क षेंचे।। अर्क कपूर।। जो गरमी के ज्वर और विषमज्वर को गुण दायक है।। विधि।। सूषो धनियां। गावजुवाँ के फूल। गावजुवाँ के पत्ता। दोनों चंदन। कासनी के बीज। षीरा ककड़ी के बीज। काहू के बीज। कुलफा के बीज। वनफशा के पत्ता। नीलोफर के फूल। गुलाब के फूल। एक २ छटाँक ३ पाव कदू काट के। पेठो डेढ पाव। कपूर १ छटांक लेके अर्क षेंचे।। अर्क दूध को।। जो पित्त ज्वर और बात ज्वर और विषमज्वर को गुण करै।। विधि।। गावजुवाँ के पत्ता। वनफशा के पत्ता। नीलोफर के फूल। आध २ पाव। सुपेद चंदन १ छटाँक ७ सेर गाय को दूध मिलाके अर्क षेंचे।।

।।फसल नभै वीं।।

उजून अर्थात् आगीना और आगीना उसे कहते हैं। जिस्में परंद का अंडा मिला हो और षाने में आवे।। उजा कि इन्द्री के बल की विशेषता और १ स्त्री संग में प्र

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वलता और जहन और बुद्धि की तेजी करै ॥ विधि ॥ मुर्गी के अंडा नग १० की जर्दी । जकन बकरे का मान्स आधपाव पानी प्याज को निचोडा हुआ और पै व सेर प्याज काट के । और दूसरो मसालो नोंन जित नों चाहिये तितनों । डाल के गाय के घी में भून लें ॥ अथवा ॥ कवूतर के अंडे नग २० । पालतू चिडे के अंडे नग १० । प्याज काट के आध पाव । नोंन मसालो डाल के गाय के घी में भून ले ॥ अथवा ॥ मुर्गी के अंडे नग ५ की जरदी । प्याज काट के १ छटांक । चूरन करके । दो तोले दाल चीनी । और मसालो डाल के गाय के घी में भून ले ॥

॥ फसल इकवयाणवी ॥

गरगरे के नुसखों में ॥ गरगरा ॥ जो जिह्वा के भारीपन को और पक्षाघात और लकवा से तथा विना इन के हो सो दूर करै ॥ विधि ॥ राई । नरकचूर । पीपर । सोंठ । कलौंजी । मुनक्का । अगर तीन २ माशे । वच तुर्की । अकरकरा । सुखो पोदीना । गुल वाबूना । उस्तुखदूस । ऊदपूलीवा छै २ माशे । लोंग नग १० भिजो के औटा के गुनगुने से गरगरा करै ॥ गरगरा ॥ जो काग के ढीले हो जाने को दूर करै ॥ विधि ॥ मसूर । गुलनार । माखूना । माई । मेंहदी के पत्ता । वडी हर्ड । सब बराबर ले के औटा के गरगरा करै ॥ गरगरा ॥ जो कंठ के भीतर के सोष को दूर करै जो नजले से हो ॥ विधि ॥ सूखो धनियां । पोस्त के डोडा । गुलनार मकोय । छै २ माशे । औटा के छान के । उसमें अमलतास को गूदो २ तोले मि

For Private and Personal Use Only

ला के मल के फिर छान के ३ माशे रसोत मिला के का-
म में लावै ॥ गरगरा ॥ जो कंठ के भीतरी सोथ को दू
र करै। अलसी के बीज। मेथी के बीज नों २ माशे। पीले
अंजीर के दाने नग ५ उन्नाव। लिसोड़े के दाने नग पंद्रह
मुनक्का के दाने नग २०। पोदीना। दौंना मरुवा छै २ माशे
औटा के गरगरा करै ॥ गरगरा ॥ कंठ के भीतर की सो
थ को जो करड़ी हो दूर करै ॥ विधि ॥ वारंग के पत्ता।
अजमोद। मुल्हटी। खतमी के बीज। जौ कुट करके। गु-
लबनफसा। नीम के पत्ता। षुब्बाजी के पत्ता। नाखूना स
व बराबर ले के गाय तथा बकरी के दूध में औटा के छा-
न के थोड़ा गेहूं को सत्त मिला के काम में लावै ॥ गरग-
॥ कंठ की सूजन तोडे ॥ विधि ॥ मेथी छै माशे। अंजीर
नग ५। उन्नाव नग १५ औटा के मल के छान लै। छटांक
भर गाय को दूध और गेहूं के चून को जलेब २ तोले घो
ट के गरगरा करै और दो तीन दिन के ऐसा करने से न टूटे
तो कच्ची फिटकिरी। मासे छै चूरन कर के मिला के गरग
रा करै ॥ गरगरा ॥ जो सोथ टूट जाने के पीछे मुवाद की
सफाई करै ॥ विधि ॥ जटा मांसी। पोदीना। मकोय। उ-
न्नाव गुठली निकाल के सात २ माशे औटा के १ तोले सि
रका २ तोले शहत मिला के गरगरा करै ॥ गरगरा ॥
जो कंठ की भीतर की सूजन को दूर करै ॥ विधि ॥ बक
री के दूध में गेहूं के चून को षट्टी जलेब घोट के गरगरा क
रै ॥ अथवा ॥ कंठ के भीतर की सखती को दूर करै
॥ विधि ॥ मकोय के पत्ता। कहू के पत्ता। कासनी के प
त्ता। धनियें के पत्ता। इनको पृथक २ रस बराबर की नि

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चोड के उसमें ताजा सेतूत मल के तथा रुब्ब तूत मिला-
के घोल के गरगरा करै॥ अथवा॥ मेथी। अलसी।
हालों नों २ माशे। औटा के गरगरा करै॥ अथवा॥ मेंह
दी के पत्ता। गुलनार। हल्दी। एक २ तोले। वेर के पत्ता।
शाहतूत के पत्ता। तीन २ तोले। औटा के गरगरा करै॥ ६॥
॥ अथवा॥ गोंदनी के पेड को छिलका। चमेली की
जड। सेवती के फूल सब बराबर लेके औटा के छान के
थोडा कत्था मिला के गरगरा करै॥ अथवा कोई गर
गरा गुण दायक नहो तो अवावील की विंट। भेडीया।
की बीट। अमलतास को गूदो दो २ तोले लेके छान के
रोगी को विना जतायें गरगरा करावै॥ गरगरा॥ ता
लू के छेद को जो आतशक तथा नजला उत्तर ने से
होजाता है...... दूर करै॥ विधि॥ पोस्त के डोडा। सू
खो धनियां। गुलनार। काली हर्ड। हबुल्लास। जंगली
वेर के पत्ता। गुलाब को जीरो। मेंहदी के पत्ता छे २ मा
शे। माई माजूफल पांच २ माशे। औटा के और रसौ
त। गेरू तीन २ माशे मिला के गरगरा करै॥ गरगरा
॥ जो गले के भीतर दर्द को दूर करै॥ विधि॥ मेंहदी
के पत्ता। गुलनार। हल्दी। वेर के पत्ता। गूंदनी की जड
को छिलका। चमेली की जड। सुपारी। बराबर लेके
औटा के गरगरा करै॥ गरगरा॥ गुलनार। पोस्त के
डोडा। दोनों चंदन छे २ माशे। छिली मसूर १ तोले। ले
के गरगरा करै॥ अथवा॥ अरहर के ताजा पत्ता। बे
र बागू के पत्ता। शाहतूत के पत्ता। चमेली के पत्ता। पो
स्त के डोडा। बराबर लेके औटा के गरगरा करै॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥फसल बारावी॥

गुमरह अर्थात् उवटने और गालीये अर्थात् सूंघनी-
यों में ॥गुमरह॥ जो चहरे की कांति को वडा दे॥ वि-
॥ जौ छिले हुए ४ भाग। षर वूजा के बीज। वाकला को
चून। चिरोंजी दो २ भाग। राल को लगावे। प्रातःकाल धो
डाले॥ अथवा॥ जौ को चून। चना को चून। मसूर को
चून। मेंहदी के पत्ता सूषे। एक २ तोले। केसर १ माशे ले
के काम में लावे॥ अथवा॥ शरीर की त्वचा को षूष रं
ग करै और नरम और सुगंधित करै॥ विधि॥ दोनों
चंदन। अगर। तगर। छै २ माशे। केसर ३ मासे। चिरोंजी
४ तोले। मेदा गेंहूं की आधपाव। चमेली की तेल दो तोले
मिला के पानी में पीस के लगावे॥ अथवा॥ मेंहदी के
पत्ता हरे तथा सूषे १ छटाँक पानी में पीस के २ रक्त चंदन
३ चिरोंजी। गेंहूं की मेंदा आधपाव। वेला को तेल २ तोले
मिला के लगावे॥ गालीयां॥ जो दिल और मस्तक
की ताकत को वढावे और बावले पन को दूर करै॥ वि-
॥ अंबर अशहव २ माशे। अगर ८ माशे। सुपेद चंदन १
तोले। कस्तूरी १ माशे। चूरन कर के गुलाब जल में मिला-
के सूंघे तथा शरीर में लगावै॥ अथवा॥ सुपेद चंदन।
नौ माशे। नागर मोथा। वाल छड। छै २ माशे के वडे अर्क
में पीस के गुलाव को अतर मिला के सूंघे॥ अथवा॥ मू-
षोधनियों। गुलाव के फूल। सुपेद चंदन की चूरो। एक २
तोले। चूरन करके गुलाव जल में सान के वस के अतर।
तथा केवडे के अतर में मिला के सूंघे॥ हरफुलफाय।

॥फसल तिराणवी॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फतीलजात अर्थात् वातीयों में ॥ फतीलह ॥ जो कान के घाव को दूर करे ॥ विधि ॥ गाय को पित्त १ भाग । १ शहत चालिस १ भाग मिला के वा में वाती को भिजो वै और या प्रकार से कान में राषे जो घाव नाई पहुंच जाय तथै वाती को शहत में भिजो के और कच्ची फिटकिरी । वा पर बुरक के कान में राषे ॥ फतीलह ॥ जो कान के दर्द को और तरी और मैल को दूर करे ॥ विधि ॥ कागद जला और शहत और अंडे की जरदी में मिला के वाती भिजो के और फिटकिरी और एलूआ । और दम्मुल अखवेन चूरन कर कें छिड के ॥ अथवा । नीम को तेल और शहत मिला के कान में डाले ॥

॥ फसल चोराणवीं ॥

फुरजजों में अर्थात् योंनि की वातीयों में ॥ फुरजा ॥ जो मरे वालक को योंनि से निकाले और १ स्त्रीधर्म को जारी करे ॥ विधि ॥ इन्द्रायन । कुटकी काली । मुनक्का । नोसादर । वीजावोल । सब वरावर चूरन कर के अंडी को तेल और गाय के पित्ते में मिला के उसमें वाती भिजो के योंनि में राषे ॥ फुरजा ॥ जो ऋतु को जारी करे ॥ विधि ॥ ततली । बीजावोल । अंबहल । सौंफ । कनोच । वरावर ले के गाय के पित्ते के संग योंनि में राषे ॥ फुरजा ॥ जो ऋतु के रुधिर को काढे ॥ विधि ॥ कपूर । वंबूर को गोंद वरावर ॥ अथवा मुरदासंग । गुलनार । गेरू । सुर्मा वरावर ले ॥ १ अथवा माजूफल जला के । दम्मुल अषवेन । वेर के पत्ता । गेरू । गुलाव के फूल । चूरन कर के और

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनार के काढे में भीजे कपड़ा को भिजो के योंनि में राषि॥
॥फुरज्जा॥ जो योंनी तंग करे॥ विधि॥ अकाकी-
या। नागरमोथा। बाल छड़। बरा बर ले के चूरन कर के
अनार के छिलका के काढे में भीजे कपड़ा को या चूरन में
भिजो के योंनि में राषै॥ अथवा॥ धाय के फूल। माजू
फल। मेनफल। माईं। मोचरस। सब बरा बर ले के चूरन क
र के महीन कपड़ा में रष बाती बना के योंनि में राषै॥ दो०।
माईं माजू मेंन फल चौथे धाय मिलाय॥ ननक मोचरस।
डारि के ठाडी सीक नजाय॥१॥ अथवा अगर। नागर मो
था। हल्दी। लौंग। अकाकीया सब बरा बर ले॥ फुरज्जा
॥ योंन को तंग करे और उस्की तरी को सोष ले॥ विधि
॥ हरे माजूफल। चूका के बीज। लोहे का मैल चार २ मा
षे। जुफत्वलूत तीन २ माषे ले॥ अथवा॥ हरे माजूफ
ल। सुपेद राल। आमरे। बड़ी हर्ड को छिलका। बहेडे -
को छिलका। दो २ माषे। लौंग नग ५ ले॥ फुरज्जा॥ यों
नि को तंग और सुगंधित करे॥ विधि॥ केसर। नागर
मोथा। अगर। लौंग तीन माषे। तुफाह। गंदील। हरे मा
जूफल। पाँच २ माषे। अंबर अशहब। कस्तूरी चालिस -
चार २ माषे। लेनी॥ फुरज्जा॥ योंनि के सोथ को पट -
का दे॥ विधि॥ गूगल। खतमी के बीज अलसी के बी
ज। तीन २ माषे। मुरगा की चरबी छै माषे। थोड़ा पाहन -
मिला के॥ अथवा॥ सोहन माषी। लोबान। दम्मुल अख
वेन। गेरू बरा बर ले बारतंग के पानी में घोल के योंनि में
राषै॥ फुरज्जा॥ योंनि की पीड़ा और उस्की बसीली तरी
को दूर करे॥ विधि॥ बायबिडंग। समुद्र फेन छै २।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माशे। सूषो बहरोजा। नौ माशे। सेंधा नोंन ३ माशे चूरन कर के पोट ली वनाके योंनि के मूंह पर राषे ॥ अथवा ॥ अजमोद। वाय विडंग। सूषो बहरोजा। तीन २ माशे। सोया के वीज। सेंधा नोंन डेढ २ माशे। चूरन कर के शहत में सान के महीन कपडा में राष के योंनि में राषे ॥ फुरजजा ॥ योंनि की षुजली को दूर करै ॥ विधि ॥ ततली। पोदीना। अनार को छिलका। छिली मसूर। बराबर लेके गुलाव में पीस के थोडा सिरका मिलाके योंनि में राषे ॥ फुर ॥ जो वंध्या पन को दूर करै ॥ विधि ॥ जायफल। माई भुनी फिटकिरी। अनार को छिलका। वरावर ले कूट छान के पानी में पीस के लंबी गोली बना वे और स्नान से पीछे तीन दिन रात नए सिरसे योंन में राषै उसे पीछे पुरुष के संग भोग करै तो गर्भ रहे ॥ अथवा ॥ खरगोश की वीट और दूस्का पनीर बराबर लेक चूरन करके शहत मिला के तीन दिन रात योंन में राषे पीछे पुरुष संग करै तो गर्भ रहै ॥

॥ फसल पिन्चाणवी

कुर्स अर्थात टिकीया मस्तक पीडा और ज्वर षांसी आदि मनुष्यों के रोगों के दूर करने में ॥ कुर्स मुसल्लिस। अर्थात तिषूंटी टिकीया फकत या कारन बनाई जो सूरत देषते ही मालूम हो जाइ के षाने की नहीं फकत ललाट देश और कनपटी यों पर पतला लेप करने से मस्तक पीडा और आधासीसी और निद्रा न आना दूर होता है और सीत के रोगों में मेंहदी के रस और दोंना मरुवा के रस और इसी प्रकार के रसों में और गरमी के रोगों में नीबू के रस तथा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धनिये के रस में तथा सिरका में अथवा पोस्त के डोडा के पानी में तथा इसी प्रकार के और पानी में घिस के पतला लेप करे ॥ विधि ॥ मरम की अर्थात्। बीजाबोल। अफीम। अजमायन खुरासानी। कपूर। केसर। ?अंबर। लादन। खुफा बीज वु की छिलका। दस २ माशे लोबान। सोंना माषी। आमले। गेरू डेढ तोले चूरन करके गुलाब अर्क में टिकीया बनावे ॥ कुर्स ॥ जो मस्तक पीडा और सरसाम और ज्वर और षासी और निद्रा लावे और वरांने और प्यास को दूर करे ॥ विधि ॥ लंबी घीया के बीज की मीगी। षीरा। ककडी के बीज की मीगी। काहू के बीज दो २ तोले। मुल्हठी को सत्त। गेहूं को सत्त। कतीरा। डेढ २ तोले। अफीम १ मासे। ईसबगोल के लुआब में टिकीया बनावे ॥ कुर्स ॥ कि षासी और कलेजा की सूजन को दूर करे ॥ विधि ॥ मुख लाष। कासनी के बीज। सोंफ। कुलफा के बीज। षशषश। के दाने। बंबूर को गोंद। मुल्हटी को सत्त। षीरा ककडी के बीज की मीगी। लंबी घीया के बीजों की मीगी। नो २ माशे। रेवत चीनी। कसूस के बीज। छे २ माशे। वंशलोचन ३ माशे लेके टिकीया बनावे ॥ कुर्स वनफशा ॥ कि छाती के षरषराहट और षांसी और पहलू के दर्द और रुधिर थूकने और पित्त के अतीसार को गुण करे ॥ विधि ॥ वनफशा के फूल २ तोले। वनफशा के पत्ता १ तोले। उनाब्क मुनायां ४ माशे। मुल्हटी को सत्त। कतीरा। गेंहू को सत्त छे २ माशे। सुपेद मिश्री डेढ तोले। ईसबगोल के लुआब में टिकीया बनावे ॥ कुर्स के कडा ॥ जो मूंह

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को

से रुधिर आने और विषम ज्वर और रुधिर थूकनें दूर करे॥ विधि॥ केकडा की भस्म २॥ तोले। वंशलोचन। काहू वा। पोस्त के डोडा। सुगंधित कपूर। सेल षडी गेरू तीन २ मासे। गेहूं को सत्त। षीरा ककडी के वीज की मीगी। एक २ तोल। गुलाब के फूल। मुल्हटी को सत्त। कतीरा। वंबूर की गोंद भुनों। कुलफा के बीज भुने। नों २ माशे। अफीम १ माशे। वीहदाने के लुआब में टिकिया बनावे॥ कुर्स चंदन॥ जो गरमी के ज्वर और प्यास और कलेजा की गरमी और उरद की गरमी और नवान की खुष्की। और पित्त जलजाने को दूर करे॥ विधि। लंबे षीरा के वीज की मीगी। कपूर। कतीरा। पांच २ माशे दोनों चंदन नों २ माशे। मुल्हटी को सत्त। कुलफा के वीज। कतीरा गुलाब के फूल। सुपेद वंशलोचन चार २ माशे। ईसव गोल के लुआब में टिकीया वनावे और मीठे अनार के रस तथा सेव के पानी के संग षाय॥ कुर्स॥ तवाशीका दिक के पुराने और ज्वर और पित्त के दस्तों को गुण दायक है॥ विधि॥ वंशलोचन। गुलाब के फूल। कासनी के वीज। काहू के वीज। कुलफा के वीज ततरीक। छे २ माशे। गुलनार। सुपेद चंदन। चूका के वीज। कपूर। तीन २ माशे। अफीम डेढ माशे लेनी॥ कुर्स॥ तवाशीर मुलैयन॥ जो पित्त ज्वर को दूर करे और उदर को बल बढावै और गरमी को शांत करे॥ विधि॥ सुपेद वंशलोचन ७ माशे। गुलाब के फूल ८ माशे। जरिष्क छे माशे। भुनों सकमुनीयां ३ माशे। कासनी के पानी में टिकीया वनावे॥ कुर्स॥ काफूर जो कमल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाय और गरमी के ज्वर को गुणदायक है ॥ विधि ॥ ऽ
जरिश्क। कासनी के बीज। गुलाव के फूल। खरबूजा के
बीज की मीगी। वडे घीया के बीज की मीगी। सुपेद चंद
न नों२ माशे। कतीरा। कपूर। मुल्हटी को सत्त तीन २॥
माशे। ईसब गोल के लुआव में बनावे ॥ कुर्स ॥ कु
हल जो खांसी और थूक में रुधिर आने को और खूनी॥
ववासीर को दूर करे ॥ विधि ॥ वारह सींगा के सींग॥
की भस्म। अकाकीया। परसीया वशां। गुलनार। माजू
फल। अंजुवार की जड नों२ माशे। सुर्मा ३ माशे। दम्मु
ल अरव वेन। छे माशे लेके वारतंग के पानी में बना
वे ॥ कुर्स ॥ कहरुवा ॥ जो रुधिर थूकने और ववा॥
सीर के रुधिर वहने को दूर करे ॥ विधि ॥ कहरुवा।
कुलफा के बीज एक२ तोले। वारह सींगा की भस्म। ऽ
कतीरा। बंबूर की गोंद। सूखे धनियें। भुने पोस्त के दा
ने सुपेद छे२ माशे। गेंहूं को सत्त नों माशे। लेके वारतंग॥
के पानी में टिकिया बनावे ॥

॥ फसल छियाणवी ॥

जो ज्वर और बुरा की आजारों के रोगों को गुण करने के
कुर्सो में ॥ कुर्स ॥ गाफस ॥ जो कमल वाय और क
लेजा की पीडा और ताप तिल्ली और जीर्ण ज्वर और चौ
थ्या ज्वर को दूर करे और पुठ्ठों की गांठ को खोले ॥ वि० ॥
उसारह गाफस ॥२॥ तोले। वालछड २ तोले। सुपेद वंश
लोचन १ तोले। लेनों ॥ कुर्स ॥ लाख ॥ जो वातोदर को
गुण करे और पुठ्ठों की गांठों को खोले ॥ विधि ॥ धु॥
ली लाख २ तोले। रेवतचीनी १ तोले। नेत्र वाला। वा

For Private and Personal Use Only

ल छड। मस्तगी। अजमोद। अनेसूं। अजमायन। अजवर। मीठो कूट। काली मिर्च। सोंठ। छै २ माशे। लेके टिकीया बनावै॥ कुर्स॥ गुलाव॥ जो जलंधर और। उदर और कलेजा। और तिल्ली और अतीसार को। गुण करै॥ विधि॥ गुलाव के फूल १ तोले। गुलनार। जरिश्क। तंतडीक। माई। चूका के बीज। कासनी के बीज। रामतुलसी। कुलफा के बीज चार २ माशे। नागरमोथा। फकाह। अजवर। बाल छड। रेवतचीनी। धुली लाष। किब्र की जड। कपूर दो २ माशे। अफीम १ माशे लेनी॥ कुर्स मजीठ॥ जो तिल्ली की सूजन को गुण करै॥ विधि॥ मजीठ। १ तोले। जरावंद तवील। नों माशे। रेवतचीनी ३ माशे। भुनों सुहागो २ माशे। अंजीर नग २ सिरका में पीस के टिकीया बनावै॥ कुर्स अफसनतीन॥ जो उदर के सोथ की पीडा को गुण करै॥ विधि॥ अफसनतीन रूमी। अनेसूं। अजमोद। बराबर। लेके टिकीया बनावै॥ कुर्स मस्तगी॥ जो वमन और हिचकी। और जवा की को गुण करै॥ विधि॥ अगर। मस्तगी एक २ तोले पिस्ता के छिलका दो तोले। गुलाव के फूल डेढ तोले लेने॥ कुर्स सोंठ॥ जो अतीसार और मरोडा को। गुण करै॥ विधि॥ सोंठ। बेलगिरी। सूखो धनियों सुपेद राल। सब बराबर लेके टिकीया बनावै॥

॥ फसल सत्ताइवी ॥

इन्द्री के रोगों को दूर करने के कुर्सो में॥ कुर्स॥ जयाविनस अर्थात् इन्द्री के जोड घुल २ के मूत्र के द्वारा निकलैना

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को आराम करने वाली टिकीया हैं ॥ विधि ॥ वंशलो
चन ५ माशे। कुलफा के बीज। कादू के बीज। सात २ माशे
चूका के बीज। गुलाब के फूल। सूखे धनियें। गेरू तीन २
माशे। सुपेद चंदन। गुलनार। तंतडीक दो २ माशे। कपूर ४
रत्ती। कुलफा के पत्ता के रस में बनावै और अनार के रस
में ले ॥ अथवा ॥ हब्बुल्लास। चूका के बीज। २ माशे।
बंबूर को गोंद। गेंहूं को सत्त एक २ तोले लेके ईसब गोल के
लुआब में बनावे ॥ कुर्स काकनज ॥ गुरदे और म
साने के घाव और राध बहने को और पेशाव की चिनंग।
को दूर करै ॥ विधि ॥ षीरा ककडी के बीजों की मीगी।
घरबूजा के बीजों की मीगी। कुलफा के बीज चार २ माशे।
गुलाब के फूल। वंशलोचन। गेरू। गोंद। गेंहूं को सत्त। र
म्मुल अषवैन। काली पोस्त के दाने तीन २ माशे। मीठे
बादाम की मीगी। बिलगोजा की मीगी। दश २ माशे। काक
नज १ तोले। बीहदाने के लुआब में बनावे ॥ कुर्स कहरु
वा ॥ रुधिर के पेशाब को गुण दायक है ॥ विधि ॥ कहरु
वा ५ माशे। गुलनार। लोबान। गोंद। तंतडीक॥ तीन २ मा
शे। अफीम ४ रत्ती लेनी ॥ कुर्स लबूब ॥ गुर्दे और मसा
ने की राध और घावों को साफ करके आराम करै ॥ वि-
॥ गेंहूं को सत्त १ तोले। खतमी के बीज। षुब्बाजी के बीज।
कुलफा के बीज। अजमोद। सौंफ तीन २ माशे। अजमाय
न षुरासानी। अफीम एक २ माशे। फंदक की मीगी। बिल
गोजा की मीगी। मीठे बादाम की मीगी। षीरा ककडी के।
बीजों की मीगी। बेर की मीगी। घरबूजा के बीजों की मी
गी। मीठे घीया की मीगी। मुल्हटी को सत्त। चूका के बी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज। गेरू पांच २ माशे। अलसी के लुआब में बनावै॥ कु-॥ माई। अकाकीया। कावली हर्ड को छिलका। भुनों धनियों। गुलनार। गेरू। जुफत्तवलूत। हब्बुल्लास। सब बराबर लेनी॥ कुर्स॥ जो सोजाक को दूर करै॥ वि-॥ वंग। सत्तसलाजीत। कतीरा। गेरू। सुपेद पोस्त के दाने। बंबूर को गोंद। षीरा ककडी के बीज। कुलफा के बीज छिले। मीठे घीया के बीजों की मीगी। सब बराबर लेके ईसबगोल के लुआब में बनावे और दूध की लस्सी के संग लेनी॥

॥ फसल अठारवी॥

केरूती अर्थात् मोंम रोगन में॥ केरूती॥ जो नाक के घावों को दूर करै॥ विधि॥ मोंम पीरो १ तोले। गुलरोगन ३ तोले में पिगला के। मुर्दासंग २ माशे। वंग चार माशे मिलावै॥ केरूती॥ जो घाव और स्वेतारों को दूर करै॥ विधि॥ चमेली को तेल २ तोले। आंच पर धरके पीरो मोंम १ तोले। बकरी की पिंडली की मीगी १ तोला। कतीरा छैमा. लेके घोटे॥ केरूती॥ जो होट और हाथ पांव फट जाने को गुण करै॥ विधि॥ गुलरोगन ३ तोले आंच पर धर के पीरो मोंम डेढ तोले। मुर्गा की चरवी १ तोले। कतीरा ३ माशे मिला के बनावे॥ केरूती॥ जो पहलू के दर्द और छाती के दर्द को दूर करै॥ वि-॥ बनफशा को तेल ५ तोले। आंच पर धर के। सुपेद मोंम २ तोले। कतीरा नों माशे मिलावै॥ अथवा॥ बनफशा के पत्ता। सुपेद चंदन। खतमी के बीज। नाखूना। जौ की चून। गेंहूं की भुसी बराबर लेके कूट छान के उस मोंम रोगन में और बनफसा को तेल तथा गुल रोगन।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नफ्श तिल के तेल में बना हो मिलावे ॥ अथवा ॥ गुल ब
नफशा। नाखूना। बाबूना के फूल। षतमी के बीज। इ
सबगोल। गुलाब के फूल। नौं २ माशे। पानी में औटा के।
छान के ५ तोले तेल तिलो का मिला के पकावे जब पानी।
जल जाय तब २ तोले पीरो मोंम मिलावे ॥ केरूती ॥ जो
सरदी के स्वास को दूर करे ॥ विधि ॥ पीरो मोम ३ तोले
छे तोले काले तिल के तेल में पिगला के। मेथी नौं माशे।
कलोंजी। मुल्हठी। चार २ माशे। अकरकरा २ माशे कूट।
छान के मिलावे ॥ केरूती ॥ गरमी के स्वास औ खांसी।
को दूर करे ॥ विधि ॥ काहू। धनियां। दो २ तोले। नील
फर के फूल। बनफसा के पत्ता। एक २ तोले पानी में पीस
छान के सुपेद तिली को तेल छे तोले में पकावे और जब
पानी जल जाय तब २॥ तोले मोंम मिलावे ॥ केरूती ॥
जो अंड कोश के सोजा को गुण करे ॥ विधि ॥ पीरो मों
म २ तोले। गुल रोगन ४ तोले में पिगला के। मसाल। लो
बान चार २ माशे मिलावे ॥

॥ फ़सल निन्नाणवी ॥

कतूर अर्थात् कान में टपकाने की दवा में ॥ कतूर ॥ ज
जो कान के घाब को गुण करे और राध को और मैल को
दूर करे ॥ विधि ॥ एलुआ। सोंना माषी। समुद्र फेन। ३
पपडी खार। दम्मुल अषवेन। लोबान। पानी में पीस के।
दो तीन बूंद सिरका मिला के कान में टपकावे और थो
डी देर पीछे निकाल डाले ॥ कतूर ॥ जो गरमी की क
र्ण पीडा को दूर करे ॥ विधि ॥ अफीम १ माशे। २ तो।
ले गुल रोगन में ओल के केई बूंद सिरका मिला के का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न में टप कावै ॥ अथवा ॥ यह कतूर अत्यंत कर्ण पीड़ा को दूर करै ॥ विधि ॥ कपूर । अफीम बराबर ले बेटी की मा को दूध तथा बकरी के दूध में घोल के कान में टप कावे ॥ कतूर ॥ जो कान के शब्द को दूर करै ॥ ॥ विधि ॥ लोबान । केसर बराबर लेके शराब में घोल के टप कावे ॥ अथवा ॥ लौंग नग ३ । दौंना मरुवा को रस २ तोले में घिस के टप कावे ॥ अथवा ॥ सुपेद कुट की २ माशे । आसवन्च १ माशे । पानी में पीस के केई बूंद । सिरका मिला के कान में टप कावै ॥ कतूर ॥ जो सोजाक और मसाने तथा लिङ्ग के छिद्र के घाव को गुणदायक है ॥ ॥ विधि ॥ सोंना माखी । दम्मुल अखबैन । लोबान । वंग । गेंहू को सत्व । अफीम बराबर लेके पानी में घोल के टप कावे ॥ अथवा ॥ बंबूर की गोंद २ माशे । गेंहूं को सत्व ४ माशे बेटी की मा के तथा बकरी के दूध में घिस के टप कावे ॥ अथवा पोस्त के डोडा । गेंहू को सत्व । मुलहटी को सत्व । दूध में पीस के टप कावे ॥ हरूफ काफ ॥

॥ फसल १०० सौवीं ॥

कुहल अर्थात सुर्मा में ॥ कुहल ॥ जो आंख की फुली को कार के दूर करै ॥ विधि ॥ चमेली की ताजा कली । सुपेद तिलों की ताजा कली । काली मिर्च चार २ तोले । भुनी फिटकिरी ७ तोले । खूब घोट के फिर सुखा के घोटै ॥ कुहल ॥ जो फूली और जाले और ढलका और धुंध । और ख्याली और नजला और पीप बहने की आदि को दूर करै और नेत्रों की जोत को बढ़ावै ॥ विधि ॥ सुर्मा सोंफ के अर्क में तीन बेर बुझा के डे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढ तोले। छुहारे की गुठलीजलाके१ माशे। तेजपा
ल४ रत्ती।जाविन्नी२ माशे लेके रगड के काम में लावे
॥ कुहल॥ ... जोजाले और हलका को दूर करै।
और नेत्रों की जोत बढावै और अंत नेत्रों की सुर्षी
को भी गुण दायक है॥ विधि॥ सीप की भस्म। धु
ला लीला थोथा। सुपेद मिश्री सब बराबर लेके सु
र्मा बनावे॥ कुहल॥ लजवाहर॥ जो नेत्रों की जो
त को बढावै और धुंध और आंसू बहने और डाढ
आने को दूर करै॥ विधि॥ अबीधे मोती१ माशे।
मूंगा डेढ माशे। पिरोजा लाजवर्द धुला। याकूत। १
लाल चार२ रत्ती। सोंने चांदी के वर्क नग पांच२ के
बड़े अर्क में ३ दिन घोटे पीछे ममीरा चीनी२ माशे।
षपरीया३ माशे। लीला थोथा छे रत्ती। केसर डेढ मा
शे। तेजपाल। कपूर। एक२ माशे। काली मिर्च४ रत्ती।
सुर्मा२ तोले। मिला के सोंफ को अर्क डाल२ के ८ प
हर घोटे॥ कुहल॥ ममीरा॥ जो नेत्र की षुजली।
और धुंध और हलका को दूर करै और बाफनी के बा
लों को जमावे और जोत को बढावे॥ विधि॥ रसौ
त। भुनी फिटकिरी। चीनी ममीरा। चांदी सोंने की घ
डीया। हर्डे को छिलका चार२ माशे। नोंसदर। तेजपा
ल। जाविन्नी। तीन२ माशे। काली मिर्च। कपूर। जटा
मांसी। लीला थोथा। लीलो वंश लोचन। बंग। एक
२ माशे। कालो सुर्मा डेढ तोले। बकरी को पित्तो नग१
सोंफ के अर्क में ८ पहर घोटे॥ कुहल॥ चाकसू
॥ जो आंष की सुर्षी और आंसू बहने और बच्चों की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आँषकी कोथी को दूर करै ॥ विधि ॥ चाकसू २ तोले १ पोटली में बाँध के गधे की लीद तथा उरद की दाल में पानी डाल के पकावै और छिलका दूर करके सुखाके छै मासे षपरीया वलाके। भुनी फिटकिरी ४ माशे। रसोत २ माशे। सुर्मा नौं माशे। लेके सुर्मा बनाले ॥ कुहल ॥ जो रतौंधा और जाले और ढलका और धुंध और आँष की पुरानी सुरषी और नाषना और फूले को दूर करै ॥ विधि ॥ काली मिर्च २ माशे बकरी के पित्ते की पुट देके। षपरीया ६ माशे। नींबू के रस में ४ बार भुभावै। षिरनी की गुठली की मीगी २ माशे। चमेली की कली १ तोले लेके सौंफ के अर्क में घोटे।

॥ फसल एकसौ एक की ॥

काजल और धुरी अर्थात सिलों में ॥ काजल ॥ जो फूली और ढलका और जाला और नाषना को दूर करै और नेत्र की जोत को बढ़ावै ॥ विधि ॥ ममीरा चीनी। लौंग षपरीया। सुपेद सुर्मा एक २ माशे। हल्दी। गुलाब की जड़। षिरनी की गुठली की मीगी। अनार की कौंपल। बकायन की कोंपल तीन २ माशे। लेके चूर्नकर के २ तोले गाय के घी में सान के कसूमल कपड़ा में लपेट के बाती बना के कड़वे तेल में जलाके कच्ची पारी में काजल पाड़ले ॥

॥ काजल ॥ जो नेत्र की जोत बढ़ावै और खुजली के दूर करने में अत्यंत गुणदायक है ॥ विधि ॥ नीम के फूल बकायन के फूल। रूई में लपेट के सरसों के तेल में दीया जला के कच्ची पारी में काजल पाड़े और कपड़ा की पोटली खूब बाँध के ४० दिन परियंत सौंफ के अर्क में पड़ी रा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गे पीछे निकाल के रष ले और लगाया करै ॥ काज
॥ जो वापनी के वालों को जमावै और आंष की सुर
षी को और जरदी को जो रोगों के पिछाडी बीमारी यों
से होजाती है ...... दूर करै ॥ विधि ॥ ताजा वर्दल
कुचल के निचोडे और वा पानी में तीन चार वेर कपडा
भिजो के सुषावै और १ तोले आंवा हल्दी। सुपेद फिट
किरी चूरन कर के लपेटे और सरसों के तेल से दीया
जला के काजल पाडै ॥ अथवा ॥ आंवा हल्दी को सां
फ के अर्क में पीस के कपडा रंग के वा कपडा में केई
एक मकडी सुपेद २ घर जो भीतों में लगे रहते हैं काग
र जेसे मैल माटी दूर कर कर के राषे और सरसों के ते
ल से दीया जला के काजल पाड ले ॥ घुर्रा ॥ अर्थात
रिगडा ॥ जो आंषों की सुरषी और दर्द और आंसू को
दूर करै ॥ विधि ॥ फिटकिरी भुनी ३ तोले और षालि
स अफीम छै माशे लेके लोहे के हमाम दस्ता से नीवू
को रस डाल २ के रिगडे जो पाव सेर रस सोष जाय पीछे
नरम राषे और सूष जाय तो पानी डाल के ढीला कर ले
॥ अथवा ॥ रसोत। भुनी फिटकिरी। आंवा हल्दी छै मा
शे। लोद पठानी ३ माशे। अफीम २ माशे। डूमली की ह
री पत्ती को रस डाल के फूल कांसी के वासन में वडी को
डी से रिगडे जव एक जिंस होजैय तव उठाय राषे ॥ अथ
वा ॥ रतनजोत। पठानी लोधा भुनी फिटकिरी तीन २
माशे। षालिस अफीम २ माशे। लेके लोहे के वासन
में नीम के सोटा से त्रिफला को काढा डाल के रिगडे।

॥ फ़सल एक सौ दोवीं ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कमाद अर्थात सेक में ॥ कमाद ॥ जो आधासीसी और विशेषपीड़ा और बुरीवाय को गुण करै ॥ विधि ॥ दोंना मरुवा के पत्ता। बाबूना के फूल। तुलसीके पत्ता। कुचलके कपड़ा की पोटली बना के गुन गुनों कर के सेके ॥ कमाद ॥ जो सून्य की हालत में सून्य को गुण करै ॥ विधि ॥ लौंग। जावित्री। जायफल अकरकरा। छै २ माशे। सांभरनोंन २ तोले। पावसेर बैजरे को चून मिला के दो पोटली बना के सेके ॥ क ॥ जो उदर की वाय पीडा को गुण करै ॥ विधि ॥ अजमायन। सुपेदजीरे। सोंफ। अजमोद। सोंठ। दो २ तोले। खारीनोंन ४ तोले। चूरन करके आधपाव गेंहूं की भुसी मिला के दो पोटली बांधे ॥ अथवा ॥ अजमायन। नोंन। गेंहूं की भुसी मिला के सेके ॥ कमाद ॥ जो वाय को पचावै और पुठे और पसली के दर्द को दूर करै ॥ विधि ॥ सोया के ताजा पत्ता। पोदीना के ताजा पत्ता दो २ तोले। अनेसू। सोंफ। अजमोद एक २ तोले पानी में औटा के छान के बकरी के नरे तथा बोतल में भर के सेक करै ॥ कमाद ॥ जो कलेजा और तिल्ली के दर्द को गुण करै ॥ विधि ॥ मकोय के पत्ता। कासनी के पत्ता। संभालू के पत्ता। तत्ली के पत्ता। जितने मुनासिब जाने तितने औटा के सिरका में मिला के कपड़ा भिजो के सेक करै ॥

॥ फसल एक सौ तीनवीं ॥

कबूस अर्थात लपडी में ॥ कबूस ॥ जो पुरा के रोग को गुण करै ॥ विधि ॥ जुफ्तबलूत। लोबान।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चाँदी की घरीया तीन २ माशे चूरन कर के वंबूर की हरी पत्ती २ दो तोले पीस के मिलावै और ठंडी ही बाँधे ॥ कबूस ॥ जो काँच निकल ने को दूर करै ॥ वि० ॥ बेर के पत्ते १ तोले । भाँग २ दो तोले । आँबा हल्दी । हरे । माजूफल । छे २ माशे । गुदा में पीस लूपडी घुसेड के । बाँधे ॥ कबूस ॥ जो हरजगह के बादी के दर्द को गुण करै ॥ विधि ॥ महूआ १ भाग । खाने की तमाखू १ भाग । पीस के गरम कर के बाँधे ॥ कबूस ॥ जो अकूलह को दूर करै ॥ विधि ॥ काले तिल की पत्ती । दर्याव की रेत बराबर ले के पानी में टिकीया बनाके बाँधे और ४ पहर पीछे नई बाँधे ॥

॥ फसल एक सो चारवीं ॥

गुलकंद के वर्णन में ॥ गुलकंद ॥ मुतल्लक़ गुलाब के फूल से प्रयोजन है ॥ प्रत्येक नुकसानों को दूर । करै और प्रसन्न करने वाला तबीयत को नरम करै । और दूसरी मुनासिब वस्तु के संग तीनों दोपों को दस्त के द्वारा निकाले और आँतों की गाँठों को खोले और वायशूल और मरोडा और उदर के दर्द को दूर करै ॥ शेख बूअली ने अपनी बनाई पुस्तकों में लिखा है । एक तरुण १ स्त्री जिसके विषमज्वर थी और दूसरे । परत में देखी थी सो मैंने निरे गुल कंद की ही साधना कराई यहाँ तांई कि भोजन में भी गुलकंद मिलाया तब १ वर्ष में बिलकुल आराम होगया और वे टा बेटी जन्ने लगी ॥ गुलकंद सेवती ॥ जो चित्त । को प्रसन्न करै और वाय के स्वास को दूर करै और ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एकांती और बावलेपन और होलदिली को दूर करै है॥ धूपतथा पानी की क्रिया से बना ले॥ गुलकंद गुडहल॥ जो बावलेपन और एकांती को दूर करै और निर्मल रु-धिर को पैदा करै और वात पित्त के नुकसान को दूर करै पानी के गुलकंद की क्रिया से बनावे और फूलों से आधो कागदी नीबूको रस तथा खट्टे अनार को रस मिलावे॥ गुलकंद अमलतास॥ जो तबीयत को नरम करै और विरेचन पित्त है॥ विधि॥ अमलतास के फूल ताजा की तरी पंखडी लेके बराबर की लाल बूरो मिला के धूप के गुलकंद की क्रिया से बनावे॥ गुलकंद नीम॥ जो रुधिर को निर्मल करै और वाय के रोगों को दूर करै और नसोंकी गांठों को खोले है॥ विधि॥ नीम के ताजा फूल बराबर के निर्मल शाहत में मिला के धूप के गुलकंद की क्रिया से बनावे॥ गुलकंद पोसत॥ तबियत को गरम करै और दस्तों को बंद करै और नजला को दूर करै और तर खांसी को दूर करै॥ विधि॥ पोस्त के ताजा फूल टूक टूक कर के तिगुनों सुपेद बूरो मिला के मल के ३ दिन धूप में राखे॥ गुलकंद मेंहदी॥ जो रुधिर को साफ करै और नजला को दूर करै॥ विधि॥ मेंहदी के ताजा फूलों में बराबर को खालिस शाहत मिला के तीन दिन धूप में राखे॥

॥फसल एकसोपांचवी॥

लखलखा में॥ लखलखा॥ जो गरमी की मस्तक फाडा और आधासीसी को दूर करै॥ विधि॥ सुपेद चंदना सूखो धनियों। गुलाबजल में पीसके थोडो खालि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स सिरका मिलाके सीसी में डाल के सूंघे ॥ लखलखे ॥ जो सरदी की आधा सीसी और मस्तक पीडा को दूर करे ॥ विधि ॥ दोंना मरुवा के पत्ता । तुलशी के पत्ता पानी में पीस के वामें सोंठ । काली मिर्च । चूनों थोडो इन को चूरन मिला के सूंघे ॥ लखलखा ॥ जो गरमी की मस्तक पीडा और सरसाम को गुण करे ॥ विधि ॥ दोंनों चंदन । सूंघोधनियों । जे रूपानी में पीसके थोडो कपूर मिला के सूंघे ॥

॥ फसल एकसो छेवी ॥

ललूख अर्थात् लथेडने में ॥ ललूख ॥ जो दोंनों कनपटी यों पर लथेडने से आधासीसी और मस्तक पीडा को गुण करें ॥ विधि ॥ एलूआ । काहू के वीज । अजमायन खुरासानी । कतीरा दो २ माशे । अफीम १ माशे । केसर छे रत्ती सिरका में घोट के कनपटी यों पर लथेडे । अथवा ॥ कतीरा । वंबूर की गोंद । पोस्त दो २ माशे । ९ दम्मुल अखवेन । रसोत । गुलाव के फूल । अफीम एक २ माशे । मुरगा के अंडे की सुपेदी में मिलाके लथेडे ॥ अथवा ॥ पोस्त के डोडा । गुलाव के फूल । सूंघोधनियों । चार २ माशे वावूना के फूल । अजमायन खुरासानी । तीन २ माशे । सुपेद चंदन २ माशे । अफीम १ माशे लेनी ॥ ललूख ॥ जो पुराने जुषाम को दूर करें ॥ विधि ॥ लोवान । गूगल । मस्तंगी । वावूना के फूल । जटा माशी । सव वरावर लेके पानी में पीस के थोडा गुल रोगन मिला के लथेडे ॥ अथवा ॥ ९ अफीम ३ माशे । केसर १ माशे मिलाके लथेडे ॥

॥ फसल एकसो सातवी ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लऊक अर्थात् चटनी में ॥ लऊक ॥ जो कंठ की और गले की घुघकी और सूषी षांसी को गुण करै ॥ वि- ॥ वडे घीया के वीज की मीगी। मीठे वादाम के वीज की मीगी। दो२ तोले। गेंहू को सत्त। कतीरा। वंबूर को गोंद मुल्हटी को सत्त। एक२ तोले। महीन चूरन करके सुपेद मिश्री तथा वूरे की चाशनी पाव सेर की में मिलावै ॥ लऊक ॥ जो स्वास और गलो बेठ आने को गुण करै ॥ विधि ॥ अलसी के वीज दो तोले। मेथी के दाने ४ माशे। मीठे वादाम की मीगी। मुनक्का। कतीरा मुल्हटी। चिलगोजा की मीगी। गेंहूं को सत्त। वंबूर को गोंद। एक२ तोले। महीन चूरन करकै पाव सेर वूरे की चाशनी में मिलावै ॥ लऊक ॥ जो कंठ से रुधिर वहने को गुण करै और कलेजा की गरमी को दूर करै और ववासीर को गुण करै ॥ विधि ॥ कुलफा के वीज। वंशलोचन। सात२ माशे। वडे घीया के वीजों की मीगी। वडे षीरा के वीजों की मीगी। एक२ तोले। ईसवगोल। वारतंग। तीन२ तोले का लुआव। आधपाव सुपेद मिश्री की चाशनी में मिलावै ॥ लऊक खशखाश ॥ जो नजले की षांसी को दूर करै ॥ वि॰ ॥ छिली मुल्हटी षतमी के वीज। वीहदानों डेढ तोले। पोस्त के डोडा १ तोले। ३ पाव पानी में भिजो के औटा के डेढ पाव सुपेद वूरे की चाशनी करके मुल्हटी को। सत्त। कतीरा। वंबूर को गोंद एक२ तोले को चूरन करके मिलावै ॥ लऊक अवहल ॥ जो सात दिन काम में लावै तो कफ के सार को दूर करै ॥ विधि ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवहल छे तोले। चूरन कर के २ तोले गुलरोगन मि
ला के पावसेर शहत झाग लीए में मिलावे॥ लऊक
जूफा॥ जो कफ के सांस और पुरानी षांसी को गुण
करे और छाती और छाती पषाओं को विगडे मुवाद
से पाक करे॥ विधि॥ सूषेजूफा। कोयल कीजड़ए
क २ छ टांक काढ़ा कर के डेढ़ पाव शहत मिला के
गरम करे और दो वेर छान के चाशनी करे और जो
सोसकीजड न मिले उस्की वरावर कलौंजीडाले॥
॥ लऊक॥ जो फेफड़े के घाव और सूषी षांसी को
गुण करे॥ विधि॥ वीह दानों। ईसवगोल। खतमी
के वीज। डेढ़ तोले। इन का लुआव निकाल के मीठे
अनार को रस। षीरा वडे को रस। वडे घीया को रस।
कुलफा के पत्तों का रस प्रत्येक आध २ पाव। सुपेद
वूरो आधसेर मिला के चाशनी करे। वंवूर को गोंद।
कतीरा। मीठे वादाम की मीगी छिली हुई। पोस्त के
दाने एक २ तोले। मुल्हटी को सत्त। शाकरतगाल छे
२ माशे। चूरन करके मिलावे और रात दिन थोडी २
चाटे॥ लऊक सिपिस्तां॥ अर्थात् लिसोड़े की
चटनी॥ जो कफ की षांसी और नजले की षांसी को
गुण दायक है और परचाया हुआ है॥ विधि॥ प
के लिसोडे नग ५०। उन्नाव नग २०। मुल्हटी। खत
मी के वीज एक २ तोले। पोस्त के डोडा २ तोले। वीह
दानों छे माशे। काढ़ो करके सुपेद वूरो आधसेर मि
ला के चाशनी करे और जब चाशनी होयजाय तव
छिले जो मीठे वादाम की मीगी छिली हुई। पोस्त के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दाने पीस के एक २ तोले मिलावै और चाशनी पक जाने के पीछे। मुल्हठी को सत्त। कतीरा। वंबूर को गोंद छै २ माशे। चूरन कर के मिला वै और रात दिन में पान चार वेर चाटा करै॥

॥फसल एक सौ आठवीं॥

लबूब अर्थात् अवलेह और लौंज अर्थात् कतली में॥ **लबूब**॥ जो पेड़ को गरम करे और बलवान करे इन्द्री को प्रबल करे वीर्य को बढ़ावै और दिल को मस्तक को ताकत दे और शरीर को मोटा करे और प्रसन्न करे और मस्त करे और स्त्रीप्रसंग और वीर्य की शुद्धता और इन्द्री के प्रबल करने में तुल्य नहीं राखे है॥ **विधि**॥ पिस्ता की मीगी। बादाम की मीगी। फनदक की मीगी। अखरोट की मीगी। चिलगोजा की मीगी। कद्दू की मीगी। विनोले की मीगी। सुपेद पोस्त के दाने। सुपेद तिल धुले दो २ तोले। गाजर के वीज। शलगम के वीज। मूली के वीज। प्याज के वीज। गंदना के वीज। इन्दरजो। ईलों। हालम को वीज डेढ़ २ तोले पानी में ऐसा पीसे जो कपड़े में छान्ना न पड़े और ३ पाव सुपेद बूरो और पाव सेर शहत की चाशनी में उस्को मिला के पका के जब पानी जल जाय तब उस्में कुलीजन। शाका कुल। दोंनों बहमन दोंनों तोदरी। सालब मिश्री एक २ तोले। चूरन करके मिलावे॥ **लबूब**॥ जो वीर्य को बढ़ा वै और पेड़ और नरों को विशेष बल दे॥ **विधि**॥ सुपेद बूरो और शहत आध २ सेर मिला के चाशनी करै और दाल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चीनी। कुल्लीजन। सोंठ। हालम के बीज। दोंनों ब-
हमन। दोंनों तोदरी। डेड तोले। सूखो पोदीना१तो-
काली मिर्च। अकरकरा। जायफल। जावित्री। लोंग
छै२ माशे। चूरन मिलावे। फिर मीठे बादाम की मी
गी। अषरोट की मीगी। गिरी। फंदक की मीगी। चि
लगोजा की मीगी। पिस्ता तीन२ तोले। चिरोंजी-
छै तोले। नरम कूट के मिलावे ॥ लबूब सर्द ॥ १
नस निर्बलता जो गरमी कर के होगई हो ---- गुण
दायक है ॥ विधि ॥ सुपेद मिश्री डेड पाव। तुख्म
बीन षुरासानी। आधपाव। शहत निर्मल पाव सेर
सुपेद पोस्त के दानों शीरा। सुपेद तिल। मीठे घीया
की मीगी। षीरा ककडी के बीजों की मीगी। षर बू
जा की मीगी। तर बूज की मीगी तीन२ तोले मिला
के चाशनी करे और सालिब मिश्री। शाकाकुल-
मिश्री। दो२ तोले। चूरन कर के मिलावे ॥ लौज
॥ अर्थात् कतली ॥ जो बल को बढावे और नज-
ला को गुणदायक है ॥ विधि ॥ बादाम की मीगी
छिली हुई। पिस्ता। पोस्त के दाने सुपेद छटाँक भर
को सीरा करके। सुपेद मिश्री डेढ पाव। गेंहू की मेदा
पाव सेर। पोन पाव गाय के घी में भून के मिला के।
हलुआ की तरह गाढा पकावे और तीन माशे के-
सर और छै माशे छोटी इलायची के दाने। चूरन-
कर के मिलावे और गरम गरम जमा के कतली का
ट लेवे ॥ हरफुलमीम ॥

॥ फसल एकसोनमवीं ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

माग्रुललहम में अर्थात् मान्स के पानी में सेख रईस बूअली सीं नाईने लिषा है के यद्यपि — मान्सभोजन है परंतु पानी उस्का दिल की निर्बलता और दूसरे रोगों में दवा है और बाजे हकीमों नें केई मान्सों को इकट्ठा करनी पसंद नहीं कीया है या कारण करके जो तुर्त पच जाय और जो देर में पचे ताको इकट्ठा करना उचित नहीं परंतु बहुधा करके पक्षीयों का मान्स बकरी के मान्स में मिलाणा हकीमोंने उचित रखा है ॥ **माग्रुल्लहम साधा** ॥ जो दिल को बलवान करे और शरीर को बलवान और मोटा करे और मुनासिब शरबतों के संग विषमज्वर को गुण करे है ॥ **विधि** ॥ तरुण और मोटा बकरा को मान्स चरबी और सुपेदी दूर करके। धनियाँ। तेजपात। बडी इलायची। दाल चीनी की पोटली डाल के मूंहबधी देगची में औटा वे जब अत्यंत मान्स गल जाय तब ने और भबका लगा के अर्क षैंच ले ॥ **माग्रुल्लहम** ॥ मुरक्कब अर्थात् मिश्रत मान्स का पसेव ॥ जो दिल और मस्तक और दूसरे उदरादिक के बंदों को और कामदेव को प्रबल करे और मल मूत्र को शुद्ध करे और रुधिर को निर्मल करे और शरीर को मोटा करे ॥ **विधि** ॥ तरुण बकरा को उत्तम मान्स सेर ७। नग १० कबूतरों का शुद्ध मान्स। ५० नग बटेरों का मान्स। तरुण मुरगा नग २। तीतर नग ४। पालतू चिड़ा तथा जंगली नग ५० लेके। दाल चीनी १ छटाँक। लोंग १ तोले। इलायची बडी। तेजपात डेढ २ छटाँक प्याज छिला पाव सेर मूंहबंधी देगची में औटावे ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जब मान्स गल जाय तब पोटली को अलग करले और मान्स को मल के पानी छान ले और यह व स्तु जो रात्री के पानी में भिजो य राषी होंय सो डाले और ५ सेर गाय को दूध ताजा मिला के अर्क षेंच ले औ र सिर नीचे पर ३ माशे केसर और छै माशे छोटी इला यची के दाने की पोटली बाँध के। गावजुवाँ के पत्ता। गु डहल के फूल सूषे। आमले। किशमिश। छुहारे। सेहभर की मूसरा। विल्ली लोटन। गुलमुंडी आध२ पाव। उस्तुषदूस। दालचीनी। मज। तेजपात। गुलाब के फूल। कासनी के बीज। दोनों चंदनों का चूरा। आ वनूस को बुरादा। गोषरू बडे। उन्नाव। गुलनीलो फर एक२ छटाँक। दोनों बहमन। दोनों तोदरी। दोनों मूसरी। इंद्रजो। चार२ तोले डाले॥ बधट शो केजो मान्स मत में उचित होय नहीं तथा हाथ न लगे तो उ स्के न मिलाने से कुछ गुण में हानि न होगी। जो औ र सब वस्तु मिली होंय तो और जो विशेष बलवान क रनी होय तो नील कंठ चारन को मान्स। और १० ममो लान को मान्स बढा वे॥

॥फसल एकसौ दसवीं॥

मायुश्शईर॥ अर्थात्॥ जौ को घाट और मायुल अ सूल॥ अर्थात् जडों का॥ गुण॥ बहुधा हकीमों की इस बात पर सम्मत है कि षाने की दवाई में जौ के घाट से कोई उत्तम दवा नहीं है और इसमें १० प्रकार के गुण हैं १ सीतल करने वाला २ गाँठ षो लने वाला ३ कोठा साफ करने वाला ४ उदर की स

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फाई करने वाला ५ दिल पसंद जुलाव ६ मजेदार ७ मादिल ८ प्यास भुझाने वाला ९ बिगड़े मल को न ब ठने दे १० उदर को न फुलावे ॥ परंतु ठंडी प्रकृती की वस्तुओं को हानि कारक है इस्की लाग गुलकंद है ॥ विधि ॥ उत्तम प्रकार के छिले जौ १ छटांक १॥ सेर पानी में औटा वै जब पानी लाल हो जाय तब वा पानी को बदल डाले दूसरे पानी को डाल के औटा वै जब वा में सुरखी आजाय तब वा को भी बदल डाले याही प्रकार दो तीन पानी बदल के पीछे पर खूब पका वे कि जौ फट जाँय और पानी गाढ़ो हो जाय तब ठंडो करके निरी मिश्री तथा कोई दूसरो शर्बत मिला के पीवे ॥ मायुश्शईर बुलहिम ॥ अर्थात् ॥ मान्सी जौ को घाट ॥ जब रोगी को विशेष बल प्राप्त करना मंजूर होय तो जौ के घाट में मान्स मिलावे उस्की दो क्रिया हैं एक तो यह कि मांस को कोरमे की तरह मुना सिव मसाले मिला के पकावे परंतु घी न डाले और डाले भी तो बहुत थोड़ो भुने और सुगंध करने को ॥ उसमें छिले जौ के शोपानी दूर कर के मिलावे और न यो पानी शोरवा के प्रकार से डाले के पकावे परंतु पानी विशेष हो जो मान्स का उबाल अच्छे प्रकार से निकले ॥ दूसरो यह के जब जौ को घाट पिछले पानी में पकाने लगे तब गोश्त की यखनी पानी उसमें मिला के पकावे और जो यह चाहे जौ के घाट में शिष्टता विशेष हो जावे तो छिले जौ भून के पकावे तथा पोस्त के डोडा थोड़े पोटली में बांध के पिछले पकाव में डाले ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥मायुल अस्मूल॥ अर्थात् जडों का पानी॥ जो कफ ज्वर को और स्वास और कंठ बैठ जाने और कलेजा और तिल्ली की गाठों को खोलने में गुण दायक है॥ ॥विधि॥ सौंफ की जड को छिलका। कासनी की जड को छिलका। छिली मुल्हटी। एक २ तोले। अजखर की जड। अजमोद की जड। वाल छड छै २ माषे। मुनका। उन्नाव के वीस २० दाने। सवा सेर पानी में ओटावै जब चौथाई पानी रहे तब विना मलें छान रखै जितना चाहे उतना ले के उस में सेर्द्धूारवत तथा सुपेद मिस्री मिला के पीया करे॥

॥फसल एकसो ग्यारवी॥

मुकै यात॥ अर्थात॥ वमनादि कों मे॥ **मुकै**॥ जो पित्त और कफ को उदर से निकाले और मस्तक पीडा और ज्वर को गुण करै॥ **विधि**॥ मूली जड पत्ता समेत। सोया के पत्ता। विना छिली मुल्हटी। जौ कुट कर के यथो चित परि ओटा के पानी छान ले और साहद सिकंजवीन और नोंन मिला के वहुत सा पी के गर्म २ वमन करे॥ **मुकै**॥ जो वात। पित्त। कफ। तीनो के दोस को उदर से निकाले और पेट का अफरा और दम घुट जाना और पेडू के दर्द को गुण करै॥ वि॰॥ राई के दाने और मेनफल। मूली के वीज। सोया के वीज। मुल्हटी छै २ माषे औटा के छान के तोले भर साहद सिकंजवी और ४ माषे नोंन मिला के थोडा २ पीवे और थोडी देर पीछे वमन करे॥

॥फसल एकसो बारवीं॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मजमजह॥ अर्थात॥ कुल्लों में॥ मजमजा॥ जो मसूड़े और जीभ के भीतर घावों को और दांतों की पीड़ा और हलने और मूंह से रुधिर उगालने को गुण करै॥ विधि॥ गुलनार। माजूफल। जौकुट करके। माई। ततडीक। सब बराबर लेके औटाके कुल्ला करे॥ मजमजह॥ जो मसूड़ों से रुधिर आने को दूर करै॥ विधि॥ ततडीक। बालछड़। गुलाब को जीरो। तीन२ माशे। वेर के पत्ता वा सूखे। जंगली वेर के पत्ता एक२ तोले। माजूफल। ४ माशे औटा के कुल्ले करे॥ मजमजह॥ जो दांतों की पीड़ा और गरमी से मूंह आने को विशेष गुण दायक है॥ विधि॥ सूखा धनियां। वारतंग। छै२ माशे। पानी में पीसके छान ले और नौ ईसबगोल को लुआब और माशे भर कपूर मिला के कुल्ला करै और जो मकोय के हरे पत्तों का रस तथा कुलफा के पत्तों का रस बहावे तो विशेष गुण दायक होजाय॥ ॥अथवा॥ यह मजला को पानी उतर आने की दंतपीड़ा को गुण करै॥ विधि॥ अकरकरा। अजमायन खुरासानी छै२ माशे। मसूर१ तोले। पोस्त के डोडा ७ माशे। औटा के कुल्ला करै॥ मजमजह॥ जो दांतों के दर्द को दूर करै॥ विधि॥ सिर्स के पेड की छाल ४ तोले। चांमेली के पत्ता २ दो तोले। वायविडंग ३ माशे। औटा के कुल्ला करै॥ अथवा॥ मकोय। पोस्त के डोडा। असपंद। एक२ तोले। मजीठ छै माशे। औटा के कुल्ला करै॥ मजमजा॥ जो गरमी और सरदी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के मूंह आने को दूर करै ॥ विधि ॥ अंजीर नग ४। नारखूना। अलसी के बीज राक २ तोले। ओटा के छा न के थोड़ी केसर और चमेली को तेल मिला के। कुल्ला करै ॥ अथवा ॥ तंतड़ीक। गुलाव को जीरो। नीं २ माशे। अकाकीया। माजूफल। छे २ माशे ओ टा के कुल्ला करै ॥ मजमजा ॥ जो कफ की सफा ई के पीछे मूंह की दुर्गंधी को गुण करै ॥ विधि ॥ अगर। मस्तंगी। लौंग। जायफल। जाविन्नी। तीन २ माशे। जोकुट करके पोटली बांध के गुलावजल में ओटा वे और रात दिन में केई वेर कुल्ला करै ॥ ॥ अथवा ॥ यह मूंह की दुर्गंधी को दूर करै ॥ विधि ॥ निर्मल शहत को पानी में घोल के कुल्ला करै ॥ ॥ मजमजा ॥ जो मूंह का स्वाद विगड जाने और। स्वाद न आने जो कफ करके हो उस्को दूर करै ॥ वि ॥ राई। अकरकरा। मुनक्का। ओटा के कुल्ला करै ॥ ॥ औरजो गरमी से हो तो ॥ गुलाव के फूल। तंतडीक। ॥ ओटा के कुल्ला करे ॥ मजमजा ॥ जो दांतों को म जबूत और उन की पीड़ा को दूर करै ॥ विधि ॥ गुल नार। अकाकीया। माई। जुफत्वलूत। सुपारी। गु लाव के फूल। दोनों चंदन। अनार को छिलका। नाग र मोथा। सब बराबर ओटा के और छान के थोड़ा ह म्मुल अरवबेन मिला के कुल्ला करै ॥ मजमजा। जो जीभ के ढीले होजाने को गुण करै ॥ विधि ॥ राई। सोंठ। काली मिर्च। अकरकरा। नोंसादर। स जी। कलोंजी। सूखो पोदीना। नोंन बराबर ओटा के

For Private and Personal Use Only

कुल्ला करै ॥ मजमजा ॥ जो जीभ और मूंह की सूजन को गुण करै ॥ विधि ॥ वनफशा के पत्ता। मेथी। अलसी के वीज। मुल्हटी। मकोय। नों २ माशे। १ अंजीर नग ४। अमलतास को गूदो ३ तोले। औटा के छान के गुनगुने से कुल्ला करै ॥

॥ फसल एक सो तेर वीं ॥

मतवूखात ॥ अर्थात् ॥ उदर। आतमां कलेजा। तापतिल्ली। और जलंधर। के रोगों को दूर करने के काढों में ॥ मतवूख ॥ जो उदर के वाफ को सोथ को गुण करै ॥ ॥ विधि ॥ बिली अजरवर। मस्तगी। अजमोद। अनेसू। तीन २ माशे। परशीया वशा। सौंफ की जड। पांच २ माशे औटा के छान के ५ वादाम को लेस वहा के लाल वूरो १ तोले मिला के पीवे ॥ अथवा ॥ यह उदर की सूजन को दूर करै ॥ विधि ॥ सोंफ। अजमोद। मकोय। वरावर लेके औटा के वादाम को शीरा और लाल वूरो वहा के पीवे ॥ मतवूख ॥ जो उदर को वल दे और वमन को रोके ॥ विधि ॥ अनारदानों नों माशे। मस्तगी। पोदीना। अगर। ···· तीन २ माशे। और १ तोले मिश्री मिला के पीवे ॥ मतवूख ॥ जो संग्रहणी को दूर करै ॥ ॥ विधि ॥ नागरमोथा। वेलगिरी। सूषो धनियों। नेत्रवाला। सोंठ। षस। सव वरावर। लेके प्रकृती के माफिक सुपेद वूरो मिला के पीवे ॥ मतवूख ॥ जो तिल्ली की सूजन को दूर करै ॥ विधि ॥ कोली हर्ड। वडी हर्ड तीन २ माशे। शाहतरा। कासनी के वीज छे २ माशे। कसूम के वीज २ माशे। आलू वुषारे के दाने नग ५

धूप को गुलकंद२तोले ओटा के पीवे॥मतबूरव॥जो कलेजे।उदर।ओर तिल्ली की सूजन।ओर जलोदर।ओर कमल वाय को दूर करै ओर बिगडे मल को सुधारै ओर कलेजा ओर उदर को बलवान करै॥विधि॥मजीठ।मस्तंगी।सोंफ कीजड को छिलका।अजमोद कीजड को छिलका।कासनीकी जड को छिलका।अनेसू।अजमोद।बालछड।तीन२ माशे।कसूम के वीज२माशे।मुनक्का१तोले ओटा के त्यार करै ओर सुपेद बूरो ओर बादाम नग७ को शीरा मिला के पीवे॥मतबूरव॥जो कलेजा की गाँठों को खोले॥विधि॥रेवतचीनी२माशे।पिली अफसनतीन।अजरवरतीन२माशे।ततली।मेथी चार२माशे मुनक्का के दानेनग१० पीली अंजीरनग२ ओटा के डेढ़ तोले सुपेद बूरो ओर २माशे बादामरोगन मिलाके। पीवे॥मतबूरव॥जो कलेजा की सूजन को दूर करै॥विधि॥रेवतचीनीडेढमाशे।कसूम के वीज।अजमोद।सोंफतीन२माशे।अफसनतीन।विसफायजजवाहरई।वहेडे।पाँच२माशे।मुनक्का के दानेनग१५। ओटा के त्यार करै ओर तोले तुरंजवीन खुरासानी घोट के मिलाकेपीवे॥

॥फसल एकसोचौधवीं॥

पेडू ओर नरों के रोगों को दूर करने के काढ़ों में॥मतबूरव॥जोपेडू कीपीडा ओर मूत्रकी कठिनता को गुण करै॥विधि॥काकनज।अर्थात् पटकौआ।खुबाजी के वीज पाँच२माशे।सुपेदजीरो४माशे।खरबूजा केबी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जनें माशे जौकुट करके ओटा के पीवे ॥ मतबूख ॥ जो पेडू की पीडा को दूर करे ॥ विधि ॥ मेथी । अजमायन । गाजर के बीज । अजमोद । ततली के बीज बाबूना के फूल बराबर लेके ओटा के पीवे ॥ मतबू- ॥ जो पेडू ओर नरे की पथरी ओर रेत को दूर करे ॥ विधि ॥ सोंफ । अनेसू । बडे गोखरू । परसीयावशां । बुजाजी के बीज । गुलबनफशा । अमलतास के बीज । कुलथी तीन २ माशे । खरबूजा के बीज नों माशे । खीरा ककडी के बीज एक २ तोले लेके ओटा के ठंडे शारबत बजूरी के संग पीवे ॥ मतबूख ॥ जो पेडू की पीडा को गुण करे ॥ विधि ॥ खरबूजा के बीज २ तोले । लाल बूरे २ तोले । सब पानी में ओटा के जब तीसरो भाग रहे तब छान के गरम गरम पीवे ॥ अथवा ॥ पीले दाऊदी के फूल । जितने चाहिये उतने लेके । पीस के लाल बूरे मिला के छानके गरम २ पीवे ॥

॥ फसल एकसौ पंधरवीं ॥

मतबूखात मुदिर हैज़ में अर्थात् स्त्री धर्म होने के कारणों में ॥ मतबूख ॥ जो स्त्री धर्म के रुधिर के बंद हो जाने ओर न्यूनता को दूर करे ॥ विधि ॥ नेत्रबाला ३ माशे । ततली २ माशे । सोंफ छे माशे । लोबीया के बीज नों माशे लेके ओटा के ऋतु के दिन लगातार पीवे ॥ ॥ अथवा ॥ ततली के बीज । सोंफ । अजमोद । छे २ माशे । पीले अंजीर के दाने नग ५ । धूप को गुलकंद २ तोले के संग पीवे ॥ अथवा ॥ लाल लोबीया । अनेसू । मजीठ । ततली के बीज बराबर लेके ओटा के पी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वै ।। अथवा ।। कई के बीज जौकुट । गावजुबां के पत्ता । खर बूजा के बीज कुचल के बराबर ओटा के छान । के लाल बूरो मिला के पीवे ।।

।। फसल एक सौ सोलवीं ।।

मतबूरवात दाफह औजे ।। अर्थात ।। जोड़ों की पीड़ा के दूर करने के काढ़ों में ।। मतबूरव ।। जो जोड़ों की पीड़ा को दस्तों के द्वारा दूर करै ।। विध ।। गोरूनजान मीठा । वूजीदां छै माशे । छेदन वार सुपेद निसोत । कई की मींगी । सोंठ । इन्द्राय को फल । तीन २ माशे । असीठ । अजमोद । अनेसू । सात २ माशे ओटा के १ तोले लाल बूरो मिला के पीवे ।। मतबूरव ।। जांघ और पीठ की पीड़ा और सब प्रकार के दर्द ने को गुण करै ।। ।। विधि ।। वूजीदां । चीतो । सोंठ । पांच २ माशे । गोरूनजान । अजरवरकी जड । अजमोद की जड को छिलका । सौंफ के जड की छाल । चार २ माशे । मुनक्का । मेथी दग्ध २ माशे । ओटा के । अंडी को तेल नौं माशे मिला के पीवे ।। मतबूरवहलेला ।। अर्थात् गठिया को गुण करै ।। विधि ।। गोरूनजान । सौंफ । सौंफ की जड को छिलका । अजमोद । अनेसू । पांच २ माशे । परसीया वसां । गावजुबां । बिल्ली लौटन । चार २ माशे ।। गुलाव के फूल । वडी हर्ड छै माशे । सनाय मक्की सात माशे । धूप को गुलकंद डेढ तोले लेके ओटा के ।। तुरंजवीन घोट के मिला के प्रात काल पीवे ।। मतबूरव ।। कूले की हड्डी की झड की पीड़ा और जांघ से लेके तलूआ परियंत के दर्द दूर करने में अति उत्तम

For Private and Personal Use Only

है॥ विधि॥ मस्तगी। अनेसूं। पाँच२ माशे। सोंठ। इ अरवर की जड तीन २ माशे। मजीठ। चीतो। पो रनजान व जीदां। अजमोद। मेथी। सोंफ। चार२ माशे। मुनक्का के दाने नग १५ औटा के १ तोले भर अंडी को तेल मि ला के पीवे॥

॥फसूल एकसोसत्तरहवीं॥

मतबूखात दाफेहहमे यात॥ अर्थात॥ ज्वरादिक दूर। करने के काढों में॥ मतबूख॥ जो कफज्वर और चौ। थीया ज्वर, दस्तों के द्वारा दूर करे॥ विधि॥ अजरवर की जड। पित्तपापडो। प्रुकाई। कबावचीनी। चार२ माशे। अमरवेल ३ माशे। जवाहर्ड छै माशे। मुनक्का के दाने न ग १५ औटा के २ सिकंजवीन डाल के पीवे॥ मतबूख॥ जो इकतरा को दूर करे॥ विधि॥ मुल्हटी। अज मोद। सोंफ की जड को छिलका। पाँच२ माशे। का ई। ३ माशे। पोदीना। मस्तगी दो २ माशे। सूखो धने। यों। गुलाब के फूल चार२ माशे। औटा के ४ तोल सु रंजवीन मिला के पीवे॥ मतबूख॥ के कफज्वर को दूर करै जो समों टार के आवे॥ विधि॥ बाल छड। अनेसूं। सूखो धनियों। गुलाब के फूल। चार२ माशे। मस्तगी दो माशे। अफसनतीन। के बीज। अम लतास के। अजरवर की जड। अजमोद की जड। सोंफ की जड को छिलका चार२ माशे। बडी हर्ड ७ माशे। मुनक्का के दाने नग १५। शाहत को गुलकंद ३ तोले औ टाके दो तोले सिकंजवी मिला के पीवे॥ मतबूख॥ जो चौथीया ज्वर के मल को नरम करके निकाले॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥विधि॥ सनाय की पत्ती। अमर वेल। वनफशा की पत्ती। घर वूजा के वीज कुचल के। सोया के वीज पाँच२ माशे। जवा हुई। वडी हुई। सात२माशे। श्रोटा के ३ तोले सिकंज वी मिला के पीवे॥ मतवूरव॥ चौथी याज्वर को मुलामित से दूर करै॥ विधि॥ विल्ली लोटन। गाव जुबाँ की पत्ती। आमले पाँच२ माशे। विसफायज। फस ल की। अमर वेल। गाराकूं तीन२ माशे। तीनों हुई चार २माशे। सनाय मकई ७ माशे। आलू वुषारे। मुनक्का। दश२ दाने। धूप को गुलकंद ३ तोले श्रोटा के पीवे॥ मतवूरव॥ जो कफज्वर और पुठे के दर्द को दूर करै॥ विधि॥ अजमोद की जड। सोंफ की जड कासनी की जड परशीयावशाँ। अनेसू। मस्तगी। सव वरावर लेके श्रोटा के पीवे॥ मतवूरव॥ जो पुराने ज्वर और पुराने सीत ज्वर को दूर करै॥ विधि॥ षस। रक्तचंदन। सूषे धनि यों। नर कचूर। सोंठ। हरी गिलोइ। सव वरावर लेके॥ श्रोटा के जव आठ वाँ भाग पानी वाकी रहे तव छान के वरावर की सुपेद मिश्री मिला के पीवे॥ मतवूरव॥ जो चोथीयाज्वर को दूर करै॥ विधि॥ पोस्त के डोडा। प्रकृती के माफिक। आठ वाँ भाग काली मिर्च। जो कुर करै श्रोटा के पीवे॥ मतवूरव॥ चोथीयाज्वर के दूर करै॥ विधि॥ जवा हुई को वेकल। कासनी के वीज। छे २ माशे। सोंफ की जड पित्त पापडो चार२ माशे। अमर लता के वीज ३ माशे। आलू वुखारे। उन्नाव के दाने नग दश २। और तीन तोले गुलकंद मिला के श्रोटा के पीवे॥ ॥मतवूरव॥ जो कफज्वर को दूर करै॥ विधि॥ मु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ल्हटी ५ माशे। सोंफ ४ माशे। हरी गिलोय ७ माशे। पीले अंजीर नग २। लाल बूरो २ तोले। औटा के पीवे॥ मतबूरव॥ जो ज्वर और खांसी को दूर करे॥ विधि॥ परशीयावशाँ। खतमी के बीज। खुब्बाजी के बीज महक की जड। सोंफ चार २ माशे। पीपरा मूल २ माशे लाल बूरो २ तोले। औटा के पीवे॥ मतबूरव॥ जो ज्वर और सूखी खांसी को दूर करे॥ विधि॥ महक की जड। बनफशा के पत्ता। गावजुबां के पत्ता। चार २ माशे। बीहदानों २ माशे। लिसोडे के दाने नग १०। सुपेद बूरो डेढ तोले। औटा के पीवे॥

॥ फ़सल एक सौ अठारवीं॥

मतबूरवात मुतफर्की अर्थात् प्रथक २ काढों में॥ मतबूरव॥ जो बिगडे रुधिर को सुधारे॥ विधि॥ नागरमोथा। बावची। चिरायतो। बकायन के पेड के भीतर की छाल। सुपेद चंदन तीन २ माशे। गिलोय। छोटी बडी दोनों कटेरी। त्रिफला चार २ माशे। कुटकी। वायविडंग। हल्दी। वच। सोंठ। मीठो कूट। इन्द्रजौ। भगरा। विजैसार। दो २ माशे। आध सेर पानी में औटावे जब डेढ छटांक रहे तब बिना मले छान ले और मिश्री सुपेद १ तोले मिलाके पीवे॥ मतबूरव॥ जो गलित कुष्ठ और सून्यता। और इसी प्रकार के और रोगों को दूर करे॥ विधि॥ मजीठ। भाऊ को बक्कल। नागरमोथा। हरी गिलोय। सोंठ। हल्दी। दोनों कटेरी। कीलकडी। बंगला पान। वायविडंग। चीतो। देवदार। इन्द्रजौ भांगरो। सितावर। पीली कनेर की लकडी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रफला। चिरायतो। बकायन के पेड को वक्कल।। विजयसार। गुलफरंग। बकुची। सुपेद चंदन। नरम बेर की अंतर छाल। कंजा की अंतर छाल। पित्तपापडो। अतीस। इन्द्रायन की जड दो २ माशे ओटा के पीवे॥ मलबूख॥ जो आतशक अर्थात् उपदंश को दूर करने में गुण दायक और परखा ई हुई है॥ विधि॥ नीम की छाल। कचनाल की छाल। इन्द्रायन की छाल। मुंडी। छोटी कटे री जड और लकडी। पुरानों गुड आधपाव १ सेर पा नी में ओटा वे जब चौथाई बाकी रहे तब छान के। १ शीशी में भर के राखे और जितना प्रकती में भि ले उतना पीया करे॥

॥फसल एक सो उन्नीस वीं॥

मुर्बों में॥ मुर्बा सोंठ का जो गरम और खुश्क है और उदर और पेडू और नरों की खुश्की को दूर क रै और मूत्र को बढ़ावे और बल को बढा वे और कफ ज्वर को गुण करे॥ विधि॥ विना तांतू की सोंठ १ वासन में धर के वालू से बंद करे और उस पर पानी डाले याही प्रकार इक्कीस दिन राखे फिर निकाल के खूब धोवे और किसी नोंकीली वस्तु से खूब गोद के शाहत पानी में ओटा वै जब चाशनी। हो जाय और चाशनी में सोंठ डूबी रहे॥ मुरब्बानी बूका॥ जो दिल और उदर को बल प्राप्त करे औ र चित्त को प्रसन्न राखे॥ विधि॥ नीवू के छिलका। को ओटा वै जब आधो सीज जाय तब निचोड के॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शाल्न तथा सुपेद कंद के संग ओटावै जब चाशनी।
होजाय तब उतार ले ॥ मुरब्बा आमरे को ॥ जो दि
ल और मस्तक और उदर को बलवान करै और
चित्त को प्रसन्न करै और मुनासिब वस्तों के संग अग्नी
को बढावै और कामदेव को प्रबल करै और भोजन को
पचावै ॥ विधि ॥ हरे आमरे जो पकने पर आगये हों
बांस की कीली से गोद के चूने के पानी में आमरों को
डुबा राखे ३ दिन पीछे निकाल के धोडाले और थोडी
सी जोस देके पानी निकाल ले जब पानी को लब लेश
न रहै तब थोडे से घी में भून ले और घी की चिकनाई
दूर करै सुपेद बूरे की चाशनी में डाल दे जब चाशनी प
तली हो जाय तब वा चाशनी में थोडो और मीठो मिला
के चाशनी करै और उसमें आमरे पडे राखे याही प्रका
र जब चाशनी पतली होजाया करै तो उसको गाढी कर
लीया करै ॥ मुरब्बा हर्ड को ॥ जो पेट को नरम करै
और बाइ को दूर करै और उदर को बल बढावै ॥ विधि
॥ हरी हर्ड होय तो अति उत्तम और नहीं तो बडी २ सूखी
हर्ड थोडे दिन पानी में भिजो राखे और वा पानी को बद
ल के और पानी में ओटावै जो छिलका और गुठली
दोनों नरम होजाय पीछे आमरे के मुरब्बा की तरह तै
यार कर ले ॥ मुरब्बा पेठे को ॥ जो गरमी के ज्वरों को
दूर करै और बहुधा करके महीन ज्वर और हौलदिली
और गरमी की मस्तक पीडा को दूर करै है ॥ विधि ॥
पेठे को छील काट के वा को कडो गूदो दूर कर के और
नरम गूदे को जामें बीज होते हैं उसको पीस ले और वा पा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मी को भी मिला ले जो वा पेठे के काटने में निकला हो और छान ले और उसपानी में करडे कतलों। को ओटा वै जब पानी सूष जाय तब अध सूषे कतलों को करके घी में अधभुने करके उन की चिकनाई कपडा से पोंछ के सुपेद कंद की चाशनी में डुबा राषे जब पतली चाशनी हो जाया करै तो आमरे के मुरब्बे की तरह समार लीया करै ॥ मुरब्बा गाजर को ॥ जो कामदेव को बढा वै और चित्त को प्रसन्न करै और निर्मल रुधिर को पेदा करै ॥ विधि ॥ गाजरों को छील के और भीतर की हड्डी दूर करके गाय के दूध में ओटा वे जब पक जाय तब अध सूषे करके पीछे घी में अध कच्ची भूने और सुपेद बूरे की चाशनी में डूबी राषे और चाशनी पतली हो जाय तो फिर वा ही प्रकार गाढी करले ॥

॥ फसल एकसो बीसवीं ॥

मरहमों में ॥ मरहम ॥ सुपेदाव के मान्स को जमावे और घाव सुषावे और घाव की गरमी को दूर करे ॥ विधि ॥ रांग की भस्म छे माशे। सुपेद मोम १ तोले गुल रोगन २ तोले लेके मलहम बना वे ॥ मरहम ॥ सुपेदाव कपूरी कि फोडा के बुरे मुवाद को दूर करके उत्तम मान्स और जमावे ॥ विधि ॥ सुपेद मोम १ तोले। ३ तोले गुल रोगन में मिला के ५ माशे रांग की भस्म। मुरदासंग ४ माशे। कपूर ३ माशे। मिला के मरहम बनावे ॥ मरहम ॥ जो सूजन और फोडा के करडे पने को दूर करै और घाव को आराम करै है ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ विधि ॥ पीरो मोंम । गाय की पिंडली को गूदो । बकरी के पेडू की चरबी एक २ तोले । गुल रोगन ३ तोले मुरगी को अंडा नग १ की जरदी । आंच पर रष के मिला वे और केसर । बाबूना के फूल तीन २ माशे चूरन कर के मिला वे ॥ मरहम ॥ पनीयल । जो घाव और ज़खम् को बिलकुल अच्छा करै और नासूर को दूर करै है ॥ विधि ॥ गूगल ४ माशे । रसोत १ माशे । दोनों को पानी में खूब घोटै पीछे ४ माशे पीरो मोंम मिला के घोट के मल्हम बनावे ॥ मरहम ॥ उसुक के कडेपने और कंठ माला और नासूरों को अत्यंत गुण दायक है ॥ विधि ॥ उसुक । गूगल पाँच २ माशे । ४ तोले सरसों के तेल में घोट के १ तोले पीरो मोंम मिला के आँच पर धरे और राई । समुद्र फेन । जराबंद तवील । गंधक आँमला सार पाँच २ माशे चूरन कर के मिलावै और जिस अस्थान पर फोडा को तुर्त पकाया चाहै वहां पर इसी मरहम में गुल खतमी और उस्के पत्ते एक २ तोले पीस के मिलावे और गुन गुना कर के फोडे पर बाँधे ॥ मरहम ॥ जै आज कि बंदूक के ज़खम् और घाव और नासूर और बुरे २ घाव और बादी के घावों को जो किसी दवा से अच्छे न होते हों उन को अच्छे करै ॥ विधि ॥ तिल को तेल और मीठे कूआ को पानी पाँच २ तोले मिला के १ कस कूट बासन में हाथ से खूब घोटै के मही के तुल्य हो जावे । पीछे फिटकिरी । नीला थोथा । लाल कत्था । सुपेद राल । सवा २ तोले । चूरन क

For Private and Personal Use Only

र के या प्रकार हाथ से रगडे जो मरहम जेसा हो जावे त
व चीनी के वासन में राखे और जब या मरहम को का
म में लावे तब नोंन की पोटली से घाव और जखम
को सेको करे ॥ **मरहम** ॥ वासलीकूं के पुठों के जो
डों के घाव और दूसरे घावों को और ज़खमों को अच्छे
करे और फोडों को नरम करके बेठावे ॥ **विधि** ॥ ३
आधपाव कडवे तेल में ५ तोले पीरो मोंम पिगला के
१ तोले बहरोजा मिला के पीछे २ तोले सुपेद राल । ३
फिटकिरी भुनी । मस्तगी छै २ माशे चूरन कर के मि
लावे और खूब घोट के मरहम बनावे ॥ **मरहम**
॥ जा जब के जा वस्तु ने शरीर में चुभ के फोडा कर
दीया हो वा को निकाले और फोडे के घाव को अच्छे
मान्स से भरे और जखमों को अच्छा करे ॥ **विधि**
॥ सुपेद राल १ तोले । मस्तगी । पीरो मोंम डेढ २ तो
ले । ४ तोले सरसों का तेल मिला के त्यार करे ॥ **म
रहम** ॥ खमीर के फोडा को पका के तोडे जो नश्त
तर लगाने की कुछ प्रयोजन न रहे ॥ **विधि** ॥ पप
डीया खार तीन माशे । साबन छै माशे । गेंहूं के चून
को सूखो मावो नों माशे । सूखो चूनो सवा तोले । क
बूतर की वीट । मुरगा की वीट ढाई २ तोले । थोडो क
वो तेल मिला के मरहम बनावे ॥ **मरहम** ॥ दाष ।
लो के हकीम बुकरात को बतायो है और बुकरात
के माल जात में याके बहुत से गुण लिखे हैं ॥ सूज
न और फोडा और कडी गिलटी को पका के तोड
के अच्छा करे और कंठ माला को अच्छा करे औ

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र गरमी की सूजन की पीडा और पुठ्ठों के कडे पन को दूर करै ॥ विधि ॥ खतमी के बीज। ईसबगोल मेथी। अलसी डेढ तोले रात को पानी में भिजो के प्रात काल गाडो २ लुआब प्रथक २ कर ले और ज़ैतून वा सरसों को तेल पुरानों १० तोले में २॥ १ तोले मुरदासंग चूरन कर के मिला वै और आंच पर धर के १ लकडी से हला तो रहे जब गाडो कालो हो जाय तब लुआबों को मिला के मरहम जेसो प कावे पीछे अंगूर की लकडी की राख और भट बांस की चूरन छे २ माशे। फिटकिरी। जंगाल। ती न २ मासे चूरन कर के मिलावे ॥ मरहम ॥ शा हत कि फोडा और कडी सूजन को तोडे और साफ करै ॥ विधि ॥ शाहत को औटा के गाढो करे औ र ४ भाग फिटकरी अर्थात् चौगुनी फिटकिरी मिला वै ॥ मरहम ॥ मिश्री जो मिश्रानी वैद्यों ने बनाई कि पुराने और कडे घाव को दूर करै ॥ ॥ विधि ॥ सिरका और शाहत पांच २ तोले। १ मिला के औटा वै जब गाडो हो जाय तब छे मा शे जंगार १ तोले सोंना माषी चूरन कर के मिला वै ॥ मरहम ॥ सिंदूर जो जषम और घाव को भरदे ॥ विधि ॥ तिल को तेल ४ तोले। सुपेद मोंम २ तोले पिग ला के। षपरीया छे माशे। सिंदू र। लोबान सात २ माशे चूरन कर के मिलावे ॥

॥ फसल एक सौ इक्कीसवीं

खास मरहमों में ॥ मरहम ॥ जो कान के भीत

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र ले घावों को अच्छा करै ॥ विधि ॥ खालिस सिरका डेढ तोले। और शहत दो तोले। मिला के ओटा वै जब गाढो हो जाय तब जंगाल छै माशे महीन पीस के मिला वै ॥ मरहम ॥ सफरजल। के नाक के घाव। और दूसरे पुराने घावों को बरो बर करै ॥ विधि ॥ १ बनफशा के फूल नों माशे। बीहदानों छै माशे। थोडे पानी में ओटा वै लुआब निकाले और छान के दो तोले गुल रोगन और १ तोले सुपेद मोंम मिलाके मरहम बनावै ॥ अथवा ॥ नागर मोथा। माजू फल। केसर तीन माशे। गुल रोगन दो तोले। सुपेद मोंम १ तोले। लेके मरहम वनावै ॥ मरहम ॥ के होटों के फट जाने और सूषे सलारों को दूर करै ॥ विधि ॥ सुपेद मोंम १ तोले। तिल को तेल दो तोले। पिगला के। सुपेद कत्था। बंग। गेंहूं को सत्त। हस्थी माजू फल। तीन २ माशे। चूरन करके मिलावै ॥ मरहम ॥ जो होट की बबासीर को गुण करै ॥ विधि ॥ लोहे को मैल मुर्दासन। बंग। केसर। फिटकिरी। तीन २ माशे चूरन करके। मोंम १ तोले। २ तोले गाय के घी में गला के मिलावै ॥ मरहम ॥ जो गुदा फट जाने को अच्छा करै ॥ विधि ॥ सुपेद मोंम दो तोले। मेंहदी के पत्ता नों माशे। गुल रोगन ४ तोले। लेके मरहम बनावै ॥ मरहम ॥ कपूरी जो गुदा के सोथ और फट जाने को दूर करै ॥ विधि ॥ सुपेद मोंम १ तोले। गुल रोगन तीन तोले। मुर्दासंग ३ माशे। गेंहूं को सत्त। छै माशे। अफीम २ माशे लेके मरहम बनावै ॥ १

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥मरहम॥ जो गुदा की खुजली और पीड़ा को गुण करै॥ विधि॥ मकोय। छिली मसूर। गुलाब के फूल। बराबर के लेके चूरन कर के हरे धनिये के रस में मिला के पका वै और गुल रोगन मिला के मरहम बनावै॥ मरहम॥ जो गुदा के भगंदर को गुण करै॥ विधि॥ सुपेद मोम १ तोले। सरसों को तेल ४ तोले। मुर्दासिंग। गुल नार। आंवा हल्दी। दम्मुल अखवेन। फिटकिरी भुनी। सुर्मा। बारह सीगा की भस्म दो २ माशे॥ मरहम॥ जो इन्द्री के जषम को गुण करै॥ विधि॥ मोम दो तोले। गुल रोगन ४ तोले में गला के। छै माशे तीला थोथा घोट के मिला के मरहम बनावै॥ मरहम॥ राल। जो इन्द्री के घावों में। ऐसो कोई नहीं है और परचायो है॥ विधि॥ सुपेद मोम २ तोले। ५ तोले गुल रोगन में पिगला के। सुपेदा १ तोले। बंग। दम्मुल अखवेने। मुर्दासंग। तीला थोथा। गुलनार। काली मिर्च। छै माशे चूरन करके महीन मिलावै और घाव की नित्य मेंहदी के पत्तों के पानी से तथा चोब चीनी के पानी से धोके या मरहम को फायो लगावै॥ मरहम॥ सिंग रफ। जो अंडको षु और कंठमाला और बड़े फोड़ा के घावों को दूर करै॥ विधि॥ मुर्दासंग। गंधा विरोजा छै माशे। लोबान। उशक। बबूर को गोंद। सिंग रफ नों २ माशे मस्तगी नों माशे। थोडो सिरसों को तेल मिला के घोटै॥ मरहम॥ के इन्द्री विना राध और राध युक्त के तरको सुषावै और अच्छा करै॥ विधि॥ लोहे को मेल।

For Private and Personal Use Only

मुर्दासंग छै २ माशे। दोनों लेके सिरका में घोट कै अ
व सूष जाय तव दम्मुल अखवेन नों माशे। कागदकी
राष। भुनी फिटकिरी। छै २ माशे। ४ तोले गुल रोगन मि
ला के मरहम वनावे ॥ मरहम ॥ जो इन्द्री और अंड
कोषा के घावों के दूर करने में परचाई हुई ॥ विधि
॥ सुपेद मोम १ तोले। वनफसा को तेल तथा वादाम
को तेल। ४ तोले में पिगला के। मुर्दासंग पीरो और सु
पेद। वंग। भुनी फिटकिरी। छै २ माशे। १ नग मुरगी के
अंडा की सुपेदी मिला के घोटे ॥ मरहम ॥ जो आत
शक की फुनशी और घाव को १ दिन में सुषावै परचा
ई हुई है ॥ विधि ॥ गोल चोवचीनी दो माशे। शिंगर
फ नों माशे। तीला पोथा धुलो १ तोले। गजी के कप
डा की भस्म जा में केई वेर पारो छान्ने से कारो पड ग
यो होय ३ माशे। मुरगी के अंडा नग २ की जरदी जिस
को भूभल में भूना होइ। और घी इतनों जामें मरहम
वन जाय मिला के घोटे ॥ अथवा ॥ जंगाल। पारो
एक २ तोले। लोवान। एलूआ छै २ माशे। गाय को घी
छै तोले में घोट के मरहम वनावे और लगावै तो आ
तशक जाय ॥ मरहम ॥ जो सुपेद दाग और छीप
को दूर करै ॥ विधि ॥ तांवे की भस्म। आमला सार
गंधक। पत्थर को चूनो। चितावर। अरावंद। सव वरा
वर लेके चूरन करके तेज सिरका में घोल के २० दि
न तांई धूप में राषे पीछे फिर घोट के काम में लावै
॥ मरहम ॥ के ठेरे तथा विना ठेरे पीठ के वडे फो
डा को अच्छा करै ॥ विधि ॥ सीसे की भस्म। धुले

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लीला थोथा। छै २ माशे। रूंसव गोल १ तोले को लुआ व और थोडो गुल रोगन मिला के मरहम वनावे ॥ १ अथवा ॥ सीसा के खरल मे ।गेरू। सिरका डाल के घिसे जव कालो पड जाय तव उस्में थोडा गुल रोगन मिलाके घिस के मरहम वनावे ॥ मरहम ॥ जो ववा सीर के विशेष दर्द को गुण करे ॥ विधि ॥ करम- ल्ली नग १ पानी में औटा के जव घुल जाय तव पीसे। और मुरगी को अंडा नग १ की सुपेदी और जरदी। गु ल रोगन ३ तोले। अफीम २ माशे सव को आंच पर ध र के मरहम वनावे ॥ मरहम ॥ जो शालजम के घा वों के भरने और सोथ और केडा पन के दूर करने में तु ल्य नही रष ली है ॥ विधि ॥ आध पाव गुल रोगन में शालजम ५ तोले टूक २ कर के भूने जव शालजम ज- ल जाय तव गुल रोगन को छान के दो तोले सिंदूर डा ल के नीम की लकडी से खूब घोटे और छै माशे क पूर मिला वे ॥ मरहम ॥ जो वढती मान्स को काटे- और दुष नहीं करे ॥ विधि ॥ जमाल गोटा दो तोले। जंगाल १ तोले। दोनों को खूब पीसे और वढे मान्स प र लगा के कोई मरहम को फोआ उस्पर राषे ॥ काली मरहम ॥ जो सव प्रकार के फोडों को पका के तो ड़ता है और मवाद निकाल के वुर्त अच्छा कर दे- ता हैं और घावों को सुषा ता हैं ॥ विधि ॥ तिल को तेल ५ तोले। सुपेदा काशगारी दो तोले प्रथम सुपेदा को सूषो घोटे और तैल में मिला के लोहे के वासन- में भर के आंच पर राषे और नीम की लकडी से घोटे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जब ऐसो गाढो होजाय जो १ बूंद पानी में डाले वह बूंद बंधजाय पानी में न मिले तब आंच पर से उतार ले॥ ॥मरहम॥ समुद्रफेन। मिर्ज़ा हकीम गीलानी नें अपनी पुस्तकों में घावों के सुषाने और जषमों को अच्छा करने में तारीफ लिखी है॥ विधि॥ गाय को घी ३ तोले में १ तोले सुपेद मोंम डाल के पिगलावै पीछे सिंदूर। मुर्दासंग। समुद्र फेन एक २ तोले। नीला थोथा छै माशे खूब घोट के मिलावै॥

॥फसल एकसो बाईसवीं॥

माजूनात अर्थात् पाकादिक जो सब प्रकार के रोगों को दूर करने और ओडों को प्रबल करने में॥ माजून॥ नजाह के वात रोगों को और बावलेपने को और मिरगी को दूर करै और मस्तक की सफाई करै है॥ विधि॥ काली हर्ड। वहेडा। आमला। एक २ तोले। बिसफायज। फिस्तकी। अमर वेल। उस्तखदूस। छेरनदार। सुपेद निसोत। छिली हुई ढाई २ तोले। सारी कूं नरम कूट छान के छै माशे। तिगुने शहत में पाक बनावे। ॥माजून॥ मोंहमद जकरीया की बनाई हुई है॥ जो याको सेवन करै तो मिरगी और लकुआ और पक्षा घात को दूर करै॥ विधि॥ अमरबेल। उस्तुखदूस। बिसफायज। फिस्तकी। अकरकरा सब बराबर लेके सिकंजबी अनसाली तिगुनी वा तिगुनी मुनका में माजून बनादे॥ माजून॥ अमरबेल जो मस्तक और सब शरीर के वाय कफ को निकाले और हौलदिली और बावरे पन को दूर करै॥ विधि॥ अमरबेल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विसफायज। सनाय मक्की। गारीकूं। सुपेद निसोत। ए। क २ तोले। गावजुवां। उस्तुखदूस। बिल्ली लोटन। नों २ माशे। वायविडंग। राम तुलसी। लाजवर्द छे २ मासे। मीठा कूट ३ माशे। तिगुने शहत में पाक बना ले॥ माजून॥ जवीव जो मिरगी को दूर करे॥ विधि॥ जवा हर्डे। बडी हर्डे। बहेडो। आमले। उस्तुखदूस। एक २ तोले। ऊदशा लीब छे माशे। अकरकरा ४ माशे। मुनक्का पाव सेर में माजून बनावे॥ अथवा॥ बडी हर्डे। सुपेद निसोत। सोंठ। मस्तगी। ऊदशा लीव एक २ तोले। उस्तुखदूस। काली हर्डे। आमले दो २ तोले। दालचीनी डे ढ २ तोले। मीठे बादाम रोगन में मकरी के तिगुने शहत में पाक बनावे ४० दिन पीछे काम में लावे॥ माजून। जो विसमृती को विशेष गुन दायक है॥ विधि॥ लोबान। बच सुपेद। ढाई २ तोले। सोंठ। मिर्च। सवा २ तोले। लेके तिगुने शहत में पाक बनावे॥ माजून। विसमृती को दूर करे और दिल और माथे को बल बढ़ावे॥ विधि॥ दालचीनी। बालछड। हुवविलसां। ऊदशा लीब। मस्तगी। केसर। लोबान। कोयल की जड। दरूनज अकर वी। नागर मोथा। दोनों बहमन। बच। उस्तुखदूस। कबाव चीनी। नेत्रबाला तीन २ माशे। जंगी हर्डे। गिरी गोला की। फंदक की मीगी छे २ माशे। रेशम कतरके। मुनक्का एक २ तोले पीपरा मूल। सोंठ। काली मिर्च। दो २ माशे। लेके दूनों सुपेद बूरो और इतनों शहत मिला के पाक बनावे॥ ॥ माजून॥ पूनिस। जो बुद्धि को तीव्र करे विस्मृती

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को दूर करै॥ विधि॥ तज। वच। जरावंद। दालची
नी। मस्तंगी री २ तोले। मीठा कूट। ततली के वीज।
सुपेद मिरच तीन २ तोले। मिलाये। अमर वेल। गारी
कू एक २ तोले। तिगुने शाहत में पाक बनावे॥ मा
जून॥ जो होलदिली को दूर करै॥ विधि॥ आम
ले। विल्ली लोटन। जंगी हर्ड। सुपेद वंशलोचन। जा
यफल। तेजपात। लौंग। जाविन्त्री। छोटी इलायची
के दाने। अगर नों २ माशे। विजोरे को छिलका। चाह
रवताई। पिस्ता के छिलका एक २ तोले। चोगुनी सुपे
द मिश्री मिला के अनार को रस तथा गुलाब जल तथा
जरिष्क के पानी अथवा नींबू के रस की चाशनी में
मिलाके पाक बनावे॥ अथवा॥ यह माजून हकीम
सैयद इस्माईल जिर्यानी की बनाई हुई जो होल दि
ली को गुण करै॥ विधि॥ कावली हर्ड ४ तोले। आ
मले। गावजुवाँ के पत्ता छै २ तोले डेढ़ सेर पानी में औ
टा वै जब आधो पानी रहे तब मल के छान ले और
पावसेर शाहत। और आध सेर सुपेद बूरे मिला के चा
शनी करै और विल्ली लोटन। विजोरे को छिलका
वहमन। नरकचूर। तुखम् वलंगा। राम तुलसी। बाल
छड। एक २ तोले। लोंग। जायफल। तज। केसर तीन २
माशे। मस्तगी। छोटी इलायची के दाने। दरूनज अ
करबी छै २ माशे। चूरन करके मिलावे॥ माजून सी
र॥ अर्थात् लहसन पाक जो लकुआ और अर्धांग
वात। और कंपन वात और वाय की ववासीर। छीप औ
र सुपेद दाग। खून रोगन को गुण करै और कफ को दूर करै

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ओर उदर को प्रबल करै ओर भूष लगावै ओर ओर अग्नि को वढावै ओर शरीर की कांति ओर रूप को वढावे ओर वुद्धि को अति गुण दायक है॥ विधि॥ लहसन। को छील के २॥ पाव। गाय को दूध आध सेर में पकावे जव दूध सोष जेय तव सव को पीस के तीन पाव शहत ओर घी में मिला के पकावे जव पानी सूष जाय तव जावित्री। जायफल। काली मिर्च। मस्तगी। छोटी ओर वडी इला। यची के दाने। जवा हर्ड। अगर। दाल चीनी। सोंठ। एक २। तोले। केसर छै मासे कूट छान के मिला वै॥ माजून कुचला॥ जो अफीम को अभ्यास छुडा ने ओर जोडों की सिथलता दूर करने ओर अर्धांग वाय ओर सीत के। रोग ओर जोडों की ओर जांग की पीडा ओर पेशाव की विशेषता को अति गुण दायक है॥ विधि॥ कुचला। छै तोले गाय के दूध में भिजो के छिलका दूर करै ओर भ हीन पत्र कतर के सुखा के चूरन करै ओर गुलगावजुवां। ४ तोले। छोटी इलायची के दाने। नर कचूर। सकाकुल। मिश्री। सुपेद चंदन। आमरे। काली हर्ड। दो २ तोले। अग र। लोंग। एक २ तोले। उस्तुखदूस। चिलगोजा की मींगी वनीरा। गोला की गिरी तीन २ तोले। तिगुने शहन में पाक मनावे॥ माजून वच॥ जो स्वास की आद को गुण करै॥ विधि॥ वचे। हींग। सोंठ। सोंफ वरा वर लेके तिगुने सहत में माजून वनावे॥ माजून॥ हकीम नाषस पूना मी ने रुधिर थूक ने ओर षांसी। फेफडे के घाव ओर। छाती में राध जमजाने को पहलू के जलन को भोजन। वमन। विसूची। संग्रणी आंतों के घाव ओर नरों के॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रोग और वेपीड़ा पेडू फूलजाने के रोग को और कफ ज्व। रादिकों को आने के १ घडी पहले देनी और शरीर की कृशता और विष खाये को और जहरी जानवरों के डुंक। मारने और काठ खाने के विष दूर करने को अत्यंत गुण करता है ॥ विधि ॥ शुद्ध वहरोजा। सतारस डेढ़ तो। ले। पाव सेर शहत में मिला के आँच पर धरै जब घु। लजाय तब छान के। दालचीनी। मीठे कूट। मिर्चा पीपल। एक२ तोले। आसवच छै मासे। अफीम दो माशे मिलावे ॥ माजून ॥ चंदन जो वावलेपन और माथे को गरमी चढ़ जाने उदर ओ भड़ी और योनि की गरमी को दूर करै ॥ विधि ॥ तीन पाव सुपेद वूरे की चाशनी वनावै। और नौ तोले सुपेद चंदन घिस के। भीजी इमली को पानी २० तोले। और डेढ़ पाव खट्टे अनार को रस मिला के चाशनी करै और सुपेद वंशलोचन। अगर एक २ तोले। केसर छै माशे चूरन कर के मिलावै ॥ माजून ॥ वुकरात जी कलेजा और उदर और पेडू और इन्द्री और क्षुधा इन सव के वल को वढ़ावै और कफ वाय और। अजीर्ण को और मूंह से लार वहने को दूर करै और। मूंह को सुगंधित करै और पेट के कीडों को मारै ॥ वि॰ ॥ अजमायन। गाजर के बीज। सोंठ ढाई२ तोले। केसर। विसफायज। पाँच२ माशे। अजमोद की जड़१ तोले। तिगुने शहत में मिलाके पाक वनाले ॥ माजून ॥ मोंह मद जकरया की वनाई हुई जो मस्तक उदर और इन्द्री को वल प्राप्त करै और शरीर की कांति वढ़ावै और भोजन पचावै और मूंह को सुगंधित करै और मसूड़ों को।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मजबूत करै और वाय को दूर करै और नरों को पाकक
रै और इन्द्री को दृढकरै ॥ विधि ॥ अजमोद। अज
मायन। सोयाके वीज। गाजर के वीज। गंदना के वीज।
ढाई २ तोले। मस्तंगी। लोंग। तज। अकरकरा। नेत्र वा
ला। जाविञी। अगर। पाँच २ माशे। केसर ३ माशे। क
स्तूरी १ माशे। मुनक्का आध पाव पीस के। वूरो सुपेद डे
ढ पाव के संग पकावै जब पक जाय तब या में वह चूरन
मिलावै ॥ माजून ॥ मलूका जो इन्द्री और उदर औ
र और क्षुधा को वल वढावै और १ स्त्री प्रसंग में वल
प्राप्त करै ॥ विधि ॥ जायफल। लोंग। जाविञी। इंद्र
जो। आजरवर की जड। सोंठ। दाल चीनी। मस्तंगी। केस
र। अगर। एक २ तोले। छोटी इलायची के दाने। लोवा
न। छडीला। छै २ माशे। सुपेद कंद। खालिस प्राहत।
पोंन २ पाव। आध पाव गुलावजल में चाशनी करके मि
ला वै ॥ माजून ॥ काली। जो पेचश और पुराने दस्तों
को दूर करै ॥ विधि ॥ अफीम। अजमायन खुरसानी
केसर। नेत्र वाला। अजमोद। अनेसू। वाल छड। तज।
गेरू सव वरा वर लेके तिगुनी सुपेद मिश्री में पाक वना
वै ॥ माजून मुकल ॥ अर्थात गूगल पाक जो खू
नी और वादी ववासीर और आंतों की वादी और गुदा
की पीडा को दूरकरै ॥ विधि ॥ गूगल ४ तोले। मुनक्
का। अंजीर। दो २ तोले। पानी में पीस के पका वै। और
जवा हर्ड। आमले। वहेडे। गुलाव के फूल। असवंद।
के वीज। गंदना के वीज सात २ माशे। चूरन कर के।
मिलावै ॥ माजून खुवसुलहदीद ॥ जो ववासी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र के रुधिर को बंद करै ॥ विधि ॥ सुधी लोहे को मेल ।
१ तोले । काली हुई । बहेडे । आमले । माई । नों २ माशे । वा
लछड । अजरबरा । नागर मोथा । छै २ माशे । दूनी सुपेद मि
श्री मिला के पाक बना वै ॥ माजून ॥ जो हाथ पांव मूं ह
पर सूजन आने और मस्तक और जलंधर और उदर औ
र सब जोडों के सीत रोगों के गुण दायक है ॥ विधि ॥ दाल
चीनी । कंब्र की जड की छिलका । विशफायज । अजवर
डेह २ तोले । केसर १ तोले । बालछड तीन तोले । नेत्र बाले
रेवत चीनी । मीठी कूठ । मजीठ । नागर मोथा । एक २ तोले
चूरन करके रोगन बाबूना में मकरी के तिगुने शाहत में
मिलावे ॥ माजून ॥ जो गठीया बाय और सूल को गुण
करें ॥ विधि ॥ शोरनजान दो तोले । सनाय मक्की १ तो ।
जीरह । कमानी । पीपरा मूल । नों २ माशे । तिगुने शाहत
में पाक बनावै ॥ माजून मसीही ॥ पीठ और पांवों
की पीडा को गुण करै और वमन लावै और उदर को बल
दायक करै ॥ विधि ॥ गुलाब के फूल । नागर मोथा । तत
ली । अकरकरा । लौंग । बालछड । मस्तंगी । नर कचूर ।
केसर । दोनों इलायची । जायफल । सब बराबर और स
ब से तिगुणी कंद और शाहत लेके पाक बनावै ॥ मा
जून ॥ अर्थात् चोब चीनी पाक जो सीत विकार और ग
ठीया और बात आध और जोडों की पीडा जो बहुधा कर
के उपदंश से होय ताको अत्यंत गुण दायक है ॥ विधि
॥ चोब चीनी नों तोले । लौंग । जायफल । जावित्री । गुला
ब के फूल । केसर । छोटी इलायची के दाने । नर कचूर ।
कुलीजन । नागर मोथा । चार २ माशे । दाल चीनी । का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ली मिर्च। मस्तंगी। मीठेश्री रनजान। वूजीदाँने। सनाय
इंदरजौ डेढ तोले। सोंठ। पीपरा मूल। अकरकरा। निर
विसी नों २ माशे। तिगुने शहत में पाक बनावे॥ मा
जून॥ आवेद हकीम अर्मदुदीन महमूद की बनाई है
ओ पाको सदैव खाय तो कई २ रोग जेसें छीप सुपेद दाग
अर्धांग वात। लकवा। बायशूल। नेत्रों की कलोस।
और कान की कुरीं को दूर करे और १ स्त्री के गर्भ रहै॥
॥ विधि॥ लोंग। दालचीनी। तेजपात। जायफल।
काली हर्ड। मिर्च। पीपर। एक २ तोले। सोंठ। वहेंडे एक
२ तोले। आमले ३ तोले। अजमायन ४ तोले। कालो
जीरे ४ तोले। चूरन कर के सिरका की पुट देके बराबर
की मिश्री की चाशनी में मिलावै॥ माजून फलास
फा॥ यह इन्द्र मारवस हकीम की बनाई है ओ दिल औ
र पचाव। और क्षुधा और इन्द्री को बलवान करै और
कफ और विस्मृती और मूत्र कृच्छ्र। और पीठ के दर्द औ
र पेडू और जोडे और दांत इन की पीडा को दूर करै औ
र वृद्धों की प्रकती के माफिक है॥ विधि॥ त्रकुटा।
दालचीनी। आमले। वहेडे। चीतो। जरवंद मदहरज
सालिब मिश्री। चिलगोजा की मींगी। बाबूना की जड
गिरी एक २ तोले। बाबूना के बीज। लोहे की मेल छै २
माशे। मुनक्का तीन तोले ढाई २॥ गुने शहत में बनावे

॥ फसल एकसौ तेईसवीं॥

माजूनात जी कलेजा और पेडू और नरे और पांव की
अंगली ओं की पीडा ओं को गुणदाता पाकों में॥ मा॰
जून गुल॥ अर्थात् गुलाब पाक जो कलेजा के सो

य को दूर करै ॥ विधि ॥ गुलाव के फूल १ तोले। सो
सन की जड डेढ तोले। रेवन-चीनी। धुली लाष छै
२ माशे। तज। केसर। तीन २ माशे। आध पाव शहत
खालिस सिरका छटाँक भर में मिला के चाशनी क
र के मिलावे ॥ माजून रेवंद ॥ जो कलेजा के सोथ
की पीडा और उदर और गर्भाः की भी पीडा को गुण दा
यक है ॥ विधि ॥ रेवत चीनी। वच। अजमोद की ज
ड। सौंफ। अनेसूं। अजमायन। हल्दी। धुली लाष। १
सब बराबर लेके तिगुने शहत में पाक बनावे ॥ मा
जून ॥ सराफयून के वेटे की जो पेडु और नरेन की
पथरी को तोड के निकाले ॥ विधि ॥ वीछू की भ
स्म १ तोले। सोंठ। ४ माशे। सुपेद मिर्चे। काली मिर्चे
आठ २ माशे। काक नज डेढ तोले। सीसे की भस्म ३
माशे। मुरगी के अंडा के छिलका की भस्म जामें से
बच्चा निकल पडा हो। हजरुल यहूद। पोदीना। छै
२ माशे तिगुने शहत में पाक बना वै और काले चा
ना। वडे गोषरू सात २ माशे को काढो या पाक को षाय
के ऊपर से पीवे ॥ माजून ॥ हजरुल यहूद जो पे
डू और मरों की पथरी को गिरावे ॥ विधि ॥ मीठे
घीया के बीजों की मींगी। षीरा ककडी के बीजों की
मींगी। षरबूजा के बीजों की मींगी। काकनज। डेढ
२ तोले। हजरुल यहूद नौ तोले। तिगुने शहत में
माजून बनावे ॥ अथवा ॥ हजरुल यहूद १० तो
ले। काकनज। नेत्र वाला। षर बूजा की मींगी। गा
जर के बीज। अजमोद। करड की मींगी। अनेसूं। १

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तर बूज के बीजों की मीगी। मीठे घीया के बीजों की मीगी। बड़े षीरा के बीजों की मीगी। एक २ तोले। ले के तिगुने शाहत में पाक बना वै ॥ माजून ॥ काक नज अर्थात् पटकोआ जो नरे और पेडु के घाव और मूत्र में रुधिर आने को गुण दायक है ॥ वि॰ ॥ अजमायन षुरासानी। अजमोद। सोंफ। चार २ माषे। षर बूजा के बीजों की मीगी। चूका के बीज। चिलगोजा की मीगी। कतीरा। मीठे बादाम की मीगी। फंदक की मीगी। एक २ तोले। अफीम। केसर दो २ माषे। काकनज ३ तोले। लेके तिगुने शाहत में पाक बनावे ॥ माजून ॥ मसिकुल बोल के जलवी खाने बनाई है जो चिनग और स्व प्न में पेसाव ही आने और वीर्य के बहने और तरी और पवन को दूर करै ॥ विधि ॥ काली हर्ड। जवा हर्ड। गाय के घी में भून के छै २ माषे। कहरुबा १ तोले। सुपेद कत्था। जुफत बलूत। हबुल्लास। सालब मिश्री नों २ माषे। लोबान ३ माषे। चूरन कर के बड़ी और लाल मुनक्का २ तोले। गुलाब जल में औटा के पीस के मिला वै ॥ माजून ॥ जो पांव की उंगली यों में कफ कर के पीडा हो ताको गुण करै ॥ विधि ॥ बडी हर्ड। सोरन जान। अकरकरा सवा २ तोले। सुपेद मिर्च ५ माषे। कालो जीरो दो तोले। रासन १ तोले। सोंठ ७ माषे। अफीम दो माषे शाहत ढाई २॥ सुनो मिला के पाक बना वै ॥ माजून ॥ जो पांव की उगलीयों के दर्द को गुण करै ॥ विधि ॥ सोरन जान मीठो डेढ तोले। कनेर की जड। पीपरा मूल। काली मिर्च। कालो जीरो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाँच२माशे। नौंसादर। समंदरफेन। सिलारस तीन२ माशे। सुपेद निसोत। शर्इ। सोंठ सात२माशे। तिगुने शहत में पाक बनावै ॥ माजून ॥ यहीया के बेटा ख्वालद के की बनाई है ओपांवकीउंगली और जोड़ों की पीड़ा को अति गुण दायक है ॥ विधि ॥ नेत्रवाला। सोंठ। कालोजीरो। पीपर। मीठोशोरनजान। छै२तोले। सनाइ ३ तोले। तिगुने शहत में पाक बनावै ॥

॥ फसल एकसो चोवीसवीं ॥

माजूनात। मुकद्दी। मुवह्ही। मुगल। जमनी। अर्थात। ताकत देने वाले चित्त प्रसन्न करने वाले और बीर्य को गाढो करने वाले पाकों में ॥ माजून ॥ मूसली॥ जो इन्द्री को प्रवल करै और बीर्य को सुधारै यहाँ ताई जो बलहीन को भी गुण करै ॥ विधि ॥ सालव मिश्री। दोनों मूसली। सेमर को मूसरा। काम राज। सोंठ। डेढ़२तोले। सलजम के बीज। सोया के बीज। गाजर के बीज। प्याज के बीज। मिर्चे। पीपर। आठ२माशे शहत थूरो लालपाव२सेर। लेके माजून बनावै॥ मात्रा नौं माशे तथा १तोले खाई। और घटाई नखाय ॥ माजून ॥ दालचीनी॥ जो कामदेव बढ़ाने में परखी हुई ॥ विधि ॥ दालचीनी १॥ तोले। मीठो कूट। सोंठ। सुपेद मिर्चे। दोनों गोषरू। तेजपात। नेत्रवाला। लौंग। मस्तंगी। छोटी इलायची के दाने। मूली के बीज। सलजम के बीज। छै२माशे। छिले सुपेद तिल मीठे बादाम की मीगी। पिस्ता। चिलगोजा की मीगी। सालव मिश्री। शाका कुल मिश्री। दोनों बहमन। १६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अगर। एक२ तोले। बराबर की सुपेद मिश्री और दू
ने शाहत में पाक बनावै॥ माजून॥ सालब। अर्था
त। सालम पाक जो इन्द्री को प्रबल करै और वीर्यको
गाढ़ो करै॥ विधि॥ सालब मिश्री ५ तोले। शाका
कुल मिश्री ३ तोले। अकरकरा। कुलीजन। समंद
र सोष। भिलाये की मींगी। असगंध एक२ तोले। पी
पर। भरूंगी। हालम के बीज। जायफल। सोंठ। दों
नों बहमन। दोनों तोदरी। छे२ मासे। छिले सुपेद ति
ल। कोंच के बीजों की मींगी। गाजर के बीज। एक२
तोले। जावित्री। केसर तीन२ माशे। सब की बराबर
सुपेद कंद और तिगुने शहत में पाक बनावे मात्रा ३
माशे से छे माशे नांईं संजा सवेरें षाया करै॥ माजून
॥ लूलवी अर्थात् मोती पाक अति गुण दाता जाली
नूस की बनाई हुई है जो इन्द्री के दृढ करने में बडे२ गु
ण राषै और १ स्त्री प्रसंग के समय ५ माशे षाके थोडो
सो गरम पानी पीले॥ विधि॥ अबींधे मोती। मूंगा।
पांच२ माशे। अनेसूं। सुपेद बहमन दश२ माशे। का
कनज। बूपूक पेचां के बीज चार२ माशे। फिकाह। अ
अरवर। नागर मोथा। माई। लज। दालचीनी। नेत्र
बाला। मस्तगी। तीन२ माशे। बबूर को गोंद। कती
रा दो२ माशे। बराबर के शहल में पाक बनावे॥ मा
जून॥ मिश्री जो मिश्र के वैद्यों नें बनाई है इन्द्री के
दृढ करने में तुल्य नहीं राषती है॥ विधि॥ गाजर
के बीज। मूली के बीज। सलजम के बीज। शाका
कुल मिश्री। सालब मिश्री। पीपरामूल। पीपर।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाविन्नी।अकरकरा।जायफल।मस्तंगी।एक तोले।लौं
ग दो तोले।सोंठ। ४चार तोले।चूरन कर के।मुरगी के
अंडा नग ४० कीजरदी थोड़ा जोश देके हाथ से मल
के सुपेद वूरे की चाश्नी में मिलावे मात्रा नौं माशे
से तोले भर ताईं की॥ माजून॥ वल दायक जो
चित्त को प्रसन्न करै और मस्ती लावे है॥ विधि॥
दोनों वहमन।शाका कुल।मिश्री।दाल चीनी।वू
जीदां।जाविन्नी। कवाव चीनी। कुलीजन।इंद्रजौ
।दोनों इलायची के दाने।वाल छड़।एम तुलसी।
लौंग।मस्तंगी।तेज पा०.नौं २माशे।सालव मिश्री
तीन ३ तोले। अग ।हालों के वीज।छै २ माशे।भां
ग चार तोले।मीठे वादाम की मीगी।अर५ रोट की
मीगी छै २ तोले।वूरा और शहत दूनों सव लेके चा
श्नी करके मिलावै। मात्रा छै माशे से लेके नौं मा
शे तांईं की है॥ माजून॥ रेग माही के अर्मनुलाख्वा
हकीम मेरे भाई नें वनाई है जो इन्द्री को वल देनें में
और वीर्य को गाढ़ा करने में याकी वरा वर कोई न
हीं है॥ विधि॥ रेग माही।इंद्रजौ। सुपेद पोस्त के
दाने।नर कचूर।सुपेद चंदन।गोला की गिरि।वा
दाम की मीगी।पिस्ता।चिलगोजा की मीगी।अख
रोट की मीगी। मुनक्का।काले तिल छिले हुये।दो
तोले।प्याज के वीज।सलजम के वीज। कौंच के
वीजों की मीगी।हालम के वीज।माई।असवंद के
वीज।गाजर के वीज।मस्तंगी।नागर मोथा।अगर
तेज पात।विजोरे को छिलका।चीतो।सोया के वी

For Private and Personal Use Only

ज। मूलीके बीज। दोनों तोदरी। दोनों मूसली। एक २ तोले। सिलाजीत। अकरकरा। लोंग। जावित्री। जायफल। काली मिर्च। दालचीनी। नौं २ माशे। शहत। और सुपेद बूरो सब से दूनों लेके पाक बनावै मात्रा छै माशे से तोले भर तांई की॥ माजून मसीहा॥ अत्यंत इन्द्री और पीठ कौं बल बान करै और भोजन को पचावै है॥ विधि॥ अकरकरा। १॥ तोले। जायफल। नग ३। भांग। बादाम रोगन में भकरे के २॥ तोले तिगुने शहत में पाक बनावे॥ माजून भिलावे की॥ जो इन्द्री को बलबान करै और स्थंभन में तुल्य नहीं रखै और वृद्धों को तरुणों का सा बल प्रप्त करै या को जाड़ों में काम में लाना उचित है॥ विधि॥ भिलावे सेर १ आधे २ टूक कर के १ हांडी मे भर राषै और वा हांडी में बहुत से छिद्र करदेओ उन छिद्रों मेसें भिलावे का शहत निकल सके और हांडी का मोंह चीनी से थाम के एक देगची में राषै और देगची को गड्डे में धरै और हांडी को आरने कंडों से बंद करके जलावै जब वे कंडा जल जाय। तब और कंडा धरके आंच दे याही प्रकार ३ बेर करै फिर शीतल करके देगची को निकाल ले जितनों शहत। देगची में इकट्ठो भयो होय वा से २० गुनों गाय को दूध मिला के पकावै जब चौथाई भाग रहै ३ चौथाई मिलाये को शहत। और सुपेद तिली को तेल मिला के पकावै जब बिलकुल एकसा माजून जैसी होजाय। तब नित्य प्रातःकाल के समय षाया करै मात्रा नौं माशे की॥ माजून॥ जो इन्द्री को बलवान करने

में तुल्य नहीं रषती और रूप को बढ़ावे और शरीर को मोटा करै और वीर्य को बढ़ावै है ॥ विधि ॥ मुरगी के अंडा की सुपेदी और जरदी। गाय को घी प्याज को रस। गाजर को गूदो। शहत। पाँचों बराबर लेके पकावै और पाक बनावै और प्रकृती के माफिक ४० दिन तांई षाया करै ॥ माजून ॥ गुआर पाठे की जो इन्द्री को बलवान करै और सीत के रोगों को दूर करने में अति उत्तम है ॥ विधि ॥ गुआरपाठे को गूदो सेर पाव। गाय को दूध सेर १ मिला के औटावे और हाथों से मिल के पकावै जो पाक बन जाय ॥ माजून ॥ जो इंद्री को बलवान करै और अच्छे प्रकार से दृढ करती है ॥ विधि ॥ असपंद। जावित्री। जायफल। लौंग। दालचीनी एक२ तोले। काले तिल धुले दो तोले। तिगुने शहत में पाक बनावै ॥

॥ फसल एकसौ पचीसवीं ॥

मुफर्रहात में अर्थात् चित्त को प्रसन्न करने वाली दवाओं में ॥ मुफर्रह ॥ जो सफाई से पीछे होलदिली को गुण करै ॥ विधि ॥ कावली हर्ड को काढा १० तोले आमरे १५ तोले में ५॥ छटांक शहत मिला के चाशनी करै। बिल्ली लोटन। बिजौरे को छिलका। लौंग। मस्तगी। जायफल। तज। इलायची। नाग केसर। बहमन सुपेद। दरूनज अकरबी। नरकचूर। केसर। बन तुलसी के बीज। राम तुलसी सात २ माशे। कस्तूरी २ माशे। मिलाके बनावै ॥ मुफर्रह ॥ जो उस होलदिली को दूर करै है जो वाय के जलजाने से पैदा हो और

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिल की वल प्राप्त करै ॥ विधि ॥ गुलाव के फूल। ना
गर मोथा। लोंग। सवा२ तोले। जावित्री। राम तुलसी।
के वीज। तज। नों२ माशे। कस्तूरी दो माशे। चूरनकर।
के आधसेर सेव के सर वत में मिलावे तथा चाशनी।
में मिलावे जो आधसेर कंद की गावजुवा के अर्क में।
वनी हो ॥ मुफर्रह सरद ॥ जो दिल की निर्वलता। ऽ
और वावलेपन को और वहम को और होल दिली
की अति गुण दाता है ॥ विधि ॥ अवीधे मोती ३ मा।
शे। कहरुवा। मूंगा। सुपेद चंदन। धनियें सूखे सात।
२ माशे। सुपेद वंशलोचन। सुपेद वहमन। गुलाव के
फूल। गाव जुवां के फूल। सवा २ तोले। वहमन सुर्ष।
पिस्ता के छिलका। कुलफा के वीज छिले। जरिश्क
कलीरा। रेशम। नों२ माशे। गेरू ४ माशे। चांदी के वर्क
नग २० सोंने के वर्क नग १० और आधसेर सुपेद कंद
लेके वनाले ॥ मुफर्रह गरम ॥ जो चित्त को प्रसन्न
करै और दिल को वल प्राप्त करै ॥ विधि ॥ वालछड
। तज। दोंनों इलायची। पांच२ माशे। दरूनज अकरवी
वस्तु षह्म। नमाम। अर्थात् कोई प्रकर की तुलसी। ए
क २ तोले। लोवान। केशर। नरकचूर। अगर। तेज।
पात। दालचीनी। विल्ली लोटन के वीज। कहरुवा। ऽ
गावजुवां के पत्ता। गुलाव के फूल। नों२ माशे। तिगुने
शहद में मिलाके वनाले वै ॥ मुफर्रह ॥ दिल धोले
और दिल की निवलै और वहम और वादी। और
होलदिली। और वावले पने को दूर करै और दि
ल को वल प्राप्त करै और प्रसन्न रखै ॥ विधि ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवीध मोती। मूंगा। तीन २ माषे। विल्ली लोटन के वीज। विजौरे के छिलका। पिस्ता के छिलका। दोंनों चंदन। गुलाव के फूल। राम तुलसी के वीज। सुपेद् वंश लोचन। नों २ माषे। कहरूवा। पुषराज।। लोंग। केसर। कपूर। पाँच २ माषे। कवाव चीनी।। दोंनों वहमन। दाल चीनी। अगर। छिलो धनियोंनर कचूर। गावजुवाँ के फूल। आमले। जरिष्क सात २ माषे। सुपेद मिश्री आध सेर। गुलाव जल और केवड़े के अर्क में चाषानी करके वनावै।। मुफर्रह मादिल।। जो जोडों को वल प्राप्त करें और वावले पने को दूर करें और दिल और वहम को। षाली करें।। विधि।। गाव जुवाँ के पत्ता। कहरूवा। धनियों छिलो। रेषमक वरो। सुपेद वहमन। गुलाव के फूल। विजोरे को छिलका। कुलफा के वीज सुपेद चंदन। सव वरा वर लेके तिगुनी सुपेद मिश्री में मिला के वनावे।। मुफर्रह।। जो इन्द्री को वल प्राप्त करें और दिल को और कलेजा को ताकत दे और वीर्य को पेदा करै। स्त्री प्रसंग में सुष उपजावे और पेडू को और नरों को पाक करे और इन्द्री की गलीजता को मिटावै।। विधि।। शाका कुल मिश्री। कुलीजन। सालव मिश्री। दोंनों वह मन। दोंनों तोदरी। इंद्रजो। हालों के वीज। गोषरू। सलजम के वीज। षर वूजा के वीजों की मीगी। खीरा ककडी के वीजों की मीगी। सुपेद पोस्त के दाने। कद्दू की मीगी। विनोंले की मीगी। नों २ माषे। जायफल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोंठ। कवाबचीनी। नेत्रवाला। अगर। कूजीदां। छै २ माशे। सुपेद मिश्री डेढ़पाव लेके बनाले॥

॥फसल एक सोछवीसवीं॥

का नवीज अर्थात नवीज॥ खुरमा॥ अर्थात॥ छुहारेंजो वीर्यको पेदा करे और इन्द्री को वलवान करे और शरीरको मोटे करे और चित्त को प्रसन्न करे और मस्ती लावे॥ विधि॥ छुहारे सेर ७ पानीमन १ में औटावै जव आधो रहे तव। जायफल। लौंग। दालचीनी सोंठ। तेज पात। वडी इलायची। दो २ तोले। विजोरे को छिलका तीन तोले। नारंगी के पत्ता ५ तोले। केसर छै माशे। सव कूट के मिला वै और वनाले॥ नवीज॥ किशमिश जो निर्मल रुधिर उपजा वै और वलको दे और चित्त को प्रसन्न करे और मस्ती लावे॥ विधि॥ किशमिश सेर ५। छिली गाजर सेर ३। पानी सेर २० गांडे को रस सेर १० मिलाके औटावे जव आधो रहे तव दालचीनी। तेजपात। विजोरे को छिलका। पांच २ तोले। अजमायन खुरासानी। लौंग। सोंठ। दो २ तोले। जौ कूट कर के मिलावे और तैयार कर ले॥ नवीज॥ फवाका जो रुधिर को पाक करे और वलको वढा वे और मन को प्रसन्न करे और मस्ती लावे है॥ ॥विधि॥ छुहारे। किशमिश डेढ़ २ सेर। आलूवुखारे। उन्नाव। पाव २ सेर। वंबूर के पेड के भीतर की छाल। वेर की छाल। आम की छाल। आध २ पाव। और पानी सेर २० में औटावै जव आधो वाकी रहै तव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अजमायन खुरासानी। दाल चीनी। नागर मोथा। ६ खस। लोंग। दो २ तोले मिलाके वनाले॥

॥फसल एकसो सत्ताईसवी॥

नतूलात॥ अर्थात॥ तरेडों में॥ नतूल॥ जो गरमी की मस्तक पीडा को और खुश्की से हाथ पांव तन जाय ता रोग को और वावले पन की और सरसाम को गुण दायक है॥ विधि॥ वनफशा के पत्ता। घीया के वीज। कुचल के। अलसी के दाने। पोस्त के दाने। खतमी के वीज। काहू के वीज। गुलाव के फूल। कुचल के सव वरा वर लेके पानी में औटावे और माथे पर तरेडो दे॥ नतूल॥ जो खुमारी की मस्तक पीडा को दूर करे है॥ विधि॥ आध पाव गुलावजल। सिरका छटांक भर। पानी सेर दो ठंडे में मिला के माथे पर तरेडो दे॥ नतूल॥ जो वाय के सरसाम को दूर करे हैं॥ विधि॥ वनफशा के पत्ता। वावूना के फूल। नाजवो। अर्थात् किसी प्रकार की तुलसी। सोया। नरगस के फूल। सव वरा वर लेके औटा के थोडो सो सुपेद तिली को तेल मिला के गुन गुनों काम में लावे॥ नतूल॥ जो ९ स्त्री के स्त नों के वा सोथ को दूर करे जो दूध के जम जाने से हो॥ विधि॥ वावूना के फूल। सोया। तुलसी। मेथी। नाखूना। पोदीना। सव वरा वर लेके तरेडो दे॥ नतूल॥ जो गुर्दे और मसाने की पथरी को तोड २ के मूत्र के रस्ता निकालै॥ विधि॥ नाखूना। वावूना के फूल। गुलाव के फूल। डे ढ २ तोले। खरवूजा के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छिलका सूषे। परसीयावषूशाँ। कुचल के दो २ तोले। अपूनान। मुल्हटी। सोंफ कीजड को छिलका। काकनज। मेथी। एक तोले। तुलसी। वनफषा। नीलोफर के पत्ता। नों २ माषे। लेके काम में लावे॥ नतूला॥ जो गुर्दे और मसानेकी पथरी को और पीड़ा को दूर करै है॥ विधि॥ अंडी के चीयाँ। परसीयावषूशाँ गोषरू। गुल वावूना। गुल वनफषा। नारवूना। गुल खतमी। अजमोद। कुलथी। मेथी। मकोय। दोंना मरूवा। सोंफ की जड को छिलका। काकनज। तुलसी। ततली। के पत्ता। गुलाव के फूल। अनेसू। अमरलता के वीज। कुलथी दो २ तोले। सूषेषरवूजाके छिलका। गेंहूं कीभुसी। चार २ तोले। हालों के वीज १ तोले लेके काम में लावे॥ नतूला॥ जो अंडकोषा के और इन्द्री के सीत के सोथ कों गुण दायक और उस्के विगडे मुवाद को पटकावे॥ विधि॥ पोदीना। दोंना मरूवा। मकोय। दो २ तोले। गायं पित्ता नग १। शाहत तोलेभर लेके औटावे और तरेडो दे॥

॥ फसल एकसो अठाईसवीं॥

ऽका नफूखात॥ अर्थात॥ नाक में फूंकने की दवाओं में॥ नफूका॥ जो सरदी की मस्तक पीडा को और आधा सीसी को और नजले का पानी उतरआने को और नेत्र पुराने सीत विकारों को गुणदायक है॥ विधि॥ गेंहूं को आक के दूध की ३ पुट देके और चूरन करके नाक में फूंके॥ नफूख॥ जो सरदी की मस्तक पीडाको और आधा सीसी।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

को गुणदायक है॥ विधि॥ जायफल। सोंठ। लौं
ग। दालचीनी। काली मिर्च। तीन२ माशे। छोटी
इलायची के दाने। केसर दो२ माशे। सुपेद चंदन
४ माशे। चूरन कर के और गुलाबजल की न-
मी देके फिर सूघा के काम में लावे॥ नफूख॥
जो अर्धांग वात के रोगों को गुण दायक है॥ वि॰
॥ नकछिकनी कालीमिर्च। अकरकरा। सोंठ। ऽ
पपड़ीषार। नौसादर। एलूआ। दालचीनी। सु-
पेद कुटकी। दोंना मरुआ। सूषो। सब बराबर ले
के चूरन कर के नाक में फूके॥ अथवा॥ सबके
चूरन को दोंनामरुआ के रस में घोर के नाक में
टपकावे॥ नफूख॥ जो मिरगी को दूर करे॥ वि॰
॥ इन्द्रायन। नौसादर। कलोंजी। नकछिकनी। का
ली मिर्च। सब बराबर लेके चूरन करके नाक में
फूके॥ नफूख॥ जो सकता को गुण करे॥ विधि
॥ आसयच। काली मिर्च। नकछिकनी। ततली।
सब बराबर के चूरन कर के नाक में फूके॥ नफू॰
॥ जो नकसीर को बंद करे है॥ विधि॥ कागद की
भस्म। सीप की भस्म एक२ भाग। सोंना माषी आ
धभाग। लेके चूरन कर के नाक में फूके॥ अथवा
॥ माजूफल अधजला। धनियों। लोबान। परसीया
वशां। एलूआ। फिटकिरी। सब बराबर लेके चूरन
कर के काम में लावे॥ नफूख॥ जो काग लटक-
आने को गुण करे है॥ विधि॥ हरो माजूफल। गु
लाब के फूल। गुलनार। पोदीना। चार२ माशे। अक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र करा। वडी इलायची के दाने। वंशलोचन। दो२ मा
षे। केसर१ माषे। लेके चूरन कर के कंठ में टपकावे।
॥अर्थात् फूके जो कौश्रा पर पहुंचे॥ अथवा॥ मसूर
नोंसादर। गुलाब की जीरो। बरा वर लेके फूके॥

॥फसल एकसो उनतीस वीं॥

नकूश्रात॥ अर्थात्॥ खिसांदो में॥ नकूय॥ जरि
षक जो कलेजा की गरमी को दूर करे और जदर औ
र कलेजा को वल प्राप्त करे॥ विधि॥ जरिष्क छे मा
षे। अमर लता के वीज। कासनी के वीज कुचल के
चार२ माषे। सुपेद मिश्री डेढ तोले लेके काम में लावे।
॥नकूय॥ के हल्दीया कमल वाय को और मासा
री कानसे की गाँठों की दूर करे॥ विधि॥ कासनी छे
माषे। सोंफ। सोंफ की जड तीन२ माषे। मकोय४ मा
षे। सादह सिकंजवी दो तोले। लेनी॥ नकूय॥ जो
काली कमल वाय को दूर करे॥ विधि॥ गुलाव के
फूल। विल्ली लोटन। चार२ माषे। पित्त पापडो। अ
मर वेल तीन२ माषे। मुनक्का१ तोले। सादह सिकंज
वी दो तोले लेनी॥ नकूय॥ जो पित्त ज्वर को दूर क
रे॥ विधि॥ गावजुवा के पत्ते। बनफशा के पत्ते।
गुल नीलो फर। गुलाव के फूल चार२ माषे। आलू
बुखारे नग१०। सुपेद मिश्री डेढ तोले लेनी॥ अथ
वा॥ कासनी के वीज कुचल के नौं माषे। कुलफा के
वीज कुचल के छे माषे। सेवती के फूल ४ माषे। आ
लू बुखारे नग ७। इमली दो तोले। सुपेद मिश्री डेढ तो
ले लेनी॥ नकूय॥ जो इस्ज कफ पित्त ज्वर को दूर क

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रे॥ विधि॥ मकोय। सोंफ। कासनी। काहू के बीज। कुलफा के बीज चार २ माशे। मुनक्का के दाने १०। खतमी के बीज कुचल के तीन माशे। सुपेद बूरो दो तोले॥ अथवा॥ पित्त पापडे के पत्ता। सूखो धनियो। गुल नीलोफर। गुलाब के फूल चार २ माशे। खतमी के बीज। खुब्बाजी के बीज। मुल्हठी पांच २ माशे। सादह सिर्कंजबी डेढ तोले लेनी॥

॥ फसल एकसौ तीसवीं ॥

वजूर अर्थात् कंठ में टपकाने की दवाओं में॥ वजूर॥ जो मिरगी को दूर करे और मिरगी को चेतन करवै॥ विधि॥ हींग दो भाग। खास वच १ भाग। पानी में घोल के टपकावै॥ अथवा॥ सोंफ। अनेसूं। कालो जीरो। सब बराबर लेके पानी में पीस के गरम कर के टपकावै॥ वजूर॥ जो कफ की खांसी को दूर करै जो दूध पीने से बच्चों के होती है॥ विधि॥ अतीस। बच। चार २ माशे। काकडा सिंगी। भाडंगी। नागर मोथा। पीया बांसो। पीपर छै माशे। सुर्मा सोमहीन चूरन कर के ड्योढ़े शहत में मिला के रखे दो रत्ती के प्रमाण। तथा कम ज्यादा रोगी की प्रकृती के माफिक दाई के दूध से तथा पानी में घोल के टपकावै॥ अथवा॥ यह सब प्रकारी बच्चों की खांसी को गुण करै है॥ विधि॥ पोहोकर मूल। काकडा सिंगी। पीपरामूल। प्राकर तिगमल। सब बराबर लेके डोढ़े शहत में। मिला के मात्रा प्रकृती के माफिक लेके मां के दूध में तथा पानी में घोल के टपकावै॥ वजूर॥ जो बच्चों

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की मिरगी को गुण करै ॥ विधि ॥ मातर अर्थात ॥ पहाडी पोदीना। आसवच। कालोजीरो। एक २ रत्ती मा के दूध में पीस के टपकावै॥ वजूर ॥ जो अचे तन्ता को दूर करै ॥ विधि ॥ कस्तूरी। अंबर थोडो २ गुलाबजल में घिस के टपकावै ॥ वजूर ॥ जो विस् चिका में अचेत होजाय ताकूं तुरत ही दूर करै है ॥ ॥ विधि ॥ दर्याई नारियल। गुलाबजल में घिस के कंठ में टपकावै ॥ हरफुलयाय ॥

॥ फसल एकसौ इकत्तीसवीं ॥

याकूती में प्रगट हो वाजे मनुष्यों के समीप याकूती नवीन रचित विधि है परंतु पुरानी पुस्तकों के देख नेसे माल्म होता है कि अरस्तू हकीम नें सिकंदर के लीये याकूती वनाई थी निदान इस्का पुराना पन प्रघट है और याकूत सब खानी जवाहरातों से कडा होता है और मजवूत है या कारन कर के उस्को विशेष घिसना उचित है जो विशेष घिस ने से प्रकती पकड लेती है और बारह पहर से कम न घिसे और २० पहर से अधिक न घिसे और याकूत को दूसरे जवाहरातों सहित केवडे को अर्क और गुलाबजल में घोटना उचित है और बाकी और २ वस्तों का प्रथक चूरन करना उचित है ॥ याकूती ॥ जो प्रीख रईस ने हौलदिली को और वहम को और सब प्रकार की बात आधको गुण दाता और मस्तक को कलेजा को वल प्राप्त करता लिषी है ॥ विधि ॥ याकूत रम्मानी ३ माशे। अवीधे मोती ५ माशे। हजर अरमनी। हजर लाजवर्द शात २ माशे। कस्तूरी दो माशे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केसर। कपूर। तीन २ माशे। गुलाब में घोंटे और गा
वजुवाँ। कासनी। के वीज। कहरुवा शामई। रेशम
कतरा हुआ। शुद्ध केकडा। राम तुलसी। के वीज।ः
जस्तु खुद्दूस। वहमन सुपेद। अगर। छोटी इलाय
ची के दाने। जदवार खताई। दरूनज अकरवी। वा
ल छड। गुलाब के फूल। लंवे खीरा के वीजों कीभी
गी। छे माशे। और मीठे अनार को शरवत तिगुने में
इन सव को चूरन कर के राखे और ४० दिन पीछे ३
माशे से छे माशे ताईं की मात्रा काम में लावे॥ या-
कूती॥ के हकीम हाजकुल मुल्क अकमल खाँ
की वनाई है जो सव प्रकार के वावले पन को गुण
करता है और वल को वढा वे है॥ विधि॥ याकूत
। मोती। मुंगा। पन्ना। लाज वर्द। कहरुवा। नौं २ माशे
तेजपात। गुलाव के फूल। गावजुवाँ के पत्ता। दोंनों
वहमन। दोंनों तोदरी। सूखो धनियों। आमले। दोंनों
चंदन। दो२ तोले। अगर। दोंनों इलायची यों के दा
ने। दाल चीनी। रेशम कतरा हुआ। वाल छड। वि
ओरे का छिलका। एक २ तोले। कस्तूरी २ माशे। के
सर। राम तुलसी। दरूनज अकरवी। वूजीदाँ में छे
२ माशे। सोंने चांदी के वर्क नग वीस २। सुपेद मिश्री
८॥ छटाँक। और अर्क केवडा और गुलाव अलडेढ
२ पाव में चाशनी कर के याकूती वनाले॥ याकूती
॥ जो मुवाद को निकाले और वाय और तरी के मुवा
द को निकाले और अत्यंत वावले पन को दूर करे है॥
और दिल की और मस्तक को और निज ओडों के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वल को वढावे और अग्नि को दीपन करे और ताक त वढा ने में और ऐकांत व्रती और रंज दूर करने में तुल्य नहीं रखती है॥ विधि॥ हीरा। अवीधे मोती। मुंगा। कहरवा सात २ माशे। लाज वर्द नों माशे। गाव जुवां के पत्ते। रूमी मस्तगी। कुलफा के वीज राम तुलसी के वीज। काहू के वीज। खीरा के वी। जौं की मींगी। मीठे घीया के वीजों की मींगी। सुपेद चंदन। एक २ तोल्ले। वंशलोचन। छोटी इलाय। ची के दाने। वाल छड। केसर छे २ माशे। सोने चाँ दी के वर्ष नग वीस २। सुपेद मिश्री ५॥ छटांक की चाशनी में थाकूली वनाले॥ खातमा॥ जो दो फसलों मिश्रित हैं॥ प्रथम फसल॥ असरार अ लि वाके नुसखों में॥ दवा॥ जो पुरानी खांसी और पुरानी सोजाक और स्वास और सीत ज्वर और उ दर और कलेजा और तिल्ली और पेडू के सीत के रोगों को दूर करै और वल को वढावे और वीर्य को गाढो करै है॥ विधि॥ वडी और साफ सीपी जिस में मोती उतपन्न हुए हों ४ भाग लेके चूरन करके। और डरी की रोग १ भाग महीन पत्रों के टूक २ कर के १ माटी की कुलीया में गुआर पाठे को गूदो भर के दोनों वस्तु डाले जो वीच में रहैं और कुलीया को। कपरोटी चढा के १ गडेला में आरने कंडा भर के फू क दे पीछें सीतल होय जव निकाले और पीस के रख छोडे और एक रत्ती से दो रत्ती तांई जीभ पर धर के निगल जाय और ऊपर से १ वतासो खाले॥ दवा

For Private and Personal Use Only

जो नरों के दर्द को और कलेजा के दर्द को और स्वास को दूर करै और वल को बढावै ॥ विधि ॥ बकरा के अंड कोश फाड के वा में जरावंद मदहरुज, कालोजीरो। नतरून तीन २ माशे चूरन कर के उस पर छिड के और सुषा के सव की चूरन कर के रावे प्रातःकाल छै माशे फाँक के ऊपर से थोडो पानी पी ले ॥ दवा ॥ जो पुरुषइन्द्री पर लेप कर के मैथुन करै तो स्त्री उसपर प्रसन्न होय और स्त्री अपनी योन में लगा के मैथुन करै तो पुरष प्रसन्न होय जाय ॥ विधि ॥ पीपर। कच्चो सुहागो। कबूतर की बीट। कपूर। सव बरा वर लेके शहत में मिला के लेप करै ॥ रोगन ॥ चना को तेल पाताल यंत्र की राह से निकाल के यद्यपि दुर्गंधी होती है परंतु किसी प्रकार से किसी बस्तु में मिला के षाय तो पुष्टै वकूलजो या की बरा बर और कोई दवा पुष्टाई में नहीं है ॥ लेप ॥ जो या को उदर पर लगावै तो वमन लावै और टूंडी पर लगावै तो दस्त लावै और पेडू पर राखे तो मूत्र और रितुजारी करै ॥ विधि ॥ वायविडंग। करेला की असारी तीज २ माशे। सुपेद कुटकी। मुरदासंग चार २ माशे। चूरन करके प्रथम ४ तोले जैतून वा पुरानी सरसों के तेल में सुपेद मोम और वकरे की चरवी एक २ तोले गला के चूरन को मिलावे ॥ लेप ॥ जो या को कपडा के फोया पर लगा के उदर के मूंह पर राखे तो वादी के दस्त लावै और जो वगल के नीचे लगा वे तो पित्त के द

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्त लगावे और जो पीठ की तरफ दोनों चूतडों के बी
च में लेप करे तो कफ के दस्त लावे ।। विधि ।। तुर
मस अर्थात् भट वांस छिली हुई १ छटांक देगची में
भरे और गाय को दूध वामें इतनों डाले जो वह डूब जा
य फिर इतनी आंच दे जो दूध सब सूख जाय फिर पीस
के गाय को घी मिला के काम में लावे ।। पतलो लेप
।। जो अंड कोष्ठ पर करे तो उतरे हुए आंत को चडावे
और आंत में चढ़ने से रक्षा और बंद करे ।। विधि ।। ।
अफीम दो माशे । गंदा बिरोजा छे माशे । पानी में पीस ।
के १ कपडा के टूक पर लगा के वाके ऊपर ४ माशे लोवा
न और छे माशे माजूफल चूरन कर के बुर के और अं
ड कोष पर वाबूना को तथा सरसों को तेल चुपड के
वह कपडा राखे और बांध दे और ४ पहर पीछे फि
र बदले और आंत चढ़ जाने के पीछे भी थोडे दिन
लगातो रहे ।। चटनी ।। जो पुरानी षांसी और ज्वर
को दूर करे ।। विधि ।। छोटी इलायची । सुपेद वंशलो
चन । छे २ माशे । छोटी पीपर नग १ । दाल चीनी १ मा ।
शे । चूरन कर के चटनी लायक शहत में मिलावे ।
माशे २ भर प्रातःकाल और दुपहर और संजा के सम
य चाटा करे ।। पाक ।। जाली नूस नें बनाया है जो मि
रगी रोग के दूर करने में आदू के सदृश है ।। विधि ।। अ
कर करा ५ तोले चूरन कर के ······ ५ तोले सिरको
में घोटे और ७ तोले शहत में मिलावे और मात्रा मा
शे चार की नित्य वाके ३ तोले पानी पीलीया करे ।। पा
क ।। जकरीया राजी के बेटा नें बनाया है जो यह भी ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिरगी रोग के दूर करने में टोटका सो रषेहे॥ वि॰
॥ अकरकरा। अमर वेल। उस्तुखद्दूस। विष्णुफाय
जा फिस्तकी। सब बराबर लेके चूरन करके दूने घृ
त में और मुनक्का दाष में पीस के मिलावै और षवै
वे मात्रा ४ माषे से ७ माषे ताई की लेनी॥ टोटका।
नेवला को मान्स सुषा के चूरन करके षाय तो पुष्ट
करै और वाती दर को दूर करै और सारे विषों का अ
हर मोहरा है॥ दूसरा टोटका॥ कि रांग के दर्द को
यद्यपि पीडा दौषत में कडी है परंतु मोहम्मद ज
करीया राजीने या टोटका की पर चाय के लियी है॥
एलूआ। वडी हर्ड। मीठो षोरनजान। सब बराबर ले
के गोली बनावै और नों माषे षाके थोडो सो गरम
पानी ऊपर से पीले तो पान छै दस्त के हो तेई तुर्त
रोग दूर हो जाय॥ टोटका॥ पटेरा जो तलाव औ
र झील और विशेष पानी के किनारो पर जमजाता है
वाको गोंद भी कहते हैं और वाकी चटाई भी बनाई जा
ती है ताको जला के वा की भस्म पानी में घोल के पीवै
तो रुधिर थूक ने को रोग दूर होय और सिरका में
घोल के टपकाने से नासूर दूर होय है॥ टोटका॥
बिधारा पानी में पीस के गुनगुनो करके लगाने बांध
ने से गठिया वाय दूर होय है॥

॥फसल दूसरी॥

बहिस्साअता में॥ प्रघट हो के वाजे रोग मुनासिब दवा से
ईश्वर की कृपा से तुरत दूर हो जाते हैं॥ जैसें मस्तक पीडा
जो पूर्व रूप में होय मस्तक और मैं तो ईश्वर की सहायता

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से ओसंरेरो की फस्त षोले और गले के पीछे पछने लगावे तो पीडा दूर होय और अफीम के सूंघने से और नाक के भीतर और कनपटी पर लगाने से और ताजा फूल सूंघने से गुलाब के तथा सुपेद षषाष षा सूंघने से और लगाने से दूर होता है और मस्तक के बीच में पीडा होतो गुल रोगन में कपडा भिजो के पीडा की जगह रषने से पीडा दूर होय और गुल रोगन तलूओं के लगाने से और कस्तूरी सूंघने से और नाक में टपकाने से और बुट वडीया की षाल ताजा मस्तक पर बांधने से और कबाव चीनी गुलाब में पीस के मस्तक पर लगाने से पीडा दूर होय और जो मस्तक के पिछाडी गुरदे तक पीडा होय तो कफ की वमन करने से और रेवत चीनी और गुल बाबूना गुन गुनो कर के लगाने से पीडा दूर होय ॥ आधासीसी ॥ जो किसी तरफ होय तो कुत्ता की हड्डी को नाक में धूआं लेनेसे तथा दौंना मरूआ की पत्ती नक में निचोडने से और गुनगुनों कर के लगाने से और रीठा पानी में पीस के नाक में टपकाने से पीडा जाय ॥ मिरगी ॥ रीठा वदाम रोगन कडवे में घिस के नाक में टपकाने से ॥ और सोंठ। काली मिर्ची नकछिकनी। तथा गिल्ल गिलीया की बीट। सोंठ। नाक में फूंकनेसे ॥ और गारी कूं। जीरो। अकर करा। उस्तुखदूस। सब बरा बर लेके दूने शहत में पाक बना के षाने से मिरगी दूर होय ॥ हालत सकता ॥ नकछिकनी। काली मिर्च। नाक में फूकने से और कस्तूरी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाकमें टपकाने से ओर दौंना मरुआ नाक में निचो
डु ने से यह रोग दूर होय ॥ बच्चोंकी मिरगी ॥ दूर
होयजो निर्वसी माके दूध में घिस के प्यावे ॥ तथा ऊ
दसालीव तथा फादानीयां पानी में घिस के गले में टप
काने से तथा मूंगा तथा बकरे की मेंगनी से दोनों ओंके
बीच में दाग देनेसे रोग दूर होय ॥ जुकाम ॥ दूर हो
य जो गरम पानी की नर्दी मस्तक पर देने से वा
जो उस्की गरमी माथे को प्राप्त होय वा कपडा
गरम करके सेक नेसे वा अरहर वा चना तथा
बाजरो कुचल के नोंन मिला के पोटली वनाके से
क नेसे दूर होयहै ॥ आंखोंकी गरमी ॥ दूर होयजो
धूप में चलनेसे होतो ॥ अफीम सूंघ नेसे ओर नेत्रों
पर लगानेसे ओर वेटी की मा को दूध तथा बकरी के
दूध में रुई भिजो के आंख पर रख नेसे दूर होय ओर
जो आंच के पास बैठनेसे होतो वडी हर्डे लगानेसे
वा गुलाव जल में आमले पीस के लगानेसे। वा
गुलाव में रुई भिजो के नेत्रों पर रख नेसे तुर्त दूर हो
यहै ॥ दंतपीडा ॥ दो तीन मुनक्का रुई में लपेट
के पानी में भिजो के वाके बीज कुचल के दांतों के
नीचे दबाव नेसे तथा मौलसरी केपेड की छाल दंतसे दब
नेसे तथा मोलसरी की छाल अफीम। कपूर के मं
जन करनेसे ओर ईश्वर की कृपा से पीडा दूर होयहै
॥ मूंहकीदुर्गंधी ॥ दूर होय ॥ मुनक्का। लोंग। छो
टी इलायची। इनकी गोली बनाय के मूंह में रखने
से तथा छडीला। मोथा। ओठा के शहद मिलाके

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुल्ला करने से जाय ।। कंठ के भीतर की फुनसी यां ।। तुरत दूर होय हैं ।। शहतूत को रस और भेडीया की मेंगनी को गरगरा करने से तथा कबूतर की वीट और अमलतास और अवा वील की वीट से गरगरा करै तो दूर होय ।। कंठ ।। में जोंक तथा कांटा तथा हड्डी चुभ जाय सो दूर होय ।। सिरका शराब से तथा अजमायन को काढो गरगरा करने से ।। कर्ण पीडा ।। दूर होय आम्ब को पीरो पत्ता तथा ततलीस दा सुहागन । तथा सुदर्शन को पत्ता तथा महावर को पानी कान में निचोड नेसे तथा अफीम घोल के कान में टपका नेसे तथा रसोत वकरी के दूध में घोल के कान में डाल नेसे पीड़ा दूर होय हैं ।। कर्ण शब्द मिटै ।। मोहम्मद जकरीया राजी के वेटा ने अपने रूसाले में लिषा है कि अच्छी अफीम पानी में घोल के कान में डाल नेसे तुर्त वंद होता है और सोया को तेल तथा मूली को तेल तथा लहसन को तेल टपका ने से वंद होता है ।। नकसीर वंद होय ।। भुनी फिटकिरी की चूरन नाक में फूक नेसे तथा गले के पिछाडी पछना लगाने से तथा मुर्दा वादल की भस्म तथा ऊंट के वालों की राष नाक में फूक नेसे तथा कपूर पानी में घोल के नाक में टपका नेसे तथा पुरानी गच तथा आमले कनपटी पर लगाने से वंद होती है ।। वायमूल वंद होवा ।। माजून मलूकी तथा जमाल गोटा की गोली षा नेसे तथा इन्द्रायन की वत्ती चढाने से तथा वांस की जड की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काढ़ो तथा अंडी को तेल पीनेसे और मुर्गा की ताजा वीट तथा कबूतर की के वामें गरमी वाकी रही टूंडी पर रखने सें मूल वंद होय ॥ मरोड़ा वंद होय ॥ १ आंख की जड पानी में पीस के गुनगुनी कर के पेट पर लगावै तथा कद्दू की मीगी को लेस और वादाम की मीगी को शीरा गुन गुनों कर के पीवे तो मरोड़ा वंद होय ॥ बच्चों की पेचश ॥ वंद होय ॥ हब्बुलरशाद और कालो जीरो बरा वर लेके चूरन कर के गाय के घी में भकरो के माके दूध में घोल के पिलावें ॥ कांच निकलना वंद होय ॥ अल्लामाने अपनी पुस्तक में लिषा है के वकेरा के खुर और सींग की भस्म । जुफत वल्त । गुलनार । माजूफल । गुलाव की जीरो । अनारदानों । सब बरा वर ले के पीस के लगाने बांधने से तथा इनी वस्तों को पानी में घोल के आवजन की तरह वैठ नेसे वंद होय है ॥ पेशाव वंद को षोलै ॥ मूसे की मेंगनी । तथा सज्जी । तथा कलमी सोरा पानी में घोल के टूंडी पर रखने से तथा केसर के मूल इन्द्री के छिद्र में रष नेसे मूत्र षुले ॥ अस्त की पीड़ा और कष्ट मिटै ॥ मनुष्य के तथा घोड़ा के वाल जलाके धूनी देनेसे और नकछिकनी चूरन करके शहत मिलो के टूंडी पर रष नेसे कष्ट दूर होय ॥ ववासीर ॥ अल्लामाने पुस्तक में लिषा है के शहतूत और गूगल बरा वर लेके गोली बनाके जितनी मुनासिब जाने तितनी षाने और लगाने से बुर्न अच्छी होती है ॥ रस्ता की मांदगी विशेष च

For Private and Personal Use Only

लने से ॥ और जोडों के अकड आने और बंध जाने को तुर्त दूर करै पासे के सब जोड़ोंपर कोई प्रकार को तेल लगावे तथा जाडों में गरम पानी में और गरमी में सीतल पानी में जाँघ ताई खडा होय और वाही तलक भिड कवै और बाकी शरीर पर पानी न पहुच नेपावै ॥ **हाथ पाँवों की खुजली दूर होती है** ॥ जो गरम पानी में नोन मिलाय के धोडा ले तो तुर्त खुजली जाती रहै ॥ इति ॥

इति क़राबादीन अहसानी का भाषा उल्था
अर्थात तिब्ब रत्नाकर नाम ग्रंथ
परमेश्वर की दया से पूरा हु
आ और प्रमाह नवम्बर
सन १८९२ ई० को छ
पकर मनुष्यों के
प्रसन्नार्थ
प्रचलित
हुआ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रसिद्ध पत्र

सब छोटे और बड़े व्योपारी तथा यंत्राधिप हिन्दूया मुसल्मान साहिबों को माल्म हो कि इस पुस्तक को मैंने अपना द्रव्य व्यय कर हिन्दी भाषा कराय स्थान मथुरा में श्रीयुत मुन्शी कन्हैया लाल और उन्के लघु भ्राता बन्शीधर भारगव के छापे में अति श्रम कर छपाई और रजिस्टरी इस किताब की बमूजिब ऐक्ट २५ सन् १८६७ ई० की दफ़े १८ के अनुसार कराई गई - इसलिये इसके छापने और छपवाने में कष्ट न करें - और जिन महाशयों को जितनी किताबों की इच्छा हो नीचे लिखे अनुसार पते से कृपा पत्र भेज कर मंगा लेवें - और व्योपारियों से जो बहुत सी पुस्तकें लेना चाहेंगे उनके साथ रियायत निर्ख में की जायगी ॥

ठिकाना बाज़ार स्वामीघाट चूड़ी वालों की गली के साम्हने श्यामलाल ताज़र कुतुब व इस्टाम फ़रोश की दूकान नम्बर ६३

द० श्यामलाल के ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विज्ञापनपत्र

इस विद्या के जानने वाले तथा सीखने वालों से – प्रार्थना है कि इस पुस्तक को किसी उस्ताद से आद्योपांत लों एक बार पढ़लें क्योंकि एक तो इसमें लेखकदोष से जो अशुद्ध रहगया होयगा उसको – और दूसरे इसमें हमने जहां तक हो सका हिन्दी भाषा के शब्द लिखे हैं– तथापि इसमें अर्बी, फारसी के शब्द बहुत रह गये हैं– उनका बिना उस्ताद के बताये यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकेगा ॥

और इसका नाम हिन्दी भाषा में लिव्वरत्नाकर रक्खा गया है– जहां कहीं भूल चूक हो कृपा दृष्टि कर सुधार लें ॥

अर्जी हमारी पर मरज़ी तुम्हारी है

अब हम आशा रक्खते हैं कि इस अपूर्व ग्रंथ को देख इस बिद्या के जानने वाले बुद्धिमान मनुष्य क्या १ प्रति अपने पुस्तकालय में न सुशोभित करेंगे जरूर ही करेंगे ॥

द· श्यामलाल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Serving JinShasan
045914
gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only